UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180541

UNIVERSAL
LIBRARY

Osmania University

Call No. H183 Accession No. H 2636

Author P47D

Title पटेल, एलन
धरती के आँसू 1959

This book should be returned on or before the date last marked below.

धरती के आँसू



एलेन पैटेन

अनुवादक
विष्णु शर्मा

आत्माराम एन्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

सरस्वती प्रेस बनारस

कॉपीराइट

सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद

१९५७

मूल्य :

मुद्रक : भार्गव प्रेस, इलाहाबाद

भूमिका

'धरती के आँसू' एलेन पेटेन के विश्वविख्यात उपन्यास 'क्राय द बिलवेड कण्ट्री' का अविकल अनुवाद है। इस उपन्यास की कहानी सोने के देश, दक्षिणी अफ्रीका की धरती की दर्द-भरी कहानी है। दक्षिणी अफ्रीका का जीवन अपने समग्र रूप में इस उपन्यास में चित्रित हुआ है। वहाँ की धरती, पहाड़ और वादियाँ; लोग, काले और गोरे; बसते हुए नगर और टूटती हुई बस्तियाँ; सोने की खानें और उनमें काम करनेवाले मज़दूर; नेता और पादरी....और वहाँ की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और नैतिक समस्याएँ....लेखक ने सब-कुछ इस उपन्यास में समोने का सफल प्रयत्न किया है और पाठक के सामने दक्षिणी अफ्रीका सजीव होकर खड़ा हो जाता है। सच पूछिए, तो इस उपन्यास का नायक ही दक्षिणी अफ्रीका है, सोने का वह देश, जिसकी मूल काली जातियाँ सोना निकालती हैं, बाड़ों में रहती हैं, भूखों मरती हैं और उनकी मालिक गोरी जातियाँ सोने का उद्योग करती हैं, मालामाल होती हैं और सुख भोगती हैं। खान का पता लगता है, नगर बसता है, युवक भागते हैं, धरती रोती है, उसका सिंगार कौन करे ?

—प्रकाशक

———

धरती के आँसू

(१)

सुदूर अफ्रीका में इकोपो से एक सुहानी सड़क पहाड़ों को जाती है। ये पहाड़ हरी दूबों से ढँके हुए हैं, जो हमेशा लहराती-सी रहती हैं। इनके सौन्दर्य का बखान नहीं किया जा सकता। यह सड़क पहाड़ों में सात मील तक जाकर कैरिसब्रुक पहुँचती है और अगर कोहरा न हुआ, तो वहाँ से आपको अफ्रीका की सबसे खूबसूरत वादी दिखायी पड़ सकती है। आपके चारों तरफ़ घास और कँटीली झाड़ियाँ दूर-दूर तक फैली हुई होंगी और वादी के एक पक्षी, टिटिहोया, की करुण पुकार आपको सुनायी देगी। और नीचे ड्रेकेन्सबर्ग से समुद्र की ओर बहती हुई उमज़िम कुलू की वादी होगी और नदी के उस पार और पीछे की ओर बड़े-बड़े पर्वत और उनके पीछे इंगेली और पूर्वी ग्रीकालैण्ड के पहाड़ हैं।

दूब ऐसी घनी और उलझी हुई है कि आपको ज़मीन दिखायी नहीं पड़ सकती। यह घास, वर्षा और कोहरे को जज़्ब कर लेती है और पानी धरती में से रिसकर झरने के रूप में प्रगट होता है। इस घास का बहुत ध्यान रखा जाता है और उसपर बहुत जानवर नहीं चरते और बहुत आग नहीं जलायी जाती, ताकि धरती नंगी न हो जाय। यहाँ आप नंगे पाँव खड़े होइए, क्योंकि यह भूमि पवित्र है, वैसी ही अछूती, जैसी सृष्टिकर्त्ता के यहाँ से आयी थी। इसे सँभालकर रखिए, इसकी रक्षा कीजिए, इसकी ओर ध्यान दीजिए, क्योंकि यह इन्सान को सँभालकर रखती है, उसकी रक्षा करती है, उसका ध्यान रखती है। यह नष्ट हुई, तो इन्सान नष्ट हो जायगा।

जहाँ आप खड़े हैं, वहाँ दूब ऐसी घनी और उलझी हुई है कि आपको ज़मीन दिखायी नहीं देती। हरी चादर ओढ़े हुए ये पहाड़ नीचे वादी में बिखर जाते हैं और नीचे जाते-जाते उनका रूप ही बदल जाता है। वे लाल और नंगे हो जाते हैं; वे बरसात और कोहरे को रोक नहीं पाते और वादी की धाराएँ सूख जाती हैं। वहाँ बेशुमार जानवर घास चरते हैं और कितनी ही लपटों ने उसे झुलसा दिया है। आप यहाँ जूते पहनकर खड़े होइए, क्योंकि यह धरती खुरदरी और नुकीली है और यहाँ पत्थर तलवों में चुभ जाते हैं। इस ज़मीन की कोई देख-भाल नहीं करता, इसकी कोई रक्षा नहीं करता, उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता, क्योंकि अब यह इन्सान की रक्षा नहीं करती, उसकी ओर ध्यान नहीं देती, उसका पोषण नहीं करती। टिटिहोया के कंठ का संगीत अब यहाँ सुनायी नहीं देता।

वे ऊँचे लाल पर्वत अकेले और निर्जन हैं, और धरती मांस की तरह फट गयी है। बिजली इन पर ज़ोर से चमकती है और मेघ इनपर वेग से बरसते हैं, सूखी हुई सरिताएँ धरती के लाल खून के प्रवाह से सजीव हो उठती हैं। नीचे औरतें वादियों में धरती

का जो-कुछ शेष है, उसे भी छील डालती हैं और वहाँ जो मक्का उगती है, सर बराबर भी ऊँची नहीं हो पाती है। इन वादियों में केवल बूढ़े आदमी, बूढ़ी औरतें, माताएँ और बच्चे रहते हैं, जवान आदमी और जवान औरतें यहाँ से जा चुके हैं, यह धरती अब उनका पोषण नहीं करती।

(२)

छोटी-सी लड़की हाथ में एक ख़त लिये हुए ऐसी तेज़ी से लोहे और लकड़ी के गिरजे की ओर दौड़ी, मानो वह कोई बहुत बड़ा काम कर रही हो। गिरजे से लगा हुआ एक मकान था। डरते हुए लड़की ने मकान के दरवाज़े पर दस्तक दी। रेवरेन्ड स्टीफेन कुमालो ने मेज पर से, जहाँ वह कुछ लिख रहे थे, आहट सुनकर निगाह ऊपर उठायी और कहा—अन्दर आ जाओ।

छोटी लड़की ने ऐसे किवाड़ खोला, मानो इतने बड़े मकान का दरवाज़ा लापरवाही से खोलते वह डर रही हो और दुबकी हुई-सी अन्दर आयी।

—मैं एक ख़त लायी हूँ, उम्फुन्दीस।

—ख़त! हूँ! कहाँ से लायी हो ख़त, बेटी?

—स्टोर से लायी हूँ, उम्फुन्दीस! गोरे साहब ने कहा है कि इसे आपके पास पहुँचा दूँ।

—यह तुमने बहुत अच्छा किया। अच्छा, अब जाओ, मेरी बच्ची।

लेकिन लड़की तुरत नहीं गयी। वह अपने नंगे पैर एक-दूसरे से रगड़ती रही और अपनी छोटी, काली उँगली पादरी की मेज़ के किनारे पर घिसती रही।

—शायद तुम भूखी हो, बेटी?

—बहुत भूखी तो नहीं हूँ, उम्फुन्दीस (पादरी, आदरसूचक सम्बोधन)।

—शायद कुछ भूख लगी हो?

—हाँ, थोड़ी भूख तो लगी है, उम्फुन्दीस।

—अच्छा, तो अन्दर माँ के पास चली जाओ। वह तुम्हें कुछ खाने को देंगी।

—धन्यवाद, उम्फुन्दीस।

लड़की सँभालकर पाँव रखती, कि कहीं उसके पैर इतने बड़े मकान को ख़राब न कर दें, चल पड़ी। इतना बड़ा मकान, जिसमें कितनी-सारी मेज़ें हैं, कुर्सियाँ हैं, घड़ी हैं, गमले में लगा हुआ पौदा है और किताबें हैं, स्कूल-भर की किताबों से भी ज़्यादा।

कुमालो ने पत्र की ओर देखा। लिफ़ाफ़ा गन्दा था, विशेषतः वहाँ, जहाँ टिकट लगा था। निस्सन्देह न जाने कितने हाथों से यह ख़त गुज़रा होगा। वह जोहैन्सबर्ग से आया था। जोहैन्सबर्ग में तो उनके अपने कितने ही लोग थे, उनका भाई जान, जो बढ़ई था, वहाँ चला गया था और अब जोहैन्सबर्ग की सोफ़िया टाउन नामक

बस्ती में उसका अपना कोई कारोबार था। और उनकी बहन गर्टरूड भी; जो उनसे पच्चीस वर्ष छोटी, और उनके माता-पिता के बुढ़ापे की सन्तान थी, अपने छोटे बच्चे के साथ अपने उस पति की तलाश में चली गयी थी, जो जोहैन्सबर्ग की खानों में काम करने चला गया था और फिर नहीं लौटा था। और उनका एकलौता बेटा, एब-सेलाम, भी तो अपनी बुआ गर्टरूड का पता लगाने जोहैन्सबर्ग चला गया था और फिर कभी नहीं लौटा था। और वास्तव में उनके और भी न जाने कितने रिश्तेदार वहाँ थे, हालाँकि इतना निकट का कोई नहीं था। यह कहना कठिन था कि यह किसका ख़त था, क्योंकि उनमें से किसी ने बहुत समय से कोई ख़त नहीं लिखा था और उनके अक्षर पहचानना कठिन था।

कुमालो ने लिफ़ाफ़े को हाथ में इधर-उधर घुमाया। लेकिन यह अन्दाज़ लगाना बहुत कठिन था कि यह किसका पत्र है।

पत्र खोलने में कुमालो को बहुत असमंजस हो रहा था, क्योंकि यदि एक बार ऐसी चीज़ खोल ली जाय, तो उसे बन्द नहीं किया जा सकता।

कुमालो ने अपनी पत्नी को आवाज़ दी—क्या वह बच्ची चली गयी?

—वह खाना खा रही है, स्टीफ़ेन।

—अच्छा। वह एक ख़त लायी है। सोच सकती हो तुम, किसका ख़त है?

—मैं क्या जानूँ, स्टीफ़ेन।

—मैं भी नहीं जानता। लो, तुम्हीं देखो।

कुमालो की पत्नी ने लिफ़ाफ़ा हाथ में लिया और टटोला। पर टटोलने से तो पता लगा नहीं कि ख़त किसका है। उन्होंने लिफ़ाफ़े पर लिखा हुआ पता धीरे-धीरे रुक-रुककर पढ़ा :

रेवरेन्ड स्टीफ़ेन कुमाला,
सेंट मार्क्स चर्च,
इन्डाटशेनी।

साहस बटोरकर वह बोलीं—हमारे बेटे का तो नहीं है?

—नहीं,—कुमालो ने एक गहरी साँस खींची—हमारे बेटे का नहीं है।

—शायद उसके बारे में हो?

—हाँ, यह हो सकता है।

—और गर्टरूड का भी नहीं है?

—शायद मेरे भाई जान का हो!

—नहीं, जान का नहीं है।

अब दोनों चुप थे। और फिर वह बोलीं—ऐसे किसी पत्र का हम कितना इन्तज़ार किया करते हैं, और जब वह आ जाता है, तो उसे खोलते डरते हैं!

—डरता कौन है ?—कुमालो बोले—खोलो !

और पत्नी ने लिफ़ाफ़ा खोला, धीरे-धीरे, सँभलकर, क्योंकि उन्होंने ज़्यादा ख़त नहीं खोले थे। उन्होंने पत्र को खोलकर फैलाया और फिर सँभल-सँभलकर ऐसे धीरे-धीरे पढ़ना शुरू किया कि कुमालो को ठीक से सुनायी नहीं पड़ रहा था।

—ज़ोर से पढ़ो !

श्रीमती कुमालो पत्र जोर से पढ़ने लगीं, लेकिन उसी तरह जैसे कोई ज़ुलू जाति का व्यक्ति अँग्रेजी पढ़े।

दि मिशन हाउस,
सोफ़िया टाउन,
जोहैन्सबर्ग।
२५ सितम्बर, १९४६

प्रिय धर्म-भाई,

हाल में ही यहाँ जोहैन्सबर्ग में मेरी मुलाक़ात एक जवान स्त्री से हुई। उसका नाम गर्टरूड कुमालो है और मुझे पता लगा है कि वह इन्डाटशेनी के सेंट मार्क्स गिरजे के रे० स्टीफ़ेन कुमालो की बहन है। यह युवती बहुत बीमार है और इसलिए मैं यह चाहता हूँ कि आप जल्दी ही जोहैन्सबर्ग आ जायँ। आप सीधे रेवरेन्ड थियोफ़ीलस सिमांगु, मिशन हाउस, सोफ़िया टाउन के पते पर आयें। और शेष मैं आपको तभी बताऊँगा। आपके रहने के लिए मैं एक ऐसी जगह का भी प्रबन्ध रखूँगा, जहाँ आपको ज़्यादा ख़र्च नहीं करना होगा।

आपका शुभचिन्तक,
थियोफ़ीलस सिमांगु

वे दोनों चुप थे।

अन्त में वह बोलीं—तो फिर ?

—हूँ, क्या है ?

—यह पत्र, स्टीफेन ? अब तो सुन लिया न ?

—हाँ, सुना। यह पत्र साधारण नहीं है।

—हाँ, यह पत्र साधारण नहीं है ! क्या करोगे ?

—वह बच्ची खा चुकी ?

पत्नी रसोई में गयीं और लड़की को साथ लेकर लौट आयीं।

—क्यों, बेटी, तुम खा चुकीं ?

—जी, हाँ, उम्फुन्दीस।

—तो अब जाओ। पत्र पहुँचाने के लिए धन्यवाद ! और स्टोर के गोरे साहब को भी मेरी ओर से धन्यवाद कह दोगी न, बेटी ?

—जी, हाँ, उम्फ़ुन्दीस।

—तो फिर जाओ, बेटी! भगवान तुम्हारी रक्षा करे!

—धन्यवाद! आप सुखी रहें, उम्फ़ुन्दीस! आप सुखी रहें, माँ!

—सुखी रहो, बच्ची!

और बच्ची आहिस्ते-आहिस्ते, सँभाल-सँभालकर द्वार तक गयी और बाहर जाकर उसने दरवाज़ा फिर आहिस्ते-से ऐसे बन्द किया, मानो ज़ोर से बन्द करने से डरती हो।

बच्ची के चले जाने के बाद पत्नी ने कहा—अब तुम क्या करोगे, स्टीफ़ेन?

—किसके लिए क्या करूँगा?

पत्नी ने धैर्य से कहा—इस पत्र के बारे में, स्टीफ़ेन।

कुमालो ने गहरी साँस ली—ज़रा वह रुपया तो लाना जो सेंट चैड्स के लिए बचाया था।

श्रीमती कुमालो चली गयीं और कुछ देर में एक टीन का डिब्बा लिये हुए लौटीं, ऐसा डिब्बा जिसमें क़हवा या कोको बिकती है, और उसे कुमालो को दे दिया।

कुमालो ने डिब्बा हाथ में थाम लिया और कुछ देर उसे ग़ौर से देखते रहे, मानो डिब्बे में उनकी समस्याओं का कोई हल हो।

श्रीमती कुमालो बोलीं—यह करना ही होगा, स्टीफ़ेन!

—लेकिन इस रुपये को कैसे ख़र्च किया जा सकता है? यह रुपया तो एबसेलाम को सेंट चैड्स भेजने के लिए बचाया था न?

—अब एबसेलाम कभी सेंट चैड्स नहीं जायगा।

—यह तुम कैसे कह सकती हो?—कुमालो ने तेज़ी से कहा—ऐसी बात तुम कह भी कैसे सकती हो?

—वह जोहैन्सबर्ग में है,—श्रीमती कुमालो की आवाज़ में गहरी थकान थी—और जो एक बार जोहैन्सबर्ग चला जाता है, फिर कभी लौटता नहीं!

—तो तुम ऐसा कहती हो?—कुमालो बोले—शायद ऐसा ही होगा। जिस काम के लिए यह रुपया बचाया था, वह अब कभी पूरा नहीं होगा। रास्ता तुमने साफ़ कर दिया है, और जब तुमने कर ही दिया है, तो उसपर अब चलना ही होगा। और हम कहाँ जायँगे, यह तो ट्रीको (ज़ुलू जाती के देवता) ही जानें!

—मेरा क्या दोष है? मैंने रास्ता नहीं साफ़ किया। रास्ता पहले से ही साफ़ था, लेकिन तुम देखो जब न!—श्रीमती कुमालो दुखी थीं कि पति ने उनपर आरोप लगाया था।

—हमारा एक बेटा था,—कुमालो ने कठोरता से कहा—ज़ुलू जाति के लोगों के बहुत सन्तान होती हैं, मगर हमारे एक ही पुत्र था। वह भी जोहैन्सबर्ग चला गया है, और जैसा तुम कहती हो, जो लोग जोहैन्सबर्ग चले जाते हैं, वे फिर कभी

लौटते नहीं, वह फिर घर ख़त भी नहीं लिखते, वह सेंट चैड्स भी नहीं जाते, जहाँ उन्हें वह ज्ञान मिल सकता था, जिसके बिना काले लोग जीवित नहीं रह सकते। वे सब जोहैन्सबर्ग चले जाते हैं, और वहाँ जाकर खो जाते हैं और उनके घरवालों को उनका पता भी नहीं मिलता। और यह रुपया....

लेकिन श्रीमती कुमालो चुप थीं। ऐसे अवसर पर वह शब्द भी नहीं मिलते, जिनसे दिल की बात ज़ाहिर हो सके।

और कुमालो फिर बोले—और वह रुपया मेरे हाथों में है।

लेकिन फिर भी पत्नी चुप ही रहीं।

और कुमालो फिर बोले—और वह रुपया अब मेरे हाथों में है।

—चुप भी रहो न, अपने आपको क्यों दुखी कर रहे हो!

—अपने-आपको दुख दे रहा हूँ? नहीं-नहीं, वे-सब मुझे दुख दे रहे हैं, सता रहे हैं, मेरा बेटा, मेरी सगी बहन, मेरा सगा भाई। वे-सब चले जाते हैं, हमेशा के लिए, और फिर ख़त नहीं लिखते; ख़बर नहीं देते। शायद उन्हें मालूम नहीं कि हमें कितनी पीड़ा होती है, हम कितना तड़पते हैं, शायद उन्हें इसकी परवाह भी नहीं!

उनकी आवाज़ में तेज़ी थी, गुस्सा था।

—जाओ, जाकर गोरे साहब से पता लगाओ। शायद कुछ और ख़त हों, जो हमें मिले नहीं, शायद वह भेजना भूल गये, शायद वह उनके दफ़्तर में खो गये। जाकर ढूँढ़ो। कहीं हवा से उड़कर पेड़ों के बीच तो नहीं खो गये!....—श्रीमती कुमालो आवेश में चिल्ला पड़ीं—तुम मुझे भी दुखी कर रहे हो!

कुमालो को होश आया, नम्र होकर वह बोले—नहीं, मैं ऐसा नहीं चाहता कि तुम दुखी होओ!

और उन्होंने टीन का डिब्बा पत्नी की तरफ़ बढ़ा दिया—इसे खोलो!

काँपते हाथों से पत्नी ने डिब्बा लिया और खोला और मेज़ पर उलट दिया। कुछ मैले, पुराने नोट और बहुत-से चाँदी और ताँबे के सिक्के।

—गिनो,—कुमालो बोले।

श्रीमती कुमालो कष्ट से रुपये गिनने लगीं। धीरे-धीरे वह नोटों और सिक्कों को ध्यान से देखती जा रही थीं।

—बारह पाउंड, पाँच शिलिंग, सात पेंस।

—हूँ। मैं इसमें से आठ पाउंड और सब रेज़गारी लिये लेता हूँ।

—नहीं, सब ले लो, स्टीफेन। पता नहीं, परदेस में क्या ख़र्च करना पड़े, डाक्टर की फीस, अस्पताल वगैरा। सभी ले लो। और डाकख़ाने की किताब भी ले जाना, दस पाउंड उसमें भी हैं।

—वह तो मैं तुम्हारे स्टोव के लिए बचा रहा था?

—उसे तो छोड़िए अभी। डिब्बे के रुपये, जो एबसेलाम को सेंट चैड्स भेजने के लिए थे, मैंने तुम्हारे लिए नयी काली पोशाक के लिए बचाये थे, नये काले हैट और नये सफेद कालर के लिए।

—वह सब भी फिर कभी होगा। अच्छा, तो अब फिर कब जाऊँ ?

—कल। कैरिसब्रुक से गाड़ी मिल जायगी।

—हूँ ! बिशप को छुट्टी की अर्ज़ी दे दूँ, पता नहीं, कितने दिन बाहर रहना पड़े !

कुमालो कुर्सी से उठ पड़े और पल-भर को पत्नी के पास खड़े हो गये—मुझे अफ़सोस है कि मैंने तुम्हें दुख दिया। मैं गिरजे में प्रार्थना करने जा रहा हूँ।

और कुमालो चले गये। और उनकी पत्नी छोटी खिड़की से अपने पति को गिरजे की ओर धीरे-धीरे जाते हुए देखती रहीं। इसके बाद वह अपने पति की कुर्सी पर बैठ गयीं और मेज़ पर उन्होंने अपना सर टेक दिया। वह खामोश थीं, बिल्कुल खामोश, काली जाति की तमाम औरतों की तरह, जानवरों की तरह और उन-सबकी तरह जो मूक हैं।

*

हर सड़क जोहैन्सबर्ग को जाती है; लम्बी, काली रातों में न जाने कितनी गाड़ियाँ जोहैन्सबर्ग को जाती हैं। गाड़ी के हिलते हुए डिब्बों की रोशनी पहाड़ों के टूटे-फूटे ढलवानों पर पड़ती है, घास पर पड़ती है, पत्थरों पर पड़ती है, उन प्रदेशों पर पड़ती है, जहाँ लोग सोये होते हैं ! भाग्यवान हैं वे जो सो पाते हैं !

(३)

छोटी लाइन की वह खिलौने-सी छोटी गाड़ी उमज़िम कुलू की वादी में होती हुई पर्वतीय प्रदेश में चढ़ जाती है। गाड़ी कैरिसब्रुक पहुँचकर वहाँ कुछ देर रुकती है और वहाँ उतरकर आप उस वादी के सौन्दर्य को ज़रा और अच्छी तरह देख सकते हैं, जहाँ से आप आये हैं। इसकी संभावना नहीं कि गाड़ी आपको छोड़कर चल देगी, क्योंकि यहाँ बहुत कम लोग होते हैं और हर एक को पता लग जायगा कि आप कौन हैं। और अगर आप छूट भी गये, तो कोई विशेष हर्ज नहीं, क्योंकि अगर आप बहुत बूढ़े या अपाहिज नहीं हैं, तो आप थोड़ा दौड़कर गाड़ी पकड़ सकते हैं।

अगर कोहरा है, तो आपको इस विशाल वादी का कुछ भी दिखायी नहीं देगा। कुहासा आपके ऊपर-नीचे हर तरफ़ घूमेगा और गाड़ी और यात्रियों की एक अलग ही छोटी-सी दुनिया होगी। कुछ लोगों को यह-सब अच्छा नहीं लगता। वह दुनिया उन्हें उदास और ठंडी लगती है। लेकिन कुछ और लोग हैं, जिन्हें यह अच्छा लगता है, उस धुँधलके में उन्हें मोहकता और रहस्य मालूम पड़ता है, अज्ञात की

एक झलक मिलती है। कल्पना के लोक में होकर गाड़ी गुज़रती है और धुँधले शीशों में से आपको लहलहाते हुए चरागाह और जंगली झाड़ियों के हरे सब्ज़े दिखायी दे सकते हैं। और इस मौसम में आपको नीले ऐगेथैन्थस भी दिखायी देंगे, जंगली वाटसोनिया भी और लपटों की तरह सुर्ख पोकर के फूल भी और शायद कभी किसी वादी में ऐरम भी खिलते हुए दिखायी पड़ जायँ और इन-सबके पीछे घनी झाड़ियों की एक दीवार-सी खड़ी है, जो उस घने कुहासे में भूत-जैसी लगती है।

गाड़ी उस विशाल वादी में होकर ऊपर चढ़ रही हो, तो कैरिसब्रुक स्टेशन पर उसका इन्तज़ार करने में बड़ा मज़ा आता है। जो लोग उस गाड़ी की सीटी की आवाज़ें सुनने के अभ्यस्त हैं, वे तो हर सीटी पर यह भी बता सकते हैं कि अब गाड़ी वहाँ होगी, किस सड़क पर किस खेत के पास से होकर गुज़र रही होगी, या कौन नदी पार कर रही होगी।

हालाँकि स्टीफेन कुमालो गाड़ी आने से घंटे-भर पहले से स्टेशन पर हैं, फिर भी वह यह सब-कुछ देख सुन नहीं रहे हैं। बहुत दूर जाना है और बहुत-सा धन खर्च करना है। पता नहीं, उनकी बहन कितनी बीमार हो और उसके इलाज में कितना रुपया खर्च हो। और अगर वह उसे साथ वापस लायें, तो उसमें भी तो काफी रुपया ख़र्च होगा। और जोहैन्सबर्ग तो बहुत विशाल नगर है। लोग तो कहते हैं कि वहाँ इतनी सड़कें हैं कि दिन-दिन-भर अगर उनपर चलते रहो, तो भी किसी एक सड़क पर दुबारा चलने का अवसर नहीं आ सकता। और वहाँ बसें भी हैं, बहुत-सी, यहाँ की तरह नहीं, जहाँ केवल एक ही बस है। वहाँ तो न जाने कितनी ही बसें हैं। दस-बीस में से एक ही ऐसी होगी, जो आपके काम की हो। और अगर आप ग़लत बस पर बैठ गये, तो पता नहीं, कहाँ पहुँच जायँ। फिर सड़क पार करना भी तो ख़तरे से ख़ाली नहीं है, हालाँकि सड़क पार करना ही पड़ता है। जब इन्डाटशेनी का पांज़ा जोहैन्सबर्ग में बहुत बीमार था और मरनेवाला था, तब उसकी बीवी अपने बेटे माइकेल को साथ लेकर उसे देखने गयी थी और उसकी आँखों के सामने ही उसका बेटा सड़क पार करते-करते दबकर मर गया था। बारह वर्ष की उम्र और घबराहट में बच्चा ख़तरे में चला गया, लेकिन उसकी माँ, संकोच में, मोड़ पर ही ठिठकी हुई खड़ी रही। और उसकी आँखों के सामने ही उस बड़ी-सी लारी से दबकर उसका बच्चा मर गया!

और इस सबके अलावा वह महान आशंका, वह सबसे महान आशंका, जिसके विषय में अधिक बोला भी तो नहीं जा सकता। उनका बेटा कहाँ होगा? अब वह ख़त क्यों नहीं लिखता?

आखिरी सीटी सुनायी पड़ती है और गाड़ी आखिर स्टेशन के पास आ गयी।

कुमालो उस व्यक्ति से बोले, जो उन्हें स्टेशन पहुँचाने आया था—अच्छा, भाई, धन्यवाद।

—आपकी सेवा करना तो मेरा सौभाग्य था, उम्फुन्दीस। इतना भारी बैग आप अकेले कैसे ला सकते थे?

गाड़ी और नज़दीक आ गयी, शीघ्र ही वह प्लेटफ़ार्म पर भी लग जायगी।

—उम्फुन्दीस!

—कहो, भाई।

—उम्फुन्दीस, आप एक कृपा करेंगे?

—बोलो!

—आप सिबेको को तो जानते हैं न?

—हाँ-हाँ!

—सिबेको की लड़की यहाँ इकोपो में स्मिथ साहब के घर में नौकरानी थी। जब स्मिथ की लड़की शादी होने के बाद जोहैन्सबर्ग चली गयी, तो सिबेको की बेटी भी उसके साथ ही काम करने वहाँ चली गयी। साहब की बेटी का नया पता यह है। दस-बारह महीने से सिबेको को अपनी बेटी का कोई समाचार नहीं मिला है। वह चाहता है कि आप वहाँ पहुँचकर अगर उसका पता लगा सकें, तो बहुत कृपा होगी।

कुमालो ने वह मैला कागज़ हाथ में लेकर देखा, जिसपर स्मिथ की ब्याही बेटी का पता लिखा था।

—स्प्रिंग्स्! हूँ, जगह का नाम तो मैंने सुना है। लेकिन यह जगह खास जोहैन्सबर्ग में तो है नहीं, यद्यपि पास में ही कहीं है। अच्छा, भाई, गाड़ी आ गयी है, मैं पता लगाने का पूरा प्रयत्न करूँगा।

कुमालो ने पते का कागज़ अपने बटुए में रख लिया और वह दोनों गाड़ी देखने लगे। दक्षिणी अफ्रीका की और गाड़ियों की तरह वह भी काले मुसाफ़िरों से ही भरी हुई थी। इस प्रदेश के गोरे साहब तो अब रेल से सफ़र बहुत कम करते थे, क्योंकि उन-सबके पास अपनी मोटरें थीं।

कुमालो उस डिब्बे में घुसे, जिसमें उनकी जाति के काले लोग थे। डिब्बे में उन्हीं की जाति के लोगों की भीड़ थी, कुछ अजीब ढंग की पश्चिमी पोशाक पहने थे, कुछ अपने मिले-जुले कपड़ों पर कम्बल लपेटे थे, कुछ कम्बलों के नीचे अर्द्धनग्न थे, क्योंकि मूल निवासियों की पोशाक अर्द्धनग्न ही होती है और यह अर्द्धनग्न पोशाक उस जाति की स्त्रियाँ ही पहने थीं। पुरुष अमूमन अब अपनी मूल पोशाक पहनकर सफर नहीं करते थे।

दिन कुछ गर्म था और डिब्बे में तेज़ गन्ध थी। पर कुमालो नम्र और सीधे

स्वभाव के आदमी थे, उन्हें इसकी चिन्ता अधिक नहीं थी। लोगों ने उनको पादरी की पोशाक पहने देखकर, उनके लिए कुछ जगह कर दी थी। कुमालो ने डिब्बे में एक निगाह दौड़ायी, शायद ऐसा कोई व्यक्ति हो, जिससे वह बातें कर सकें, पर अपनी श्रेणी का कोई व्यक्ति उन्हें दिखायी नहीं दिया। वह अपने साथी से बिदा लेने के लिए खिड़की की तरफ़ मुड़े।

—सिबेको मेरे पास खुद क्यों नहीं आया?—उन्होंने पूछा।

—वह डरता था, उम्फ़ुन्दीस। वह हमारे गिरजे का अनुयायी नहीं है।

—तो क्या हमारी जाति का भी नहीं है? क्या मुसीबत में इन्सान केवल उन्हीं की सहायता लेता है, जो उसके गिरजे के अनुयायी हों?

—मैं उससे यह कह दूँगा, उम्फ़ुन्दीस।

कुमालो की आवाज़ और ऊँची हुई, बच्चों की तरह या उनकी तरह, जो चाहते हैं कि लोग उनकी बात सुनें—सिबेको से कह देना कि जोहैन्सबर्ग पहुँचने पर मैं स्प्रिंग्स् अवश्य जाऊँगा और उसकी लड़की का पता लगाने की कोशिश करूँगा। लेकिन वहाँ मुझे काफ़ी व्यस्त रहना होगा। जोहैन्सबर्ग में मुझे बहुत-से काम करने हैं।—वह खिड़की की तरफ़ से मुड़ गये और ऐसे बोले, मानो अपने-आपसे ही बातें कर रहे हों, पर वास्तव में इस तरह कि लोग सुनें—हमेशा ऐसा ही होता है।

—मैं सिबेको की ओर से आपको धन्यवाद देता हूँ, उम्फ़ुन्दीस!

गाड़ी ने सीटी दी और झटके से चलने को हुई। कुमालो एकाएक गिरने को हुए, फिर सँभलकर बोले—अच्छा, भाई, बिदा!

—बिदा, उम्फ़ुन्दीस। आप सुखी रहें!

कुमालो अपनी जगह पर गये और लोगों ने कुतूहल और आदर से उनकी तरफ़ देखा, उस व्यक्ति की ओर जिसके लिए, जोहैन्सबर्ग जाना कोई नयी बात नहीं थी। गाड़ी और तेज़ हो गयी। और पहाड़ों के शिखरों पर और वादी के ढलवानों पर से होती हुई और झाड़ियों और फूलों को पीछे छोड़ती हुई गाड़ी वैटिल के खेतों के अन्धकार में घुस गयी। स्टेनटान पीछे छोड़कर अब वह इकोपो के प्रदेश में बढ़ गयी थी।

सफ़र शुरू हो गया था, और इसके साथ वह वेदना, वह पीड़ा, और वह भय, वह महान भय वापस लौट आया था, अज्ञात का भय, उस बड़े शहर का भय, जहाँ छोटे-छोटे लड़के सड़क पार करते हुए दबकर मर जाते थे, और गर्टरूड की बीमारी का भय। और उस भय के भी नीचे दूसरा भय, अपने बेटे के विषय में आशंका। और उस भय के भी नीचे, अन्तर में, एक दूसरा भय, शंका, पीड़ा, वेदना, उस व्यक्ति की, जिसके लिए वह संसार अजनबी है, जिसमें वह रहता है, जो उसका नहीं है, जिसका वह नहीं है, जिसकी अपनी दुनिया उससे दूर हटती जा रही है, ख़त्म हो रही है, टूट रही है, बिखर रही है, जो कभी वापस लौटकर नहीं आयगी।

और अभी से उस व्यक्ति के घुटने कमजोरी से काँप रहे थे, जो कुछ देर पहले अपने लिए सम्मान से भरे इन बैठे हुए लोगों के सामने थोड़ा-सा दंभ दिखा चुका था।

और नम्र होकर कुमालो ने जेब से बाइबिल निकाली और पढ़नी शुरू कर दी। केवल उसी में एक ऐसा संसार था, जो सत्य था।

(४)

इकोपो के बाद वह खिलौने-सी गाड़ी दूसरे पर्वतों में पहुँच जाती है, जहाँ ल्यूफाफा ईस्टवोल्ड्स और डानीब्रुक की हरी-भरी पर्वत-मालाएँ हैं। डानीब्रुक से बड़ी लाइन उमकोमास की विशाल वादी में चली जाती है। उस वादी में दक्षिणी अफ्रीका की मूल जातियाँ रहती हैं और वहाँ की धरती रुग्ण है, इतनी रुग्ण कि शायद कभी ठीक न हो सके। उस घाटी में से निकलकर गाड़ी फिर पहाड़ों में चढ़ जाती है, हेमू, हेमू होती हुई इलैंडस्काप पहुँच जाती है। और रास्ते में एडेनडेल पड़ता है, उमसिनदूसी की वादी पड़ती है और अँधेरी मजदूर बस्तियों को पार करती हुई गाड़ी पीटर मारिट्जबर्ग के रम्य नगर में पहुँच जाती है। यहाँ आपको वह शानदार गाड़ी मिलेगी, जो आपको जोहैन्सबर्ग ले जायगी। यह गोरे साहबों की बनायी हुई वह अद्भुत गाड़ी है, जिसमें इंजिन नहीं होता, बस गाड़ी के ऊपर एक बन्द डिब्बा-सा होता है जो रास्ते-भर में फैले हुए ऊपर लगे धातु के रस्सों से विद्युत-शक्ति लेता रहता है।

फिर हिल्टन, लायन्स रिवर, बालगोवाँ, रोज़ेटा, मूई रिवर पर चढ़ते हैं। वह ऐसे सुहावने पहाड़ी प्रदेश हैं, जिनकी सुन्दरता के गीत नहीं गाये जा सकते। ये वह मैदान हैं, जहाँ पहले कभी मूल जातियों के शक्तिशाली योद्धा अपना पराक्रम दिखाते थे और अब काली-काली रातों में गाड़ी उनपर से धड़धड़ाती हुई निकल जाती है। फिर ड्रेमेन्सबर्ग पर चढ़िए और उसके बाद समतल मैदान।

गाड़ी के हिलते हुए डिब्बे में नींद टूटती है और भोर से पहले का झुटपुटा नज़र आता है। इंजिन फिर जोड़ दिया गया है और अब ऊपर रस्से नहीं रहे। यह एक नया और अजनबी प्रदेश है, जो सृष्टि की हदों तक फैला हुआ है। यहाँ की जगहों के नाम भी नये-नये हैं और ऐसे हैं, जिन्हें अंग्रेजी पढ़ा जुलू बोल भी नहीं सकता। वे सब 'अफ्रीकान' भाषा में हैं, वह भाषा, जो उसने अब तक कभी नहीं सुनी है।

—खानें! वह देखो, खानें!—लोग चिल्लाते हैं। उनमें से बहुत-से लोग खानों में काम करने जा रहे हैं।

तो क्या खानें यही हैं? यह दूर पर दिखायी पड़नेवाली सफ़ेद-चपटी पहाड़ियाँ!

डिब्बे में जो यात्री आज हैं, वे कल नहीं थे, इसलिए वह निःसंकोच यह प्रश्न पूछ सकते हैं।

—वह तो खान में से निकली हुई चट्टान है। इसमें से सोना निकाला जा चुका है, उम्फुन्दीस।

—चट्टान कैसे निकल आती है ?

—हम अन्दर घुसकर ज़मीन खोदते हैं और जब खोदना मुश्किल होता है, तो गोरे लोग बारूद की सलाखों से उसे उड़ा देते हैं। हम लोग फिर जाकर उसे साफ़ करते हैं, गाड़ियों पर लाद देते हैं और वह गाड़ियाँ एक पिंजड़ेनुमा डिब्बे में लदकर एक लम्बी, चिमनी में होती हुई ऊपर चली जाती है। चिमनी बहुत लम्बी होती है, इतनी लम्बी कि मैं बता नहीं सकता।

—लेकिन वह डिब्बा ऊपर तक कैसे चढ़ता है ?

—वह बड़े चक्के में लपेट दिया जाता है।....ठहरिए मैं दिखाता हूँ।

कुमालो चुप हैं। उनके दिल की धड़कनें तेज हो गयी हैं भय और उत्तेजना से।

—हाँ-हाँ, वह देखिए ! वह पहिया है, उन्फुन्दीस !

लोहे का एक विशाल ढाँचा आसमान में सर उठाये खड़ा है और उसके ऊपर एक पहिया है, जो ऐसी तेज़ी से घूम रहा है कि आँखों को भ्रम होता है। और बड़ी-बड़ी इमारतें हैं, पाइप से उड़ती हुई भाप है और तेज़ी से इधर-उधर जाते हुए आदमी....एक ऊँचा सफ़ेद पहाड़ और उसपर चढ़ती हुई छोटी-छोटी गाड़ियाँ और ज़मीनपर मोटरकार, लारी, बसों का ज़बरदस्त बवन्डर !

—क्या यही जोहैन्सबर्ग है ?—कुमालो ने पूछा।

आत्मविश्वास में भरे कुछ लोग हँस दिये।

—यह तो कुछ भी नहीं है। जोहैन्सबर्ग में इमारतें हैं, इतनी ऊँची....—कितनी ऊँची हैं, यह वह बता नहीं पाये।

कोई और बोला—भाई, उस ऊँचे सतर खड़े हुए पहाड़ को आप जानते हैं, जो मेरे बाप के मकानों के पीछे हैं। बस, इतने ऊँचे !

एक आदमी ने सर हिलाकर हामी भरी।

लेकिन कुमालो कुछ नहीं बोले। वह उस पहाड़ के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे।

और इसके बाद तो ऊँची-ऊँची इमारतों और सफेद पहाड़ों का ताँता-सा बँध गया। अनन्त इमारतें, सफेद पहाड़, बड़े-बड़े चक्के, अनगिनत सड़कें, मोटरें, लारियाँ, बसें....

—यह तो ज़रूर जोहैन्सबर्ग है !

लेकिन वे-सब फिर हँस पड़े।

वह कुछ ऊब-से रहे थे।

—यह सब तो कुछ भी नहीं,—वे बोले।

अद्भुत! आश्चर्य! पटरियाँ, पटरियाँ, दायें-बायें हर तरफ़, अनगिनत, अनगिनत! इतनी कि जिनकी गिनती करना असम्भव था।

एक गाड़ी उनके बराबर की पटरी पर से धड़धड़ाती हुई आगे निकल गयी और उसकी आवाज़ से कुमालो उछल पड़े। और दूसरी तरफ़ पटरी पर एक दूसरी गाड़ी धड़धड़ाती हुई पीछे निकलो और धीरे-धीरे ओझल हो गयी। एक के बाद एक स्टेशन, कल्पना से कहीं अधिक! सैकड़ों की तादाद में लोग गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हैं, लेकिन गाड़ी आगे बढ़ती चली जाती है और वह निराश खड़े-के-खड़े रह जाते हैं।

इमारतें और ऊँची होती जाती हैं, सड़कों का जाल और उलझता जाता है।.... इस-सब में लोग भटक न जाते होंगे? अँधेरा हो चला है और सड़कों पर बत्तियाँ जलने लगी हैं।

एक आदमी ने इशारा किया—उम्फुन्दीस, यह आया जोहैन्सबर्ग!

और कुमालो ने ऊँचे-ऊँचे मकान देखे और उनपर पड़ती हुई न जाने कितनी हरी-लाल बत्तियाँ हैं, जो उन मकानों के बराबर ही ऊँची हैं। जलती और बुझ जाती हैं। एक बोतल में से पानी तब तक निकलता रहता है, जब तक कि गिलास भर जाता है। तब बत्तियाँ बुझ जाती हैं। जब वे फिर जलती हैं, तो देखो, देखो, बोतल भरी है और सीधी है, और गिलास खाली है। बोतल फिर खाली होती है। लिखा है, काली और सफेद, काली और सफेद, गोकि वह लाल और हरा है। यह सब समझ पाना मुश्किल है।

कुमालो चुप हैं, उनका सर दर्द कर रहा है, उन्हें भय लग रहा है। स्टेशन आनेवाला है, वह विशाल स्टेशन, जिसके गर्भ में न जाने कितने 'टनेल' हैं! स्टेशन के ऊपर एक फैली हुई लम्बी-चौड़ी छत है, जिसके नीचे गाड़ी रुकती है। वहाँ हज़ारों आदमी हैं। सीढ़ियाँ ज़मीन के अन्दर तक उतरती चली जाती हैं और अन्दर बने हुए टनेल तक पहुँच जाती हैं। काले आदमी, गोरे आदमी आ रहे हैं, जा रहे हैं, इतने कि टनेल ठसाठस भरा है। अपने बैग को ज़ोर से थामे हुए कुमालो भीड़ में सँभल-सँभलकर चलने लगे, ताकि किसी से टकरा न जायँ। इसके बाद एक बड़ा-सा हाल, इसके बाद कुछ सीढ़ियाँ और फिर बाहर, स्टेशन के बाहर सड़क पर। ज़बरदस्त कोलाहल है और एक-के-बाद-एक इतनी कारें, मोटरें, बसें हैं, जिनकी उन्होंने कभी कल्पना तक न की थी। भीड़ का ज्वार उमड़ता हुआ सड़क के एक ओर

से दूसरी ओर पहुँच गया, लेकिन भय के कारण कुमालो के क़दम नहीं बढ़े। पांजा के बेटे की मृत्यु की घटना उन्हें याद थी। और बत्तियाँ हरी से लाल और लाल से फिर हरी हो रही थीं। जब बत्ती हरी हो, तब सड़क पार की जा सकती है, यह कुमालो ने सुना था। वह जब सड़क पार करने को बढ़े कि एक बड़ी-सी बस घड़-घड़ाती हुई सामने से निकल गयी। कोई नियम अवश्य है, जो समझ में नहीं आता। कुमालो ने क़दम वापस ले लिया। वह दीवार से सटकर खड़े हो गये और इसलिए कि कोई कुछ और न समझ ले, ऐसी मुद्रा बना ली, मानो वह किसी का इन्तज़ार कर रहे हैं। दिल ज़ोर से बच्चों की तरह धड़क रहा है और दिल के धड़कने को किसी-तरह नहीं रोका जा सकता।....टीको ! टीको ! मेरी रक्षा करना, टीको !

*

एक जवान आदमी कुमालो के पास आया और किसी ऐसी अजनबी भाषा में बोला, जो कुमालों की समझ में नहीं आयी।

—मैं तुम्हारी बात समझा नहीं, भाई !

—आप कोस जाति के हैं, उम्फ़ुन्दीस ?

—नहीं, मैं ज़ुलू जाति का हूँ।

—आप जाना कहाँ चाहते हैं, उम्फ़ुन्दीस ?

—मैं सोफ़िया टाउन जाना चाहता हूँ।

—मेरे साथ आइए, मैं बता दूँ।

कुमालो इस दया-भाव के लिए उस युवक के कृतज्ञ थे, लेकिन फिर भी उन्हें काफ़ी भय लग रहा था। अच्छा ही था कि युवक ने यह नहीं कहा था कि, चलिए, मैं आपका 'बैग' भी लिये चलता हूँ। लेकिन फिर भी युवक टूटी-फूटी ज़ुलू में शिष्टता-पूर्वक बात कर रहा था।

बत्तियाँ हरी हो गयीं और कुमालो को साथ लेकर युवक ने सड़क पार करनी शुरू की। सामने से एक कार तेज़ी से आयी, लेकिन युवक तनिक भी नही हिच-किचाया और कार रुकी रह गयी। इससे मन में आत्माविश्वास पैदा हुआ। इसके बाद बड़ी-बड़ी इमारतों के बीच वह किधर मुड़े, कहाँ गये, यह कुमालो को पता न लगा, लेकिन बैग थामे-थामे कुमालो का हाथ थक गया था। और वह लोग ऐसी जगह आकर रुक गये, जहाँ बहुत-सी बसें खड़ी थीं।

—आपको लाइन में खड़ा होना पड़ेगा, उम्फ़ुन्दीस। टिकट के दाम तो हैं न आपके पास ?

जल्दी से, उत्सुकतापूर्वक कुमालो ने बैग ज़मीन पर रखकर जेब से बटुआ निकाला, मानो वह उस युवक को यह दिखाना चाहते हों कि वह उसकी दया के लिए कृतज्ञ हैं।

बस का किराया कितना होगा, यह पूछते उन्हें घबराहट हो रही थी, इसलिए उन्होंने जेब से एक पाउंड का नोट निकाला।

—तो मैं टिकट आपका ला दूँ। मैं टिकट-घर जा रहा हूँ, आप लाइन न छोड़ें।

—धन्यवाद!—कुमालो ने कहा।

पाउंड का नोट लेकर युवक कुछ दूर चलकर सड़क के मोड़ तक गया। जब वह मुड़ा, तो कुमालो को डर लगा। इधर लाइन के यात्री धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे और साथ ही अपना बैग हिफ़ाज़त से थामे कुमालो भी बढ़ रहे थे। आगे, और आगे, बस, कुछ ही देर में वह मोटर में घुसनेवाले थे, लेकिन अब तक उन्हें टिकट नहीं मिला था। एकदम जैसे उन्हें कुछ ख़्याल आया और वह लाइन छोड़कर खुद मोड़ की तरफ़ बढ़े, लेकिन उस युवक का कहीं निशान नहीं था। हिम्मत करके वह एक वयस्क व्यक्ति के पास गये, जो साफ़ और अच्छे कपड़े पहने था।

—भाई, टिकट-घर किस तरफ़ है?

—कौन-सा टिकट-घर, उम्फुन्दीस?

—बस का टिकट-घर?

—बस का टिकट तो बस के अन्दर ही मिलता है, उसका कोई टिकट-घर नहीं है।

आदमी सज्जन मालूम पड़ता था। कुमालो ने उससे नम्रतापूर्वक कहा—मैंने एक युवक को एक पाउंड का नोट दिया था और वह मुझसे कह गया था कि वह टिकट-घर से टिकट लाने जा रहा है।

—आपको धोखा दिया गया, उम्फुन्दीस। आपको वह युवक दिखायी दिया? नहीं, वह आपको अब दिखायी नहीं देगा। आप मेरे साथ आइए, आप कहाँ जायँगे? सोफ़िया टाउन?

—जी, हाँ, सोफ़िया टाउन, मिशन हाउस जाना है।

—अच्छा, मैं भी आप ही के ऐंग्लिकन गिरजे का अनुयायी हूँ। यहाँ मैं किसी का इन्तज़ार कर रहा था, लेकिन अब नहीं करूँगा, आप ही के साथ चलता हूँ। क्या आप रेवरेन्ड सिमांगु को जानते हैं?

—जी हाँ, उन्होंने मुझे एक ख़त लिखा था।

वे दोनों बस की लाइन के अन्त में खड़े हो गये। और कुछ देर में बस में बैठ गये। और कुछ ही देर में उनकी बस भी सड़क के विशाल कोलाहल में शामिल हो गयी। इतनी भीड़, इतना कोलाहल, इतनी गति और ड्राइवर था कि इतमीनान से सिगरेट पीता हुआ मोटर चला रहा था। उसके इस साहस की तो

(५)

—मैंने आपके रहने का प्रबन्ध श्रीमती लिथेबी के मकान में कर दिया है, मित्र। वह ज्यादा अवस्था की हैं और हमारे ही गिरजे की भी हैं। वैसे तो वह मुसूतो जाति की हैं, लेकिन ज़ुलू भी अच्छी बोल लेती हैं। फिर एक पादरी को अपने यहाँ ठहराने में वह बहुत सम्मान समझेंगी। केवल तीन शिलिंग प्रति सप्ताह देने होंगे। खाना आप हमारे मिशन के लोगों के साथ खा सकते हैं। अच्छा, चलिए, खाने की घंटी बज गयी। आप हाथ धोइएगा ?

जहाँ वे हाथ-मुँह धोने गये, वह बहुत साफ़-सुथरा, आधुनिक ढंग का ग़ुसल-ख़ाना था, हाथ धोने का सफेद तसला, ठंडा और गर्म पानी, पुराने मगर दूध-से सफ़ेद तौलिये और आधुनिक ढंग का ही शौचगृह, निवृत्त होने पर एक डंडी को दबाओ और पानी इतनी ज़ोर से घड़घड़ाकर निकलता था कि मालूम पड़ता, जैसे कोई चीज़ टूट गयी है। अगर आप इसके आदी न हों, तो उस शोर से घबरा ही जायँ।

इसके बाद वे खाने के कमरे में गये, जहाँ एक बड़ी-सी मेज़ पर भोजन लगा था। वहाँ बहुत-से पादरी थे, गोरे भी, काले भी, और वे सब प्रार्थना करने के बाद साथ-साथ भोजन करने बैठ गये। मेज़ पर इतनी प्लेटें, काँटे, छुरियाँ देखकर कुमालो घबरा गये, लेकिन दूसरों को देख-देखकर उन्होंने किसी तरह खाना शुरू कर दिया।

कुमालो के बराबर एक नौजवान अंग्रेज पादरी बैठा था, जिसके गालों पर स्वस्थ यौवन का गुलाबीपन था। उसने कुमालो से पूछा कि वह कहाँ से आये हैं और उस जगह की हालत क्या है ?

एक और अफ्रीकी पादरी बोल पड़ा—मैं भी इकोपो का ही रहनेवाला हूँ और मेरे माता-पिता अब तक वहीं रहते हैं, ल्यूफ़ाफ़ा की वादी में। वहाँ के क्या हाल हैं ?

और कुमालो ने उन-सब को अपने देश के बारे में बताया, वहाँ के बड़े-बड़े पर्वतों और वादियों के बारे में बताया। कुमालो की आवाज़ में ओज था उन वादियों, उन पहाड़ों, उस धरती के प्रेम का, क्योंकि सब उनकी बातें मुग्ध होकर सुन रहे थे। और कुमालो ने यह भी बताया कि वही ज़मीन अब बीमार है, वह घास सूखकर ख़त्म हो चुकी है और जानवर पहाड़ों पर और वादियों में इधर-से-उधर निराश भटकते रहते हैं। अब वह देश केवल वृद्धों और औरतों का है, माताओं और बच्चों का है, मक्का सर-बराबर ही ऊँची होती है। जातियाँ बुरी तरह टूट रही हैं, घर टूट रहे हैं, आदमी टूट रहा है। लोग जब घर छोड़कर चले जाते

हैं, तो बहुत-से लौटते ही नहीं और बहुतेरे फिर ख़त नहीं लिखते हैं। और ऐसा केवल इन्डाटशेनी में ही नहीं हो रहा है, ल्यूफ़ाफ़ा में, इन्हलाविनि में, उमकोमास में, उमज़िम कुलू में भी हो रहा है। लेकिन कुमालो ने गर्टरूड और एबसेलाम के बारे में कोई बात नहीं की।

और यूँ लोग देर तक बात करते रहे, बीमार धरती के बारे में, टूटते हुए घरों के बारे में, बिखरती हुई जातियों के बारे में और उन जवान लड़कों और लड़कियों के बारे में, जो घर छोड़कर चले जाते हैं और अपने तमाम रीति-रिवाज भूलकर आलसी, ठलुआ और दुश्चरित्र जीवन व्यतीत करते हैं। यहाँ आकर बच्चे अपराधी बन जाते हैं, युवक और भी ज्यादा ख़तरनाक अपराधी बन जाते हैं। जोहैन्सबर्ग के गोरे लोग इन काले अपराधियों से बुरी तरह डरते हैं। एक ने उठकर कुमालो को 'जोहैन्सबर्ग मेल' नामक दैनिक की एक प्रति दिखायी। मोटे-मोटे, काले अक्षरों में छपा था, सूनसान मकान में चोरी, बूढ़े पति-पत्नी को चोरों ने मारा, चार देशी अपराधी गिरफ्तार....

—यह सब तो रोज़ की ही घटनाएँ हैं, यहाँ चोरी, वहाँ मारपीट। और यहाँ के यूरोप-निवासी ही इससे नहीं डरते हैं, न हमें इन बातों का भय है। यहाँ सोफ़िया टाउन तक में, कुछ ही दिन हुए, इन जवानों के एक गिरोह ने हमारी ही जाति की एक लड़की पर हमला किया; उसका रुपया-पैसा और सामान तो वह ले ही गये और अगर लोग दौड़कर न आ जाते, तो वह उसके साथ बलात्कार भी करते।—एक अफ्रीकी पादरी बोला।

फिर अंग्रेज़ पादरी बोला—यहाँ जोहैन्सबर्ग में आपको बहुत कुछ मालूम होगा। आपके ही प्रदेश में नहीं, यहाँ भी बर्बादी हो रही है। आपके प्रदेश के बारे में और कुछ भी जानना चाहता हूँ, लेकिन अभी तो मैं चलूँगा। आप से फिर बातें होंगी।

खाना खत्म हो गया था। सिमांगु ने कहा कि वह अपने मेहमान को अब अपने कमरे में ले जायँगे।

—चलिए अभी हमें काफ़ी बातें करनी हैं।

वे दोनों कमरे में पहुँच गये। और जब सिमांगु ने किवाड़ बन्द कर दिये, और वे दोनों बैठ गये, तो कुमालो बोले—अधीरता के लिए मुझे क्षमा कीजिएगा, लेकिन मैं शीघ्र से-शीघ्र अपनी बहन का हाल जानना चाहता हूँ!

—हाँ हाँ, आप चिन्तित तो अवश्य होंगे। आप भी सोचते होंगे, मैं कितना बेफिकरा हूँ! लेकिन अगर आप से पहले एक प्रश्न करूँ, तो बुरा तो न मानेंगे? आपकी बहन यहाँ, जोहैन्सबर्ग, क्यों आयी थीं?

प्रश्न से कुमालो यद्यपि कुछ विचलित हुए, मगर उन्होंने आशापालन करते हुए उत्तर दिया—उसका पति यहाँ की खानों में काम करने के लिए भरती हुआ था, उसी की तलाश में वह यहाँ आयी थी। उसका पति नियत समय तक घर नहीं लौटा

और न उसने खत लिखा। उसे यह भी नहीं पता था कि वह जीवित है या मर गया। इसी कारण वह अपने बच्चे को साथ लेकर उसकी तलाश में चली आयी।—इस-पर जब सिमांगु चुप रहे, तो कुमालो ने चिन्तित होकर पूछा—क्यों, क्या वह बहुत बीमार है?

सिमांगु ने बहुत गम्भीर आवाज़ में कहा—हाँ, वह बहुत बीमार है। लेकिन यह वैसी बीमार नहीं है, जो बीमारी उसे है, वह किसी भी शारीरिक व्याधि से ज्यादा भयंकर है। मैंने आपको यहाँ इसलिए बुलाया है कि एक तो वह अकेली औरत है, दूसरे उसके भाई पादरी हैं और....पता नहीं, वह अपने पति को ढूँढ़ पायी या नहीं, लेकिन अब उसका कोई पति नहीं है।—सिमांगु ने कुमालो की तरफ़ कुछ देर तक देखा—बल्कि यह कहना ज्यादा सही होगा कि अब उसके बहुत से पति हैं।

कुमालो केवल उत्तर में यही कह पाये—टीको! टीको!

सिमांगु ने बात जारी रखी—वह क्लेयरमान्ट में रहती है, जो यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है। वह जगह इस नगर की सबसे ख़राब जगहों में से है। पुलीस के हटते ही वहाँ की गलियों में शराब बहती दिखायी पड़ती है। उस बस्ती में केवल उसी की दुर्गन्ध हमेशा रहती है।

सिमांगु कुमालो के और निकट आकर बोले—शराब मैं भी पीता था, लेकिन वह अच्छी शराब होती थी, ढंग से बनी हुई, लेकिन अब मैंने शराब छूने की कसम खा ली है। यहाँ जो शराब बनती है, उसका नशा बहुत तेज़ होता है और उसे न जाने किन-किन चीजों से और ज्यादा कड़ा बनाया जाता है। आपकी बहन का भी यही काम है। वह भी ऐसी ही शराब बनाती है और बेचती है। आपसे यह सब कहते हुए मुझे बहुत पीड़ा हो रही है, लेकिन इस समय मैं आपसे कुछ भी नहीं छुपाऊँगा। पैसे की ख़ातिर यह औरतें किसी भी आदमी को अपना शरीर बेच देती हैं। आपकी बहन के घर में एक आदमी की हत्या हो चुकी है। वहाँ लोग शराब पीते हैं, जुआ खेलते हैं, मार-पीट होती है। वह कई बार जेल भी जा चुकी है।

सिमांगु कुर्सी पर उठंगकर बैठ गये और मेज़ पर रखी हुई किताब को इधर-उधर करने लगे—इन सब बातों से आपको तो बहुत चोट पहुँची होगी।

कुमालो ने चुपचाप सर हिला दिया।

सिमांगु सिगरेट ले आये—आप सिगरेट पियेंगे?

कुमालो ने सर हिलाकर मना कर दिया—मैं सिगरेट नहीं पीता।

—सिगरेट पीने से कभी-कभी शांति मिलती है। लेकिन मनुष्य को तो एक दूसरी प्रकार की शांति चाहिए। उसके बाद सिगरेट पीकर वह उसका आनन्द उठाता है। लेकिन जोहैन्सबर्ग में इस प्रकार की शांति पाना कभी-कभी मुश्किल होता है।

—सिर्फ जोहैन्सबर्ग में ही क्या, हर जगह यही बात है। वह दैवी शांति हमें कहीं नहीं मिल पाती।

और फिर दोनों चुप हो गये, कुछ इस तरह मानो कोई ऐसी बात कह दी गयी है, जिसके बाद दूसरी बात कहना मुश्किल है। कुछ देर बाद कुमालो बोले—और उसका बच्चा कहाँ है?

—बच्चा भी वहीं रहता है। लेकिन वह बच्चों के रहने की जगह तो हरगिज़ नहीं है। आपको यहाँ बुलाने का एक कारण यह भी था, अगर माँ को उस नरक से निकालना सम्भव न हो, तो किसी हालत से बच्चे को तो निकाल ही सकते हैं।—सिमांगु बोले।

—कहाँ है यह स्थान?

—पास ही में। कल मैं आपको वहाँ ले चलूँगा।

—मुझको एक दूसरा महान दुख भी है।

—कहिए।

—हाँ, आपको बताना ही अच्छा होगा,—लेकिन इतना कहकर कुमालो फिर चुप हो गये, जैसे वह कुछ कहना चाहते हों, पर कह न पा रहे हों।

उनकी उलझन देखकर सिमांगु ने कहा—कोई जल्दी नहीं, आप थोड़ा रुककर बताइएगा।

—हाँ, बताना आसान नहीं है। वह हमारा सबसे गहरा दुख है।

—शायद आपका बेटा भी यहाँ भाग आया है, या बेटी?

—बेटा।

—कहिए, मैं सुन रहा हूँ।

—उसका एबसेलाम नाम था। वह भी मेरी बहन को ढूँढ़ने घर से चला आया था, लेकिन फिर वह लौटा नहीं। और कुछ समय बाद उसने पत्र लिखना भी बन्द कर दिया। हमारे, मेरे और उसकी माँ के, पत्र हमारे पास वापस लौट आये। और अब आपसे यह-सब सुन लेने के बाद तो मुझे और ज़्यादा भय लग रहा है।

—भाई, हम उसे ढूँढ़ने की पूरी कोशिश करेंगे। शायद आपकी बहन को कुछ मालूम हो। आप थक गये हैं, आपको वहाँ पहुँचा आता हूँ, जहाँ मैंने आपके ठहरने का प्रबन्ध किया है।

—हाँ, चलिए, यही अच्छा होगा।

वे उठ पड़े। कुमालो ने कहा—मुझे गिरजे में प्रार्थना करने की आदत है। आप कोई गिरजा बता दें।

—वह रास्ते में ही है।

और कुमालो ने नम्रतापूर्वक कहा—आप भी मेरे लिए प्रार्थना कीजिएगा?

—अवश्य, खुशी से ! मुझे अपना काम भी देखना है, लेकिन जब तक आप यहाँ हैं, तब तक मैं सेवा करने को तत्पर हूँ।

—आप बहुत दयावान् हैं !

उस नम्र आवाज़ का शायद सिमांगु पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। वह बोले—नहीं, मैं दयालु नहीं हूँ, मैं स्वार्थी हूँ और पापी हूँ, लेकिन भगवान की मुझपर कृपा है।

सिमांगु ने कुमालो का बैग हाथ में उठा लिया। दरवाजे पर पहुँचते-पहुँचते कुमालो ने सिमांगु को रोककर फिर कहा—मुझे आपसे एक बात और कहनी है।

—कहिए।

—मेरा एक भाई भी यहाँ है, जोहैन्सबर्ग में। वह भी अब ख़त नहीं लिखता। उसका नाम जान कुमालो है और वह बढ़ई है।

सिमांगु मुस्करा दिये—मैं उन्हें जानता हूँ। वे हमारे एक बड़े राजनैतिक नेता हैं। उन्हें पत्र लिखने की फ़ुर्सत ही नहीं मिलती।

—मेरा भाई नेता ?

—हाँ, राजनैतिक क्षेत्र में वह बड़े आदमी हैं।—फिर सिमांगु कुछ रुककर बोले—मैं आपको अधिक दुख देना नहीं चाहता। लेकिन अब गिरजे में उनका विश्वास नहीं रहा। वह कहते हैं कि जो काम भगवान ने दक्षिणी अफ्रीका के लिए नहीं किया, वह आदमी को करना पड़ेगा।

—यह यात्रा बड़ी कटु रही !

—जी, हाँ ! मैं विश्वास कर सकता हूँ।

—कभी डर लगता है कि बिशप जब यह सब बातें सुनेंगे, तो क्या कहेंगे ? उन्हीं के एक पादरी के जीवन में ऐसी घटनाएँ होनी थीं !

—बिशप इसमें क्या कहेंगे ? यहाँ जो-कुछ हो रहा है, उसपर किसी बिशप का वश नहीं है। इन बातों को कौन रोक सकता है ? यह सब तो होना ही है।

—यह आप कैसे कह सकते हैं ? ऐसा आप कैसे कहते हैं कि यह सब होता ही रहेगा ?

—ऐसा तो होता ही रहेगा,—सिमांगु ने गम्भीरता से कहा—यह दुनिया जिस तरह चलती है, उसे आप या कोई कैसे रोक सकता है ? मैं इसाई हूँ, मेरे दोस्त ! मेरे हृदय में गोरे लोगों से नफ़रत नहीं है। एक गोरे ने ही मेरे पिता को अज्ञान के अन्धकार से उबारा। लेकिन अगर मैं आपसे कुछ साफ़ बातें कहूँ, तो आशा करते हैं कि आप मुझे क्षमा करेंगे। दुख इस बात का नहीं है कि हमारा सब-कुछ टूट रहा है, दुख इस बात का है कि उसके स्थान पर कुछ बन नहीं पा रहा है। एक अराजकता है, जो निर्माण को पनपने ही नहीं देती। गोरे लोगों ने हमारी जाति को ख़त्म

कर डाला है और मेरा विश्वास है, आप क्षमा कीजिएगा, कि वह फिर बन नहीं सकता। लेकिन शोक इस उजड़े हुए घर के लिए है और उस आदमी के लिए है, जो घर के उजड़ने से बर्बाद हो गया है। इसी लिए बच्चे और युवक कानून तोड़ देते हैं और बूढ़े गोरे लुटते-पिटते हैं!—उत्तेजना में सिमांगु ने माथे पर हाथ फेरा और फिर गम्भीरतापूर्वक बोलते रहे।

—अपने लाभ के लिए गोरे लोगों ने हमारी जातियों को तोड़ दिया, लेकिन उसके स्थान पर उन्होंने बनाया कुछ नहीं। मैंने इस समस्या पर बहुत विचार किया है और वह बातें अब मुझे कहनी ही पड़ रही हैं, क्योंकि मैं उन्हें सत्य मानता हूँ। हाँ, इतना अवश्य है कि सब गोरे आदमी एक-से नहीं हैं। जो कुछ टूट चुका है, उसके पुनर्निर्माण के लिए कुछ गोरे लोग ऐसे हैं, जो अपना जीवन तक देने को तैयार हैं। लेकिन ऐसे लोग बहुत थोड़े-से हैं। सब लोग डरे हुए हैं। इस देश पर भय का साम्राज्य है।

सिमांगु हँसे, लेकिन उनकी हँसी में झिझक थी—यह तो इतनी बड़ी समस्या है, जिसपर इस समय पूरी बात नहीं हो सकती। इसपर तो गम्भीरता से समझ-बूझकर बात करनी चाहिए। आप फ़ादर विन्सेन्ट से इस विषय पर अवश्य बात कीजिएगा। वह अंग्रेज हैं और सही बातें कह सकेंगे। फ़ादर विन्सेन्ट, वही, जिनका चेहरा बच्चों-जैसा है, जो आपके प्रान्त के बारे में और भी बातें जानना चाहते थे।

—मैं उन्हें भूला नहीं हूँ,—कुमालो बोले।

—और हमारे गोरे शासकों ने हमें बहुत ही कम दिया है, कुछ भी तो नहीं दिया है।—सिमांगु गम्भीरता से बोले—चलिए, गिरजा आ गया, अन्दर चलें।

*

—श्रीमती लिथेबी, यह हैं मेरे मित्र, रेवरेन्ड स्टीफ़ेन कुमालो।

—मैं आपका स्वागत करती हूँ, उम्फ़ुन्दीस! जो कमरा आपके लिए मैंने तैयार रखा है, वह छोटा तो है, लेकिन साफ़ है।

—इसका मुझे यकीन है।

—अच्छा, भाई, मैं चलता हूँ। कल गिरजे में सुबह सात बजे जाइएगा?

—ज़रूर।

—उसके बाद हम लोग कुछ खायँगे। तो फिर बिदा, भाई! बिदा, श्रीमती लिथेबी!

—बिदा, मित्र।

—बिदा, उम्फ़ुन्दीस।

श्रीमती लिथेबी कुमालो को उस छोटे-से, साफ़ कमरे में ले गयीं और एक मोमबत्ती जला दी।

—अगर आपको किसी चीज़ की आवश्यकता हो, तो मुझे बतलाइएगा, उम्फ़ुन्दीस !

—जी, अच्छा, धन्यवाद !

—अच्छा, अब आप आराम से सोइए, उम्फ़ुन्दीस।

—आप भी आराम करें, माँ।

कुमालो कुछ देर तक अपने कमरे में खड़े-खड़े सोचते रहे। दो दिन पहले वह इन्डाटशेनी में थे और उनकी पत्नी उनका सामान तैयार कर रही थीं; चौबीस घंटे पहले वह उस गाड़ी में थे, जिसके ऊपर एक अजीब-सा डिब्बा था और वह अजनबी प्रदेशों में से घड़घड़ाती हुई निकलती जा रही थी। और अब उसके बाहर हैं, लोगों का कोलाहल, गति और उन-सबके पीछे एक बहुत बड़े शहर, जोहैन्सबर्ग का कोलाहल ! जोहैन्सबर्ग !

कौन इसका विश्वास कर सकता है !

(६)

क्लेयरमान्ट वहाँ से बहुत दूर नहीं था। दोनों मोहल्ले नज़दीक-ही-नज़दीक हैं। सोफिया टाउन, जहाँ कोई भी अपनी जायदाद बना सकता है, पश्चिमी देशी बस्ती, जोहैन्सबर्ग म्युनिसिपैलिटी की काली जातियों के लिए बनायी हुई बस्ती, और क्लेयरमान्ट, उस नगर का कूड़ाघर। उन तीनों की पश्चिमी सीमा पर न्यूलैंड्स नामक यूरोपियन बस्ती है और पूर्व की ओर वेस्टडीन नामक बस्ती।

सिमांगु बोले— यही तो अफ़सोस है। मैं पृथक्करण की नीति का बिल्कुल पक्षपाती नहीं हूँ, लेकिन अच्छा यही होता, अगर यह बस्तियाँ एक-दूसरे से अलग होतीं। शहर में ट्रामें हैं, उसमें कुछ गोरे लोगों के लिए और कुछ हम लोगों के लिए हैं। लेकिन कभी-कभी कोई आवारा युवक हमें ट्रामों से बाहर निकाल देता है, और हमारी जाति के युवक भी झगड़ा करने को तैयार रहते हैं।

—लेकिन क्या सरकार वह सब होने देती है ?

—नहीं। लेकिन हर ट्राम पर तो वह निगरानी नहीं रख सकती। और अगर झगड़ा हुआ, तो इसका सही पता कैसे लगाया जा सकता है कि वह शुरू कैसे हुआ ? सच बात कौन बताता है ? अफ़सोस है कि हम अलग नहीं हैं। देखिए वह बड़ी-सी इमारत देख रहें हैं न आप ?

—जी, हाँ।

—वह बन्टू प्रेस का कार्यालय है, जहाँ से हम लोगों का अख़बार निकलता है। पत्र के संचालन में कुछ गोरे लोग भी हैं। इस पत्र की नीति....उदार है और

वह बात इतनी खुलकर नहीं कहता, जितनी कहनी चाहिए। आपके भाई जान तो इस पत्र को कुछ मानते ही नहीं। वह और उनकी पार्टी के लोग उसे 'बन्टू रिप्रेस' कहते हैं। उनका कहना है कि इस प्रेस में ख़बरें दबा दी जाती हैं।

इस प्रकार बातें करते-करते वे लोग क्लेयरमान्ट पहुँच गये। वहाँ की गन्दगी और फूहड़पन, मकानों का सटा-सटा होना, गलियों का कूड़ा और बदबू, इस-सबसे कुमालो के दिल को धक्का लगा।

—उस औरत को देखा आपने?

—जी, हाँ।

—नाजायज़ शराब बेचनेवालों की सरदार है वह औरत। लोग कहते हैं कि इस शहर में हमारी जाति की यह सबसे रईस औरत है।

—यह बच्चे यहाँ इस तरह क्यों घूम रहे हैं? यह स्कूल क्यों नहीं जाते हैं?

—इनमें से कुछ तो खुद पढ़ने-लिखने की परवाह नहीं करते, और कुछ ऐसे हैं, जिनके माता-पिता उस ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते, पर बहुतेरे इसलिए स्कूल नहीं जाते, क्योंकि वहाँ जगह नहीं है। —सिमांगु ने उत्तर दिया।

वे लिली स्ट्रीट पर चलते-चलते हायसिंथ स्ट्रीट में मुड़ गये। इस गन्दी बस्ती में सड़कों के नाम बहुत खूबसूरत होते हैं।

—देखिए, इसी गली में आपकी बहन का मकान है, नम्बर ११। आप अकेले ही जाइएगा न?

—हाँ, यही अच्छा होगा।

—जब आप वहाँ से निबट लें, तो बराबर के मकान नम्बर तेरह में आ जाइएगा। मैं वहीं आपकी प्रतीक्षा करूँगा। हमारे गिरजे की एक भली औरत उसमें रहती है, जो अपने पति के साथ अपने परिवार की ठीक तरह देख-रेख करने का प्रयत्न करती है। लेकिन उनके लिए भी यह काम आसान नहीं है। उनकी बड़ी लड़की, जिसे मैंने दीक्षा के लिए बिल्कुल ठीक कर लिया था, भाग गयी है और पिमविल में किसी आवारा लड़के के साथ रहती है। अच्छा, तो अब आप जाइए। मैं आपके लौटने की प्रतीक्षा करूँगा।

घर के बन्द दरवाज़ों के पीछे से हँसी-कहकहों की आवाज़ आ रही है, उस हँसी की, जिससे डर लगता है। ऐसा शायद इसलिए था कि पहले ही से दिल में भय था, या इसलिए कि वह हँसी वास्तव में बहुत बुरी थी। उनमें एक औरत की आवाज़ और कई आदमियों की आवाज़ें थीं। फिर भी कुमालो ने द्वार खटखटाया और स्त्री ने दरवाज़ा खोला।

—बहन, मैं हूँ।

निस्सन्देह गर्टरूड की आँखों में भय है। वह एक क़दम पीछे हटी, अपने भाई

की तरफ़ बढ़ी नहीं, आश्चर्य और भय! उसने मुड़कर अन्दर की तरफ कुछ कहा, जो कुमालो सुन नहीं सके। कुर्सियाँ खिसकायी गयीं, और चीज़ें हटायी गयीं, वह अपने भाई की तरफ़ मुड़ी—मैं आपके स्वागत की तैयारी कर रही हूँ, भाई।

भाई-बहन, दोनों एक दूसरे की तरफ़ देख रहे थे। कुमालो के चेहरे पर चिंता थी और उसके चेहरे पर भय था। उसने मुड़कर कमरे में देखा, भीतर दरवाज़ा बन्द हो गया। और वह बोली—अन्दर आइए, भाई साहब।

इतना होने पर अभिवादन के लिए गर्टरूड ने अपना हाथ आगे बढ़ाया, ठंडा, पसीजा हाथ, जिसमें जान नहीं थी।

वे दोनों कमरे में बैठ गये। गर्टरूड चुप थी।

—मैं यहाँ आ गया हूँ,—कुमालो बोले।

—यह अच्छा किया आपने।

—तुमने ख़त नहीं लिखा?

—हाँ, मैंने ख़त नहीं लिखा।

—तुम्हारे पति कहाँ हैं?

—वह मुझे मिले नहीं, भैया।

—लेकिन तुमने लिखा नहीं।

—जी, यह तो सत्य है।

—क्या तुम यह नहीं जानती थी कि हम तुम्हारे बारे में कितने चिन्तित होंगे?

—मेरे पास ख़त डालने के लिए पैसा नहीं था।

—टिकट के लिए दो पेंस भी तुम्हारे पास नहीं थे?

गर्टरूड उत्तर नहीं दे रही है, वह भाई से आँखें भी नहीं मिला रही है।

—लेकिन मैंने तो सुना है कि तुम्हारे पास काफ़ी धन है।

—नहीं, ऐसा नहीं है।

—क्या तुम जेल भी जा चुकी हो?

—जी।

—नाजायज़ शराब के लिए?

गर्टरूड के निर्जीव शरीर में शायद कुछ जान आ गयी। उसे कुछ कहना ही होगा, वह चुप नहीं रह सकती। उसने कहा उसका कोई अपराध नहीं था, कुसूर एक दूसरी औरत का था।

—तुम उसी औरत के साथ रहती थी?

—जी।

—ऐसी औरत के साथ तुम क्यों रहती थी?

—और कोई स्थान था ही नहीं।

—और उसके व्यवसाय में तुम उसका साथ देती थी ?

—बच्चे के लिए रुपये की ज़रूरत थी।

—बच्चा कहाँ हैं ?

वह योंही इधर-उधर निगाह दौड़ाती है और फिर उठकर बाहर आँगन में जाती है। वह अपने बच्चे को पुकारती है। वह आवाज़ अब पहले की तरह मधुर नहीं, पवित्र नहीं, उस आवाज़ में वही है, जो अब उसकी हँसी में है। कुमालो को धीरे-धीरे अपनी बहन के इस नये और गिरे हुए रूप का पता लग रहा था।

—मैंने बच्चे को बुलवाया है,—उसने लौटकर कहा।

—कहाँ है वह ?

—अभी आया जाता है।

उसकी आँखों में बेचैनी है। परेशानी में खड़ी-खड़ी वह दीवार पर उँगलियाँ फेर रही है।

कुमालो का क्रोध उबल पड़ता है। वह पूछते हैं—मैं कहाँ सोऊँगा ?

उसकी आँखों में भय है, इसमें भूल नहीं हो सकती। अब वह अपनी बातें खोल-कर कहेगी, पर कुमालो पर गुस्सा चढ़ रहा है, और वह उसके बोलने की प्रतीक्षा नहीं करते—तुमने हमारी नाक कटा दी ! हमें कहीं का न रखा !—धीमी आवाज में कुमालो बोले, ताकि यह शर्मनाक बात दुनियावाले न सुन लें—नाजायज़ शराब बेचनेवाली, वेश्या, जिसको इस बात तक का पता नहीं कि उसका बच्चा कहाँ है ! इतनी गिर गयी हो तुम ? और तुम्हारा भाई एक पादरी है, तुमने हमारे साथ ऐसा क्यों किया ?

वह अपने भाई की तरफ देखती है, घुटे हुए क्रोध से उस जानवर की तरह, जिसे कोई सता रहा हो।

कुमालो फिर बोले—मैं तुम्हें वापस ले जाने के लिए यहाँ आया हूँ।

वह रोने लगी। रोती-रोती ज़मीन पर लोट-पोट हो गयी। चीखने लगी। उसकी चीखों में तनिक भी लाज नहीं थी।

कुमालो कुछ घबराकर कहते हैं—इतना शोर क्यों मचा रही हो, लोग सुन लेंगे !

गर्टरूड अपने को चुप करने की कोशिश करती है।

—तुम वापस लौटना चाहती हो ?

वह सर हिलाती है—जोहैन्सबर्ग मुझे पसन्द नहीं, मैं यहाँ परेशान हूँ। बच्चा भी बीमार है।

—क्या तुम दिल से वापस चलना चाहती हो ?

वह फिर सर हिलाती है, और सिसकती है—मुझे जोहैन्सबर्ग बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।—गर्टरूड ने अपने भाई की तरफ वेदनापूर्ण दृष्टि से देखा।

कुमालो के दिल में आशा की एक लहर दौड़ गयी।

—मैं बुरी औरत हूँ, भैया। मैं घर लौटने-योग्य भी नहीं हूँ!

कुमालो की आँखों में दर्द के आँसू छलक आये और सम्वेदना ने हृदय में फिर से वही गहरी भावुक विनम्रता जगा दी। उन्होंने जाकर अपनी बहन को फर्श से उठा लिया और कुर्सी पर बिठाकर गहरे स्नेह से अपने-आप वह उसके सर पर हाथ फेरने लगे, हृदय में दया का समन्दर उमड़ पड़ा था।

—भगवान, हमें क्षमा करना! मुझे क्षमा न करने का क्या अधिकार है? आओ, हम मिलकर प्रार्थना करें!

और दोनों प्रार्थना करने के लिए झुक गये। धीमी आवाज में कुमालो भगवान से प्रार्थना कर रहे थे, ताकि कोई दूसरा न सुन ले, और गर्टरूड बीच-बीच में कहती जा रही थी, आमीन! और जब कुमालो की प्रार्थना समाप्त हो गयी, तो गर्टरूड और तेजी से प्रार्थना करने लगी—मैं नीच हूँ, भगवान, पतिता हूँ....

इसके बाद भाई-बहन एक-दूसरे के थोड़ा और निकट आ गये और एक-दूसरे के हाथ थामकर बैठ गये।

—मुझे तुमसे कुछ सहायता लेनी है, बहन।

—क्या, भैया?

—हमारे बेटे का तुम्हें कुछ हाल मालूम है?

—मैंने उसके विषय में कुछ सुना तो था कि वह जोहैन्सबर्ग में ही कहीं बड़ी जगह पर काम कर रहा है और सोफिया टाउन में ही रहता है, पर कहाँ, यह मुझे कुछ नहीं मालूम। पर मुझे मालूम है कि किसको उसका पता होगा। जान भैया का लड़का और एबसेलाम अक्सर साथ रहा करते थे। उसे ठीक-ठीक पता होगा।

—अच्छा, मैं वहाँ जाऊँगा। अब मैं चलता हूँ, बहन। जाकर देखता हूँ कि श्रीमती लिथेबी के यहाँ तुम्हारे लिए कमरा है या नहीं। क्या तुम्हारे पास सामान ज्यादा है?

—नहीं, ज़्यादा कुछ नहीं, बस, यह मेज, ये कुर्सियाँ, एक चारपाई और कुछ बर्तन-भाड़े।

—मैं इन्हें मँगवाने का प्रबन्ध करूँगा, तुम तैयार रहोगी न?

—हाँ, भैया। बच्चा भी आ गया।

किसी बड़ी लड़की के साथ-साथ कुमालो का भाञ्जा कमरे में आया। उसके कपड़े गन्दे थे और उसकी नाक बह रही थी। वह एक उँगली मुँह में दबाये अचम्भे में अपनी गोल-गोल आँखों से अपने मामा को देख रहा था।

कुमालो ने अपने भाञ्जे को गोद में उठा लिया। उसकी नाक साफ की और चूमकर दुलार किया।

—यहाँ से जाना बच्चे के लिए तो बहुत ही अच्छा होगा। वहाँ हमारे गाँव में हवा लगेगी, वहाँ यह स्कूल भी जा सकेगा।—कुमालो ने कहा।

—हाँ, यही अच्छा होगा।

—अच्छा, मैं चलता हूँ, मुझे बहुत काम करना है।

यह कहकर कुमालो बाहर निकल आये। आस पास के लोग अचरज से उनकी तरफ देख रहे थे। पादरी, यहाँ! पास के मकान में सिमांगु उन्हें मिल गये और कुमालो ने उन्हें सब बातें बतायीं। उन्होंने सिमांगु से यह भी पूछा कि ऐसा आदमी कहाँ मिल सकेगा, जो उनकी बहन, भाञ्जे और उसके सामान को वहाँ से ले आय।

—मैं आपकी सफलता पर बहुत खुश हूँ, मित्र! अच्छा, इस समय तो चला जाय।

—हाँ, मेरे मन से एक भारी बोझ उतर गया है। भगवान की कृपा होगी, तो दूसरी बातों में भी हम इतने ही सफल होंगे।

उसी दिन तीसरे पहर कुमालो एक लारी पर अपनी बहन गर्टरूड को उस गन्दी बस्ती से लिवा लाये। चलने समय पास-पड़ोस के लोग इकट्ठे हो गये थे और वे इस अजीब घटना पर अचम्भे में थे, और ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे, कुछ खुश थे, कुछ हँस रहे थे, वह सूखी हँसी, जो सिर्फ़ बड़े शहरों में पायी जाती है। जब लारी लदकर वहाँ से चल दी, तभी कुमालो ने सन्तोष की साँस ली।

श्रीमती लिथेबी ने गर्टरूड को उसका कमरा दिखा दिया और उसे तथा उसके बच्चे को खाना खिलाया। कुमालो मिशन हाउस चले गये। रात को कुमालो के लौटने पर सबने मिलकर श्रीमती लिथेबी के खाने के कमरे में प्रार्थना की। श्रीमती लिथेबी और गर्टरूड बीच-बीच में 'आमीन' कहती जा रही थीं। उस दिन कुमालो बच्चों की तरह बहुत खुश थे, इतने खुश वह बरसों से नहीं हुए थे।

जोहैन्सबर्ग में आये अभी एक ही दिन हुआ था और अभी से सफलता मिलनी शुरू हो गयी थी, टूटे धागे फिर से जुड़ने लगे थे, घर बसने लगा था, आत्मा की पूर्णता का सन्तोष धीरे-धीरे फिर लौटने लगा था।

(७)

पहले कभी गर्टरूड के पास पैसा रहा हो तो रहा हो, अब तो उसके कपड़े इतने मैले और फटे हुए थे, उसकी काली, चिकनी बुनी हुई टोपी इतनी गन्दी थी कि कुमालो को शर्म लगती थी। हालाँकि उनके पास रुपया कम था, फिर भी गर्टरूड

के लिए उन्होंने एक लाल गाउन और पगड़ीनुमा एक सफेद टोपी ख़रीद दी। बच्चे के लिए भी एक कमीज़ और नेकर और जरसी ख़रीदी और दो मोटे-मोटे रूमाल भी, ताकि उनकी बहन अपने बेटे को साफ़ रख सके। उनकी जेब में डाक-ख़ाने की किताब थी, जिसमें दस पाउंड जमा थे, वह दस पाउंड, जो उन्होंने और उनकी पत्नी ने एक नया स्टोव ख़रीदने के लिए बचाये थे। आठ पाउंड प्रति मास की तनख्वाह में से दस पाउंड बचाना बहुत मुश्किल बात है, बड़े संयम और धैर्य की बात है, जबकि पादरी होने के कारण एक विशेष ढंग से रहना, साफ़-सुथरे और अच्छे काले कपड़े पहनना भी आवश्यक हो। उनकी गिरजे जानेवाली पोशाक के कालर भी तो फटने लगे थे, मटमैले हो गये थे, लेकिन नये ख़रीदने के लिए अभी कुछ रुकना होगा। उन दस पाउंडों को ख़र्च कर देना बुरी बात है, लेकिन आगे-पीछे उन्हें ख़र्चना तो होगा ही। और लौटते समय रेल उन्हें मुफ्त तो ले नहीं जायगी। शायद गर्टरूड के पुराने सामान को बेचकर एक-दो पाउंड मिल जायँ। ताज्जुब है कि गर्टरूड ने अपने उस व्यवसाय से कुछ धन बचाया नहीं। उसका व्यवसाय गिरा हुआ था, पर लोग कहते हैं कि उसमें आमदनी अच्छी होती है!

गर्टरूड घर के काम-काज में श्रीमती लिथेबी की सहायता कर रही थी और बीच-बीच में कुमालो को उसके गुनगुनाने की धुन सुनायी पड़ जाती थी। बाहर आँगन में बच्चा ईंटों के छोटे-छोटे टुकड़ों और किसी बढ़ई के छोड़े हुए लकड़ी के टुकड़ों से खेल रहा था। सूरज चमक रहा था और इस विशाल नगर में भी छोटी छोटी चिड़ियाँ थीं, जो आँगन में चहक रही थीं और फुदक रही थीं। कुमालो ने सिमांगु को घर की तरफ़ आते हुए देखा। उन्होंने उस ख़त को एक तरफ़ रख दिया, जो वह अपनी पत्नी को लिख रहे थे, रेल की यात्रा के बारे में, उस विशाल नगर जोहैन्सबर्ग के बारे में, उस युवक के बारे में, जिसने उनसे एक पाउंड ठग लिया था, गर्टरूड के जल्दी ही मिल जाने के बारे में और उसके उस बच्चे के बारे में, जिससे उन्हें बहुत सुख मिलता था। और यह भी कि आज से वह अपने बेटे की तलाश शुरू करेंगे।

—क्या आप तैयार हैं?—अन्दर आकर सिमांगु ने पूछा।

—हाँ, मैं तैयार ही हूँ। अपनी पत्नी को ख़त लिख रहा था।

—उन्हें जानने का सौभाग्य तो मुझे नहीं मिला, लेकिन उन्हें मेरी ओर से अभिवादन लिख भेजिएगा।

इसके बाद वे दोनों चल पड़े। इस सड़क से उस गली में, उस गली से उस सड़क पर। लोग ठीक ही कहते थे कि आप दिन-रात, हर रोज़ तमाम जीवन इस तरह चलते रहिए, फिर भी आपको उसी सड़क पर दुबारा चलने का अवसर नहीं आयगा।

—यह देखिए, यह आपके भाई की दूकान है। देखिए, उनका नाम बोर्ड पर लिखा है।

—हाँ।

—क्या मैं भी साथ चलूँ?

—हाँ, चलिए, ठीक रहेगा।

दूकान में उनका भाई जान एक कुर्सी पर बैठा हुआ दो आदमियों से बातें कर रहा था। वह अब मोटा हो गया था और सरदार की तरह घुटनों पर हाथ रखे बैठा था। उसने अपने भाई को पहचाना नहीं, क्योंकि बाहर की रोशनी आगन्तुकों की पीठ पर पड़ रही थी।

—नमस्कार, भाई!—कुमालो बोले।

—नमस्कार, श्रीमान्!—जान ने उत्तर दिया।

—नमस्कार, सहोदर!

—जान ने ग़ौर से उनके चेहरे की तरफ़ देखा और उसके चेहरे पर एक हार्दिक मुस्कराहट फैल गयी।

—ओह, आप, भैया! आश्चर्य! आप यहाँ, जोहैन्सबर्ग में कैसे?

कुमालो ने अपने भाई के पास बैठे हुए व्यक्तियों की तरफ़ देखकर कहा—मैं यहाँ कुछ ख़ास काम से आया हूँ।

जान समझ गया और अपने मित्रों से बोला—अच्छा, इस समय क्षमा करना, फिर कभी बातें होंगी। मेरे सगे भाई आये हुए हैं।

और दोनों आदमी अभिवादन के बाद बिदा हो गये।

—रेवरेन्ड सिमांगु को जानते हो, भाई?

—हाँ-हाँ, उनको सब जानते हैं। सब लोग रेवरेन्ड सिमांगु को जानते हैं। अच्छा, आप लोग बैठिए। मैं ज़रा चाय के लिए कह दूँ।

वह उठकर अन्दर के दरवाज़े तक गया और भीतर किसी को पुकारा।

—तुम्हारी पत्नी ईस्थर अच्छी है, भाई?

जान कुछ मुस्करा दिये—मेरी पत्नी ईस्थर ने तो दस साल हुए मुझे छोड़ दिया, भाई।

—तो तुमने फिर विवाह कर लिया है?

—हाँ-हाँ, वह विवाह नहीं, जो गिरजे के क़ायदों से विवाह कहा जाता है। मगर वह बहुत अच्छी औरत है।

—तुमने हमें इसकी कोई ख़बर नहीं दी?

—नहीं, यह मैं आपको कैसे लिखता? आप लोग, जो इन्डाटशेनी में रहते

हैं, जोहैन्सबर्ग के रहनेवालों की बातें नहीं समझते। इस हालत में कुछ न लिखना ही मैंने ठीक समझा।

—क्या इसी कारण तुमने पत्र लिखना भी बन्द कर दिया था?

—हाँ, यह भी एक कारण हो सकता था। फिर परेशानियाँ हैं, भाई, बेकार की परेशानियाँ।

—लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आता कि हमारा जीवन यहाँ के जीवन से कैसे भिन्न है?

—यह बताना तो मुश्किल है। आप लोग बुरा न मानें, तो मैं अंग्रेजी में बातें करूँ, यह बातें मैं अंग्रेजी में ज़्यादा अच्छी तरह समझा सकता हूँ।

—तो अंग्रेज़ी में ही बात करो, भाई।

—बात यह है कि यहाँ, जोहैन्सबर्ग में, मुझे बहुत-से नये अनुभव हुए हैं। वह इन्डाटशेनी की तरह नहीं है। उन्हें समझने के लिए यहाँ रहना होगा!—जान ने अपने भाई की तरफ़ देखा। यहाँ कुछ नयी घटनाएँ हो रही हैं।

वह बैठा नहीं, पर विचित्र आवाज़ में बोलने लगा। कमरे में इधर-उधर चलते हुए उसने खिड़की के बाहर देखा, छत की तरफ़ देखा, कमरे के कोनों को ग़ौर से देखा, जैसे वहाँ कोई रहस्य है और उसे प्रकाश में लाना है।

—इन्डाटशेनी में मैं कुछ नहीं हूँ, मेरा कोई स्थान नहीं है, न आपका ही कोई महत्व है, भाई साहब। हमारे ऊपर एक सरदार राज्य करता है, जो जाहिल है। गोकि वह अपढ़ है, पर हमें उसको सलाम करना पड़ता है, उसके आगे झुकना पड़ता है। यहाँ जोहैन्सबर्ग में मैं कुछ हूँ, मेरा कुछ प्रभाव है, मेरा कारोबार है और मैं कभी-कभी हफ़्ते में दस-बारह पाउंड तक कमा लेता हूँ।

जान उत्तेजित हो गया था। वह शायद सीधे उन लोगों से बात नहीं कर रहा था, वह उन बहुत-से लोगों से बात कर रहा था, जो वहाँ थे ही नहीं, लगता था कि वह भाषण दे रहा हो।

—मैं यह नहीं कहता कि यहाँ हम आज़ाद हैं, उतने आज़ाद, जितना हर इन्सान को होना चाहिए। लेकिन उस गाँव के उस जाहिल सरदार की दासता से तो मुक्त हूँ। मुझे उस बूढ़े और मूर्ख व्यक्ति का हुक्म तो नहीं मानना पड़ता, जो हमारे गोरों का कुत्ता है। वह सरदार तो मात्र एक बहाना है, जिससे गोरे कुछ बाँधना चाह रहे हैं। अपने काम के लिए हमारे ऊपर दबाव रखते हैं।

जान फिर मुस्करा दिया। उस मुस्कराहट में होशियारी और चालाकी थी। और वह अपने भाई तथा सिमांगु की तरफ़ मुखातिब होकर बोला—लेकिन वह चीज बँध नहीं पा रही है, वह अलग हो रही है। हमारी जातियाँ टूट रही हैं, और जोहैन्सबर्ग में

एक नया समाज बन रहा है, एक नये समाज की नींव पड़ रही है, यहाँ, इस शहर में एक महत्त्वपूर्ण घटना हो रही है, भाई !

कुछ रुककर जान फिर बोला—मैं आप लोगों को नाराज़ नहीं करना चाहता। लेकिन गिरजे की भी वही अवस्था है, जो हमारे उन बूढ़े सरदारों की है। गिरजे अपने नियमों से ज़िन्दगी को बाँधना चाहते हैं। नये अनुभव करने की स्वतन्त्रता नहीं है। आदमी को वफ़ादार, आज्ञाकारी और नम्र होना चाहिए और उसे क़ानून मानने ही चाहिए, चाहें वह कानून कैसे भी हों। हाँ, यह सही है कि धर्म की, गिरजे की आवाज़ आकर्षक है, और कभी-कभी बिशप लोग देश के कानूनों के ख़िलाफ़ भी कुछ कह ही देते हैं, लेकिन यह-सब तो पिछले पचास वर्षों से होता आ रहा है और परिस्थिति बिगड़ती ही जा रही है, सँभलती नहीं है।—और जान की आवाज़ फिर ऊँची हो गयी, मानो वह उन लोगों को भाषण दे रहा हो, जो वहाँ उपस्थित नहीं थे—यहाँ जोहैन्सबर्ग में खानें ही सब-कुछ हैं। यह ऊँची-ऊँची इमारतें, यह शानदार सिटी-हाल, पार्कटाउन की वह खूबसूरत बस्ती, जिसमें उम्दा मकान बने हुए हैं, यह-सब उस सोने से ही तो बने हैं, जो इन खानों से निकलता है। अंग्रेज़ों का वह शानदार अस्पताल, भू मध्य रेखा के दक्षिण का सबसे बड़ा अस्पताल, यह भी तो खानों के सोने से बना है।

जान की आवाज़ बदल गयी, बैल या शेर की आवाज़ की तरह ज़ोरदार हो रही थी—और उन अस्पतालों को देखिए, जो हमारे लिए बने हैं, वहाँ हज़ारों की तादाद में लोग ज़मीन पर पड़े रहते हैं और इतनी भी जगह नहीं होती कि आप उनके बीच में होकर चल सकें। लेकिन यह वही लोग हैं, जो सोना खोदकर निकालते हैं, तीन शिलिंग रोज़ की मज़दूरी पर। हम लोग यहाँ अफ्रीका के भिन्न-भिन्न प्रान्तों से आते हैं, ट्रान्सकेई से, बसूटोलैंड से, बेचुआनालैंड से, स्वाज़ीलैंड से, जुलूलैंड से, इन्डाटशेनी से, हाँ, इन्डाटशेनी से भी और यहाँ आकर हमें बाड़ों में, खुले मैदानों में रहना पड़ता है, हमें अपने परिवारों को, बीवी-बच्चों को गाँव में ही छोड़ देना पड़ता है। और जब सोने की किसी नयी खान का पता लगता है, तो हम लोगों को अपनी मेहनत के लिए कुछ ज्यादा नहीं मिलने लगता है, वह तो गोरों के हिस्सों के दाम बढ़ने लगते हैं। आप सारे अख़बारों में यह-सब पढ़ सकते हैं। और वे लोग और बड़ी संख्याओं में हम लोगों को बाड़े में रखने के लिए, ज़मीन खोदने के लिए, लाते हैं। वे गोरे हमारी मज़दूरी बढ़ाने की बात नहीं सोचते, वे तो बस यह सोचते हैं कि अब वे एक और बड़ी कोठी बनवा सकेंगे, बड़ी मोटर ख़रीद सकेंगे। वे कहते हैं कि दक्षिणी अफ्रीका खानों पर बसा है, इसलिए सोने का पता लगाना बहुत ही आवश्यक है।

जान क्रोध और उत्तेजना से गुर्रा रहा था, उसकी आवाज़ में बिजली की कड़क

थी—लेकिन वह खानों पर नहीं बना है, हमारी पीठ पर, हमारे श्रम पर, और हमारे पसीने से बना है। हर कारखाना, हर थियेटर, हर खूबसूरत इमारत हमारी बनायी हुई है। सरकार को इन बातों का क्या पता? लेकिन यहाँ जोहैन्सबर्ग में हम इन बातों को समझते हैं।

जान रुक गया, खामोश हो गया, उसके भाई और सिमांगु भी चुप थे। जान की आवाज़ में कुछ ऐसी ताक़त थी, जिससे चुप होना ही पड़ता था। और स्टीफेन कुमालो चुप थे, क्योंकि अपने भाई का उन्हें एक नया और अद्‌भुत रूप देखने को मिला था। जान ने अपने भाई की तरफ़ देखकर फिर कहा—आपके बिशप यह कहते तो हैं कि ये अत्याचार नहीं होने चाहिएँ, मगर वह खुद एक बड़े से मकान में रहते हैं और उनके नीचे के गोरे पादरियों को आपसे चार-पाँच-छः गुना ज्यादा वेतन मिलता है, भाई जान!

जान बैठ गया और उसने एक बड़े से लाल रूमाल से अपने माथे का पसीना पोंछा—यही मेरा अनुभव है और इसी लिए मैं अब कभी गिरजा नहीं जाता!

—और क्या इसी लिए तुमने घर भी खत नहीं लिखा था?

—हाँ, यह भी एक कारण था।

—कुछ इस कारण और कुछ ईस्थर के कारण?

—हाँ, दोनों ही के कारण। ख़त में यह-सब बताना-समझाना मुश्किल होता। हमारा जीवन यहाँ दूसरे ढंग का है।

और सिमांगु ने बीच में कहा—यहाँ कोई ढंग या कायदा है भी?

जान ने उनकी तरफ़ देखा—यहाँ एक नयी चीज़ पैदा हो रही है, जो गिरजे या सरदार से ज्यादा ताक़तवर है। उसे आप एक दिन देखेंगे।

—लेकिन यह तो बताओ कि तुम्हारी पत्नी ने तुम्हें क्यों छोड़ दिया था?

—वह,—जान ने फिर मुस्कराते हुए कहा—वह भी मेरा यह नया अनुभव समझ नहीं पायी थी।

कठोर स्वर में सिमांगु ने कहा—शायद आपका मतलब है कि वह धार्मिक प्रवृत्ति की थीं?

और जान ने उनकी तरफ शंका और अविश्वास की दृष्टि से देखा। सिमांगु को यह समझते देर न लगी कि जान की समझ में उनकी बात नहीं आयी—आइए, तो हम जुलू भाषा में ही बातचीत करें।

जान की मोटी गर्दन की नसें क्रोध से तन गयीं और शायद दोनों में झगड़ा हो ही जाता, अगर स्टीफेन कुमालो बीच में न बोल पड़ते—लो, भाई, चाय आ गयी, यह तुम्हारी कृपा है!

जो औरत जान के साथ रहती थी, वह चाय लायी थी, लेकिन जान ने उसका

परिचय नहीं कराया। नम्रता से सबको चाय देकर वह चुपचाप अन्दर चली गयी। उसके जाने के बाद कुमालो अपने भाई से बोले—मैंने तुम्हारी बातें बहुत ध्यान से सुनीं, भाई। जो-कुछ तुमने कहा, उससे मुझे दुख पहुँचा, एक तो इस ढंग से, जिससे तुमने वे बातें कहीं; दूसरे, इसलिए कि उनमें से बहुत-सी बातें सच हैं। अब मुझे तुमसे एक बात पूछना है, लेकिन पहले मैं तुम्हें यह बता दूँ कि गर्टरूड मेरे साथ है। वह मेरे साथ इन्डाटशेनी लौट जायगी।

जान बोले—ठीक-ठीक, मैं यह नहीं कहता कि यह बुरा है। जोहैन्सबर्ग ऐसी जगह नहीं है, जहाँ कोई अकेली औरत रह सके। मैंने भी उसे समझाने की कोशिश की थी, लेकिन उसने मेरी बात नहीं सुनी, इसलिए मैं फिर उससे नहीं मिला।

—अच्छा, तो अब यह बताओ कि मेरा लड़का कहाँ है?

इस प्रश्न से जान कुछ परेशान हुआ। उसने रूमाल निकालकर फिर पसीना पोंछा—यह तो आपने सुना ही होगा कि वह मेरे लड़के का दोस्त था?

—हाँ, यह मैंने सुना है।

—आप जानते हैं कि यह लड़के कैसे होते हैं। मैं उन्हें ज़्यादा दोष भी नहीं देता। मेरे लड़के की मेरी दूसरी पत्नी से नहीं पटी। उनकी लड़ाई किस बात पर होती थी, यह तो मैं कभी समझ नहीं सका, लेकिन अपने सौतेले भाई-बहनों से भी उसके सम्बन्ध अच्छे नहीं थे। मैंने कई बार कोशिश की कि यह रोज़ की कलह ख़त्म हो जाय, लेकिन इसमें मैं सफल नहीं हुआ। इसलिए वह कहने लगा कि वह घर से अलग होना चाहता है। काम उसे अच्छा मिल गया था, इसलिए मैंने भी उसे नहीं रोका। आपका लड़का भी उसी के साथ चला गया।

—कहाँ, भाई?

—यह तो मैं ठीक नहीं जानता, लेकिन मैंने सुना था कि उन्होंने एलकजैन्डरा में कमरा लिया था। ज़रा रुकिए याद आया, वे दोनों एक ही कारखाने में काम भी करते थे। आप ठहरिए, मैं टेलीफ़ोन की किताब देखकर पता लगाता हूँ।

जान एक मेज़ के पास गया, जहाँ टेलीफ़ोन रखा था। स्टीफ़न कुमालो को थोड़ा गर्व हुआ कि वह ऐसे आदमी के भाई हैं, जिसके पास ऐसी चीज़ है।

—हाँ, मिल गया। डूर्नफ़ान्टेन टेक्सटाइल कम्पनी, १४, क्रास स्ट्रीट। मैं आपकी सुविधा के लिए पता लिखे देता हूँ, भाई साहब।

—क्या उन्हें टेलीफ़ोन नहीं किया जा सकता?—कुमालो ने हिचकिचाकर कहा।

जान हँस पड़ा—किस बात के लिए? यह पूछने के लिए कि एबसेलाम वहाँ काम करता है? या इसलिए कि वे उसे टेलीफ़ोन पर बुला दें, या वे उसका पता बता दें? वे हम काले आदमियों के लिए इतना भी नहीं करते हैं, भाई साहब।

—कोई बात नहीं, मैं आपके साथ हूँ,—सिमांगु ने कुमालो से कहा।

इसके बाद कुमालो और सिमांगु ने जान से बिदा ली और वह बाहर निकल आये।

—अब आप समझे ?—सिमांगु बोले।

—हाँ, मैं समझा,—कुमालो ने उत्तर दिया।

—आपके भाई यहाँ के एक बड़े आदमी हैं। इनकी दूकान पर हमेशा ही ऐसे बहुत-से लोग आते रहते हैं, जो इसी तरह की बातें किया करते हैं, जैसी आप सुन चुके हैं। लेकिन आप कभी अपने भाई को किसी मीटिंग में भाषण करते हुए सुनिए, तो आपको मालूम हो ! इन नेताओं में आपके भाई का, ड्यूब्यूला का और टामलिन-सन का नाम प्रसिद्ध है। लोग कहते हैं कि आपके भाई की आवाज में बैल की बोली का-सा नाद है, शेर की तरह गर्जन है और वह चाहें, तो जनता को इतना उत्तेजित कर सकते हैं कि वह पागल हो जाय। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि इतनी हिम्मत उनमें नहीं है, इसमें जेल जाने का खतरा है।—सिमांगु कह रहे थे—लेकिन आपको एक बात यह भी बताऊँ, जो बातें उन्होंने कहीं, उनमें से काफ़ी सच भी हैं।

चलते-चलते सिमांगु सड़क के बीच में ही रुक गये। वह आकुलतापूर्वक शान्त भाव से बातें कर रहे थे—चूँकि गोरे लोगों के हाथ में ताक़त है, इसलिए हम भी ताकत चाहते हैं। लेकिन अधिकार मिल जाने पर, दौलत मिल जाने पर भी, हम काली जातिवालों में से जिसका पतन न हो, वह महान है। लेकिन मैंने ऐसा होते अक्सर देखा है। जो-कुछ बिगड़ा हुआ है, उसे सँभालने के लिए लोग अधि-कार और धन चाहते हैं। लेकिन जब वह-सब उन्हें मिल जाता है, तो केवल अपने स्वार्थ के लिए वे उसका उपभोग करते हैं। जब उनको अवसर मिल जाय अपनी वासनाओं को पूरी करने का, तो वह भी उसी शराब को पी सकते हैं, जो गोरे लोग पिया करते हैं। और जब ऐसे लोग भाषण देते हैं, तो हज़ारों लोग तालियाँ बजाते हैं। हममें से कुछ सोचते हैं कि जब हमें अधिकार मिल जायँगे, तो हम उन गोरे शासकों से बदला लेंगे, जो अभी तक अधिकार अपने हाथों में रखे हुए हैं। लेकिन हमारी यह इच्छा मूलतः विकृत होती है और इसी कारण हमारा भी नैतिक पतन हो जाता है और जो अधिकार हम प्राप्त करते हैं, वह खोखले और कमज़ोर हो जाते हैं। लेकिन बहुतेरे गोरों को सत्ता का यह रहस्य नहीं मालूम और वह डरते हैं कि कहीं हमें अधिकार और सत्ता मिल न जायँ।

फिर सिमांगु कुछ देर चुप ही खड़े रहे, मानो वह अपने अन्तर में उस-सबकी सचाई जाँच रहे हों, जो वह अभी कह चुके थे—हाँ, जो-कुछ मैंने अधि-कारों के बारे में अभी कहा है, वह सच है। पर सिर्फ एक ही ऐसी चीज़ है,

जिसमें संपूर्ण शक्ति है, और वह प्रेम है। क्योंकि जब कोई व्यक्ति प्रेम करता है, तब उसके अन्दर सत्ता की भूख नहीं होती है और तभी उसे वास्तविक सत्ता प्राप्त होती है, मुझे तो देश के लिए केवल एक ही आशा दिखायी पड़ती है और वह तब पूरी होगी, जब गोरी और काली, दोनों जातियाँ एक होकर, धन या सत्ता की हविस को त्यागकर और मात्र देश की भलाई की भावना से प्रेरित होकर काम में लग जायँगी।

सिमांगु गम्भीर और शान्त थे। कुछ देर बाद उन्होंने गंभीरतापूर्वक कहा—मेरे दिल में केवल यही एक महान भय है कि शायद जब तक वह प्रेम के महत्त्व को समझ सकेंगे, तब तक हमारे दिल में घृणा भर जायगी।—फिर एकाएक कुछ सोचकर वह बोले—डूर्नफ़ान्टेन जाने का यह रास्ता नहीं है। चलिए, जल्दी चला जाय।

और कुमालो चुपचाप उनके साथ-साथ चल दिये। उनके दिमाग़ पर अब तक सिमांगु की गम्भीर, महत्त्वपूर्ण बातों का प्रभाव था।

*

लेकिन डूर्नफ़ान्टेन में उन्हें सफलता नहीं मिली, हालाँकि वहाँ के अंग्रेज़ अधिकारियों ने उनके साथ अच्छा बर्ताव किया। सिमांगु जानते थे कि गोरों से कैसे काम लिया जाता है, जिसके कारण कारखाने के अधिकारियों ने उन लोगों का पता लगाने के लिए काफ़ी मेहनत की, लेकिन अन्त में यही पता लगा कि साल-भर हुए एबसेलाम वहाँ से काम छोड़कर चला गया था। संयोगवश, किसी को यह बात याद थी कि उनके यहाँ के एक मज़दूर, ढलामिनी, से एबसेलाम की दोस्ती थी। इस मज़दूर को फ़ौरन ही उसके काम से बुलवाया गया। उसने यह बताया कि कुछ समय पहले तक एबसेलाम सोफ़िया टाउन की एएड स्ट्रीट में रहनेवाली श्रीमती डलेला के यहाँ रहता था। यह सड़क वहाँ थी, जो सोफ़िया टाउन को वेस्ट डीन की अंग्रेज़ी बस्ती से पृथक करती थी। शायद श्रीमती डलेला के मकान का नम्बर १०५ था।

इसके बाद सिमांगु और कुमालो सोफ़िया टाउन वापस लौटे।....और सचमुच नम्बर १०५ एएड स्ट्रीट पर श्रीमती डलेला रहती थीं। उन्होंने उन दोनों का स्वागत किया। उनकी मुद्रा में मौन नम्रता थी, शील था। उनके बच्चे अपनी माँ के पीछे छुपकर आगन्तुकों की तरफ़ झाँक रहे थे। एबसेलाम वहाँ नहीं था, ऐसा उन्होंने बताया। लेकिन उनके पास उसका एक पत्र था, जिसमें उसने उन्हें अपने छूटे हुए सामान के बारे में लिखा था। इधर कुमालो उनके बच्चों-से खेलते रहे और सिमांगु उनके पति से बात करते रहे कि वह अन्दर से एक बक्स उठा लायीं, जिसमें बहुत-से पुराने काग़ज़ वग़ैरा थे। यह उन काग़ज़ों में एबसेलाम का ख़त ढूँढ़

रही थी। जब वह ख़त ढूँढ़ने में लगी थीं, सिमांगु उनके थके और दयालु चेहरे की ओर देख रहे थे। इस बीच उन्होंने देखा कि श्रीमती डलेला की आँखों ने ख़त ढूँढ़ते-ढूँढ़ते तनिक रुककर कुछ आश्चर्य से, कुछ दया से कुमालो को देखा। कुछ देर में पत्र मिल गया। उसपर यह पता था, मार्फत श्रीमती काइज़, ७६।२३वाँ एवेन्यू, एलेक्ज़ैन्डरा।

फिर श्रीमती डलेला ने अनुरोध किया कि वे लोग चाय पीकर ही जायँ। उनके उठते-उठते काफ़ी अँधेरा हो गया था। श्री डलेला कुमालो को सड़क तक पहुँचाने आये।

सिमांगु ने श्रीमती डलेला से पूछा—आपने मेरे मित्र की तरफ़ दया से क्यों देखा था?

श्रीमती डलेला की आँखें पल-भर को झुक गयीं—वह पादरी हैं न?

—हाँ।

—मुझे उनके लड़के के साथी पसन्द नहीं थे और न मेरे पति उन लोगों को अच्छा समझते थे। इसी लिए वह यहाँ से चला भी गया।

—समझ गया। क्या और कोई इससे अधिक बुरी बात थी?

—नहीं, और तो मुझे कुछ नहीं दिखायी दिया। लेकिन मुझे उसके दोस्त अच्छे नहीं लगते थे।

श्रीमती डलेला के चेहरे पर सचाई थी। उनकी आँखें फिर नहीं झुकीं। फिर सिमांगु ने बिदा ली—अच्छा, नमस्कार, माँ!

—नमस्कार, उम्फ़ुन्दीस!

सिमांगु के बाहर आने पर उन लोगों ने श्री डलेला से भी बिदा ली और वे मिशन हाउस की ओर लौट पड़े।

—कल हम लोग एलेक्ज़ैन्डरा चलेंगे,—सिमांगु ने कहा।

कुमालो ने अपने साथी के कन्धे पर हल्के से हाथ रखा—वे बातें बहुत दुःख-पूर्ण हैं, जिनके कारण मैं जोहैन्सबर्ग आया, लेकिन आपके साथ मुझे बहुत आनन्द मिला है।

—हूँह:-हूँ:!—सिमांगु बात टालते हुए बोले—जल्दी चलें, वर्ना खाने में देर हो जायगी।

(८)

अगले दिन सुबह मिशन हाउस में खाना खाने के बाद कुमालो और सिमांगु उस चौड़ी, बड़ी सड़क की ओर चल दिये, जहाँ से बहुत-सी बसें चलती हैं।

—यहाँ हर बस ठीक बस है, आप कोई भी ले सकते हैं।

कुमालो मुस्करा दिये, यह मज़ाक उन्हीं पर था, उनके इस डर पर कि कहीं वह ग़लत बस पर न बैठ जायँ।

—यहाँ से सभी बसें जोहैन्सबर्ग जाती हैं, यहाँ ग़लत बस पर बैठने का कोई ख़तरा नहीं।—सिमांगु बोले।

वह सबसे पहली बस पर ही बैठ गये और उसने उन लोगों को वहाँ उतार दिया, जहाँ सबसे पहले दिन कुमालो ने एक पाउंड खोया था। इसके बाद वह पैदल चलने लगे, उन सड़कों पर, जहाँ बहुत-सी मोटरें थीं, बसें थीं, आदमी थे। थोड़ी देर में वे लोग वहाँ पहुँच गये, जहाँ से एलेक्ज़ैन्डरा को बस जाती थी। लेकिन यहाँ उन्हें एक अजीब बाधा पड़ी, उन लोगों के पास एक आदमी आया और उसने सिमांगु से पूछा—क्या आप एलेक्ज़ैन्डरा जा रहे हैं, उम्फुन्दीस ?

—हाँ, मित्र।

—हम आपको वहाँ जाने से रोकेंगे, उम्फुन्दीस। ताकत से नहीं, वह देखिए!—उसने इशारे से दिखाया—वैसा करने से रोकने के लिए पुलीस है। अगर आप इस बस पर बैठते हैं, तो आप काली जातियों का पक्ष कमज़ोर करते हैं। हम लोगों ने निश्चय किया है कि जब तक बस का किराया फिर से चार पेंस नहीं कर दिया जायगा, तब तक हम लोग बसों पर नहीं बैठेंगे!

—हाँ, मैंने यह सुना है,—सिमांगु ने उत्तर दिया। और फिर कुमालो से कहा—मुझसे बड़ी मूर्खता हुई, भाई। मैं भूल ही गया था कि बसों का वहिष्कार कर दिया गया है।

—लेकिन हमारा काम बहुत आवश्यक है,—कुमालो ने नम्रता से कहा।

—वहिष्कार भी बहुत आवश्यक है,—उस व्यक्ति ने शिष्टता से कहा—हमारे शासकों ने बस का किराया छः पेंस कर दिया है, जिसका मतलब एक शिलिंग रोज़! या सप्ताह में छः शिलिंग और हममें से काफ़ी लोगों को पैंतीस-चालीस शिलिंग ही मिलते हैं।

—क्या पैदल वह स्थान बहुत दूर है ?—कुमालो ने पूछा।

—हाँ, बहुत दूर है, उम्फुन्दीस। ग्यारह मील।

—बूढ़े आदमी के लिए यह फ़ासला तो काफ़ी दूर है।

—आप ही की उम्र के लोग वहाँ रोज़ पैदल आते-जाते हैं, उम्फुन्दीस। और औरतें, बच्चे, बीमार और अपाहिज। वे सुबह चार बजे अपने घरों से चलते हैं और रात को आठ बजे तक लौट नहीं पाते हैं। इसके बाद कुछ खा-पीकर वह थोड़ी देर ही सो पाते होंगे कि उन्हें फिर उठना पड़ता है और कभी-कभी पेट में गरम पानी ही डालकर चल पड़ते हैं। मैं आपको बस पर चढ़ने से रोक तो नहीं सकता,

उम्फुन्दीस, मगर हम लोग एक सही चीज़ के लिए लड़ रहे हैं और उसमें अगर हम असफल होते हैं, तो लोगों को सोफ़िया टाउन में, क्लेयरमान्ट में, क्लियटाउन में या पिमविल में, बस का किराया ज्यादा देना पड़ेगा।

—मैं आपकी बात समझ गया, हम लोग बस पर नहीं बैठेंगे।

उस व्यक्ति ने उन दोनों को धन्यवाद दिया और फिर वह एक दूसरे व्यक्ति की तरफ़ बढ़ गया, जो बस की तलाश में था।

—इस व्यक्ति की आवाज़ में कितना आकर्षण था!

—यही है वह प्रसिद्ध ड्यूब्यूला!—सिमांगु ने कहा—यह आपके भाई जान का दोस्त हैं, लेकिन लोग यह कहते हैं, क्षमा कीजिएगा, कि इन तीनों में टामलिनसन के पास तो बुद्धि है और आपके भाई के पास आवाज़, मगर दिल ड्यूब्यूला के पास ही है। सरकार भी इसी से सब से ज्यादा डरती है, क्योंकि यह खुद नहीं डरता। लोग कहते हैं कि अपना काम छोड़कर यह बसों के बहिष्कार का काम कर रहा है और इसकी पत्नी एलेक्ज़ैन्डरा जानेवाली बसों के अड्डे पर धरना दे रही है।

—यह तो गर्व की बात है। जोहैन्सबर्ग आश्चर्यजनक स्थान है।

—कभी यह भी गिरजे के अनुयायी थे,—सिमांगु ने खेद प्रगट किया—मगर अब नहीं हैं। आपके भाई की तरह यह भी यही कहते हैं कि गिरजे के लोग बोलते मीठा हैं, करते कुछ भी नहीं। अच्छा, अब आप बताइए कि क्या किया जाय?

—मैं पैदल चलने को तैयार हूँ।

—ग्यारह मील आना, ग्यारह जाना। बहुत लम्बा सफ़र है!

—मैं तैयार हूँ। आप तो जानते ही हैं कि मैं बहुत चिन्तित हूँ। यह नगर, जोहैन्सबर्ग, किसी लड़के के अकेले रहने की जगह नहीं है।

—ठीक! तो फिर, आइए, चला जाय!

और उन्होंने अपनी लम्बी यात्रा शुरू कर दी। गोरे लोगों की बस्ती में से। ट्विस्ट स्ट्रीट से क्लेरेन्डन सर्किल, लुई बोथा होते हुए आरेन्ज ग्रव की तरफ़ और कार और लारियाँ बराबर इधर-से-उधर तेज़ी से चलती रहीं। बहुत दूर चल चुकने के बाद एक मोटर उन लोगों के पास आकर रुकी और एक अंग्रेज़ ने मुँह निकालकर उन लोगों से पूछा—आप दोनों कहाँ जा रहे हैं?

—हम लोग एलेक्ज़ैन्डरा जा रहे, श्रीमान,—हैट उतारकर सिमांगु ने उत्तर दिया।

—मैं भी यही समझता था। आइए, अन्दर बैठ जाइए!

इससे उन दोनों को बहुत सहायता मिला गयी और एलेक्ज़ैन्डरा के मोड़ पर उन लोगों ने उतरकर साहब को धन्यवाद दिया।

—आपका सफ़र लम्बा था और मैं जानता हूँ कि आप लोग बसों पर नहीं बैठते।

वह दोनों गाड़ी आगे बढ़ने की प्रतीक्षा में खड़े रहे। लेकिन गाड़ी आगे नहीं बढ़ी। साहब ने गाड़ी जोहैन्सबर्ग की तरफ़ फिर मोड़ दी।

—वाह! यह तो आश्चर्य की बात है!—सिमांगु ने कहा।

तेइसवाँ एवेन्यू, जहाँ उन्हें जाना था, अब भी काफ़ी दूर था। रास्ते में गलियों को पार करते हुए जब वे लोग चल रहे थे, तो सिमांगु ने बताया कि एलेक्ज़ैन्डरा जोहैन्सबर्ग नगर की सीमाओं से बाहर है और यहाँ काले लोग ज़मीन ख़रीद सकते हैं और अपने मकान बनवा सकते हैं। लेकिन यहाँ की सड़कों और गलियों की हालत बहुत ख़राब है और उनकी ओर कोई ध्यान नहीं देता। यहाँ बिजली भी नहीं है। लेकिन रहने की जगह का इतना अभाव है कि जो लोग बना सकते हैं, वे अपने मकान के अहातों में भी कोठरियाँ बनाकर किराये पर उठा देते हैं। इनमें से बहुत-सी कोठरियाँ ऐसी हैं, जो चोर-लफंगों के छुपने के स्थान हैं और यहाँ पर बहुत-सी वेश्याएँ भी रहती हैं और नाजायज़ शराब खींचती हैं। सिमांगु ने कहा—इस बस्ती की हालत इतनी ख़राब है कि कुछ दूर पर बने हुए यूरोपियन मोहल्लों के लोगों ने एक बार इस बात की दरख़्वास्त भी दी थी कि इस गन्दे मोहल्ले को क़तई ख़त्म ही कर दिया जाय। हमारी जाति के एक आवारा युवक ने इन मोहल्लों की किसी अंग्रेज़ बुढ़िया का थैला छीन लिया था और वह डर के कारण गिर पड़ी थी और मर गयी थी। एक दूसरी भयंकर घटना और भी हो गयी थी। यहाँ से थोड़ी ही दूर पर एक अंग्रेज़ औरत अकेली अपने मकान में रहती थी। कुछ आवारा युवक एक दिन उसके मकान में घुस पड़े और जब उस औरत ने उनको रोका, तो उन्होंने उसे जान से मार डाला। और कितनी ही बार ऐसा होता है कि प्रिटोरिया जानेवाली सड़क पर गोरे लोग घने पेड़ों के नीचे औरतों के साथ अपनी मोटरों में बैठे रहते हैं और ये युवक उनकी चीज़ें छीन लेते हैं और उनको पीटते हैं, उनके साथ की औरतों तक को पीट देते हैं। हाँ, यह अवश्य है कि वे औरतें खराब होती हैं। लेकिन यह भी एक ऐसा अपराध है, जिसके बारे में बात करने की हिम्मत नहीं होती।

कुछ देर बाद सिमांगु फिर बोले—मुझे एक और घटना याद आ गयी, जो जोहैन्सबर्ग के एक दूसरे भाग में हुई थी। मेरे एक दोस्त का अकेला मकान पार्चपराड्रूम रोड पर है। कड़ाके के जाड़े की रात थी और सुबह होने में काफ़ी देर थी कि उनके मकान के दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी। एक औरत खड़ी दरवाजा खटखटा रही थी, एक अंग्रेज़ औरत, जिसके शरीर पर बहुत फटे हुए कपड़े थे और उन्हें खींच-तानकर वह किसी तहर अपनी नग्नता छुपा रही थी, उसका शरीर जाड़े से नीला पड़ गया था। उसने बताया कि उसकी यह दशा एक अंग्रेज़ ने की थी। उसने कहा कि वह उसे अपनी मोटर पर बैठाकर ले गया था और जब वह अपनी वासना शान्त कर चुका था, या नहीं, क्योंकि मैं कैसे बताऊँ, मैं तो वहाँ था नहीं, तो उसने इस औरत को

इन चीथड़ों में बाहर को ढंड में ढकेल दिया था और फिर वह अपनी कार पर जोहैन्सबर्ग वापस लौट गया था। मेरे दोस्त और उनकी पत्नी ने उस औरत को पहनने के लिए कुछ पुराने कपड़े दिये, उसके लिए गर्म चाय बनायी और उसे कम्बलों से ढँक दिया। बच्चे भी उठ गये थे और वे भी प्रश्न करने लगे थे। लेकिन मेरे दोस्त ने उन्हें सो जाने को कहा और उन्हें कमरे में देखने नहीं आने दिया। और तब मेरा मित्र उस अँधेरे में ही एक अंग्रेज़ किसान के यहाँ गया, जो उसके घर से थोड़ी दूर पर ही रहता था। कुत्ते डरावने थे और मेरे मित्र को डर लग रहा था, लेकिन वह वापस नहीं लौटा। जब वह अंग्रेज़ किसान बाहर निकला, तो मेरे मित्र ने उसको वह घटना सुनायी और कहा कि इस झगड़े को किसी तरह चुपचाप निबटा दिया जाय। अंग्रेज़ किसान ने कहा, हुँ, मैं अभी चलता हूँ। और वह अपनी मोटर निकाल लाया और वे लोग मेरे मित्र के मकान को लौट आये। वह गोरी औरत रुपये से धन्यवाद देती, पर रुपया उसके पास नहीं था। मेरे दोस्त और उसकी पत्नी ने उसे समझाया कि इस सबके लिए रुपये की ज़रूरत नहीं है। और उस अंग्रेज़ किसान ने भी मेरे मित्र से कहा, तुम बहुत अच्छे आदमी हो। उसके दिल पर मेरे मित्र की भलाई का बहुत प्रभाव पड़ा था, इसलिए उसने अपने दिल से उसकी तारीफ़ की।

—मुझपर भी बहुत असर हुआ है इसका!—कुमालो ने कहा।

—हाँ, तो मैं आपको उस दरख्वास्त के बारे में बता रहा था। हमारे अंग्रेज मित्र इसके खिलाफ़ थे। उन्होंने कहा कि एलेक्ज़ैन्डरा की भलाइयाँ यहाँ की बुराइयों से कहीं ज़्याहा हैं। यहाँ पर लोग अपना घर बसा सकते हैं, उन घरों में वह अपने बच्चों की परवरिश कर सकते हैं, उन घरों पर उनका कुछ हक़ है, जिस धरती पर वह पैदा हुए हैं, उसपर उनका कुछ अधिकार है। प्रोफ़ेसर इहर्नले हमारी जाति के लोगों का बहुत साथ देते थे, हमारे अधिकारों के लिए लड़ते थे, लेकिन वह अब मर गये हैं, भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे! मुझे अफ़सोस है कि आप उनका भाषण अब सुन नहीं सकते। उनमें इन तीनों नेताओं के गुण थे, टामलिनसन की बुद्धि थी, आपके भाई की ज़ोरदार आवाज़ और ड्यू ब्यूला का-सा सच्चा हृदय। जब वह बोलने खड़े होते थे, तो कोई अंग्रेज़ उनका विरोध नहीं कर पाता था। मुझे अब तक याद है, वह जब कहते थे कि फ़लानी चीज़ इस तरह होगी, यह चीज़ नहीं होगी, उसको वहाँ होना पड़ेगा, तो कोई उसमें ज़रा-सा भी संशोधन या तब्दीली नहीं कर पाता था, चाहे वह अंग्रेज़ हो या अफ्रीकान!

सिमांगु ने रूमाल निकालकर मुँह पोंछा—मैंने रास्ते-भर बहुत बातें कीं। मैं यहाँ तक बोलता ही रहा।

एक औरत ने द्वार खोला। उसने उनका अभिवादन नहीं किया और अब उसे

यह मालूम हुआ कि वे लोग किस काम से आये हैं, तो उसने अनिच्छापूर्वक इन लोगों को अन्दर आने दिया।

—तो आप यह कहती हैं कि एबसेलाम यहाँ से चला गया, श्रीमती काइज़ ?

—जी, हाँ,....पता नहीं वह कहाँ गया।

—वह कब गया ?

—काफ़ी दिन हुए, लगभग एक साल तो हुआ होगा।

—और उसके कोई दोस्त था ?

—हाँ, कुमालो नाम का ही एक दूसरा लड़का उसका साथी था, उसका चचेरा भाई। लेकिन वे दोनों साथ-ही-साथ चले गये।

—और तुम्हें यह नहीं पता कि वे यहाँ से गये कहाँ ?

—बातें तो वे बहुत-सी जगहों के बारे में करते थे। लेकिन आप जानते हैं कि लड़कों की बातें कैसी होती हैं।

अब कुमालो ने प्रश्न किया—इस लड़के का, एबसेलाम का, ढंग कैसा था ?

निस्सन्देह उस औरत की आँखों में डर था और निस्सन्देह कुमालो की आँखों में भी डर था। सच तो यह है कि इस मकान में ही डर था।

—मैंने तो कोई बुरी बात नहीं देखी,—श्रीमती काइज़ बोली।

—लेकिन आपको शक तो था कि कुछ गड़बड़ है।

—कोई गड़बड़ नहीं थी।

—तो आप डर क्यों रही हैं ?

—मैं डर नहीं रही हूँ।

—मगर आप काँप क्यों रही हैं ?—सिमांगु बोले।

—मुझे सर्दी लग रही है,—उसने गुस्से से उन लोगों की तरफ़ सतर्कता-पूर्वक देखा।

—अच्छा, धन्यवाद ! अब हम जा रहे हैं, तुम खुश रहो !

—बिदा।

सड़क पर आकर कुमालो बोले—मुझे कुछ गड़बड़ मालूम होती है।

—मैं भी यही समझता हूँ। प्रिय मित्र, हम दोनों मिलकर बहुत-से लगते हैं। आप ऐसा कीजिए कि इस बड़ी सड़क से बायें हाथ की तरफ़ मुड़ जाइए ! पास में एक छोटी-सी पहाड़ी मिलेगी, उसके ऊपर एक छोटा-सा रेस्तराँ है। वहीं आप मेरी प्रतीक्षा कीजिएगा।—सिमांगु ने कहा।

उदास मन कुमालो चल दिये। जब तक कुमालो नुक्कड़ पर मुड़ न गये, तब तक सिमांगु धीरे-धीरे उनके पीछे चले और वहाँ से लौटकर श्रीमती काइज़ के घर लौट गये।

श्रीमती काइज़ ने फिर दरवाज़ा खोला। अब भी वह नाराज़ मालूम होती थी, लेकिन अब तक वह सँभल गयी थी, इसलिए डर से ज्यादा गुस्सा था।

—मैं पुलीस का आदमी नहीं हूँ। मेरा पुलीस से कोई सम्बन्ध नहीं है और न मैं उनसे कोई सम्बन्ध रखना चाहता हूँ। लेकिन एक वृद्ध आदमी बहुत दुखी हैं, क्योंकि उन्हें अपने बेटे का पता नहीं चल रहा है।—सिमांगु ने कहा।

—यह बुरी बात है,—वह बोली, लेकिन इस तरह, मानो कुछ बोलने के लिए विवश हो।

—हाँ, यह बुरी बात है। और मैं यहाँ से तब तक नहीं हटूँगा, जब तक आप मुझे यह नहीं बता देंगी, जो आप नहीं बता रही हैं।

—मुझे कुछ नहीं बताना है।

—आपको इसलिए नहीं बताना है कि आप डरी हुई हैं। और आप सर्दी से नहीं काँप रही हैं।

—तो फिर मैं क्यों काँप रही हूँ?—श्रीमती काइज़ ने पूछा।

—यह तो मुझे नहीं मालूम। लेकिन मैं आपको तब तक नहीं छोड़ूँगा, जब तक उसका पता नहीं लगा लूँगा। और अगर आवश्यकता हुई, तो मैं पुलीस में भी जाऊँगा, क्योंकि मेरे पास कोई और चारा न होगा।

—अकेली औरत की बड़ी मुसीबत होती है!—काइज़ ने रुष्ट होकर कहा।

—उस वृद्ध आदमी की बड़ी मुसीबत है, जो अपने बेटे को ढूँढ़ रहा है!

—मुझे डर लगता है!

—उन्हें भी डर लगता है! क्या आपने नहीं देखा कि वह भी डरे हुए हैं?

—जी, हाँ, उम्फुन्दोस। मैंने देखा।

—तो बताइए, वे दोनों लड़के यहाँ कैसा जीवन बिताते थे?

लेकिन श्रीमती काइज़ चुप रही। उसकी आँखों में भय था और उनमें आँसू। सिमांगु को लगा कि इस औरत को विचलित करना मुश्किल है।

—मैं पादरी हूँ। क्या आपको मेरी बात का भी विश्वास नहीं?

लेकिन वह अब भी चुप ही थी।

—आपके पास बाइबिल है?

—जी, हाँ, मेरे पास बाइबिल है।

—तब मैं बाइबिल की सौगंध खाकर आपको आश्वासन दे सकता हूँ।

पर वह अब भी चुप थी।

सिमांगु ने फिर कहा—मैं बाइबिल की शपथ खाता हूँ।

इस प्रकार शान्ति न पाकर वह अनिश्चित भाव से उठकर पीछे के कमरे में चली गयी और कुछ देर बाद बाइबिल लिये हुए लौटी।

—मैं पादरी हूँ। मेरी 'हाँ' हमेशा 'हाँ' होती है, और 'न' 'न'! लेकिन चूँकि आप चाहती हैं और चूँकि एक वृद्ध डरे हुए हैं, इसलिए मैं इस पुस्तक की शपथ खाकर कहता हूँ कि इस सम्बन्ध में आप पर कोई आपत्ति नहीं आयगी, क्योंकि हमारा उद्देश्य केवल लड़के का पता लगाना है। टीको! मेरी सहायता करना!

—अब बताइए, उनका जीवन कैसा था?

—वे काफी रात गये यहाँ तरह-तरह की चीजें लाते थे, उम्फुन्दीस। कपड़े, घड़ियाँ, रुपया, बोतलें भर-भरकर खाना और भी बहुत-सी चीजें।

—क्या उनपर कभी खून के दाग भी होते थे?

—मैंने उनपर कभी खून के दाग नहीं देखे।

—यह कुछ हुआ। थोड़ा ही, पर कुछ हुआ।—सिमांगु ने फिर पूछा—और उन लोगों ने यह जगह क्यों छोड़ी?

—यह तो मैं नहीं जानती, उम्फुन्दीस। लेकिन मेरा ख्याल है कि यहाँ क़रीब-क़रीब उनका पता लग गया था।

—और वे लोग यहाँ से गये कब?

—लगभग एक साल हुए, जैसा मैंने आपको पहले ही बताया था।

—और क्या आप भी इस बाइबिल की शपथ खाकर कह सकती हैं कि आपको यह नहीं मालूम कि वे यहाँ से कहाँ गये?

श्रीमती काइज़ ने बाइबिल की ओर अपना हाथ बढ़ाया, लेकिन सिमांगु ने बीच में ही रोककर कहा—रहने दीजिए।—और इसके बाद सिमांगु ने श्रीमती काइज़ से बिदा ली और बाहर निकलने लगे। लेकिन श्रीमती काइज़ ने उनके जाते-जाते कहा—देखिए, इहलाबेनी नामक टैक्सी ड्राइवर से उनकी दोस्ती थी। बस के अड्डे के पास ही वह रहता है। उसे सब जानते हैं।

—इसके लिए बहुत धन्यवाद! आप सुखी रहें, श्रीमती काइज़!—और सिमांगु चले पड़े।

रेस्तराँ में कुमालो उनका इन्तज़ार कर रहे थे।

—क्या कोई नयी बात मालूम पड़ी?—कुमालो ने अधीरता से पूछा।

—उन लोगों के एक दोस्त, टैक्सी ड्राइवर इहलाबेनी, का पता लगा है। हम कुछ खा लें, उसके बाद उसका पता लगायँगे।

खाने के बाद सिमांगु ने जाकर एक व्यक्ति से उस टैक्सी ड्राइवर का पता पूछा।

—देखिए, वह कोने पर अपनी टैक्सी में बैठा है,—उत्तर मिला।

सिमांगु टैक्सी की तरफ़ गये और उसके ड्राइवर से बोले—नमस्कार, भाई।

—नमस्कार, उम्फुन्दीस।

—मुझे टैक्सी चाहिए। जोहैन्सबर्ग का क्या लोगे? मैं हूँ और मेरे एक दोस्त हैं।

—आपसे मैं ग्यारह शिलिंग लूँगा।

—यह तो बहुत है!

—दूसरे टैक्सीवाले तो पन्द्रह-बीस शिलिंग तक लेते हैं।

—खैर, मेरे साथी वृद्ध हैं और थके हुए हैं, मैं तुम्हें ग्यारह शिलिंग दे दूँगा।

टैक्सी ड्राइवर अपनी माटर का इंजन चलाने को हुआ, मगर सिमांगु ने उसे रोका—मुझे पता लगा है कि एबसेलाम कुमालो नाम के युवक का पता लगाने में तुम हमारी सहायता कर सकते हो।

सिमांगु ने शीघ्र ही उसे आश्वासन दिया—मैं कोई मुसीबत नहीं खड़ी करना चाहता। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मैं न तो तुम्हारे लिए और न अपने लिए मुसीबत खड़ी करना चाहता हूँ। लेकिन मेरे वृद्ध साथी, जो बहुत थके हुए हैं, उस लड़के के पिता हैं और वह नैटाल से उसका पता लगाने यहाँ आये हैं। जहाँ भी हम जाते हैं, हमसे कहीं और जाने को कहा जाता है। और वृद्ध चिन्तित हैं।

—हाँ, मैं उस युवक को जानता हूँ।

—इस समय वह कहाँ है?

—मैंने सुना था कि अब वह आरलैन्डो चला गया है और वहाँ के शैन्टी टाउन के बेघर लोगों के साथ रहता है। पर इससे अधिक मैं और कुछ नहीं जानता।

—आरलैन्डो तो बहुत बड़ी जगह है।

—जहाँ ये बेघर लोग मैदानों में रहते हैं, वह उतनी बड़ी बस्ती नहीं है और वहाँ उसका पता लगाना मुश्किल भी नहीं होगा। वहाँ म्युनिसिपैलिटी के कुछ कर्मचारी हैं, जो उन-सब लोगों में काम करते हैं और उन-सबको जानते हैं। उनमें से आप किसी से पता लगा सकते हैं।

—यह तो, भाई, तुमने हमारी बहुत सहायता की। मैं उनमें से कुछ लोगों को जानता हूँ। अच्छा, चलिए अब हम आपकी टैक्सी पर चलेंगे।

सिमांगु ने कुमालो को आवाज़ दी और उन्हें बताया कि। वे लोग अब टैक्सी से लौट रहे हैं। वे लोग गाड़ी में बैठ गये और टैक्सी एलेक्जैन्डरा की बस्ती छोड़कर उस लम्बी-चौड़ी सड़क पर आ गयी, जो प्रिटोरिया से जोहैन्सबर्ग जाती है। दोपहर ढलने लगी थी और अब सड़क पर भीड़ काफ़ी थी, क्योंकि इस समय लोग बड़ी संख्याओं में जोहैन्सबर्ग जाते भी हैं और वहाँ से लौटते भी हैं।

—यह बाइसिकिलें देख रहे हैं आप? एलेक्जैन्डरा में रहनेवाले लोग हज़ारों की संख्या में अपने काम से लौट रहे हैं और बसों के बहिष्कार के कारण हज़ारों आदमी आपको पैदल चलते भी दिखायी देंगे।

यह ठीक ही था, क्योंकि वह ज्यादा दूर न गये होंगे कि कुमालो ने देखा कि पटरी हज़ारों पैदल चलनेवाले लोगों से खचाखच भरी थी। उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि भीड़ वहाँ नहीं समा पा रही थी और सड़क पर भी आ गयी थी और मोटरों को बहुत होशियारी से चलना पड़ रहा था। और पैदल चलने वालों में कुछ बूढ़े थे, कुछ थके हुए थे, कुछ अपाहिज भी थे, पर उनमें से अधिकांश की चाल में एक दृढ़ता थी। यह कई हफ्तों से हो रहा था। कई अंग्रेज़ अपनी मोटरें रोककर काले आदमियों को बैठा लेते थे और एलेक्ज़ैन्डरा तक जाने में उनकी सहायता कर देते थे। एक जगह जहाँ सिगलन पर उन्हें भी रुकना पड़ा, उन्होंने देखा कि एक ट्रैफ़िक अफ़सर ऐसे एक अंग्रेज़ की मोटर रोककर बात कर रहा है और पूछ रहा है कि क्या उनके पास काले आदमियों को अपनी कार में बैठाने का लाइसेंस है?

—मैं इन लोगों से रुपया नहीं माँगता,—अंग्रेज़ ने उत्तर दिया।

—लेकिन बस के रास्ते पर आप लोगों को अपनी कार में ले जा रहे हैं?—अफ़सर ने कहा।

—तो मुझे अदालत में ले चलो!—अंग्रेज ने उत्तर दिया।

लेकिन इसके आगे वे लोग न सुन सके, क्योंकि अब तक बत्ती हरी हो गयी थी और उन्हें आगे बढ़ना था।

—मैंने यह सुना था कि सरकार यही चाहती है,—सिमांगु बोले—वे चाहते हैं कि अंग्रेज़ लोग अपनी मोटरों से इन लोगों की सहायता करना बन्द कर दें और उनके न मानने पर वे उन्हें कचहरी ले जाने के लिए भी तैयार हैं।

अब तक अँधेरा हो रहा था, लेकिन सड़क पर अब भी एलेक्ज़ैन्डरा जाने-वालों की भीड़ थी, अब भी अंग्रेज़ लोगों की मोटरें रुक-रुककर उनको चढ़ा रही थीं, विशेष कर बूढ़ों को, औरतों को और बीमारों को। कुमालो के चेहरे पर एक मुस्कराहट थी, एक अजीब मुस्कराहट, जो और देशों में नहीं होती, उस काले आदमी की मुस्कराहट, जब वह देखता है कि अंग्रेज़ खुले आम उसके जातिवालों की सहायता कर रहे हैं, ऐसी बातें आसानी से नहीं होती हैं। और वह यह-सब देखने में इतने व्यस्त थे कि वह चौंक पड़े, जब सिमांगु एकाएक बोले—इससे मैं हार गया, मित्र!

—किससे, इस दया से?

—नहीं, नहीं, वास्तव में यह बात तो मैं सोच भी नहीं रहा था,—सिमांगु टैक्सी की सीट पर बैठ गये और उन्होंने अपने सीने पर जोरों से हाथ मारकर कहा—उसने कहा, मुझे अदालत ले चलो!—उन्होंने तेज़ आँखों से कुमालो की तरफ़ देखा और सीने पर फिर हाथ मारा—उसने कहा, मुझे अदालत चलो!

अचम्भे में कुमालो ने उनकी तरफ़ देखा।

—इससे मैं हैरान हूँ!—सिमांगु ने कहा।

(६)

सब सड़कें जोहैन्सबर्ग को जाती हैं। आप गोरे हों या काले, वे जोहैन्सबर्ग जाती हैं। अगर फ़सल ख़राब होती है, तो जोहैन्सबर्ग में काम है; अगर टैक्स देने के लिए रुपये की कमी है, तो भी जोहैन्सबर्ग में काम मिल जाता है; अगर खेत इतना छोटा रह गया है कि उसके ज्यादा हिस्से नहीं किये जा सकते, तो भी कुछ लोगों को जोहैन्सबर्ग जाना पड़ेगा; अगर छुपकर बच्चा पैदा कराना है, तो यह भी जोहैन्सबर्ग में ही हो सकता है।

काली जातियों के लोग एलेक्ज़ैन्डरा या सोफ़िया टाउन या आरलैन्डो जाते हैं और वहाँ या तो किसी मकान का हिस्सा ख़रीदने या कोठरियाँ किराये पर लेने की कोशिश करते हैं।

—क्या आप कोई कमरा किराये पर दे सकते हैं?

—नहीं, मेरे पास जगह नहीं है।

—क्या आप कमरा किराये पर दे सकते हैं?

—वह तो उठ गया है।

—क्या आप कमरा किराये पर उठायँगी?

—हाँ, कमरा तो ख़ाली है, लेकिन मैं उसे किराये पर नहीं देना चाहती। मेरे पास सिर्फ दो ही कमरे हैं और हम छः प्राणी हैं। लड़के और लड़कियाँ बड़े हो रहे हैं। लेकिन स्कूल की किताबों के लिए पैसा चाहिए और मेरे पति भी बीमार हैं। अगर वह अच्छे भी होते, तो भी तो उन्हें हफ्ते में पैंतीस शिलिंग ही मिलता। उसमें से छः शिलिंग किराये के, तीन शिलिंग सफ़र के, एक शिलिंग इसलिए कि हम लोग ढंग से दफनाये जा सकें, एक शिलिंग किताबों का, तीन शिलिंग कपड़ों के लिए, हालाँकि इतना भी कम है, एक शिलिंग मेरे पति की बियर के लिए और एक शिलिंग उनको तम्बाकू के लिए और इन-सबका मुझे बुरा नहीं लगता, क्योंकि वह भला आदमी है, वह न जुआ खेलता है और न पराई औरतों पर पैसा बिगाड़ता है, एक शिलिंग गिरजे के लिए, एक शिलिंग बीमारी के लिए। इस-सबके बाद छः आदमियों के खाने के लिए सिर्फ सत्रह शिलिंग बचते हैं, जिससे हम लोग हमेशा भूखे रहते हैं। हाँ, मेरे पास एक कमरा है, लेकिन मैं उसे किराये पर उठाना नहीं चाहती। आप कितना किराया देंगे?

—मैं तीन शिलिंग फ़ी हफ्ता दे सकता हूँ।

—मुझे मंजूर नहीं।

—साढ़े तीन शिलिंग ?

—साढ़े तीन शिलिंग ! अलग कमरे से पेट नहीं भरता ! जब बच्चे बढ़ रहे होते हों, तो अलहदगी की ज़रूरत होती है। लेकिन पेट तो नहीं भरता। हाँ, मैं साढ़े तीन शिलिंग ले लूँगी।

मकान टूटा नहीं है, मगर ठसाठस भर जाता है। दो कमरे और दस आदमी, और आने-जाने के लिए एक ही दरवाजा है और सोते में लोगों के ऊपर होकर जाना पड़ता है। लेकिन बच्चों को थोड़ा और खाना मिल जाता है और शायद महीने में एक बार सिनेमा भी हो जाय।

—मुझे यह औरत अच्छी नहीं लगती, कैसी नज़र से वह मेरे पति की ओर देखती है ! मुझे यह लड़का अच्छा नहीं लगता और न उसका वह ढङ्ग, जिससे वह मेरी लड़की की ओर देखता है। मुझे यह आदमी अच्छा नहीं लगता, मुझे यह ढङ्ग पसन्द नहीं, जिससे यह मेरी लड़की की तरफ़ देखता है !

—मुझे अफ़सोस है, मगर अब आप मकान छोड़ दीजिए।

—लेकिन और हम कहाँ जायँ ?

—मैं मजबूर हूँ, घर में बिल्कुल जगह नहीं है। इसमें इतने लोग नहीं रह सकते।

—हमने एक मकान के लिए अपना नाम लिखा दिया है। मकान मिलने तक आप रुक नहीं सकतीं ?

—आरलैन्डो में लोग पाँच-पाँच वर्ष से मकान मिलने का इन्तज़ार कर रहे हैं !

—लेकिन मेरे एक दोस्त को तो सिर्फ़ महीना-भर ही इन्तज़ार करना पड़ा था।

—हाँ, ऐसा भी होता है। घूस देकर ऐसा करा सकते हैं।

—लेकिन हमारे पास घूस देने को पैसा नहीं है। मकान में बिल्कुल जगह नहीं है।

हाँ, यह मकान भरा है, और वह मकान भरा है, क्योंकि हर आदमी जोहैन्सबर्ग आ रहा है, ट्रान्सकेई से और फ्री स्टेट से, जुलूलैंड से और सेकुन्कुनीलैंड से। जुलू और स्वाज़ी, शंगान और बवेंडा, बायेडी और बसूटो, ज़ोसा और तेम्बू, पोन्डो और फिन्गो, यह-सब लोग जोहैन्सबर्ग आ रहे हैं।

मुझे यह औरत अच्छी नही लगती....मुझे यह लड़का अच्छा नहीं लगता....मुझे यह आदमी नहीं अच्छा लगता....मैं मजबूर हूँ....आपको मकान ख़ाली करना ही पड़ेगा !

—सिर्फ एक हफ़्ते का समय और दीजिए !

—हाँ, एक हफ़्ते का वक़्त मैं आपको देती हूँ।

*

—क्या आपके यहाँ एक कमरा खाली है ?

—नहीं।

—क्या आपके यहाँ एक कमरा ख़ाली है ?

—कमरा किराये पर उठ गया हैं।

—क्या आप एक कमरा किराये पर दे सकती हैं ?

—हाँ, एक कमरा खाली तो है, लेकिन मैं उसे किराये पर उठाना नहीं चाहती। मैंने देखा है कि पति को औरतें और पत्नियों को आदमी फँसा ले जाते हैं। बेटियों को लड़के खराब कर देते हैं और बेटों को लड़कियाँ ख़राब कर देती हैं। लेकिन मेरे पति को केवल चौंतिस शिलिंग हर हफ़्ते मिलते हैं....

*

—हम लोग, जिनके पास घर नही है, क्या करें ?

—तुम पाँच वर्ष तक मकान के लिए इन्तज़ार कर सकते हो और उसके अन्त में भी मकान मिलने की सम्भावना उतनी ही कम होगी, जितनी शुरू में थी।

—सुना है, आरलैन्डो में ही दस हज़ार ऐसे लोग हैं, जो दूसरों के मकानों में किराये पर रहते हैं।

—तुमने सुना है, ड्यूब्यूला क्या कहते हैं ? वह कहते हैं कि आरलैन्डो में हमें अपने मकान खुद ही बना लेने चाहिएँ !

—लेकिन मकान बनाये कहाँ ?

—रेल की लाइन के पास खुले मैदान में, ऐसा ड्यूब्यूला कहते हैं !

—और मकान बनायें किस चीज़ के ?

—जो-कुछ भी मिल सके, बोरे और तख़्ते और मैदानों की घास और प्लान्टेशन के लट्ठों से।

—और जब बारिश हो ?

—ओह, तब ! ख़ातमा समझो, तब मौत है !

—नहीं, जब बरसात होगी, तो उन्हें हमारे लिए मकान बनाने ही पड़ेंगे।

—नहीं, बेवकूफी है। जाड़े में हम क्या करेंगे ?

छः साल तक मकान मिलने की प्रतीक्षा ! और जिस तरह मकान भरे हुए हैं, वह और भर जाते हैं, क्योंकि लोग अब भी जोहैन्सबर्ग आते ही जा रहे हैं। यूरोप और उत्तरी अफ़्रीका में बहुत बड़ा युद्ध चल रहा है, और अब नये मकान नहीं बनाये जा रहे हैं।

—क्या अब आपके पास मेरे लिए कोई मकान है ?

—नहीं, अभी कोई मकान नहीं है।

—क्या आपको ठीक मालूम है कि मेरा नाम फेहरिस्त में है ?

—हाँ, आपका नाम फेहरिस्त में है।

—फेहरिस्त में मेरी क्रम-संख्या क्या है ?

—मैं कह नहीं सकता, लेकिन छः हज़ार के आस-पास होगी।

फेहरिस्त में छठा हज़ार नम्बर ! इसका मतलब मुझे मकान कभी नहीं मिल सकेगा और जहाँ मैं अब रह रही हूँ, वहाँ और ज्यादा रह भी नहीं सकती। चूल्हे के बारे में, बच्चों के बारे में हमारा झगड़ा हो चुका है। और जिस तरह उसका आदमी मेरी तरफ़ देखता है, वह भी मुझे बुरा लगता है। रेल की लाइन के पास तो बहुत-सा खुला मैदान पड़ा है, लेकिन बरसात और जाड़ों में क्या होगा ? वे लोग यह कहते हैं कि चौदह दिन के अन्दर हम-सब वहाँ चले जायँ। वे कहते हैं कि हमें तख़्ते और बोरे और टीन के टुकड़े और बाँस इकट्ठे करके वहाँ चला जाना चाहिए। वे यह भी कहते हैं कि हम-सबको कमेटी को हर हफ़्ते एक शिलिंग देना चाहिए और बदले में वे लोग कूड़ा उठवाकर साफ़ करा देंगे, और हमारे लिए टट्टियाँ बनवा देंगे, ताकि बीमारियाँ न फैल सकें। लेकिन बरसात और जाड़े में हमारा क्या होगा ?

—क्या अब मुझे मकान मिलने की कोई उम्मीद है ?

—नहीं, अभी कोई मकान नहीं है।

—लेकिन दो साल से मेरा नाम फेहरिस्त पर है !

—तो फेहरिस्त के हिसाब से तो अभी आप बच्ची ही हैं।

—क्या यह बात ठीक है कि अगर आप रुपया दें, तो....

लेकिन वह आदमी मेरी बात सुनता ही नहीं, वह किसी दूसरे व्यक्ति से बात करने लगा है। पर एक दूसरा आदमी मेरे पास न जाने कहाँ से आया और उसकी बातों ने मुझे हैरान कर दिया।

—मुझे खेद है, श्रीमती सीम, कि यह लोग आपको मकान नहीं दे सके। पर मेरी पत्नी आपसे कमेटी के बारे में कुछ बात करना चाहती हैं। आज शाम को सात बजे। आप हमारा मकान जानती हैं ? डच रिफ़ार्म्ड चर्च के पास, नम्बर १७८५२। मैं आपकी सुविधा के लिए मकान का नम्बर लिखे देता हूँ। अच्छा, नमस्कार, श्रीमती सीम !

लेकिन ज्योंही मैं उसे जवाब देने को हुई कि वह गायब हो गया।

इस आदमी ने तो मुझे बौखला दिया। कौन है इसकी बीवी ? मैं उसे नहीं जानती। और कौन-सी कमेटी है यह ? मुझे तो किसी कमेटी का पता नहीं।

—आप तो सीधी-सादी औरत हैं। वह आपसे यह तय करना चाहता था कि आप मकान के लिए कितना रुपया देने को तैयार हैं?

तो फिर मैं वहाँ अवश्य जाऊँगी। यही सोचती हूँ कि वह बहुत ज्यादा नहीं माँगे, सैंतिस शिलिंग फ़ी हफ़्ते की आमदनी में से ज़्यादा नहीं दिया जा सकता है। लेकिन मकान तो हमें लेना ही होगा। जहाँ हम रहते हैं, उस जगह से मुझे डर लगता है। रात में जब भले लोग सोते हैं, तब वहाँ बड़ी आवा-जाही होती है,....बहुत-से युवक आते-जाते रहते हैं, जो शायद कभी सोते ही नहीं, कभी काम नहीं करते और वह बहुत-से कपड़े, अच्छे कपड़े अंग्रेज़ लोगों के कपड़े पहनते हैं। किसी दिन वहाँ कोई गड़बड़ अवश्य ही होगी और मेरे पति और मैं अब तक कभी झगड़े में नहीं फँसे हैं। हमें मकान लेना ही पड़ेगा।

*

—पाँच पाउंड बहुत है, मेरे पास इतना रुपया नहीं है।

—मकान के लिए पाँच पाउंड बहुत नहीं हैं, श्रीमती सीम!

—क्या, सिर्फ फेहरिस्त में मेरा नाम ऊपर करने के लिए?

—यह खतरनाक काम है। यूरोपियन मैनेजर ने कहा है कि जो भी फेहरिस्त में हेर-फेर करेगा, उसे कड़ी सज़ा मिलेगी।

—मैं मजबूर हूँ, मैं रक़म नहीं दे सकती!

लेकिन मेरे वहाँ से चलने के पहले उस आदमी की पत्नी किसी दूसरी औरत के साथ कमरे में आती है।

—तुमने कोई गलती कर दी। मैं इन्हें नहीं जानती। यह कमेटी में नहीं हैं।

—ओह! मुझसे गलती हुई, मुझे क्षमा कीजिएगा, श्रीमती सीम। मैं समझा था कि आप भी कमेटी की सदस्या हैं। आप सुखी रहें, श्रीमती सोम!

लेकिन मैं सुख से नहीं रहती। मुझे इसकी चिन्ता नहीं कि वे लोग सुखी हैं या दुखी। मेरे साथ तो कुछ भी ठीक नहीं है। मैं थकी और अकेली हूँ। आह, पति-देव! हमने अपना देश क्यों छोड़ा? वहाँ बहुत नहीं है, लेकिन यहाँ से तो अच्छा है। वहाँ ज्यादा भोजन नहीं है, लेकिन जितना भी है, उसे सब बाँट कर खाते हैं। अगर वहाँ सभी ग़रीब हैं, तो ग़रीब होना ऐसा बुरा नहीं है। नदी के किनारे कितना सुहावना है! कपड़े धोते समय पानी पत्थरों पर से बहता है और हवा से ठंड मिलती है। अब से दो हफ्ते बाद यहाँ से हटना ही होगा। आओ, पतिदेव, तख्ते, टीन, बोरे और बाँस आदि इकट्ठा कर लें। जहाँ हम अब रह रहे हैं, वह जगह मुझे अच्छी नहीं लगती।

बरगवसाथ हस्पताल में तख्ते हैं, जो मज़दूरों ने छोड़ दिये हैं। चलो, रात को चलकर उन्हें उठा लायें। रिफर्मेटरी में नलीदार लोहे की चादरें है, जो वे लोग

इंटें ढकनें के काम में लाते हैं, चलो, आज रात को चलकर उठा लायँ। नैन्सफील्ड स्टेशन पर बोरे हैं, जो बंडलों में सफाई से बँधे हुए पड़े हैं, उन्हें भी रात में उठा लायँ। क्राउन खान के पास पेड़ हैं, चलो, रात में चलकर कुछ तने काट लायँ।

*

आज रात को वे-सब आरलैन्डो में व्यस्त हैं। एक-के-बाद एक मकान में बत्तियाँ जल रही हैं। मैं और लोहा ले आऊँगा और बीवी, तुम बच्चा ले जाना, और बेटा, तुम दो खंभे ले आना और नन्हें, तुम बोरे ले आना, रेल की पटरी के किनारे-किनारे जितने भी ला सको। बहुत-से लोग वहाँ हैं, खुदाई की और हथौड़ों की आवाज अभी से सुनायी पड़ रही है। यह अच्छा है कि रात गर्म है और वर्षा नहीं हो रही है....धन्यवाद, श्री ड्यूब्यूला! हम ज़मीन के इस टुकड़े से बहुत सन्तुष्ट हैं। धन्यवाद, श्री ड्यूब्यूला! यह रहा कमेटी के लिए एक शिलिंग!

रात-ही-रात में शैन्टी टाउन बनकर तैयार हो गया। जब लोग सुबह सोकर उठेंगे, तो उन्हें कितना आश्चर्य होगा! बोरे की छत से धुआँ निकलता दिखायी देगा, एक-दो मकानों में तो चिमनियाँ भी लग गयी हैं। चिमनी के पाइप का एक छोटा-सा टुकड़ा क्लिप टाउन पुलीस थाने में पड़ा था। लेकिन मैं इतनी मूर्ख नहीं कि उसे ले आती!

रात-ही-रात में शैन्टी टाउन की बस्ती उठ खड़ी हुई है और अखबारों में हमारी ही चर्चा है। बड़े-बड़े अक्षर और तस्वीरें! देखो, तस्वीर में मेरे पति अपने मकान के पास खड़े हैं। खेद है कि तस्वीर खिंचाने के लिए मुझे देर हो गयी। हमें लोग 'दखल करनेवाले' कहते हैं, और वह तो हम हैं ही। बोरे और रद्दी लोहे और तख्तों का यह बड़ा-सा गाँव, जिसमें कुछ किराया नहीं देना है, सिर्फ़ कमेटी को एक शिलिंग देना पड़ता है।

शैन्टी टाउन रात-ही-रात में खड़ा हो गया है। बच्ची बुरी तरह खाँसती है और उसका माथा तवे की तरह गरम है। उसे हटाने में डर लगता था, लेकिन उस रात को तो मकान छोड़ना था। बोरे की दीवारों में से ठंडी हवा छन-छनकर आ रही है। बरसात में और जाड़ों में क्या होगा? चुप हो जाओ, मेरी बच्ची, अब न खाओ, तुम्हारी माँ तुम्हारे पास है!

*

बच्ची की खाँसी बढ़ गयी है। उसका माथा आग से भी ज्यादा गर्म है। शान्त हो जाओ, मेरी बच्ची, तुम्हारी माँ तुम्हारे पास है! बाहर हँसी-मज़ाक हो रहा है। खुदाई हो रही है, हथौड़ियाँ चल रही हैं और ऐसी भाषाओं में बात हो रही है, जो मेरी समझ में नहीं आती। चुप हो जाओ, मेरी रानी बेटी!....जहाँ तुम पैदा हुई थी, वह वादी बहुत सुहानी है। वहाँ नदी का पानी पत्थरों पर गाता हुआ बहता

है और वहाँ हवा ठंडी है। जानवर नदी-किनारे आते हैं और पेड़ों के साये में खड़े होते हैं। चुप हो जाओ, मेरी बेटी! भगवान, इसे चुपा दो! भगवान, हमारे ऊपर दया करो! ईसा हम पर कृपा करो! अंग्रेज़ो, हमारे हाल पर रहम खाओ!

*

—श्री ड्यू ब्यूला, डाक्टर कहाँ मिलेगा?

—डाक्टर सुबह मिलेगा। आप चिन्ता न करें, कमेटी डाक्टर की फ़ीस देगी।

—लेकिन बच्ची मरनेवाली है, यह ख़ून देखिए!

—सवेरा होने में अब देर ही कितनी है!

—जब बच्चा मर रहा हो और दिल डर रहा हो, तो सवेरा बहुत दूर लगता है। श्री ड्यू ब्यूला, क्या डाक्टर अभी नहीं मिल सकता?

—मैं कोशिश करता हूँ, माँ, अभी जाकर देखता हूँ।

—मैं आपकी बहुत कृतज्ञ हूँ, श्री ड्यूब्यूला!

*

बाहर लोग आग के चारों तरफ़ बैठे हुए गा रहे हैं, 'कोसी सिकेलेलइ' अफ्रीका....काली जातियों का राष्ट्रीय गीत, भगवान, अफ्रीका की रक्षा करो!.... भगवान, अफ्रीका के उस भाग को, उस अंश को बचाओ, जो मेरा है, जो मेरे शरीर की प्रसव-पीड़ा से उभरा है, जो मेरे स्तनों का दूध पीकर पला है, जो मेरे दिल का टुकड़ा है, मेरा बच्चा! हर माँ यही चाहती है, हर औरत यही दुआ माँगती है।....शान्ति से लेटो, मेरे बच्चे! ओह डाक्टर! डाक्टर! तुम जल्दी क्यों नहीं आ जाते?

—मैंने डाक्टर को बुलवाया है, माँ! कमेटी ने उसे जल्दी बुलाने के लिए मोटर भेजी है। वह हमारी जाति का ही डाक्टर है।

—बड़ी कृपा है, श्री ड्यूब्यूला!

—क्या मैं लोगों से चुप रहने को कह दूँ?

—नहीं, कोई बात नहीं, बच्ची को इसका पता ही नहीं है।

अंग्रेज़ डाक्टर होता, तो बहुत अच्छा होता। मगर कोई भी डाक्टर हो, जल्दी तो आ जाय! इन विदेशियों के गाने की आवाज़ अगर बन्द भी हो जाय, तब भी क्या? मेरे पति, मुझे डर लग रहा है! इसका माथा मेरे हाथ को आग की तरह जला रहा है!

*

हमें अब डाक्टर की कोई ज़रूरत नहीं। गोरा या काला, अब कोई डाक्टर उसकी सहायता नहीं कर सकता! मेरी कोख के बच्चे! मेरी आशाओं के फूल!

तुम कहाँ चले गये ? उसके छोटे-छोटे गालों को हाथों से दबाकर कितना सुख मिलता था ! उसकी नन्हीं-नन्हीं उँगलियों का पकड़ना कितना अच्छा लगता था ! कितना आनन्द मिलता था, जब उसके होंठ मेरे स्तनों को चूसते थे !...औरतों का यही स्वभाव होता है....गर्भ धारण करना, प्रसव, पालना, और फिर खो देना....

*

बहुत-से अंग्रेज़ शैन्टी टाउन में आते हैं। वे हमारी तस्वीरें लेते हैं और सिनेमा के लिए चलते-फिरते चित्र भी। वे यहाँ आते हैं और सोच में पड़ जाते हैं कि वे क्या करें। हम इतने अधिक हैं ! पर ये ग़रीब बरसात में क्या करेंगे, जाड़ों में इनका क्या हाल होगा ? फिर आदमी आते हैं और मशीनें आती हैं और वह हमारे लिए मामूली मकान बनाना शुरू कर देते हैं। वह ड्यूब्यूला वास्तव में होशियार आदमी है। उसने कहा था कि लोग यही करेंगे ! और जैसे ही उन्होंने हमारे लिए मकान बनाने शुरू किये, वैसे ही रातों-रात और काले आदमी आ गये, पिमविल से, एलेक्ज़ैन्डरा से और सोफ़िया टाउन से....और उन्होंने भी अपने लिए बाँस के, लोहे के और लकड़ी के मकान बना लिये। और अंग्रेज़ फिर यहाँ आये, इस बार ग़ुस्से में, दया-भाव से नहीं। पुलीस आती है और लोगों को खदेड़ देती है। और जो लोग खदेड़े गये हैं, उनमें से कुछ तो आरलैन्डो के ही रहनेवाले हैं। वे बेचारे लौटकर फिर उन्हीं मकानों में जाना चाहते हैं, जहाँ वह पहले रहते थे, लेकिन या तो वे मकान अब तक भर गये होते हैं, या कुछ के मकान-मालिक उन्हें अब मकान देना नहीं चाहते।

आपको इस बात पर शर्मिंदा होने की ज़रूरत नहीं कि आप शैन्टी टाउन में रहते हैं। वह बात तो अख़बारों तक में है। वह देखिए, तस्वीर में मेरे पति अपने मकान के पास खड़े हैं। यहाँ एक आदमी के पास डरबन का एक अख़बार है और उसमें भी एक तस्वीर में मेरे पति अपने मकान के पास खड़े हैं। आप अपना पता शैन्टी टाउन दे सकते हैं, सिर्फ़ शैन्टी टाउन, सब जानते हैं कि यह कहाँ है और मकान का वह नम्बर दे दीजिए, जो कमेटी ने आपको दिया है।

लेकिन हम बरसात में क्या करेंगे, जाड़े में क्या करेंगे ? लोग अभी से कहने लगे हैं। सामने पहाड़ी पर बने हुए मकानों की ओर देखो, वे अभी पूरे नहीं बने हैं, लेकिन उन पर छतें पड़ गयी हैं। एक दिन रात को हम वहाँ रहने चले जायँगे और तब हमें बरसात या जाड़े का डर नहीं होगा।

(१०)

सिमांगु के साथ शैन्टी टाउन जाने की प्रतीक्षा का समय कुमालो ने गर्टरूड और उसके बच्चे के साथ बिताया। उनका मनोरञ्जन उस छोटे-से गम्भीर मुद्रावाले अपने

भाञ्जे से ही होता था, क्योंकि जब वह लगभग पच्चीस वर्ष के थे, तब उनकी बहन का जन्म हुआ था और उनके सम्बन्ध कभी घनिष्ठ नहीं हुए थे। फिर वह पादरी थे और गम्भीर, शान्त स्वभाव के और उनके बाल सफ़ेद हो चले थे और वह अभी भी जवान थी। वह यह आशा नहीं करते थे कि वह उनसे उन गम्भीर बातों के बारे में बात कर सकती है, जो जोहैन्सबर्ग में हो रही थीं, क्योंकि उन्हीं अजीब परिस्थितियों में वे दुखी और परेशान हुए थे और गर्टरूड ने अपना व्यवसाय और जीवन पाया था।

वास्तव में यहाँ असह्य घटनाएँ थीं, ऐसी घटनाएँ, जो उस औरत की समझ में कभी नहीं आ सकती थीं, जिसने अपने गाँव की पाँचवीं कक्षा से अधिक शिक्षा ही प्राप्त नहीं की थी। वह अपने बड़े भाई का सम्मान करती थी, जो बड़े भाई होने के नाते भी और पादरी के नाते भी उसे शोभा देता था। और उन दोनों में बस लोकाचार की बातें होती थीं। पर उन्होंने कभी उस विषय पर फिर दुबारा बात नहीं की थी, जब गर्टरूड उनके सामने फ़र्श पर रोते-रोते गिर पड़ी थी।

लेकिन नेक श्रीमती लिथेबी और गर्टरूड बहुत देर तक उन विषयों पर बातें किया करती थीं, जो औरतों को बहुत प्रिय हैं और वह साथ-साथ घर का काम भी करती थीं और काम करते-करते गाती भी थीं।

हाँ, इस नन्हे गंभीर बच्चे की ओर ही वह अपने मनोरंजन के लिए मुड़े। उन्होंने बच्चे के लिए कुछ सस्ते लकड़ी के टुकड़े ख़रीद दिये थे और इनसे वह बच्चा बराबर मन लगाकर खेलता रहता था। इस खेल का उद्देश्य बड़ों के लिए अस्पष्ट हो, पर वह उसमें काफ़ी मग्न रहता। कुमालो उसे अक्सर गोद में उठा लेते थे और उसकी कमीज़ के अन्दर हाथ डालकर उसकी गर्म, छोटी-सी पीठ को छूते, उसे गुदगुदाते, ताकि वह गम्भीर, बचकाना चेहरा मुस्करा पड़े और मुस्कराहटें जोरों की हँसी में फूट पड़े। या वह बच्चे को उस विस्तृत वादी के बारे में बताते थे, जहाँ उसका जन्म हुआ था, उन पहाड़ों और उन नदियों के नाम, उस स्कूल के बारे में, जहाँ वह घर लौटने पर जायगा और उस कुहासे के बारे में, जो इन्डाटशेनी की चोटियों को ढँके रहता है। यह बातें तो बच्चे की समझ में नहीं आती थीं, पर कुछ तो उसकी समझ में आता था, क्योंकि वह बहुत ध्यान से उन मधुर, गंभीर नामों को सुनता था और बहुत गौर से अपनी बड़ी-बड़ी और गम्भीर आँखों से अपने मामा की ओर देखता था और इससे मामा को बहुत आनन्द प्राप्त होता था, क्योंकि इस बहुत बड़े शहर में उन्हें अपने घर की बहुत याद आती थी और इस तरह की बात करने में उन्हें बहुत गहरा सन्तोष मिलता था। कभी-कभी गर्टरूड भी उन्हें इस तरह बातें करते सुनती थी, तो दरवाज़े के पास लजाकर खड़ी हो जाती थी और उस वादी की ख़ूबसूरती की कहानी सुनने लगती थी, जहाँ उसका

जन्म हुआ था। इससे कुमालो को और भी सुख मिलता था और कभी-कभी वह उससे पूछ लेते थे—तुम्हें याद है ?

और वह जबाब देती थी—हाँ, मुझे याद है।—और वह खुश होती थी कि उन्होंने उससे यह पूछा।

लेकिन उस सुख और सन्तोष के बीच में भी ऐसा होता था कि उन्हें अपने बेटे की याद आ जाती थी। और तब बात-की-बात में वह मधुर नामवाले पहाड़ तेज़ धूप में उजाड़ और निर्जन मालूम पड़ने लगते थे, जल-धाराएँ सूख-सी जाती थीं और कमज़ोर जानवर लाल बंजर ज़मीन पर अनमने घूमते दिखायी पड़ते थे। वहाँ अब केवल बूढ़ी औरतें, माताएँ और बच्चे ही बसते थे, हर घर में कुछ खोया-सा होता था। तब उनका गला रुँध जाता था, ज़बान लड़खड़ाने लगती थी और वह चुप होकर किसी गहरे चिन्तन में खो जाते थे। शायद यह इसी लिए था, या शायद उन्होंने बातों को सुनते बच्चे को एकाएक दबोच लिया, क्योंकि बच्चा ध्यान हटाकर उनके हाथों से छूटने के लिए छटपटाने लगता था, ताकि फिर जमीन पर लकड़ी के टुकड़ों से खेलने लगे। फिर वह जैसे किसी ऐसी चीज को खोजने लगते, जो इस सहसा अयाचित वेदना का अन्त कर दे। तब उन्हें अपनी पत्नी का ध्यान आ जाता, और अपने बहुत-से मित्रों का और पहाड़ी से उतरते उन नन्हें बच्चों का, जो स्कूल जाते हुए कभी कभी कुहरे में से निकल पड़ते थे। और यह-सब स्मृतियाँ उन्हें इतनी प्यारी थीं कि उनकी कल्पना करते ही जैसे उनकी वेदना हल्की हो जाती थी, वह अपने अन्तर के सूनेपन में अपेक्षाकृत शान्ति में उन स्मृतियों में मग्न हो जाते थे।

इस सांसारिक यात्रा के रहस्य को कौन जानता है ? कौन जानता है कि सूनेपन के संसार में सन्तोष क्यों है ? भगवान की कृपा है कि कोई ऐसा प्रिय व्यक्ति है, जो दिल के दुख को हल्का कर सकता है, जो ऐसे दुःख में भी बच्चों से खेल सकता है ! भगवान की कृपा है कि किसी पहाड़ का नाम संगीत मालूम पड़ता है और किसी दरिया का नाम दिल के घाव भर सकता है, उस नदी की याद, जो शायद अब तक सूख चुकी है।

संसार की यात्रा का रहस्य वास्तव में कौन जानता है ? कौन जानता है कि हम क्यों जी रहे हैं, संघर्ष करते रहते हैं और मर जाते हैं ? कौन जानता है कि हम किसके लिए जी रहे हैं और संघर्ष करते हैं, जबकि हमारे चारों ओर हर चीज़ टूट रही है ? कौन जानता है कि एक बच्चे के स्वस्थ, गर्म शरीर को छूने में हमें सुख क्यों मिलता है, जबकि हमारा अपना बच्चा खो चुका होता है और वह वापस नहीं मिल सकता ? ज्ञानी लोग बहुत-सी किताबें लिखते हैं, ऐसी भाषा में, जो समझना बहुत कठिन होता है। पर हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है, हमारे सारे संघर्षों का

प्रयोजन क्या है, यह ऐसे रहस्य हैं, जो समस्त मानव-ज्ञान के परे हैं। भगवान! मेरे भगवान! मेरी रक्षा करो! अगर तू मुझपर अपनी दया रखेगा, तो मैं मौत की अँधेरी घाटियों में चलकर भी किसी पाप से नहीं डरूँगा!

कुमालो खड़े हो गये। दरवाजे पर सिमांगु बात कर रहे थे। खोज के लिए निकलने का समय हो गया था।

*

—यह शैन्टीटाउन है, मित्र। यहाँ भी बच्चे उन तंग गलियों में हँसते हैं, जो इन दुःखपूर्ण बस्तियों में से जाती हैं। लोहे की एक चादर, कुछ तख्ते, पुराने टाट और घास-फूँस और किसी बहुत पुराने टूटे हुए मकान का दरवाजा मिलता है। होशियारी से बनाये हुए छेदों में से धुएँ के छल्ले उठ रहे हैं, खाना पकने की गन्ध आ रही है। लोगों के बात करने की आवाज़ है, क्रोध या पीड़ा से भरी ऊँची आवाज़ें नहीं हैं, बल्कि मामूली बातों पर बातचीत करने की आवाज़ें हैं, इस तरह की बातें कि कोई बच्चा पैदा हुआ है, कोई मर गया है, फलाँ स्कूल में तरक्की कर रहा है और अमुक जेल में है। मौसम में खुश्की है और खुले आसमान में सूरज चमक रहा है। पर जब वर्षा होगी, तब वे क्या करेंगे? जब जाड़ा आयगा तब क्या होगा?

—यह सब देखकर मुझे दुख हो रहा है!

—कुछ लोगों को वहाँ पर मकान बनाते देख रहे हैं। यह काम बहुत वर्षों में नहीं किया गया है। इस सबका फल अवश्य अच्छा हो सकता है। यह भी ड्यूब्यूला का ही काम है।

—ऐसा लगता है कि वह हर जगह है!

—देखिए, यह हमारी ही जाति की कोई नर्स है। अपनी लाल और सफ़ेद पोशाक और सर पर टोपी पहने वह अच्छी नहीं लगती है?

—हाँ, अच्छी तो लगती है।

—अंग्रेज़ लोग और भी बहुतों को शिक्षा दे रहे हैं। यह कैसी अजीब बात है कि कुछ चीज़ों में तो हम आगे बढ़ रहे हैं, कुछ क्षेत्रों में अब भी वहीं हैं, जहाँ थे; और कुछ बातों में हम पीछे हट रहे हैं। लेकिन इन्हीं नर्सों के मामले में कई अंग्रेज हमारे सहयोगी हैं। जब यह बात चली थी कि हमारी जाति के कुछ युवकों को विटवाटर्सरैन्ड के यूरोपियन विश्वविद्यालय में डाक्टरी शिक्षा दी जाय, तो इसपर बहुत शोर मचा था, लेकिन हमारे मित्र इस बात पर जमे रहे और अब हमारे युवक तब तक वहीं शिक्षा पाते रहेंगे, जब तक हमारा अपना कोई ऐसा विद्यालय नहीं खुलता।....नमस्ते, नर्स!

—नमस्ते, उम्फुन्दीस!

—नर्स, क्या तुम बहुत दिनों से यहाँ काम कर रही हो ?

—हाँ, जब से यह जगह बनी है, तभी से ।

—और क्या तुम कभी एबसेलाम कुमालो नामक किसी युवक को जानती थी ?

—जी, हाँ । लेकिन अब तो वह यहाँ नहीं है । मैं यह बता सकती हूँ कि वह कहाँ रहता था। वह लैत्शवेयो परिवार के साथ रहता था । वे लोग अब भी यहीं हैं । वह जगह आप देख रहे हैं न, जहाँ इतने पत्थर जमा हैं कि मकान बनाने की जगह भी घेरे हुए हैं ? देखिए, वहाँ एक छोटा-सा लड़का खड़ा है ।

—हाँ, देख रहा हूँ ।

—और उसके बाद वह मकान, जिसमें नल लगा है और धुआँ उठ रहा है ।

—हाँ, देख रहा हूँ ।

—उसी गली में चले जाइए, तीसरा या चौथा, जिस हाथ से आप खाते हैं, उसी ओर का मकान लैत्शवेयो-परिवार का है ।

—धन्यवाद, नर्स ! हम जा रहे हैं !

नर्स ने रास्ता इतनी अच्छी तरह बताया था कि मकान ढूँढ़ने में उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई ।

—नमस्ते, माँ !—सिमांगु ने श्रीमती लैत्शवेयो से अभिवादन करने के बाद बात शुरू की ।

औरत साफ़-सुथरी और भली मालूम पड़ती थी । वह इन लोगों की तरफ़ मित्रता के भाव से देखकर मुस्करायी ।

—नमस्ते, उम्फुन्दीस !

—माँ, हम लोग एबसेलाम कुमालो नामक एक लड़के का पता लगा रहे हैं ।

—वह हम लोगों के साथ ही रहता था, उम्फुन्दीस । हमने उसपर इसलिए तरस खाकर जगह दी कि वह बिल्कुल बेआसरे था । लेकिन मुझे आपको यह बताते हुए दुख हो रहा है कि वे लोग उसे पकड़कर ले गये और मैंने बाद को सुना कि मैजिस्ट्रेट ने उसको सुधार-गृह में भेज दिया है ।

—सुधार-गृह ?

—हाँ, सिपाहियों के हस्पताल के बाद वह बड़ा-सा स्कूल यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है ।

—धन्यवाद, माँ ! आप सुखी रहें ! आओ, मित्र !—और सिमांगु कुमालो को लेकर चल पड़े ।

वे दोनों मौन चले जा रहे थे, क्योंकि दोनों के पास बात करने के लिए शब्द

नहीं थे। हालाँकि सड़क साफ़ और सीधी थी, फिर भी कुमालो ठोकर खाकर गिर पड़ते, यदि सिमांगु ने उनकी बाह पकड़ न ली होती।

—हिम्मत रखिए, भाई!—सिमांगु ने अपने साथी की तरफ़ देखा।

लेकिन कुमालो की आँखें धरती पर झुकी हुई थीं। हालाँकि सिमांगु उनका चेहरा नहीं देख पा रहे थे, फिर भी उन्हें आँसू की वह बूँद दिखायी दे ही गयी, जो कुमालो की आँखों से निकलकर ज़मीन पर गिरी थी और सिमांगु ने और मज़बूती से उनकी बाह पकड़ ली।

—हिम्मत न हारो, भाई।

—कभी-कभी ऐसा लगता है, जैसे अब मुझमें बिल्कुल हिम्मत नहीं रही!

—मैं इस सुधार-गृह के बारे में सुन चुका हूँ। हमारे मित्र फ़ादर विन्सेन्ट इसकी काफ़ी तारीफ़ करते हैं। वह कहते हैं कि अगर कोई युवक सुधरना चाहता है, तो वहाँ उसे पूरी सहायता और सुविधा मिलती है और वह अपना जीवन फिर से सुधार सकता है। इसलिए हिम्मत न हारिए।

—मुझे यही डर था।

—हाँ, मुझे भी इसी बात का डर था।

—मुझे मालूम है, आपको कब इस बात की पहली बार शंका हुई थी....उस दिन एलेक्जैन्डरा में आपने मुझे आगे भेज दिया था और आप फिर लौटकर उस औरत से बात करने चले गये थे....

—लगता है कि मैं आपसे यह बात छुपा नहीं सका।

—हाँ। लेकिन ऐसा इसलिए नहीं है कि मैं बहुत बुद्धिमान हूँ, बल्कि इसलिए कि वह मेरा लड़का है!

वे शैन्टी टाउन से आरलैन्डो आ गये थे और उस तारकोल की सड़क पर थे, जो जोहैन्सबर्ग जानेवाली बड़ी सड़क से मिल जाती है, जहाँ आरलैन्डो के फाटक के पास अंग्रेजों की बड़ी पेट्रोल की टंकी है। काले आदमियों को आरलैन्डो में अपने पेट्रोल स्टेशन बनाने की आज्ञा नहीं है।

—उस औरत ने आपसे कहा क्या था?—कुमालो ने पूछा।

—उसने यह बताया था कि एबसेलाम और उसका साथी कोई बुरा काम करते थे। वे बहुत-सा माल, अंग्रेजों के सामान, घर में लाते थे।

—और यह सुधार-गृह, क्या यहाँ सुधार हो सकता है?

—मुझे ठीक पता नहीं। कुछ लोग एक बात कहते हैं, कुछ लोग और। लेकिन फ़ादर विन्सेन्ट उसकी तारीफ ही करते हैं।

और बहुत देर बाद, जब तक सिमांगु के ख्याल कहीं और पहुँच गये थे, कुमालो फिर बोले—मुझे तो आशा है, वहाँ सुधार कर लेते हैं।

—मुझे भी यही आशा है।

लगभग एक घंटा चलने के बाद वे उस सड़क पर आ गये, जो सुधार-गृह को जाती थी। जब वे पहुँचे, तो दोपहर का समय था और हर तरफ से आकर लड़के सुधार-गृह के फाटक के अन्दर घुस रहे थे। हर दिशा से उन लड़कों के दल आ रहे थे, मानो उनके आने का अन्त ही न होगा।

—बहुत-से हैं, मित्र!

—हाँ, मुझे पता नहीं था कि इतने होंगे।

उन्हीं की जाति का एक हँसमुख आदमी उनके पास आया और उनसे पूछा कि वे क्या चाहते हैं? और उन्होंने उत्तर दिया कि वे एबसेलाम कुमालो नामक एक लड़के का पता लगा रहे हैं। और वह व्यक्ति उन्हें दफ्तर में ले गया, जहाँ एक अंग्रेज अधिकारी ने उनसे अफ्रीकान भाषा में उनके आने का प्रयोजन पूछा।

—हम अपने इन साथी के लड़के, एबसेलाम कुमालो, का पता लगाना चाहते है, श्रीमान!—सिमांगु ने उसी भाषा में उत्तर दिया।

—एबसेलाम कुमालो! हाँ, मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ। आश्चर्य है कि उसने मुझसे कहा था कि उसके कोई है हो नहीं।

सिमांगु ने कुमालो से जुलू में कहा—आपके लड़के ने इन्हें बताया था कि उसके कोई है ही नहीं!

—वह अवश्य शर्मिन्दा होगा,—कुमालो बोले—मुझे अफसोस है कि मैं अफ्रीकान भाषा नहीं बोल पाता!—कुमालो ने सुन रखा था कि आम तौर पर यह लोग उन काले आदमियों को पसन्द नहीं करते, जो अफ्रीकान भाषा नहीं बोल पाते।

—आप जिस भाषा में चाहिए, बात कीजिए!—उस अंग्रेज ने कुमालो से कहा—आपके लड़के का व्यवहार यहाँ अच्छा था, वह हमारे अच्छे लड़कों में से था। मुझे उससे उसके भविष्य के विषय में बहुत आशाएँ हैं।

—क्या आपका मतलब यह है कि वह यहाँ से चला गया?

—हाँ, महीना-भर हुआ, वह यहाँ से चला गया। हमने उसके साथ कुछ रियायत की थी, कुछ तो उसके अच्छे व्यवहार के कारण और कुछ उसकी कम अवस्था के कारण, लेकिन मुख्य कारण यह था कि एक लड़की के उससे बच्चा होनेवाला था। वह यहाँ उससे मिलने आयी थी और ऐसा लगता था कि वह उससे प्रेम करता था और उसे अपने होनेवाले बच्चे के बारे में चिन्ता थी। वह लड़की भी शायद उससे प्रेम करती थी। इन्हीं सब बातों को सोच-कर और उसके यह वचन देने पर कि वह बच्चे और उसकी माता के लिए भविष्य में ढंग से काम करेगा, हमने अधिकारी से कहकर उसे छुड़वा दिया। यह जरूर है

कि हमें इन बातों में हमेशा सफलता नहीं मिलती, लेकिन जहाँ दो व्यक्तियों में सच्चा प्रेम मालूम पड़ता है, वहाँ, यह सोचकर कि ऐसा करने का फल अच्छा ही होगा, हम ऐसा कर ही देते हैं। लेकिन इतना निश्चित है कि अगर इतने पर भी वह नहीं सुधरता है, तो फिर उसके सुधरने की कोई दूसरी आशा भी नहीं रहती।

—और क्या अब उसकी शादी हो गयी है, श्रीमान!

—नहीं, उम्फुन्दीस, अभी नहीं। लेकिन शादी का सब प्रबन्ध कर दिया गया है। उस लड़की के भी कोई नहीं है और आपके लड़के ने भी हमें यही बताया था, इसलिए मेरे देशी सहायक और मैंने ही उस शादी का इन्तज़ाम ठीक कर दिया है।

—यह आपकी बड़ी कृपा है। मैं आपसे उन लोगों के लिए धन्यवाद देता हूँ!

—यह तो हमारा कर्त्तव्य है। आप इस मामले में अधिक परेशान न हों और न इसके बारे में कि उनका विवाह नहीं हुआ।—युवक अधिकारी ने दया-भाव से कहा—मुख्य बात तो यह है कि अब वह ठीक से उनकी देख-भाल करेगा और भला जीवन बितायगा।

—जी, हाँ, समझ रहा हूँ। गोकि मुझे इस बात से चोट लगी है।

—यह मैं समझता हूँ। अब मैं इस मामले में आपकी सहायता कर सकता हूँ। अगर आप ज़रा बाहर बैठ जायँ, इस बीच मैं अपना काम खत्म कर लूँ। इसके बाद मैं आपको पिमविल ले चलूँगा, जहाँ एबसेलाम और वह लड़की रहते हैं। वह तो होगा नहीं, क्योंकि मैंने उसे शहर में काम दिला दिया है। उसके मालिक ने मुझसे उसके काम की तारीफ़ की है। मैंने उससे आग्रह कर डाकखाने में हिसाब भी खुलवा दिया है और उसने उसमें अब तक तीन-चार पाउंड जमा भी कर लिये हैं।

—ओफ, मैं आपको किस तरह धन्यवाद दूँ!

—यह हमारा काम है,—युवक अधिकारी बोला—अच्छा, आप बाहर बैठिए और मैं अपना काम खत्म कर लूँ। फिर मैं आपको पिमविल ले चलूँगा।

बाहर वह हँसमुख व्यक्ति इनके पास आया और इनसे बातचीत की। इनकी योजना सुनकर उसने इन लोगों को अपने घर बुलाकर बैठाला। वहाँ उसके और उसकी पत्नी के पास ऐसे बहुत-से लड़के थे, जो सुधार-गृह का बड़ा भवन छोड़ चुके थे और बाहर इन स्वतन्त्र मकानों में रह रहे थे। उसने इन दोनों को चाय पिलायी, कुछ खिलाया और उसने यह भी बताया कि एबसेलाम वहाँ का जमादार बन गया था और सुधार-गृह में उसका व्यवहार बहुत अच्छा था। और इस तरह काफ़ी देर तक वे लोग बातें करते रहे, सुधार-गृह के बारे में, उन बच्चों के बारे में, जो, जोहैन्सबर्ग में पलकर बड़े हो रहे थे और जिनके पास न घर था, न स्कूल, न संस्कार और न परम्परा। जातियों के टूटने और विशृंखल होने के बारे में और धरती की पीड़ा के

के बारे में भी। इनकी बातें तब खत्म हुईं, जब अंग्रेज अधिकारी ने यह कहलाया कि वह अब चलने को तैयार है।

मोटर कार को पिमविल पहुँचते देर न लगी। पिमविल एक गाँव-जैसी बस्ती है, जो बरसों पहले आवश्यकता के समय में बनायी गयी थी और तब से उसी प्रकार व्यवहार में आ रही थी। यहाँ लोग आधी टंकियों को ही मकान की तरह इस्तेमाल करते थे, क्योंकि ऐसा कभी नहीं हुआ कि जोहैन्सबर्ग में आनेवालों के लिए मकान काफी पड़े हों। फाटक पर उन्होंने अन्दर जाने की आज्ञा माँगी, क्योंकि ऐसी बस्तियों में गोरे लोग बिना आज्ञा के अन्दर नहीं जा सकते थे।

बस्ती में पहुँचकर वैसे ही आधी टंकी के बने एक मकान के सामने वे लोग रुके और वह अंग्रेज़ युवक उन्हें अन्दर ले गया। एक जवान लड़की ने उनका स्वागत किया, जो अभी स्वयं ही बच्ची लग रही थी।

—हम एबसेलाम से मिलने यहाँ आये हैं,—अंग्रेज युवक बोला—यह उम्फुन्दीस उसके पिता हैं।

—शनिवार को वह स्प्रिंग्स गये थे और अब तक लौटे नहीं हैं।

अंग्रेज़ युवक कुछ देर चुप रहा और उसके माथे पर परेशानी या क्रोध के बल पड़ गये।

—लेकिन आज तो मंगल है। तुम्हें उसकी कोई खबर नहीं मिली?

—कुछ नहीं।

—वह कब लौटेगा?

—मुझे पता नहीं।

—वह कभी लौटेगा भी?—युवक अंग्रेज़ अफ़सर लापरवाही और उदासीनता से बोला।

—मैं नहीं जानती,—लड़की ने उत्तर दिया। उसने यह लयहीन आशाहीन ढंग से कहा, उस व्यक्ति की तरह, जिसका प्रतीक्षा करना छोड़ देने का स्वभाव हो गया हो; उसने यह उस स्त्री की तरह कहा, जिसे सत्तर वर्ष के जीवन में इस संसार से कोई आशा न हो, उसके अन्दर कभी विद्रोह नहीं जागेगा, न क्रोध-न इच्छाएँ; उन पुरुषों की सन्तानों के अतिरिक्त जो उसका उपभोग करेंगे, उसे त्याग देंगे, भूल जायँगे, उसमें से और कुछ भी नहीं निकलेगा। उसकी देह इतनी क्षीण थी, वह इतनी नन्हीं थी कि अपनी तमाम मुसीबतों के रहते कुमालो को उसपर बहुत दया आ गयी।

—अब तुम क्या करोगी?—कुमालो ने उससे पूछा।

—मुझे नहीं मालूम।

—शायद तुम कोई और आदमी ढूँढ़ लोगी,—सिमांगु ने कटुता से कहा।

और इसके पहले कि कुमालो कुछ बोल सकें, उस कटुता को उससे छुपाने के लिए, वह लड़की बोल उठी—मैं कुछ नहीं जानती।

और फिर, इसके पहले कि कुमालो कुछ बोल सकें, सिमांगु ने लड़की की तरफ़ से मुह फेरकर, कुमालो से धीमे से कहा—यहाँ आप कुछ नहीं कर सकते। चलिए, चला जाय।

—लेकिन, मित्र....

—मैं कहता हूँ कि यहाँ और कुछ नहीं कर सकते! क्या आपकी अपनी परेशानियाँ कुछ कम हैं? मैं कहता हूँ कि जोहैन्सबर्ग में ऐसी हज़ारों लड़कियाँ हैं और चाहें आप कितने ही महान हों, आपके पास कितना ही धन क्यों न हो, और आपके दिल में अपार दया ही क्यों न हो, लेकिन आप कुछ नहीं कर सकते।

फिर वे खामोशी से निकल आये। वे सब खामोश थे, युवक अंग्रेज़ अपनी असफलता के कारण, वृद्ध कुमालो वेदना के कारण और सिमांगु उन कड़ुवे शब्दों के कारण, जो वह अभी बोल चुके थे।

अंग्रेज युवक और सिमांगु मोटर में बैठ गये, पर कुमालो बाहर ही खड़े रहे।

—आप नहीं समझे,—कुमालो बोले—वह बच्चा मेरा पोता होगा!

—यह भी आपको क्या मालूम?—सिमांगु उसी क्रोध से बोले, जो उनके अन्दर था, वह कड़ुवाहट उनके अन्दर फिर से उमड़ आयी—और अगर ऐसा ही हो, तो ऐसे ही कितने होंगे। क्या हम उन्हें ही रोज़-रोज़, हर वक़्त ढूँढ़ते रहेंगे? हमारी खोज कभी समाप्त भी होगी?

कुमालो धूल पर ऐसे खड़े थे, मानो वह उसमें गड़ गये हों। तब बिना और कुछ बोले वह मोटर में बैठ गये।

लौटने पर फाटक के पास वे लोग फिर रुके और अंग्रेज़ युवक निकलकर वहाँ के यूरोपियन सुपरिन्टेंडेंट के दफ्तर में गया। जब वह लौटा, तो वह बहुत उदास था।

—मैंने उस कारखाने को टेलीफ़ोन किया था। बात ठीक है, वह इस हफ्ते अपने काम पर गया ही नहीं।

ऑरलैन्डो के फाटक के पास के पेट्रोल स्टेशन पर वे लोग फिर रुके।

—आप लोग यहाँ उतरिएगा?—युवक अंग्रेज़ ने पूछा।

सिमांगु और कुमालो मोटर से उतर पड़े। युवक ने कुमालो से कहा—जो-कुछ हुआ है, उसका मुझे अफ़सोस है!

—जी हाँ, जो-कुछ हुआ है, उससे बहुत चोट पहुँची है।—और फिर जैसे कुमालो अंग्रेजी में बोल ही नहीं सके—उन्होंने सिमांगु से ज़ुलू भाषा में कहा—इन के काम के इस नतीजे पर मुझे बड़ा दुख है!

और सिमांगु ने कुमालो की इस बात का उस अंग्रेज़ के लिए अफ्रीकान भाषा में अनुवाद कर दिया--यह भी इस बात पर बड़े दुखी हैं कि आपके काम का यह नतीजा हुआ।

—हाँ, मेरा तो यह काम ही है, पर इनके तो लड़के की बात है।—उसने कुमालो की ओर मुड़कर अंग्रेज़ी में कहा—हमें उम्मीद नहीं छोड़ना चाहिए। अक्सर ऐसा होता है कि लड़के गिरफ्तार हो जाते हैं, या ज़ख्मी होकर अस्पताल पहुँच जाते हैं, और इसका हमें पता भी नहीं लग पाता। उम्मीद न छोड़िए, उम्फुन्दीस। मैं खोज छोड़ूँगा नहीं।

वे दोनों उसे मोटर पर जाते हुए देखते रहे।

—यह आदमी बहुत अच्छा है,—कुमालो ने कहा— आइए, अब चलें।

लेकिन सिमांगु अपनी जगह से नहीं हिले—आपके साथ मैं कैसे चलूँ, मुझे आपके साथ चलने में शर्म आती है।—सिमांगु का चेहरा अन्तर-पीड़ा से विकृत था।

कुमालो ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा।

सिमांगु बोले—अपने भद्दे शब्दों के लिए मैं आपसे माफ़ी माँगता हूँ।

—आपका मतलब है वह शब्द, जो आपने तब हमारी खोज के बारे में कहे थे?

—आप समझ गये थे?

—हाँ, मैं समझ गया था।

—आप बहुत जल्दी बातें समझ जाते हैं!

—हाँ, मेरी अवस्था ज्यादा है और मैंने कुछ-कुछ सीखा है। आपको क्षमा करता हूँ।

—कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि मैं पादरी होने के योग्य नहीं हूँ। मैं आपको बता सकता हूँ.....

—यह कुछ नहीं है। आपने कहा कि आप दुर्बल हैं, स्वार्थी हैं। पर लगता है कि भगवान ने आप पर अपना हाथ रख दिया है। लगता है कि यह ठीक है।

—हूँः, आप मेरी तसल्ली कर रहे हैं।

—पर मुझे आपसे कुछ पूछना है।

सिमांगु ने उनकी तरफ देखा, जैसे वह उनके चेहरे से कुछ जानना चाहते हों। और तब वह बोले—यह तय रहा।

—क्या तय रहा?

—यही कि मैं आपको दुबारा इस लड़की से मिलाने ले चलूँ।

—लगता है, आप होशियार भी हैं।

—हुँः, यह ठीक नहीं है कि एक आदमी ही होशियार हो।

परन्तु वास्तव में वे दिल्लगी करने की मनः-स्थिति में नहीं थे। वे दोनों आर-लैन्डो जानेवाली तपती हुई सड़क पर पैदल ही चल दिये। दोनों चुप थे। दोनों के मन में बहुत-सी उलझनें थीं।

*

सोफिया टाउन जानेवाली गाड़ी में बैठते हुए सिमांगु ने कहा—मैं सोच रहा था कि आप कुछ देर आराम कर लेते।

कुमालो ने सिमांगु की ओर देखा—मैं आराम कैसे कर सकता हूँ?

—मैं जानता हूँ कि आपका क्या मतलब है, मैं जानता हूँ कि आप चिन्तित हैं। पर सुधार-गृह का वह युवक मुझसे या आपसे ज्यादा अच्छी तरह उसका पता लगायगा। आज मंगलवार है, परसों मुझे एज़ेनज़ेलेनी जाना पड़ेगा। वहाँ हमारी जाति के कुछ नेत्रहीन लोग रहते हैं। उनके लिए मुझे वहाँ प्रार्थना करनी है और उनकी सेवा करनी है। उस दिन रात को भी मैं वहीं रहूँगा और अगले दिन लौटूँगा। मैं वहाँ के सुपरिन्टेन्डेन्ट से टेलीफ़ोन करके पूछ लूँगा कि मैं आपको भी वहाँ ले जा सकता हूँ। जब तक मैं काम करूँ, तब तक आप वहाँ आराम कर सकते हैं। वह जगह बहुत अच्छी है। वहाँ एक छोटा-सा गिरजा भी है। वहाँ से नीचे की ओर ढालू घाटी है। अंग्रेज़ लोग जो-कुछ वहाँ के अन्धे लोगों के लिए कर रहे हैं, उसे देखकर भी आपको खुशी होगी। फिर हमें जो-कुछ करना है, उसके लिए नयी शक्ति सँजोकर हम लौटेंगे।—सिमांगु ने कहा।

—और आपका काम? उसका क्या होगा?

—मैंने अपने ऊपर के अधिकारियों से उस बारे में बात कर ली है। वे भी राज़ी हैं कि मैं आपको उस समय तक पूरी सहायता दूँ, जब तक आपके लड़के का पता नहीं लग जायगा।

—वे लोग वास्तव में बहुत दयालु मालूम पड़ते हैं। तो फिर ठीक है। हम वहाँ चलेंगे।

*

उस दिन मिशन हाउस में सुखद संध्या थी। गुलाबी कपोलवाले पादरी, फ़ादर विन्सेन्ट, भी वहाँ थे और उन्होंने उस वादी के बारे में और जानकारी प्राप्त की, जहाँ कुमालो रहते थे और काम करते थे। और उन्होंने बाद को अपने देश के बारे में भी उन लोगों को बताया, कुंजों और खेतों, वेस्टमिन्सटर गिरजे और उन बड़े बड़े कैथीड्रलों के बारे में, जो सारे देश में फैले पड़े थे। लेकिन उन लोगों का यह सुख बहुत देर तक नहीं रहा। एक अंग्रेज़ पादरी शहर से 'ईवनिंग स्टार' पत्र की एक प्रति साथ लाया था। उसने उन लोगों को मोटा-काला शीर्षक दिखायाः पार्कवोल्ड में हत्या, नगर के प्रसिद्ध इन्जीनियर गोली के शिकार, हत्यारे शायद काली जाति के थे!

अंग्रेज़ पादरी ने कहा—दक्षिणी अफ्रीका के लिए यह तो बहुत बड़ी हानि हुई। यह इन्जीनियर, आर्थर जारविस, बड़ा साहसी युवक था और न्याय के पक्ष में वह सदा लड़ता था। और गिरजे की भी इससे हानि हुई है। यह हमारे युवक अनुयायियों में सबसे अच्छा था।

—जारविस !....यह तो सचमुच बहुत बुरी खबर है !—सिमांगु ने कहा—क्लेयरमांट की ग्लेडियोलस स्ट्रीट के अफ्रीकन युवक-संघ का वह सभापति था।

और फ़ादर विन्सेन्ट ने कुमालो से पूछा—आप तो शायद उसे जानते होंगे। अख़बार में लिखा है कि वह हाई प्लेस, कैरिसब्रुक, के श्री जेम्स जारविस का इकलौता बेटा था।

—मैं उनके पिता को जानता हूँ,—कुमालो ने दुःखपूर्वक कहा—मेरा मतलब है कि मैं उनको सूरत-शकल और नाम से अच्छी तरह जानता हूँ। हमारी कभी बातचीत नहीं हुई है। उनके खेत उन इन्डाटशेनी में पहाड़ों के ऊपर हैं और वह कभी-कभी हमारे गिरजे के पास से घोड़े पर बैठकर निकलते थे। लेकिन मैं उनके बेटे को नहीं जानता था।—वह ज़रा देर चुप रहकर बोले—लेकिन, हाँ, मुझे याद आता है, एक नन्हा-सा तेज़ लड़का था, वह भी हमारे गिरजे के पास से कभी-कभी घोड़े पर निकला करता था। नन्हा-सा तेज लड़का, याद है, गोकि साफ़ साफ याद नहीं पड़ता।

फ़ादर विन्सेन्ट ने पूछा—मैं इसे पढ़ूँ ?—और वह पढ़ने लगे :

आज दोपहर, डेढ़ बजे प्लान्टेशन रोड, पार्कवोल्ड के आर्थर जारविस के घर में घुसकर संभवतः एक देशी आदमी ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी। यह लगता है कि श्रीमती जारक्सि और उनके दोनों बच्चे छुट्टी बिताने कुछ दिनों के लिए बाहर गये हुए थे। जारविस ने अपने सहयोगियों को टेलीफ़ोन से सूचना दे दी थी कि हल्के जुकाम के कारण वह घर पर ही रहेंगे। ऐसा सन्देह है कि अपराधी शायद अपने दो साथियों के साथ रसोई की राह से मकान में घुसा, निस्सन्देह यह सोचकर कि मकान में कोई नहीं है। श्री जारविस का देशी नौकर चोट से बेहोश हो गया। और ऐसा अनुमान है कि आवाज़ सुनकर श्री जारविस स्वयं पता लगाने रसोई में आये। सीढ़ियों से रसोई के रास्तों में श्री जारविस के बहुत निकट से गोली मारी गयी। मार-पीट के कोई निशान नहीं मिले।

उक्त दुर्घटना के कुछ देर पहले तीन देशी लड़के प्लान्टेशन रोड पर आवारागर्दी करते देखे गये थे। जासूसों का एक बड़ा दस्ता घटना-स्थल को फ़ौरन भेज दिया गया है। पता लगाने का काम बहुत सतर्कता और मेहनत से हो रहा है और परिवोल्ड रिज पर के बगीचों की अच्छी तरह छानबीन हो रही है। देशी नौकर, रिचर्ड पाइरिंग, गौरयूरोपियन हस्पताल में बेहोश पड़ा है और यह आशा की जाती

है कि होश में आने पर वह पुलीस को महत्त्वपूर्ण बातें बता सकेगा। परन्तु उसकी हालत ख़तरनाक है।

गोली की आवाज़ एक पड़ोसी श्री माइकेल क्लार्क को सुनायी दी थी। उन्होंने फौरन जाँच की और दुर्घटना का पता लगाया। कुछ ही मिनटों में पुलीस घटना-स्थल पर पहुँच गयी थी। मृत व्यक्ति के पलंग के पास रखी हुई मेज़ पर, 'मूल जातियों के अपराधों के पीछे सत्य क्या है ?' नामक एक लेख की अधूरी पांडुलिपि मिली है और ऐसा ज्ञात होता है कि हत्या के पहले वह इस लेख को लिख रहे थे। मेज़ पर पाये गये पाइप की प्याली पुलीस के पहुँचने तक गरम थी।

श्री जारविस की विधवा पत्नी, एक नौ वर्ष का लड़का और एक पाँच वर्ष की लड़की को छोड़ गये हैं। वह हाईप्लेस फ़ार्म, कैरिसब्रुक, नैटाल के श्री जेम्स जारविस के इकलौते बेटे थे और शहर की एक इन्जीनियरिंग फर्म, डेविस, फ़ान डर वल्ट और जारक्सि, के हिस्सेदार थे। स्वर्गीय श्री जारविस सामाजिक समस्यायों में दिलचस्पी और मूल जातियों के हित के कामों के लिए बहुत प्रसिद्ध थे।

अब बातें बिल्कुल बन्द हो गयी थीं, मानो ख़ामोशी उन-सब पर छा गयी हो। यह वक्त हरे-भरे मैदानों, पेड़-पौधों या अपने देश के गीत गाने का नहीं था। मौत के दर्द-भरे समाचारों को लानेवाले इन पृष्टों के खुलते ही दिल और दिमाग़ में कितना दुख भर आता है, भय भर आता है, नफ़रत भर आती है ! आँसू बहाओ, उस जाति के लिए, जो टूट रही है, उन रीतियों और रिवाजों के लिए, जो मिट चुके हैं ! हाँ, ज़ोरों से रोओ उस व्यक्ति के लिए, जो मर गया है, मृतक की स्त्री और बच्चों के लिए ! मेरे प्यारे देश, रोओ ! इन सब चीज़ों का अभी अन्त नहीं हुआ है ! सूरज पृथ्वी पर, सुन्दर धरती पर वह बरसा रहा है, जिसका सुख मानव नहीं उठा पा रहा है, उसे केवल अपने हृदय के भय का ही ज्ञान है !

*

कुमालो उठ पड़े—मैं अपने कमरे में जाऊँगा। सबको नमस्कार।

सिमांगु ने कहा - मैं आपके साथ चलूँगा।

श्रीमती लिथेबी के छोटे-से मकान के फाटक तक वे दोनों साथ गये। कुमालो ने सिमांगु की ओर वेदना से विकृत मुँह उठाया—इस घटना से, इस घटना से ! मेरे दिल में भय के सिवा कुछ नहीं है, भय, केवल भय !

—मैं समझता हूँ। लेकिन इतने बड़े शहर में जहाँ हज़ारों-लाखों लोग रहते हैं, वहाँ इस एक भय से ही इतना डरना मूर्खता है।

—यह मूर्खता या बुद्धिमानी का सवाल नहीं हैं ! केवल भय की बात है !

—परसों हम एजेनजेलेनी चलेंगे। शायद आपको वहाँ कुछ शान्ति मिले !

—बेशक-बेशक ! मैं जो सबसे अधिक चाहता हूँ, इसके अतिरिक्त सब-कुछ मिल जायगा।

—आइए, प्रार्थना करें।

—अब मुझमें प्रार्थना नहीं रह गयी। मेरा हृदय गूँगा हो गया है। मेरे पास एक भी शब्द नहीं रहा।

—नमस्कार, मित्र!—सिमांगु बोले।

—नमस्कार।

फाटक के अन्दर के छोटे रास्ते पर सिमांगु ने उन्हें जाते देखा। कुमालो बहुत वृद्ध मालूम पड़ रहे थे। वह भी मिशन हाउस की तरफ़ लौट पड़े।

ऐसा समय भी आता है, जब लगता है कि संसार में भगवान कहीं नहीं हैं।

(१२)

सन्देह मत करो, सारे देश पर भय छाया है। और लोग कर भी क्या सकते हैं, जब लोग इतने निरंकुश हो गये हैं? जब हृदय में भय समाया हो, तब कौन सुन्दर देश का सुख प्राप्त कर सकता है? अपनी अवस्था के सत्तर वर्षों का सुख कौन भोग सकता है या उस धूप का सुख, जो धरती पर बिखरी पड़ी है? जैकारैन्डान्स वृक्षों की छाया मे अब कौन शान्ति से टहल सकेगा, जबकि उसके सौन्दर्य के पीछे खतरे हों? और अब कौन अपने घर में पलंग पर शांति से सो सकेगा, जबकि अन्धकार एक रहस्य लगता है? अब कौन प्रेमी नक्षत्रों की छाया में चैन से पड़े रह सकते हैं, जब उनके एकान्त के साथ ही भय उत्पन्न होता हो?

हर तरफ से आवाजें उठ रही हैं कि क्या करना चाहिए, सैकड़ों आवाजें, हजारों आवाजें! लेकिन अगर उनसे सलाह माँगी जाय, तो उन आवाजों से क्या मिलेगा? क्योंकि उनमें से कुछ तो 'यह' कहते है और कुछ 'वह' और कुछ ऐसे हैं, जो न 'यह' कहते है, न 'वह'।

*

....यह तो बहुत शर्म की बात है भाइयो और बहिनो, कि हमें इतनी कम पुलीस मिली है। हमारी यह बस्ती जोहैन्सबर्ग की दूसरी बहुत अधिक बस्तियों से ज्यादा टैक्स देती है, लेकिन हमें उसके बदले में मिलता क्या है? एक निम्न श्रेणी का पुलीस-थाना! जिसमें एक सिपाही गश्त के लिए और दूसरा टेलीफोन सुनने के लिए मिलता है। पिछले छः महीनों में यहाँ यह इस प्रकार की दूसरी दुर्घटना हुई है। हमें और ज़्यादा सुरक्षा के साधनों की मांग करनी चाहिए! (हर्ष ध्वनि)।

—श्री मैकलारेन, क्या अब आप हमें अपना प्रस्ताव पढ़ कर सुनाइयेगा?

*

—मैं कहता हूँ कि हम लोग तब तक मूल जातियों के इन अपराधों से डरते

रहेंगे, जब तक इस देश के मूल निवासियों को किसी सदुद्देश्य की प्रेरणा नहीं मिलेगी और उनके सामने ऐसा ऊँचा ध्येय नहीं रखा जायगा, जिसको पाने के लिए वह उत्साहपूर्वक काम करें। उनके सामने कोई प्रयोजन या वह ध्येय न होने से वे शराब की ओर झुकते हैं और अपराध और वेश्यागमन करते हैं। हम क्या चाहते हैं? कानूनमानने वाले परिश्रमी और किसी ध्येय को लेकर चलनेवाली जाति या निरंकुश, काहिल और उद्देश्यहीन जनता? सच तो यह है कि हम इसका उत्तर स्वयं नहीं जानते, क्योंकि हम दोनों से ही डरते हैं। और उस समय तक, जब तक हम अनिश्चय में पड़े रहेंगे, हम अपने निश्चित न होने की गहरी कीमत चुकाते रहेंगे। और अधिक पुलीस अथवा सुरक्षा के साधनों की माँग करने में इस प्रश्न का उत्तर नहीं है, यह केवल एक अस्थायी हल हो सकता है समस्या का। (हर्ष ध्वनि)।

*

—और क्या आपका ख्याल है श्री द' विलीयर्स, कि मूल जातियों के बच्चों की शिक्षा के साधन और सुविधा बढ़ाने से युवक-अपराधों में कमी हो जायगी?

—मुझे अपनी बात पर पूरा भरोसा है, सभापति महोदय!

—आपके पास इस विषय के आँकड़े हैं कि कितने प्रतिशत बच्चे स्कूलों में शिक्षा पाते हैं?

—सभापति महोदय, जोहैन्सबर्ग में यूँ तो हर दस बच्चों में से चार बच्चे स्कूल जाते हैं, लेकिन उन चार में से एक भी ऐसा नहीं है, जो छठीं कक्षा तक भी पहुँचता हो। बाकी छः बच्चों की शिक्षा तो सड़कों पर होती है।

—सभापति महोदय, क्या मैं श्री द' विलीयर्स से एक प्रश्न पूछ सकता हूँ?

—अवश्य, श्री स्काट।

—इस शिक्षा-व्यय का भार किसे उठाना चाहिए, श्री द' विलीयर्स?

—हमें। अगर हम इस बात की प्रतीक्षा करेंगे कि उन बच्चों के माँ-बाप उनकी शिक्षा के लिए धन दें, तब तो हमें दूसरी तरह से और गहरी कीमत चुकानी पड़ेगी।

—लेकिन, क्या आप यह नहीं जानते, श्री द' विलीयर्स, कि पढ़-लिखकर और भी ज्यादा चालाक अपराधी बनता है?

—मैं इस बात को ठीक नहीं समझता।

—देखिए, मैं आपको एक उदाहरण दूँ। मेरे यहाँ एक नौकर था, जो छठा दर्जा पास कर चुका था। पक्का शरीफ आदमी। अच्छे कपड़े वगैरा पहनता था.... मैं उसको अच्छी तरह रखता था और अच्छा पैसा देता था। लेकिन आप जानते हैं, इसी बदमाश ने....

*

—सरकार को 'पास' का कानून लागू करना चाहिए, जैक्सन!

—लेकिन मैं कहता हूँ कि 'पास'-कानून से काम नहीं चलता।

—अगर उसे लागू किया जायगा, तो सफल होंगे। लेकिन मैं फिर कहता हूँ कि लागू नहीं किया जा सकता! आपको मालूम है कि हम लोग लगभग एक लाख काले आदमियों को हर साल जेल भेजते हैं, जहाँ उनका साथ असली, घिसे हुए अपराधियों से होता है?

—यह बात पूरी तरह ठीक नहीं है, जैक्सन! मैं जानता हूँ कि सरकार सड़क-कैम्पों तथा खेतों पर मेहनत करवाने आदि का प्रयोग कर रही है।

—ख़ैर! शायद तुम्हें पता हो। लेकिन इससे मेरा यह तर्क तो ज़रा भी कटता नहीं कि 'पास' का क़ानून लागू नहीं किया जा सकता। आप चाहें उन कैदियों का जेल में भेजें या कैम्पों में, या जहाँ आपके जी में आय, लेकिन आप यह नहीं कह सकते कि एक लाख आदमियों को सज़ा देना ही अच्छी बात है।

—तो फिर तुम क्या करोगे?

—हाँ, तुमने अब प्रश्न पूछा है! यह तो मैं नही बता सकता कि मैं क्या करूँगा। लेकिन इतना तो जानता हूँ कि 'पास' के क़ानून से काम नहीं चलेगा।

*

—हम ज़ू लेक गये थे, लेकिन वह बिल्कुल बेकार है। समझ में नहीं आता कि काले लोगों के वहाँ जाने के लिए कोई अलग दिन क्यों नहीं नियत किया जाता।

—मैं तो अब इतवार को वहाँ कभी जाती ही नहीं। जान और पेनीलोप को ले जाना होता है, तो किसी और दिन ले जाते हैं। मैं तो इस विषय में सही बात चाहती हूँ। आख़िर यह सब लोग फिर जायँ कहाँ?

—तो फिर सरकार इन लोगों के लिए दूसरे मनोरञ्जन के स्थान क्यों नहीं बना देती?

—एक बार हिलसाइड गाल्फ़ कोर्स के पास उनके लिए एक मनोरंजन का स्थान बनाने की बात चली थी, लेकिन उसको लेकर इतना ज़बरदस्त शोर हुआ कि वह योजना वहीं पर ख़त्म कर देनी पड़ी थी।

—लेकिन वह करना तो असम्भव था ही। भयानक शोर मचता....

—तो फिर यही होता है कि वह पटरियों पर पड़े रहते हैं या मोड़ पर घूमा करते हैं। और शोर वहाँ भी बहुत ज़्यादा होता है। लेकिन जहाँ तुम रहती हो, वहाँ इस सब से क्या?

—बेकार बातें मत करो। उनके लिए बड़े-बड़े मनोरंजन के स्थान कहीं भी क्यों नहीं खोल देते और उन्हें बसों पर मुफ़्त क्यों नहीं आने-जाने देते?

—तो फिर तुम्हीं बताओ, कहाँ?

—तुम अड़ी हो, शहर में ही कहीं क्यों नहीं ?

—और वहाँ तक उन्हें पहुँचने में कितनी देर लगेगी ? और लौटने में कितनी ? इतवार को आप अपने नौकरों को कितनी देर की छुट्टी देती हैं ?

—ओफ़ बहस करने के लिए गर्मी बहुत ज़्यादा है। चलो, अपना रैकेट उठाओ। वह लोग हमें बुला रहे हैं। और देखना, श्रीमती हारवे और थेलमा हैं, कसके खेलना पड़ेगा तुम्हें, सुना !

*

और कुछ लोग दक्षिणी अफ़्रीका के अलग-अलग टुकड़े करने के लिए शोर मचाते हैं, जहाँ काले और गोरे बिल्कुल अलग-अलग रह सकें, जहाँ काले लोग अपनी ज़मीन जोत-बो सकें, अपनी खानें खोदकर ज़मीन के अन्दर दबी हुई दौलत निकाल सकें, और जहाँ वह अपने ही कानून चला सकें। और कुछ लोग उस पद्धति को तोड़ देना चाहते हैं, जिसके कारण आदमियों को अपने परिवारों को गाँव में ही छोड़कर यहाँ काम करने आना पड़ता है, और जिससे जातियाँ बिखर जाती हैं, घर बर्बाद हो जाते हैं, आदमी टूट जाते हैं। वह चाहते हैं कि उद्योगों तथा खानों में काम करनेवाले मज़दूरों के लिए बड़ी-बड़ी बस्तियाँ बना दी जायँ।

और गिरजे के लोग कुछ और कहते हैं। अंग्रेज़ी बोली के गिरजे चाहते हैं कि शिक्षा का ख़ूब प्रसार हो, लोगों को अवसर मिलें और मूल जातियों के श्रम तथा उद्योग पर से प्रतिबन्ध हटा दिये जायँ। और अफ़्रीकान भाषा बोलनेवाले गिरजे कहते हैं कि यहाँ के वासियों को ऐसा अवसर मिलना चाहिए, जिससे वह अपनी स्वेच्छा से अपने ही ढङ्ग पर विकास कर सकें और वह अपनी जाति के लोगों को याद दिलाते हैं कि उनके नैतिक पतन का मुख्य कारण यह है कि अब उस पारिवारिक धर्म का पतन हो गया है जिसके द्वारा किसी परिवार के नौकर उस परिवार की भक्ति में भाग ले सकते थे।

लेकिन गिरजे में या राज्य में उन्हें समान अधिकार नहीं मिलते हैं !

*

हाँ, सैकड़ों, हज़ारों आवाज़ें उठ रही हैं। लेकिन तब कोई क्या करे, जब उसके एक तरफ़ एक आवाज़ हो और दूसरी तरफ़ दूसरी ! कौन जानता है कि देश में शान्ति कैसे हो, जहाँ काले निवासियों की मात्रा गोरों से कहीं अधिक है ? कुछ लोग कहते हैं कि धरती अन्नपूर्णा है ! जिसके भंडार में एक को अधिक मिलने से दूसरे को कभी अभाव नहीं होता, कि एक के उत्थान से दूसरे का पतन हो। वह कहते हैं कि मज़दूर को कम मज़दूरी मिलने का मतलब यह है कि देश में ही ग़रीबी है; ज़्यादा अच्छी मज़दूरी तभी मिल सकती है, जब हमारे उद्योग-धन्धों में उन्नति हो, हम अपनी अधिक मात्रा में बनायी हुई चीज़ें ज़्यादा बड़े बाज़ारों में बेच सकें।

और कुछ दूसरे वह हैं, जो कहते हैं कि यह ख़तरनरक बात है। ज़्यादा मज़दूरी मिलेगी, तो वह ज्यादा खरीदेंगे ही नहीं, पढ़ेंगे भी ज्यादा, ज़्यादा सोचेंगे, ज्यादा माँगेंगे। और सदा के लिए बेजबान और पददलित रहना उन्हें असहनीय होगा।

कौन जाने हम किस तरह वैसा देश बना सकेंगे ? हम न केवल अपनी सम्पत्ति कम होने से ही डरते हैं, बल्कि अपने बड़प्पन और अपने गोरेपन को खोने से भी डरते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि अपराध बुरा होता है। लेकिन क्या ऐसा हो जाना उससे ज़्यादा बुरा नहीं होगा ? क्या यही अच्छा नहीं है कि जो-कुछ हमारे पास है, वह रह जाय और उसका मूल्य भय के रूप में दें ? और कुछ दूसरे हैं, जो यह कहते हैं कि क्या ऐसे भय को सहन किया जा सकता है, क्योंकि इसी भय के कारण लोगों को इन समस्याओं पर मनन करना पड़ता है !

*

हम नहीं जानते, हम नहीं जानते ! हम किसी तरह दिन काटेंगे, किवाड़ों पर और ज़्यादा ताले लगा देंगे और जब पड़ोस की तन्दुरुस्त और खूँख्वार कुतिया बच्चे देगी, तो एक तन्दुरुस्त और खूँख्वार कुत्ता भी पाल लेंगे, और अपने बटुओं को कसकर दाबे रहेंगे और रात में पेड़ों के सुहानेपन को और सितारों की छाहों में प्रेमियों के उल्लास को त्याग देंगे। आधी रात की सड़कों पर हम लौटना और तारों-भरे मैदानों में शाम का टहलना छोड़ देंगे। हम सतर्क रहेंगे, जीवन का यह त्याग देंगे, और वह त्याग देंगे। और अपने चारों ओर बचाव और सुरक्षा कर लेंगे और हमारे जीवन सिकुड़ जायँगे, पर वे जीवन श्रेष्ठ जीवों के होंगे; और हम भय के साथ रहेंगे, कम-से कम वह अज्ञात का भय तो नहीं होगा। और आत्मा दब जायगी, जीवन का दीप बुझेगा तो नहीं, लेकिन ढकने के नीचे एक पीढ़ी के लिए बचा रहेगा, जो फिर उसके सहारे रहेगी, उस दिन, जो अभी आया नहीं है; और वह कैसे आयगा, और कब आयगा, इस बात को हम इस समय बिल्कुल नहीं सोचेंगे।

*

आज रात वह पार्कवोल्ड में एक सभा कर रहे हैं, वैसी ही सभा, जैसी कल रात को उन्होंने टरफ़ान्टेन में की थी और कल रात को मेफेयर में करेंगे। और लोग और ज़्यादा पुलीस की माँग करेंगे, और देसी चोरों को और कड़ी सज़ा और चोरी करने के लिए हथियार रखनेवालों को मौत की सज़ा की माँग करेंगे। और कुछ लोग मूल निवासी-सम्बन्धी नयी नीति की माँग करेंगे, ताकि काली जातियों को यह मालूम पड़ जाय कि कौन मालिक है और देशी आदमियों के हितैषियों तथा कम्यूनिस्टों की हरकतों को रोका जाय।

और मूलजातियों के अपराधों के लिए एक दीर्घकालीन नीति पर लेफ्ट क्लब

की भी सभा हो रही है और भाषण करने के लिए वह कई अंग्रेज़ों और अफ़्रीकनों को बुला रहे हैं।

कैथीड्रल गिल्ड की भी एक मीटिंग है, जिसका विषय होगा, काली जाति के अपराधों के वास्तविक कारण। परन्तु इस सभा पर शोक छाया रहेगा, क्योंकि उस शाम के प्रमुख वक्ता श्री आर्थर जारविस अभी अपने पार्कवोल्डवाले मकान में गोली से मार दिये गये हैं।

*

रोओ, प्यारे देश, उस बच्चे के लिए, जो अभी जन्मा नहीं है और जो हमारे भय का उत्तराधिकारी होगा! उसे धरती को बहुत अधिक प्यार न करने देना! जब पानी उसकी उँगलियों में से बहे, तो उसे बहुत उल्लसित न होने देना, और जब अस्तगत सूर्य अपनी प्रभा से मैदानों को लाल कर दे, तो उसे बहुत मौन न खड़े रहने देना! जब उसके देश के पंछी गायें, तो उसे बहुत अधिक मुग्ध न होने देना! और न उसे किसी पहाड़ या घाटी में अपना हृदय बहुत खोने देना, क्योंकि भय उससे सब-कुछ छीन लेगा अगर वह ऐसा करेगा।

*

—मिस्टर सिमांगु?

—ओह, आप, एन्ड स्ट्रीट की श्रीमती डलेला!

—श्री सिमांगु, पुलीस मेरे पास आयी थी!

—पुलीस?

—जी हाँ! वह बूढ़े उम्फुन्दीस के लड़के का पता लगाना चाहते थे, वह उसकी तलाश में हैं!

—किसलिए, माँ?

—यह तो उन्होंने नहीं बताया, श्री सिमांगु।

—यह बुरी बात है, माँ।

—हाँ, लगता है कि बुरी बात है।

—और फिर क्या हुआ, माँ?

—मुझे डर लगा, उम्फुन्दीस! मैंने उन्हें पता बता दिया, श्रीमती काइज़ ७६।२३ वा एवेन्यू, एलेक्ज़ैन्डरा। और उनमें से एक बोला, हाँ, वह औरत बुरे कामों के लिए प्रसिद्ध है।

—तो आपने उन्हें पता बता दिया?—सिमांगु दरवाजे के पास ख़ामोश खड़े थे।

—क्या मैंने ग़लती की उम्फुन्दीस?

—नहीं, आपने कोई ग़लती नहीं की, माँ।

—मैं डर गयी थी।

—यह तो क़ानून की बात थी और हमें क़ानून की रक्षा करनी चाहिए।

—मुझे ख़ुशी है, उम्फ़ुन्दीस।

सिमांगु उस भली औरत को धन्यवाद देते हैं और उसे बिदा करते हैं! इसके बाद वह एक मिनट तक दरवाजे पर खड़े रहते हैं और फिर तेज़ी से मुड़कर अन्दर अपने कमरे में जाते है। मेज़ की एक दराज़ में से एक लिफ़ाफ़ा निकालकर उसमें से कुछ नोट निकालते हैं। उन नोटों की तरफ़ सिमांगु कुछ देर तक बहुत उदासी से देखते हैं, फिर कुछ निश्चय कर उन्हें जेब में रख लेते है और हैट उतारते हैं। फिर कपड़े पहनकर कुछ अनिश्चित भाव से खिड़की से श्रीमती लिथेबी के मकान की तरफ़ देखते हैं और सर हिलाते हैं। लेकिन उन्हें इस-सब में बहुत देर हो जाती है, क्योंकि जैसे ही वह बाहर निकलने के लिए दरवाज़ा खोलते है, कुमालो सामने खड़े मिल जाते हैं।

—आप कहीं बाहर जा रहे हैं, मित्र!

सिमांगु चुप हैं और अन्त में कहते हैं—जी हाँ, मैं बाहर जा रहा था....

—लेकिन आपने तो कहा था कि आज आप अपने कमरे में ही काम करेंगे।

और सिमांगु पहले तो यह कहना चाहते हैं कि क्या मैं जो चाहूँ नहीं कर सकता, लेकिन फिर कोई बात उन्हें ऐसा करने से रोक देती है। वह कहते हैं—आइए, अन्दर आइए।

—नहीं-नहीं, मैं आपके काम में बाधा नहीं पहुँचाना चाहता।

—अन्दर आइए,—और सिमांगु दरवाजा बन्द कर देते हैं--अभी श्रीमती डलेला मेरे पास आयी थीं, वही जिनके सोफ़िया टाउन के एन्ड स्ट्रीटवाले मकान में हम लोग उस दिन गये थे।

कुमालो सिमांगु की गम्भीर आवाज़ सुनते हैं —कोई ख़बर है?—कुमालो की आवाज़ में उत्सुकता नहीं है, भय है।

—केवल यही कि पुलीस उनके मकान पर आपके लड़के की तलाश में आयी थी। उन्होंने पुलीस को श्रीमती काइज़ एलेक्जैन्डरा में ७६। तेइसवें एवेन्यू का पता दे दिया है।

—पुलीस उसे क्यों तलाश कर रही थी?—कुमालो ने धीमी और काँपती आवाज़ में पूछा।

—पता नहीं, लेकिन आप जब आये थे, तब मैं वहीं जाने के लिए तैयार था।

कुमालो ने उनकी ओर बहुत उदास और कृतज्ञतापूर्ण नेत्रों से देखा, जिससे सिमांगु के मन में उठ रहा विरोध मिट गया।

—क्या आप अकेले ही जा रहे थे?

—हाँ, मैं अकेला ही जानेवाला था। लेकिन अब आपको भी बता दिया है, आप भी साथ चल सकते हैं।

—लेकिन आप जा किस तरह रहे थे, बसें तो हैं नहीं।

—मैं टैक्सी से जानेवाला था, मेरे पास रुपया है।

—रुपया तो मेरे पास भी है। मेरे होते हुए आप खर्च नहीं कर सकते!

— लेकिन इसमें बहुत रुपया खर्च होगा!

कुमालो ने अपना कोट खोला और उत्सुकता से अपना बटुआ बाहर निकाला।

—यह देखिए, मेरे पास रुपया है।

—अच्छा, तो आप ही खर्च कीजिए। चलिए, एक टैक्सी ढूँढ़ लें।

*

—श्रीमती काइज़!

विरोध में वह पीछे हटी।

—पुलीस यहाँ आयी थी?

—आयी थी, कुछ ही देर पहले।

—वह क्या चाहती थी?

—वह लड़के की तलाश में थी।

—आपने क्या कहा?

—मैंने कह दिया कि उसे गये साल-भर हो गया।

—और अब वह कहाँ गयी है?

—शैन्टी टाउन,—श्रीमती काइज़ फिर जरा पीछे हटी, जैसे उसे कुछ याद आ गया।

—लेकिन वहाँ का पता तो आपको मालूम ही नहीं था?—सिमांगु ने कड़ी आवाज़ में कहा।

श्रीमती काइज़ ने उनकी ओर खफ़गी से देखा।

—मैं क्या करती, पुलीस की बात थी।

—कोई बात नहीं। क्या पता बताया था आपने?

—मुझे ठीक पता नहीं मालूम था। मैंने उनसे केवल शैन्टी टाउन ही कहा था।—श्रीमती काइज़ को थोड़ा जोश आया—मैंने आपसे कहा था न कि मुझे पता नहीं मालूम!

*

—श्रीमती लैत्शवेयो!

वह भली औरत उन्हें देखकर मुस्करा दी और उन्हें अपने बोरे के मकान के अन्दर आने देने के लिए एक ओर हट गयी।

—हम अन्दर नहीं आयेंगे। आपके यहाँ पुलीस आयी थी ?

—जी, हाँ, उम्फुन्दीस।

—वह क्या चाहती थी ?

—वह लड़के का पता लगा रही है।

—किस बात के लिए, माँ ?

—मुझे यह नहीं मालूम, उम्फुन्दीस।

—यहाँ से वह कहाँ गयी है ?

—स्कूल को, उम्फुन्दीस।

फिर सिमांगु ने श्रीमती लैत्शवेयो से चुपके से पूछा—कोई बहुत गम्भीर बात लगती थी क्या !

—मैं कह नहीं सकती, उम्फुन्दीस।

—अच्छा, बिदा, श्रीमती लैत्शवेयो !

—आप सुखी रहिए, उम्फुन्दीस !

*

—नमस्ते, भाई !

—नमस्ते, उम्फुन्दीस !—देसी सहकारी ने कहा।

—गोरे अफ़सर कहाँ हैं ?

—वह शहर गये हैं, अभी अभी गये हैं।

—पुलीस यहाँ आयी थी क्या ?

—हाँ, आयी थी, अभी-अभी गयी है।

—वह क्या चाहती थी ?

—वह उस लड़के की, एबसेलाम कुमालो की, तलाश में थी, जिसके पिता टैक्सी में बैठे हैं।

—वह उसका पता क्यों लगा रही थी ?

—मैं यह नहीं जानता। मैं कुछ काम से बाहर गया हुआ था कि वे हमारे अंग्रेज़ अफ़सर के साथ अन्दर आये थे।

—और आपको पता नहीं कि वह क्या चाहती थी ?

—मुझे सच ही पता नहीं, उम्फुन्दीस।

सिमांगु चुप रहे। अन्त में उन्होंने पूछा—क्या कोई गम्भीर बात थी ?

—मैं नहीं जानता, मैं सचमुच नहीं बता सकता !

—क्या आपके अफ़सर कुछ परेशान-से दिखायी पड़ते थे ?

—वह परेशान तो थे।

—आपको कैसे मालूम ?

सहायक हँसा और बोला—मैं उन्हें जानता हूँ।

—और वह कहाँ गये ?

—पिमविल, उम्फ़ुन्दीस। उस लड़की के घर।

—अभी-अभी गये हैं न ?

—अभी-अभी।

—अच्छा, तो हम चलते हैं, खुश रहो ! अपने अंग्रेज़ अफ़सर से कह देना कि हम लोग आये थे।

—अच्छा, उम्फ़ुन्दीस, मैं उन्हें बता दूँगा।

*

—मेरी बच्ची !

—जी, उम्फ़ुन्दीस।

—पुलीस यहाँ आयी थी ?

—जी, हाँ, आयी थी।

—वह क्या चाहती थी ?

—वह एबसेलाम को चाहती थी, उम्फ़ुन्दीस।

—और तुमने उनसे क्या कहा ?

—मैंने उनसे कह दिया कि मैंने उसे शनिवार से नहीं देखा है, उम्फ़ुन्दीस।

कुमालो पीड़ा से तड़पकर बोले—वह उसे क्यों चाहती थी ?

लड़की डरकर पीछे हट गयी और बोली—मैं नहीं जानती !

—लेकिन तुमने उनसे पूछा क्यों नहीं ?—कुमालो ने पीड़ा से चिल्लाकर पूछा।

लड़की की आँखों में आँसू छलक आये। वह बोली—मैं डर गयी थी।

—तो यहाँ और किसी ने भी नहीं पूछा ?

—कुछ औरतें पास में खड़ी थीं। शायद उनमें से किसी ने पूछा हो।

—कौन औरतें ?—सिमांगु बोले हमें दिखाओ, वह कौन-सी औरतें हैं ?

उस लड़की ने उनको वह औरतें भी दिखायीं, लेकिन उनको भी कुछ नहीं मालूम था।

— उन्होंने हमें कुछ नहीं बताया,—एक औरत ने कहा।

फिर सिमांगु ने अकेले में उससे पूछा —क्या बात गम्भीर मालूम पड़ती थी ?

—जी, हाँ, बात तो गम्भीर ही मालूम पड़ती थी, उम्फ़ुन्दीस। आखिर बात क्या है ?—उस औरत ने पूछा।

—हमें नहीं मालूम।

—दुनिया मुसीबतों से भरी हुई है !—वह बोली।

सिमांगु टैक्सी की तरफ बढ़े और कुमालो उनके पीछे चल पड़े। इन दोनों के पीछे वह लड़की भी भागी, उसी तरह, जैसे कोई गर्भवती भाग सकती है।

—पुलीस कह गयी है कि अगर एबसेलाम लौटे, तो मैं उन्हें ख़बर दूँ।—उसकी आँखों में परेशानी थी—बताइए, मैं क्या करूँ ?

—जैसा वह बता गये हैं, वही करना चाहिए,—सिमांगु ने कहा—और हमें भी खबर कर देना। और, हाँ, ठहरो ! तुम सुपरिन्टेन्डेन्ट के दफ़्तर में जाकर कहना कि वह सोफ़िया टाउन के मिशन हाउस को टेलीफ़ोन से सूचना दे दें। लाओ, मैं तुम्हारी सुविधा के लिए नम्बर लिख दूँ, ४६३०४१।

—जी, मैं कह दूँगी, उम्फ़ुन्दीस।

—अच्छा, पुलीसवाले यह बता गये हैं कि इसके बाद वह कहाँ जायँगे ?

— यह तो उन्होंने नहीं बताया, उम्फ़ुन्दीस। लेकिन मैंने उन्हें यह कहते सुना कि यहाँ से आगे खोज का अन्तिम सूत्र भी खो जाता है।

—अच्छा, भगवान तुम्हें सुखी रखे, बेटी !

—बिदा, उम्फ़ुन्दीस !—वह कुमालो को भी बिदा देने के लिए मुड़ी, लेकिन वह टैक्सी में बैठ चुके थे और अपनी छड़ी पर ज़रूरत से ज़्यादा झुके हुए थे।

वापस पहुँचने पर सिमांगु ने टैक्सीवाले से पूछा—तुम्हारा कितना किराया हुआ ?

—दो पाउंड दस शिलिंग, उम्फ़ुन्दीस।

काँपते हुए हाथों से कुमालो ने अपना बटुआ टटोला।

—मैं इसमें आपकी सहायता करना चाहता हूँ,—सिमांगु बोले—आपकी सहायता करने में मुझे हर्ष होगा।

—आप दयालु हैं,—कुमालो काँपते हुए बोले—लेकिन मुझे ही देने दीजिए।

—और अपनी क्षीण पूँजी में से उन्होंने नोट निकाला।

—आप काँप रहे हैं, मित्र ?

—हाँ, मुझे बहुत-बहुत ठंड लग रही है।

सिमांगु मेघरहित आकाश की ओर देखते हैं, जिससे अफ्रीका का सूर्य धरती पर बिखर रहा था। वह बोले—आइए, मेरे कमरे में चलिए। हम वहाँ आग जला लेंगे और आप गर्मा जायँगे।

(१३)

एज़ेनज़ेलेनी का सफ़र बहुत ख़ामोशी से कटा। और स्टेशन से अंधों के रहने की जगह तक रास्ते में सिमांगु ने यद्यपि बात करने का प्रयत्न किया, परन्तु वृद्ध का

झुकाव बोलने की ओर कम था और उन्होंने अपने इर्द-गिर्द की चीज़ों में कम ही दिलचस्पी दिखायी।

—जब तक मैं यहाँ हूँ, तब तक आप क्या करेंगे ?

—तब तक मैं उनमें से किसी जगह बैठा रहूँगा, जिसका वर्णन आपने किया था। जब आप ख़ाली हो जाइएगा, तब आप मुझे एज़ेनज़ेलेनी में घुमा दीजिएगा।

—जैसा आप चाहें, वैसा ही कीजिए।

—आप मेरी ओर से निराश न होइए।

—मैं सब समझता हूँ। उसके बारे में फिर बात करने की कोई आवश्यकता नहीं।

सिमांगु ने कुमालो का परिचय वहाँ के अंग्रेज़ सुपरिन्टेन्डेन्ट से कराया। उन्होंने कुमालो को 'श्री कुमालो' कहकर सम्बोधित किया, हालाँकि ऐसा रिवाज नहीं था। ऐसा ज्ञात होता था, जैसे सिमांगु ने उस अंग्रेज़ अफ़सर से अकेले में कुछ बातें कह दी थीं, क्योंकि उन्होंने भी कुमालो को साथ चलने के लिए परेशान नहीं किया। इसके बजाय सुपरिन्टेन्डेन्ट कुमालो को वहाँ ले गया, जहाँ से ढाल शुरू हो जाता था और उनसे कह दिया कि जब खाना खाने का समय हो जायगा, तब वह उन्हें बुला लेंगे।

कई घंटे कुमालो वहाँ खुली धूप में बैठे रहे और शायद सूरज की गर्मी से, या आँखों के नीचे विस्तृत मैदान को देखने की वजह से, जो दूर के नीले पहाड़ों तक फैले हुए थे, या थोड़ा समय बीत जाने की वजह से, या पीड़ित आत्मा को दैवी सान्त्वना मिलने से उनका मन कुछ हल्का हो गया था, भय कुछ हट गया था।

हाँ, जो-कुछ सिमांगु ने कहा था, वह ठीक ही था। इस इतने बड़े शहर में, जहाँ हज़ारों-लाखों आदमी बसते हैं, केवल एक ही बात को लेकर इतना चिन्तित कैसे हुआ जा सकता है ? उस बहुत बड़े शहर में उनका लड़का बिगड़ गया था, जहाँ उसके पहले ऐसे बहुतेरे बिगड़ चुके हैं और जहाँ उसके बाद भी बहुतेरे बिगड़ेंगे। और ऐसा तब तक होता रहेगा, जब तक कि उस बड़े रहस्य का पता नहीं लग जायगा, जिसको अब तक कोई भी नहीं ढूँढ़ सका है। लेकिन वह एक आदमी का खून करे, एक अंग्रेज़ का ! ऐसी कोई बात वह स्मरण नहीं कर सके, कोई भी बात, जो इसे संभाव्य बना सके।

फिर कुमालो का ध्यान उस लड़की की ओर गया, और अजन्मे शिशु की ओर, जो उनका नाती होगा। कितने दुख की बात थी कि उनके, एक पादरी के, नाती का जन्म इस प्रकार हो। फिर भी इस बात को किसी तरह सँभाला जा सकता था। यदि उन लोगों की शादी कर दी जाय, तब वह शायद उसे ठीक कर सकें, जो टूट गया था। शायद उनका लड़का और वह लड़की उनके साथ इन्डाटशेनी लौट

सकें। शायद वह और उनकी पत्नी उस बच्चे को वह-कुछ दे सकें, जो वह स्वयं अपने बच्चे को नहीं दे सके थे। लेकिन उन्होंने कहाँ चूक की? उन्होंने क्या किया था, या क्या नहीं किया था, जिसके कारण उनका लड़का चोर बन गया था, आवारों की तरह जगह-जगह मारा-मारा फिरता था, ऐसी लड़की के साथ रहता था, जो अभी खुद बच्ची है; उस बच्चे का पिता बन गया, जिसका नाम तक नहीं रहता।.... लेकिन यह जोहैन्सबर्ग है! इसी विचार से उन्होंने अपने को सन्तोष दिया। और फिर एक बार उन्हें वही भय, उसी पीड़ा से पूर्ण, फिर उनपर आघात कर गया। उनका बेटा उस लड़की को और अपने उस बच्चे को छोड़ गया था, जो अभी पैदा नहीं हुआ था; अपना वह काम छोड़कर चला गया था, जो उसे युवक अंग्रेज़ अफ़सर ने दिलाया था और फिर आवारा बन गया था। और यह आवारा क्या किया करते हैं? क्या वह क़ानून और रीति-रिवाजों से अलग अपना जीवन नहीं बिताते, बिना धर्म या उद्देश्य के क्या वह उस किसी भी व्यक्ति के ऊपर हाथ नहीं उठाते हैं, जो उनके और उस दयनीय वस्तु के बीच में आ जाते हैं, जिसकी इन्हें इच्छा रहती है?

आदमी में ऐसा क्या टूट जाता है कि वह दूसरे का खून करने को तैयार हो जाता है? उसके अन्दर ऐसी कौन-सी चीज़ खत्म हो जाती है कि वह किसी के जीवित मांस में छूरी घुसेड़ देता है; किसी ज़िन्दा आदमी के सर पर कुल्हाड़ी मार देता है; जो आँखें देख सकती हैं, उन्हें फोड़ देता है; जो बंदूक छोड़कर धड़कते हृदय में मौत घुसेड़ देता है?

इतनी भयानक बात के चिन्तन से वह काँपकर विरक्त हो गये। परन्तु फिर उन्हीं बातों के चिन्तन से आश्वस्त हुए, क्योंकि इन्डाटशेनी में व्यतीत किये गये उनके जीवन में और उनके लड़के की बाल्यावस्था में उन्हें ऐसी कोई बात, ऐसा कोई कारण न दिखायी दिया, जिससे उनके लड़के में ऐसी भयानक प्रवृत्ति जागती। हाँ, सिमांगु ने ठीक ही तो कहा था। यही उलझन थी, जिससे उन्हें एक बड़े भारी नगर में, जहाँ हजारों-लाखों आदमी हैं, इस एक बात से डर लग रहा था।

और फिर वह सन्तोष से पुनर्निर्माण की बातों के बारे में सोचने लगे, उस घर के बारे में, जो वह फिर से बनायँगे, वह और उनकी पत्नी अपने जीवन के संध्या-काल में गर्टरूड और उसके बेटे के लिए, अपने बेटे, उसकी प्रेमिका और उनके बच्चे के लिए। जोहैन्सबर्ग देखकर वह एक गहरी चेतना लेकर इन्डाटशेनी वापस लौटेंगे, और ज्यादा नम्रता लेकर, क्योंकि क्या उनकी ही सगी बहन वेश्या नहीं बन गयी थी? क्या उनका ही बेटा चोर नहीं बन गया था? और क्या वह उस जैसे बच्चे के बाबा नहीं होनेवाले थे, जो नाजायज था? यह सब उन्होंने मन में बिना कटुता लाये, पर वेदना-सहित, सोचा। कोई व्यक्ति जिन चीजों के विरुद्ध संघर्ष करता है,

उन्हें अच्छी तरह जानकर लौट सकता है, यह अच्छी तरह जानकर कि किस तरह की चीज़ का उसे निर्माण करना है। वह स्कूल में एक नवीन और तीव्र मनोयोग लेकर लौटेगा, वह स्कूल नहीं, जहाँ बच्चे लिखना-पढ़ना और गणित ही सीखते हैं, किन्तु वह स्थान, जो उन्हें कहीं भी जीवन जीने के लिए प्रस्तुत कर सके। कुछ ऐसी शिक्षा दी जाय, जो तब काम आये, जब वे शहरों को जायँ, कुछ ऐसी चीज, जो जाति के रीति-रिवाज और कानून-कायदों का स्थान ले सके। पल-भर के लिए वह इस तरह ध्यान में मग्न हो गये, जैसे बैठकर व्यक्ति प्रायः हो जाता है।

हाँ, तो यह बात सत्य थी। उन्होंने खुद ही इस बात को मान लिया था। जाति टूट गयी थी और अब ठीक नहीं हो सकती थी। उन्होंने अपना सर झुका लिया। यह ऐसे ही हुआ, जैसे हवा में ऊपर उठे किसी व्यक्ति को लगे कि उसके वह जादू के पंख टूटकर गिर गये हों और वह धरती की ओर भय और संशय से देखे। जाति टूट गयी थी और अब फिर कभी उसके सुधरने की आशा नहीं थी। वह जाति, जिसमें वह पले थे, उनके पिता और पिता के पिता पले थे, टूट गयी थी, क्योंकि आदमी चले गये थे, जवान आदमी और लड़कियाँ चली गयी थीं, और मक्का मुश्किल से आदमी की ऊँचाई तक पहुँचती थी।

—चलिए, खाना आ गया।

—अभी ?

—हाँ, आप यहाँ काफी देर से हैं।

—मुझे मालूम नहीं पड़ा।

—और आपको क्या मिला ?

—कुछ नहीं।

—कुछ नहीं ?

—नहीं, कुछ नहीं। सिर्फ और अधिक भय, और गहरी वेदना। संसार में भय और पीड़ा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

—लेकिन, मित्र....

—क्या बात है ?

—मैं आपसे कुछ कहते हुए झिझकता हूँ।

—आपको कहने का अधिकार है। किसी और से अधिक कहने का अधिकार है।

—तो मैं केवल इतना कहूँगा कि अब आपके लौटने का समय आ गया है। यह पागलपन है, जो बहुत बुरा है, बल्कि यह पाप भी है, जो और बुरा है। मैं आप से, एक पादरी की हैसियत से, यह कह रहा हूँ।

कुमालो ने सर झुका लिया।

— आप ठीक कह रहे हैं, फ़ादर, मुझे यहाँ और अधिक नहीं बैठना चाहिए!

*

एजेनजेलेनी अद्‌भुत जगह थी। वहाँ पर उन अन्धे व्यक्तियों को, जो किसी तरह संसार में अपना जीवन बिता रहे थे, जिसे वह देख नहीं पाते थे, नयी आँखें मिल गयी थीं। यहाँ, वह ऐसी चीजें बना लेते थे, जो वह आँखें होते हुए भी नहीं बना सकते थे, मज़बूत टोकरियाँ, रंग-बिरंगी बाँस की तीलियों की, तीलियाँ किसी ऐसे जादू से एक-दूसरे में अपने-आप बुनती जाती थीं, जो वह समझ नहीं सकते थे; आपस में उनसे ऐसे-ऐसे सुन्दर नमूने बन जाते थे, लाल से लाल, नीले से नीले, उन आँखवाले अन्धे हाथों से कि कमाल! उन्होंने इन लोगों से बातें कीं और अन्धी आँखें उस चीज़ से चमक उठीं, जो आत्मा की दीप्ति ही हो सकती है। यह दयापूर्ण कार्य गोरी जाति के लोग ही कर रहे थे। और उनमें से कुछ अङ्गरेजी बोलते थे और कुछ अफ्रीकान। हाँ, वह जो अङ्गरेजी बोलते थे और वह व्यक्ति जो अफ्रीकान बोलते थे, वे साथ मिलकर उन काले आदमियों की आँखें खोलने आये थे, जो अन्धे थे।

उनके मित्र सिमांगु उसी दिन तीसरे पहर उस छोटे-से गिरजे में, जिसे वह देख चुके थे, धार्मिक भाषण देनेवाले थे। लेकिन क्योंकि वह-सब एक मत के अनुयायी नहीं थे, इसलिए वहाँ सलीब लगी हुई वेदी नहीं थी, पर सलीब दीवाल में ही बनी हुई थी, दो खुले खाँचे, जिनमें ईंटें नहीं भरी गयी थीं। और यहाँ सिमांगु वह धार्मिक पोशाक नहीं पहने थे, जो वह सोफ़िया टाउन में पहनते थे। उसे वह कल तड़के पहनेंगे, जब यह अपने ही लोगों के बीच प्रार्थना करेंगे।

सिमांगु ने धर्म-पुस्तक खोली, और पहले उसमें से पढ़कर सुनाया। और कुमालो को अब तक पता नहीं था कि उनके मित्र की ऐसी आवाज़ है। वह आवाज़ सोने की थी और उस आवाज़ में उन शब्दों के लिए, जिन्हें वह पढ़ रही थी, प्यार था। वह आवाज़ काँपती थी, टूटती थी और थरथराती थी, ऐसे नहीं, जैसे किसी बूढ़े की आवाज़ हो, और न जैसे पत्ती थरथराती हैं, बल्कि गम्भीर घंटे की तरह, जिसपर चोट पड़ती है। वह आवाज़ केवल सोने की आवाज़ ही नहीं थी, बल्कि उस व्यक्ति की आवाज़ थी, जिसका दिल भी सोने का था और जो सुनहरे शब्दों की पुस्तक में से पढ़ रहा था। और लोग चुप थे। कुमालो चुप थे, क्योंकि ऐसी तीन चीजें एक साथ कब मिलती हैं!

मैं, परमेश्वर ने, तुझे अपने पास बुलाया है
और तेरा हाथ थामे रहूँगा और तेरी रक्षा करूँगा
और तुझे मानव के मार्ग-दर्शन के लिए भेजूँगा

भूले हुए लोगों को प्रकाश दिखाने के लिए
अन्धी आँखें खोलने के लिए
बन्दियों को बन्दी-गृह से मुक्त करने के लिए
और उनके लिए, जो बन्दी-गृह के बाहर अन्धकार में बैठे हैं

और स्वर ऊँचा हुआ, और जुलू वाणी ऊपर उठी और रूपान्तरित हुई, और वह आदमी भी इस प्रकार ऊपर उठ गया, जैसे वह किसी ऐसी वस्तु के पास पहुँच गया हो, जो हम-सब से महान है। और लोग मौन थे, क्योंकि वह क्या अन्धी आँखोंवाले नहीं थे ? और कुमालो भी मौन थे, वह उस अन्धे व्यक्ति को जानते थे, जिसके लिए सिमांगु यह शब्द पढ़ रहे थे:

मैं अन्धों को उस मार्ग से लाऊँगा, जिसका उन्हें पता नहीं
मैं उन्हें ऐसे मार्गों पर ले जाऊँगा, जो वे नहीं जानते रहे हैं
मैं उनके आगे अँधेरे को उजाला बना दूँगा
और उलझी हुई बातों को सीधा कर दूँगा
यह-सब मैं उनके लिए करूँगा
और उनका साथ नहीं छोड़ूँगा

हाँ, वह मुझी से कह रहे हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। वह यह कह रहे हैं कि हम परित्यक्त नहीं हैं, क्योंकि जब मैं हैरान हूँ कि हम किस उद्देश्य के लिए जीवित हैं, संघर्ष करते हैं, मर जाते हैं; जब मैं हैरान हूँ कि कौन चीज लोगों को जीवित रखती है, संघर्ष के लिए प्रेरणा देती है, तो लोग अन्धों को उपदेश करने के लिए भेजे जाते हैं, गोरी जाति के लोग काली जाति के अन्धों को उपदेश देने के लिए भेजे जाते हैं। वह कौन है, जो, इस समय, मुझे ऐसा मित्र दे रहा है, जो मेरे आगे के अँधेरे को उजाला कर दे ? वह कौन है, जो, ऐसे अवसर पर, इतनी कम अवस्था के आदमी को ज्ञान दे रहा है, जो इतने बूढ़े आदमी को सान्त्वना दे सके ? वह कौन है, जिसने मेरे अन्दर उस लड़की के लिए दया पैदा कर दी है, जिसे मेरा लड़का त्याग चुका है ? हाँ, वह मुझी से कह रहे हैं, ऐसे शान्त-सीधे शब्दों में। वह कह रहे हैं कि हम उन सन्तों के कृतज्ञ हैं, जो हमारे दुःख के दिनों में हमें सान्त्वना देते हैं। क्या हम इससे भी कम करेंगे ? अगर हम इतना भी नहीं करेंगे, तो ऐसे कोई सन्त नहीं होंगे, जो किसी को धीरज दे सकें। वह कह रहे हैं, अगर ईसा ईसा है, स्वर्ग के सच्चे स्वामी, मानव के सच्चे भगवान, तो ऐसा क्या है, जो हम नहीं कर सकेंगे, चाहें हमें कितना ही गहरा दुख क्यों न हो ?

मैं तुम्हारी बात सुन रहा हूँ, मेरे मित्र ! तुम्हारा कहा हुआ ऐसा कोई शब्द नहीं है, जिसे मैं न सुन रहा होऊँ।

अब वह समाप्त कर रहे हैं। यह उनकी आवाज़ से मालूम पड़ता है। जो कहा जा चुका है, वह कहा जा चुका, और अब वह समाप्त है!

सिमांगु ने फिर किताब खोली और फिर पढ़ने लगे, वह मेरे लिए पढ़ रहे हैं:

क्या तुम्हें नहीं मालूम, क्या तुम ने नहीं सुना
कि अनन्त भगवान, परमेश्वर
जो इस सारे संसार का स्रष्टा है
गिरता नहीं, न थकता है

और स्वर फिर उठता है और जुलू वाणी ऊँची उठती है और रूपान्तरित होती है:

किशोर भी गिर पड़ेंगे और थक जायँगे
और युवक हैं तो बिल्कुल ही गिर पढ़ेंगे
पर वे पमेश्वर का आसरा करेंगे
अपनी शक्ति फिर नये सिरे से पायेंगे
वे गरुड़ की भाँति पंखों के सहारे ऊपर उठ जायँगे
वह दौड़ेंगे पर थकेंगे नहीं
और वे चलते रहने पर भी गिरेंगे नहीं

लोग गहरी साँस लेते हैं और कुमालो गहरी साँस लेते हैं, मानो कोई बहुत बड़ी बात कह दी गयी है। और वास्तव में सिमांगु उपदेशक के रूप में प्रसिद्ध हैं। जोहैन्सबर्ग में लोग कहते हैं कि सरकार के लिए यह अच्छा है कि सिमांगु मनुष्य के बनाये संसार के बारे में भाषण नहीं देते, क्योंकि वह लोगों का हृदय छूते हैं और उन्हें प्रिटोरिया के बजाय स्वर्ग भेज देते हैं। और अंग्रेज़ लोग हैं, जो आश्चर्य करते हैं, और कहते हैं, बर्बर लोगों की सन्तान के मुँह से कैसे शब्द निकलते हैं, उनकी सन्तान तो कुछ ही समय पहले अपने सब से भयंकर नेता के नेतृत्व में हज़ारों लाखों लोगों की लूट-पाट और हत्या करती थी।

फिर भी कुछ लोग हैं, जो उनसे घृणा करते हैं, क्योंकि यह सुनहरी आवाज़, जो एक जाति को उठा सकती है, सदा इसी प्रकार बोला करती है, क्योंकि यह कष्टों का स्थान, उनके विचार से, कोई स्थायी नगर नहीं है। यदि कोई ऐसी वाणी एकता के सूत्र में बाँध दे, तो यहाँ के लोग कहीं भाग जायँ। उनका कहना है कि सिमांगु आदमी के बनाये संसार के विषय में नहीं भाषण देते, जबकि उनके चारों ओर सड़कों पर लोग पीड़ित हैं और संघर्ष करते हैं और मरते रहते हैं। वह पूछते हैं कि यह कैसी मूर्खता है, जो इस तरह से मनुष्य पर छा जाती है, यह कौनसी मूर्खता है, जो उनमें से इतने लोगों पर छायी है, जो भूखों को धैर्यवान रखती

है, पीड़ितों को सन्तुष्ट रखती है, मरते हुओं को शान्ति देती है ? और मूर्ख लोग कैसे उनकी बातें सुनते रहते हैं, चुपचाप, मंत्रमुग्ध, और जब उपदेश समाप्त हो जाता है, तो गहरी साँस लेते हैं, उसके खोखले शब्दों से अपना खाली पेट भरते हैं !

कुमालो उठकर सिमांगु के पास जाते हैं।

—मित्र, अब मैं स्वस्थ हो गया हूँ !

सिमांगु का चेहरा खिल उठता है, लेकिन वह नम्रता से कहते हैं, उनमें गर्व या मिथ्या संवरण नहीं है—मैंने हर तरह से आपके दिल को छूने का प्रयत्न किया है, पर मैं पास नहीं पहुँच सका। इसलिए धन्यवाद देकर सन्तुष्ट हो जायँ।

(१४)

जिस दिन वे लोग एज़ेनज़ेलेनी से लौटे, कुमालो ने दोपहर का खाना मिशन हाउस में ही खाया और उसके बाद वह गर्टरूड के बच्चे से खेलने श्रीमती लिथेबी के यहाँ लौट आये। घर पर किसी व्यक्ति से ख़ूब मोल-भाव हो रहा था, क्योंकि श्रीमती लिथेबी ने गर्टरूड के पुराने सामान का कोई ख़रीदार ढूँढ़ लिया था। सब चीज़ें तीन पाउंड में बेच दी गयी थीं और वैसे सामान के लिए तीन पाउंड बुरा नहीं था, जिसमें एक मेज थी, जिसपर बुरी तरह निशान पड़े थे और जो बदरंग हो रही थी। यह उन्होंने नहीं पूछा कि मेज़ पर किस चीज़ के निशान थे। कुर्सियाँ भी बहुत कमज़ोर थीं और उनपर सँभलकर बैठना पड़ता। दरअसल दाम तो उन बर्तनों के लगे थे, जो एल्यूमोनियम नामक धातु के बने हुए थे। उनकी जाति के लगे इस तरह के बर्तन नहीं ख़रीदते हैं, लेकिन गर्टरूड ने कहा था कि वे-सब उसके किसी मित्र की भेंट थे और इसके विषय में भी उन्होंने नहीं पूछा था।

उस रुपये से गर्टरूड जूते ख़रीदना चाहती थी और वर्षा से बचने के लिए एक कोट और इसकी उन्होंने सहमति दे दी, क्योंकि उसका पुराना कोट और जूते उसके लाल गाउन और सफ़ेद हैट के साथ नहीं जँचते थे, जो उसके भाई ने उसके लिए ख़रीदे थे।

जब सब सामान लारी में लद चुका, उसका मूल्य चुका दिया गया और लारी चली गयी, तब कुमालो बच्चे के साथ खेलने को हुए, लेकिन तभी एकाएक शारीरिक वेदना और भय में जकड़कर उन्होंने सिमांगु और अंग्रेज़ युवक अफसर को अपने मकान की तरफ़ आते देखा। उस आदत के कारण, जो अनुभववश उनमें आ गयी थी, वह मजबूरन मकान के फाटक तक गये और उनके गम्भीर चेहरे और धीमी बोली की ओर डरकर ध्यान दिया।

—नमस्कार, उम्फुन्दीस ! ऐसी कोई जगह है, जहाँ हम बात कर सकें ?—अंग्रेज़ अफसर ने पूछा।

—मेरे कमरे में आइए,—अपनी आवाज़ पर कठिनाई से भरोसा करते हुए कुमालो बोले।

कमरे में पहुँचकर उन्होंने किवाड़ बन्द कर दिये और उन लोगों की आँखें बचाकर खड़े हो गये।

—जिस बात की आपको आशंका है, वह मैंने सुनी है, वह बात सही है।—अंग्रेज़ युवक ने कहा।

और कुमालो इस बात के बोझ से दबे खड़े रहे और उन लोगों की ओर देख न सके। वह कुर्सी पर बैठ गये और उनकी दृष्टि ज़मीन पर गड़ी रही।

जब ऐसा हो, तब कोई क्या कहे ? क्या कन्धे पर हाथ रखा जाय या हाथ छुए ? उन लोगों को नहीं मालूम था कि ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए और वे धीमे-धीमे आपस में बातें करने लगे, जैसे उस कमरे में बात की जाती है, जहाँ कोई मरा पड़ा हो।

अंग्रेज़ युवक ने कन्धे हिलाये—यह तो सुधार गृह के लिए बुरा होगा !—उसने ज़ोर से कहा, लेकिन उसके स्वर में लापरवाही भी थी।

और कुमालो ने अपना सर हिलाया, एक बार नहीं, दो बार नहीं, बल्कि तीन-चार बार, मानो वह भी यही कहना चाहते हैं कि, हाँ, यह तो सुधार-गृह लिए बुरा होगा !

—हाँ, यह तो हमारे लिए बुरा होगा,—युवक ने कहा—वे लोग यही कहेंगे कि हमने उसे जल्दी छोड़ दिया। हाँ, यह बात ज़रूर है कि दूसरे दो लड़के सुधार-गृह के नहीं थे, लेकिन फिर भी गोली तो उसने ही चलायी थी।

और सिमागु ने यथासाध्य सहज स्वर में कहा—उन दो और अपराधियों में से एक आपके भाई का लड़का है।

और फिर कुमालो ने अपना सर हिलाया, एक, दो, तीन, चार बार ! और ऐसा करने के बाद उन्होंने फिर वही शुरू किया, मानो वह भी यही कह रहे हों, हाँ, बाक़ी उन दोनों अपराधियों में से एक मेरे भाई का बेटा है।

इसके बाद वह खड़े हो गये और कमरे में चारों ओर उन्होंने निगाह घुमायी और सिमांगु और युवक उनकी ओर देखते रहे। उन्होंने खूँटी पर से कोट उतारा और पहना, हैट सर पर लगाया और हाथ में छड़ी ली। और इस प्रकार तैयार होकर वह उनकी ओर मुड़े। लेकिन इस बार वह लोग न जान पाये कि कुमालो ने क्या कहा।

—आप बाहर जा रहे हैं, मित्र ?

—आप जेल चलिएगा, उम्फुन्दीस ? मैंने आपके वहाँ जाने का प्रबन्ध कर दिया है।

और कुमालो ने सम्मति में सर हिला दिया। उन्होंने मुड़कर कमरे में निगाह घुमायी और देखा कि कोट तो वह पहने ही हुए हैं और हैट भी और फिर कोट और हैट को उन्होंने छुआ और घड़ी की ओर देखा, जो वह हाथ में थामे हुए थे।

—पहले मैं अपने भाई के पास जाना चाहूँगा, अगर आप मुझे रास्ता बता देंगे।

—मैं आपको रास्ता बता दूँगा,—सिमांगु ने कहा।

—और मैं मिशन में इन्तज़ार करूँगा,—अंग्रेज युवक ने कहा।

और सिमांगु ने दरवाज़े की ओर हाथ बढ़ाया, लेकिन कुमालो ने उन्हें रोक दिया—मैं धीरे-धीरे सड़क तक चलता हूँ, आप उन लोगों को खबर देकर आइएगा। —और उन्होंने हाथ से इशारा किया।

—मैं उनसे कह दूँगा, मित्र।

और सिमांगु ने उन लोगों से कहकर, औरतों के रोने-कलपने पर, सामने का दरवाज़ा बन्द कर दिया, क्योंकि उन लोगों का यही दस्तूर है। और वह फिर धीरे-धीरे झुके हुए कुमालो के पीछे-पीछे सड़क पर चलने लगे। उन्होंने चलते-चलते कुमालो को सर हिलाते देखा। क्या वह तेजी से बूढ़े न हो जायँगे ? क्या यह सर हिलाना उनके जीवन-भर चलता रहेगा, जिससे लोग ज़ोर से उनकी उपस्थिति में यह कहें कि यह बूढ़े हो गये, यह भूल जाने के सिवा और कुछ नहीं करते। और क्या इस बात पर भी वह सर हिला देंगे, मानो वह भी यह कह रहे हों कि, हाँ, यह कोई बात नहीं, मैं बूढ़ा हो गया हूँ और बातें भूलने के सिवा कुछ नहीं करता हूँ ? लेकिन कौन यह समझ सकेगा कि वह यह कह रहे हैं कि मैं याद रखने के सिवा कुछ नहीं करता ?

पहाड़ी के ऊपर सिमांगु उनके पास पहुँच गये और उनका हाथ ऐसे थाम लिया, मानो किसी बच्चे के साथ चल रहे हों, या किसी रोगी के साथ। इस तरह वह दूकान तक पहुँचे। दूकान पर कुमालो ने मुँह फेरकर आँखें मूँद लीं और उनके होंठ हिलने लगे। फिर उन्होंने आँखें खोलीं और सिमांगु की ओर मुड़े।

—आप आगे मत चलिए, यह काम मैं ही कर दूँगा।

और तब वह दूकान में गये। हाँ, दूकान में बैल-जैसी आवाज थी, दृढ़ और ऊँची। उनका भाई जान कुर्सी पर सरदार की तरह बैठा दो आदमियों से बात कर रहा था। उनके भाई जान ने उन्हें पहले नहीं पहचाना, क्योंकि बाहर से आनेवाली रोशनी आगन्तुक की पीठ पर पड़ रही थी।

—नमस्कार, भाई।

—नमस्कार, श्रीमान् !

—नमस्कार, भाई, मेरे भाई, सगे भाई, हमारी माता के पुत्र !

—ओह, भैया, आप ! अच्छा, अच्छा, आपको देखकर बहुत खुशी हुई। आइए, बैठिए !

कुमालो ने अपने भाई के मेहमानों की तरफ देखा—मुझे खेद है कि मैं फिर काम से ही आया हूँ, जरूरी काम से।

—मुझे विश्वास है कि मेरे मित्र मुझे क्षमा करेंगे।

और वह दोनों व्यक्ति बिदा लेकर चले गये।

—आपसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई। और आपक काम कहाँ तक पहुँचा? आपका शाहखर्च बेटा मिल गया? देखिए, मैं अपना पिछला सबक अभी भूला नहीं हूँ !

और यह कहकर वह हँसा, नादपूर्ण, जोरदार हँसी—लेकिन आइए, पहले चाय पियें,—और वह उठकर अन्दर के दरवाजे की तरफ गया और चाय के लिए कहा।

—अभी तक वही औरत है। देखिए, मेरे अपने भी कुछ विचार हैं। क्या कहते हैं अंग्रेजी में,—और फिर वही जोरदार, नादपूर्ण हँसी, वह अपने भाई से खिलवाड़ कर रहा था—हाँ, वफादारी, वफादारी ! यही शब्द है, मैं इसे आसानी से नहीं भूलूँगा। हमारे श्री सिमांगु वाकई में चतुर आदमी हैं। हाँ, तो आपने अपने साहबज़ादे की तलाश कर ली?

—हाँ, मिल गया, भाई। लेकिन उस हालत में नहीं, जैसा पहले-पहल मिला था। वह जेल में है, एक अंग्रेज का खून करने के अपराध में वह पकड़ा गया है।

—खून !—अब यह आदमी मजाक नहीं कर रहा है, किसी अंग्रेज की हत्या के बारे में तो और कम।

—हाँ, खून ! वह उस जगह के एक मकान में घुसा था, जिसे लोग पार्कवोल्ड कहते हैं और जिस अंग्रेज ने रोका, उसे मार दिया।

—क्या? मुझे याद आया, आज से एक-ही-दो दिन पहले....मंगल को?

—हाँ।

—हाँ, मुझे याद है।

हाँ, उसे याद है। उसे यह भी याद है कि उसका बेटा और उसके भाई का बेटा साथी हैं। बैल की-सी गर्दन पर नसें उभर आयी हैं और माथे पर पसीना आ गया है। और इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि उसकी आँखों में भय है। उसने एक कपड़े से अपना माथा पोंछा। असली बात पूछने के पहले वह और भी बहुत-से प्रश्न पूछ सकता था। लेकिन वह केवल इतना ही बोला—हाँ, मुझे याद है,—

उसके भाई के दिल में उसके लिए संवेदना है, वह धीरे-धीरे, सँभल-सँभलकर उसे वह बात बतायँगे।

—मुझे अफसोस है, भाई।

कोई क्या कहे ? क्या यह कहे कि हाँ, दुःख तो होगा ही तुम्हें ? या क्या यह कहे कि हाँ, तुम्हारा लड़का भी है ? जब कोई यह जानता हो कि इसके क्या मानी हैं, वह कैसे कह सकता है ? तो फिर खामोश ही रहे, लेकिन किसी पर आँखें लगी हैं। कोई जानता है कि इसका क्या मतलब है !

—तो आपका मतलब है कि....—उसने पूछा।

— हाँ, वह भी उसमें है !

और जान बुदबुदाता है—टीको ! टीको !—और फिर—टीको ! टीको !

कुमालो उसके पास आता है और उनके कन्धे पर हाथ रखता है।

—बहुत-सी बातें कहने को हैं।

—बहुत-सी बातें कहने को हैं।

—पर मैं उन्हें कहूँगा नहीं। मैं केवल इतना कहूँगा कि तुम्हें जो दुःख है, वह मैं जानता हूँ।

— जी, आपसे अधिक और कौन समझ सकता है ?

—हाँ, यह बात भी कहता हूँ कि मिशन हाउस में एक अंग्रेज है। वह मुझे जेल ले चलने के लिए मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। शायद वह तुम्हें भी साथ ले चल सकता है।

—मैं भी अपना कोट-हैट पहन लूँ।

वे चाय का इन्तजार नहीं करते और मिशन हाउस की सड़क पर चल देते हैं। सिमांगु उनके लौटने के लिए चिन्तित उन लोगों को आते देखते हैं। कुमालो अब अधिक दृढ़ता से चल रहे हैं, दूसरा व्यक्ति अवश्य झुका हुआ और टूटा-सा दिखायी पड़ रहा है।

फादर विन्सेन्ट ने कुमालो का हाथ अपने दोनों हाथों में थाम लिया। वह कहते हैं—किसी बात के लिए, किसी भी बात के लिए, आप कहें, मैं सब-कुछ करने की कोशिश करूँगा।

*

उस ऊँची रूखी दीवार में बने हुए बड़े फाटक के अन्दर वे लोग घुसते हैं। युवक उन लोगों के लिए बातें करता है और सब प्रबन्ध हो जाता है। जान एक कमरे में ले जाया जाता है और युवक स्टीफेन कुमालो के साथ दूसरे कमरे में जाता है। वहाँ लड़का उनके सामने लाया जाता है।

वह हाथ मिलाते हैं, वास्तव में वृद्ध अपने पुत्र का हाथ अपने दोनों हाथों में

थाम लेते हैं और गर्म-गर्म आँसू उन हाथों पर तेजी से गिरने लगते हैं। लड़का उदास खड़ा है, उसकी आँखों में तनिक-सी भी खुशी नहीं है। वह अपनी गर्दन इधर-उधर मोड़ता है, मानो वह ढीले-ढाले कपड़े उसके बदन पर काफी तंग हो रहे हों।

—मेरे बेटे, मेरे बेटे!

—हाँ, पिताजी।

—आखिर हमने तुम्हें ढूँढ़ ही लिया!

—हाँ, पिताजी।

—लेकिन बहुत देर में।

इस बात का उत्तर लड़का नहीं देता। जैसे उसकी खामोशी में शायद कोई आशा छुपी हो। कुमालो फिर वही बात कहते हैं— क्यों, क्या देर नहीं हुई?

लेकिन इसका भी कोई उत्तर नहीं। कुमालो फिर वही प्रश्न अधिक व्याकुलता के साथ दुहराते हैं—क्या, क्या बहुत देर नहीं हुई?

लड़का फिर बार-बार अपनी गर्दन इधर-उधर मोड़ता है। उसकी आँखें अंग्रेज़ युवक की आँखों से मिलती हैं और अपनी आँखें तेज़ी से फेर लेता है।

—जो आप कहते हैं, पिताजी, वही ठीक है।

—मैंने हर जगह तुम्हारी तलाश की!

इसका भी कोई उत्तर नहीं। वृद्ध अपने हाथ ढीले कर देते हैं और बेटे का हाथ निर्जीव-सा सरक जाता है। यहाँ एक रोक है, दीवार है, कोई ऐसी चीज़ है, जो उन्हें एक-दूसरे से अलग कर देती है।

—ऐसा भयानक अपराध तुमने क्यों किया, बेटे?

अंग्रेज़ युवक सतर्कता के साथ थोड़ा-सा हिलता है। जेल का अंग्रेज़ वार्डर बिल्कुल उसी तरह खड़ा रहता है। शायद वह इन लोगों की भाषा नहीं समझता। लड़के की आँखें भींग जाती हैं। वह अपनी गर्दन इधर-उधर मोड़ने लगता है। कोई उत्तर नहीं देता।

—जवाब दो, बेटे!

—मैं नहीं जानता।

—तुम अपने साथ रिवाल्वर क्यों लिये रहते थे?

अंग्रेज़ वार्डर भी इस बार कुछ सतर्क होता है। क्योंकि वह शब्द जैसा अंग्रेज़ी या अफ्रीकान भाषा में बोला जाता है, वैसे ही जुलू में भी। लड़के में भी जीवन के चिह्न प्रगट होते हैं।

—रक्षा के लिए। यह जोहैन्सबर्ग खतरनाक जगह है। आदमी नहीं जानता कि कब उसपर आक्रमण होगा।

—लेकिन तुम उसे उस घर में क्यों ले गये थे ?

इस प्रश्न का उत्तर भी नहीं दिया जा सकता।

—वह रिवाल्वर पुलीस के पास है, बेटे ?

—हाँ, पिताजी।

—और उन्हें इस बात का पूरा विश्वास है कि तुम्हीं थे ?

—मैंने उनसे कह दिया है।

—तुमने उनसे क्या कहा है ?

—मैंने उनसे कहा है कि जब वह अंग्रेज आया, तो मैं डर गया। इसी लिए मैंने उसपर गोली चला दी। मैं उसकी हत्या नहीं करना चाहता था।

—और तुम्हारा भाई ? और वह दूसरा लड़का ?

—हाँ, यह भी मैंने उनसे बता दिया है। वह लोग मेरे साथ तो थे, लेकिन अंग्रेज़ पर गोली मैंने ही चलायी थी।

— क्या तुम वहाँ चोरी करने के लिए गये थे ?

और इस प्रश्न का भी उत्तर नहीं दिया जाता।

—तुम सुधार-गृह में थे, बेटा ?

लड़का अपने जूते की तरफ़ देखता है और उसे ज़मीन पर आगे ठेल देता है।

—जी, मैं वहाँ था।

—उन लोगों ने तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार किया था ?

फिर आँखों में आँसू हैं। फिर वह अपना सर इधर-उधर मोड़ता है। फिर आँखें जूतों पर डालता है और एक पैर ज़मीन पर रगड़ने लगता है।

—हाँ, उन्होंने मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया था।

—और तुमने उन्हें यह बदला दिया है, बेटे !

और इसका भी कोई उत्तर नहीं। अंग्रेज़ युवक आगे आता है, क्योंकि वह जानता है कि इससे कुछ नहीं होता, कोई लाभ नहीं। शायद वह यह देखना सहन नहीं कर सकता कि ये लोग एक-दूसरे को यातना दें।

—अच्छा, एबसेलाम ?

—जी।

—तुमने वह काम क्यों छोड़ा, जो मैंने तुम्हें दिलवाया था ?

और युवक, तुम्हें भी कोई उत्तर नहीं मिल सकता, ऐसे प्रश्नों के कोई उत्तर नहीं होते !

—तुमने उसे क्यों छोड़ा, एबसेलाम ?

ऐसे प्रश्नों के कोई उत्तर नहीं होते।

—और वह तुम्हारी प्रेमिका ? वह लड़की, जिसके कारण हमने तुम्हें छोड़ दिया

था, जिसके लिए तुम इतने परेशान थे और जिस वजह से हमने तुम पर दया की थी ?

और फिर उसकी आँखों में आँसू छलक आये। कौन जानता है कि वह जिसको छोड़ आया है, उस लड़की के लिए वह रोता रहता है ! कौन जानता है कि वह उस टूटे हुए वादे के लिए रोता है ! यह किसे मालूम है कि वह अपने उस रूप पर आँसू बहाता है, जो औरत के लिए मेहनत करता, टैक्स देता, रुपया बचाता, कानून मानता, बच्चों को प्यार करता, वह दूसरा व्यक्तित्व, जो सदा पराजित रहा था। या वह केवल अपने ही लिए रोता है कि जो हो गया, वह हो गया, उसे अकेला रहने दिया जाय, निर्मम प्रश्नों की झड़ी से मुक्त हो। क्यों ? क्यों ? क्यों ? क्यों ? उसे क्या पता, क्यों वे उससे बात नहीं करते, वे उसके साथ ठठोली नहीं करते, वे उसके साथ बैठते नहीं और इत्मीनान से नहीं रहने देते ? पर वे उससे पूछते ही जाते हैं, क्यों ? क्यों ? क्यों ? उसके पिता, वह अंग्रेज़, जेल के अधिकारी, पुलीसवाले, मैजिस्ट्रेट.... क्यों ? क्यों ? क्यों ?

अंग्रेज़ युवक अपने कन्धे हिलाता है, उपेक्षा-भाव से मुस्कुराता है। पर उसमें उपेक्षा नहीं है, उसकी आँखों के बीच मे वेदना का चिह्न है।

—दुनिया ऐसे ही चलती है,—उसने कहा।

—एक बात का उत्तर दो, बेटे। दोगे न ?

—हाँ, दूँगा, पिताजी।

—तुमने कुछ लिखा नहीं, कोई सन्देश नहीं भेजा। तुम बुरी सोहबत में पड़ गये। तुमने चोरी की, घरों में घुसे, और....हाँ, यह-सब तुमने किया। पर क्यों ?

और लड़का उन कहे गये शब्दों को पकड़ लेता है—मेरी सोहबत खराब हो गयी थी।

—मैं यह कहने की ज़रूरत नहीं समझता कि यह कोई उत्तर नहीं है,—कुमालो ने कहा। लेकिन वह जानते थे कि इस तरह इसके अलावा उन्हें दूसरा उत्तर नहीं मिलेगा।

—हाँ, यह तो मैं समझता हूँ कि तुम बुरी संगत में पड़ गये थे, लेकिन तुमने ऐसा क्यों किया ?

किस तरह वे एक-दूसरे को यातना दे रहे हैं ! इसी यातना के कारण लड़के में फिर से जीवन के चिह्न दिखायी पड़ते हैं।

—शायद मेरे अन्दर शैतान था।

हाय, लड़के ! क्या तुम यह नहीं कह सकते कि तुमने शैतान का भरसक विरोध किया ? तुम उससे दिन-रात, यहाँ तक लड़े कि तुम्हारे पसीना छूटने लगा और मुझमें शक्ति न रही ? क्या तुम यह नहीं कह सकते कि तुम अपने पापों के लिए

रोये और सुधरने का संकल्प किया और तनकर खड़े हो गये थे, और ठोकर खा गये, और फिर गिर पड़े ? उससे इस यातना भोगते वृद्ध को कुछ सान्त्वना मिलती, जो हताश होकर पूछा रहे हैं कि तुमने उसका सामना क्यों नहीं किया ?

और लड़का फिर अपने पैरों की ओर देखता है, और कहता है—मैं नहीं जानाता।

कुमालो थक गये हैं। लड़का भी थक गया है। और मिलने का समय लगभग समाप्त हो गया है। अंग्रेज़ युवक फिर उनके पास आता है।

—क्या यह अब भी उस लड़की से शादी करना चाहता है ?—वह कुमालो से पूछता है।

—क्यों, बेटे, क्या तुम उस लड़की से शादी करना चाहते हो ?

—हाँ, पिताजी।

—अच्छा, तो मैं देखूँगा कि मैं क्या कर सकता हूँ,—युवक कहता है—मेरे ख्याल से हमारे जाने का समय हो गया है।

—हम फिर यहाँ आयँगे ?

—हाँ, आप फिर आ सकते हैं। आने का समय हम फाटक पर पूछ लेंगे।

—सुखी रहो, बेटा !

—नमस्कार, पिताजी !

—मेरे ख़्याल से, बेटे, तुम यहाँ से ख़त लिखना। लेकिन अपनी माँ को तब तक न लिखना, जब तक मैं तुमसे फिर न मिल लूँ। उसे पहले मुझे ही लिखना होगा।

—यह अच्छा है, पिताजी।

वे जाते हैं, और फाटक के बाहर वे जान से मिलते हैं। उस लम्बे-तड़ंगे आदमी को पहले से ठीक लग रहा है।

—चलिए, जल्दी चला जाय। किसी वकील से फ़ौरन ही मिलना आवश्यक है।

—वकील से भाई, किस बात के लिए ऐसे पैसा ख़र्च किया जाय ? किस्सा साफ है। उसमें कोई सन्देह नहीं।

—क्या क़िस्सा है ?—जान पूछता है।

—क़िस्सा ? यह तीनों लड़के एक ऐसे मकान में घुस पड़े, जो उनके विचार से खाली पड़ा था। उन्होंने वहाँ के नौकर को मारा। अंग्रेज़ ने शोर सुना और वह देखने आया। और तब ...और तब....मेरे लड़के ने....मेरे ने, तुम्हारे ने नहीं, उसको गोली मार दी। वह कहता है कि वह डर गया था।

—अच्छा-अच्छा, यह एक क़िस्सा है,—जान कहता है। वह आश्वस्त लगता है —अच्छा, अच्छा। वह कहता है, यह एक क़िस्सा है। और उसने तुमसे यह और लोगों के सामने कहा ?

—क्यों नहीं, सच बात वह क्यों न कहे !

लेकिन जान आश्वस्त लगता है—शायद आपको वकील की जरूरत न हो। अगर उसने अंग्रेज़ को गोली मारी है, तो फिर कुछ नहीं कहना है।

—तो क्या तुम वकील करोगे ?

जान अपने भाई पर मुस्कराता है—मुझे शायद वकील की ज़रूरत होगी,—वह कहता है—क्योंकि वकील मेरे लड़के से अकेले में बात कर सकता है।—वह कुछ सोचता-सा लगता है, फिर वह अपने भाई से कहता है—देखिए भाई साहब, इस बात का कोई सबूत नहीं है कि मेरा लड़का या वह दूसरा लड़का वहाँ थे भी।

—जान इसपर मुस्कराता है, वह बिलकुल स्वस्थ लगता है।

—वहाँ वे थे या नहीं....लेकिन मेरा लड़का तो....

—हाँ-हाँ,—जान उन्हें टोकता है और उनपर मुस्कुराता है, वह पूछता है—आपके लड़के पर कौन यक़ीन करेगा ?

वह मतलब से यह बात कह रहा है, क्रूर और निर्मम मतलब से।

कुमालो सन्न खड़े रह जाते हैं। अंग्रेज़ युवक मोटर में चढ़ जाता है। कुमालो उसकी तरफ़ सलाह के लिए देखते हैं, लेकिन युवक अपने कन्धे हिलाता है, वह लापरवाही से कहता है—आप जो चाहें, कीजिए। वकील तय करना मेरा काम नहीं है। लेकिन अगर आप सोफ़िया टाउन लौटना चाहते हैं, तो मैं आपको वहाँ ले चल सकता हूँ।

इस लापरवाही से कुमालो और भी घबराकर बाहर अनिश्चय में खड़े रहते हैं। उनका अनिश्चय अंग्रेज युवक को गुस्सा-सा कर देता है। कार की खिड़की से उझक-कर ज़ोर से बोलता है—वकील तय करना मेरा काम नहीं है। मेरा काम है सुधारना, सहायता देना, ऊपर उठाना है।—और अपने हाथ से वह ऊपर उठाने की क्रुद्ध मुद्रा बनाता है और फिर सर कार के अन्दर कर लेता है, मानो वह कार चालू करने ही वाला है। पर वह विचार बदल देता है और दुबारा सर बाहर निकालता है—यह अद्भुत कार्य है,—वह कहता है—अद्भुत कार्य, महान् कार्य !—वह फिर भीतर हो जाता है, लेकिन फिर सर बाहर निकालकर कुमालो से कहता है—और आप इस ख़्याल में भी मत रहिएगा कि पादरियों का काम इतना महान् होता है !

शायद वह ज्यादा ज़ोर से बोल रहा है, क्योंकि फिर वह आवाज़ कुछ धीमी करता है और भिंचे हुए क्रुद्ध होंठो से बोलता है—आप आत्माओं की रक्षा करते हैं,—वह कहता है, मानो आत्मा की रक्षा करना कोई भोंडा मज़ाक हो—पर मैं भी आत्माओं की रक्षा करता हूँ। आप लोगों को संसार में आते देखते हैं और आप उन्हें जाते भी देखते हैं। और यही मैं करता हूँ। मैंने इस एबसेलाम को एक नयी दुनिया में जन्म लेते देखा था और अब मैं उसको जाते भी देखूँगा !

वह कुमालो की ओर तेज़ गुस्से से देखता है—हाँ, हम अब उसको जाते देखेंगे !—वह कहता है। फिर अन्दर बैठकर हैंडिल को ऐसे पकड़ लेता है, मानो उसे तोड़ डालेगा—आप सोफ़िया टाउन चल रहे हैं ?—वह पूछता है।

पर कुमालो सर हिला देते हैं, क्योंकि इस कार में वह उस अनजान व्यक्ति के साथ कैसे बैठें ? युवक अफ़सर जान की ओर देखता है और सर बाहर निकालकर उससे कहता है—तुम होशियार आदमी हो, लेकिन भगवान को धन्यवाद है कि तुम मेरे भाई नहीं हो।

वह बड़े शोर के साथ गाड़ी चलाता है और गाड़ी के पहिए के रगड़ के शोर के साथ अभी भी गुस्से में भरा अपने-आप से बात करता हुआ चला जाता है।

कुमालो अपने भाई की तरफ देखते हैं। लेकिन उनका भाई उनकी तरफ नहीं देखता और सचमुच वह चल पड़ते हैं। श्रान्त-क्लान्त, दीवार में बने फाटक में से निकलकर वह सड़क पर जाते हैं—टीको !—वह कहते हैं—टीको ! मुझे छोड़ना मत ! फ़ादर विन्सेन्ट की बात उन्हें याद आती है, किसी चीज़ के लिए, किसी भी चीज़ के लिए, उन्होंने कहा था, आप कहिए....तो वह फादर विन्सेन्ट के पास चलें।

(१५)

हताश और थके हुए कुमालो श्रीमती लिथेबी के मकान को लौटे। दोनों औरतें खामोश थीं, और उनसे बात करने की उनकी इच्छा नहीं थी, उनके नन्हें भाञ्जे के साथ खेलनेवाला कोई न था। वह अपने कमरे में चले गये और वहाँ खामोश बैठे रहे। वह इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि थोड़ी-सी भी शक्ति आ जाय, तो वह मिशन हाउस जायँ। लेकिन अभी वह बैठे ही थे कि उनके दरवाज़े पर दस्तक हुई और श्रीमती लिथेबी अंग्रेज़ युवक के साथ दरवाज़े पर खड़ी थीं। पिछली मुलाक़ात की पीड़ा अभी ताज़ी थी और कुमालो इसके कारण ज़रा पीछे हटे। यह देखकर युवक का माथा सिकुड़ा और उसने श्रीमती लिथेबी से सिस्यूटो भाषा में कुछ कहा, जिससे वह चली गयीं।

कुमालो खड़े हो गये, बूढ़े की तरह झुके हुए। उन्होंने नम्र और विनय के शब्द कहना चाहा, पर उन्हें याद न आये। और क्योंकि वह उस युवक से आँखें नहीं मिला पा रहे थे, इसलिए उनकी दृष्टि फ़र्श पर गड़ी हुई थी।

—उम्फ़ुन्दीस !

—श्रीमान।

वह युवक कहीं ज्यादा नाराज़ लग रहा था—मुझे अफ़सोस है, उम्फ़ुन्दीस, कि मैंने आपसे ऐसे क्रोधपूर्ण शब्द कहे। मैं आपसे वकील के बारे में बात करने आया हूँ।

—जी ?

वास्तव में ऐसे आदमी से बात करना कठिन है, जो आपके सामने इस तरह खड़ा रहे।

—उम्फ्रुन्दीस, क्या आप नहीं चाहते कि मैं आपसे इस विषय पर बात करूँ ?

कुमालो के अन्दर संघर्ष हो रहा था। ऐसा संघर्ष उन काले आदमियों में स्वाभाविक है, जिन्होंने नम्र होना सीखा है, लेकिन फिर भी वह कुछ होना चाहते हैं।

—जी,—उन्होंने फिर कहा।

बहुत धैर्य से वह अंग्रेज़ बोला--उम्फ्रुन्दीस, मैं समझता हूँ। आप बैठेंगे नहीं ?

और कुमालो बैठ गये और वह युवक अभी तक गुस्से में त्योरियाँ चढ़ाये हुए, उसी तरह खड़ा-खड़ा उनसे बातें करता रहा।

—मैंने उस समय ऐसी बातें इसलिए की थीं कि मुझे दुख हुआ था और मैं जो-कुछ करता हूँ, जी-जान से करता हूँ। और जब मेरा काम बिगड़ जाता है, तब मैं अपने-आपको चोट पहुँचाता हूँ, और दूसरों को भी चोट पहुँचाता हूँ। लेकिन उसके बाद मुझे पश्चाताप भी होता है और इसी कारण मैं यहाँ आया हूँ।

और जब इसपर भी कुमालो चुप रहे, तो वह फिर बोला—अब आप समझे ?

और कुमालो ने कहा—हाँ, मैं समझा। और उन्होंने उसकी ओर अपना मुँह मोड़ा, ताकि वह युवक जान ले कि अब उनके मन में मैल नहीं है—अब मैं बिल्कुल समझ गया!—वह बोले।

युवक के माथे पर की त्योरियाँ मिट गयीं। वह बोला—तो वकील के बारे में। मेरे ख़्याल से आपको भी वकील करना ही चाहिए। और वह इसलिए नहीं कि सच नहीं बताना है, बल्कि इसलिए कि मुझे आपके भाई पर विश्वास नहीं है। आप देख सकते हैं कि उनके मन में क्या बात है। उनका इरादा है कि वह यह साबित करने की कोशिश करेंगे कि उनका लड़का और वह तीसरा लड़का आपके लड़के के साथ इस काम में थे ही नहीं। हम और आप तो यह नहीं जानते कि इससे काम बनेगा या बिगड़ेगा, लेकिन एक वकील जानता है। और दूसरी बात यह कि एबसेलाम ने यह कहा है कि गोली उसने डर जाने के कारण चलायी, उसका उस अंग्रेज़ को मार डालने का कोई इरादा नहीं था। न्यायालय को यह समझाने के लिए कि यह सच है, एक वकील की ज़रूरत है।

—हाँ, समझ गया।

—आप किसी वकील को जानते हैं ? आपके गिरजे का....

—जी, नहीं, मैं नहीं जानता। लेकिन कुछ देर आराम करने के बाद मिशन हाउस जाकर फ़ादर विन्सेन्ट से मिलने का मेरा इरादा था।

—तो अब आप आराम कर चुके ?

—आपके आ जाने से मेरे अन्दर नयी हिम्मत आ गयी है, श्रीमान्! मुझे तो लग रहा था....

—हाँ, मैं जानता हूँ।

युवक ने भवें चढ़ा लीं और मानो अपने-आपसे कहा—यह मेरा सबसे बड़ा दोष है।....तो अब हम चलें?

और वह दोनों मिशन हाउस की ओर चल पड़े, और फ़ादर विन्सेन्ट के कमरे में पहुँच गये, और वहाँ उन्होंने उस गुलाबी कपोलवाले अंग्रेज़ पादरी से बहुत देर तक बातें कीं।

—मेरा ख़्याल है कि मुझे कोई ऐसा अच्छा वकील अवश्य मिल जायगा, जो इस मुक़दमे को हाथ में ले ले,—फ़ादर विन्सेन्ट ने कहा—मेरे विचार से हम सब लोग इस बात पर तो राजी हैं कि केवल सत्य बातें ही रहेंगी और हमारा बचाव यही होगा कि गोली डर के कारण चलायी गयी थी, हत्या करने के इरादे से नहीं। हमारा वकील हमें इस दूसरे मामले में भी बतायगा, मित्र, इस संभावना के बारे में कि क्या आपका भतीजा और वह दूसरा युवक इस बात से इन्कार करेंगे कि वे वहाँ थे। क्योंकि लगता है कि आपका लड़का ही है, जो कहता है कि वे वहाँ थे। हम लोगों के लिए तो सच ही का सहारा है, केवल सच का, और वास्तव में, जिस आदमी के बारे में, मैं सोच रहा हूँ, वह इसके सिवा मुकदमा हाथ में न लेगा। मैं उससे जल्द-से-जल्द मिलूँगा।

—और शादी के बारे में?—युवक ने प्रश्न किया।

—इस बारे में भी मैं उससे पूछूँगा। पता नहीं कि वह हो भी सकेगा, पर अगर ऐसा हो सकता है, तो मैं खुशी से उनकी शादी करा दूँगा।

और वह लोग उठ पड़े और फ़ादर विन्सेन्ट ने कुमालो की बाँह पर हाथ रखकर कहा—हिम्मत रखिए। जो-कुछ भी हो, यह निश्चित है कि आपके लड़के को कड़ी सज़ा मिलेगी, पर अगर उसके बचाव का तर्क मान लिया जाय, तो उसे मृत्यु-दंड नहीं मिलेगा। और जब तक ज़िन्दगी है, तब तक जीवन के सुधरने की भी आशा है।

—यह बात तो अब सदा मेरे दिमाग़ में रहती है। लेकिन फिर भी उम्मीद बहुत कम है।—कुमालो ने कहा।

—आप यहीं ठहरिए और मुझसे बातें कीजिए,—फ़ादर विन्सेन्ट ने कहा।

—मुझे तो जाना होगा,—अंग्रेज़ युवक बोला—लेकिन, उम्फ़ुन्दीस, अगर मेरी सहायता की आवश्यकता हो, तो मैं तैयार हूँ।

जब युवक चला गया, तो कुमालो और फ़ादर विन्सेन्ट फिर बैठ गये और कुमालो ने उनसे कहा—आप तो समझ सकते हैं कि मेरी यह यात्रा कितनी

दुखपूर्ण सिद्ध हुई है।

—हाँ, यह मैं समझता हूँ, मित्र।

—पहले तो केवल तलाश ही करने की बात थी। शुरू में तो मैं केवल चिन्तित ही था, लेकिन जैसे-जैसे तलाश चलती गयी, वह चिन्ता भय में बदलती गयी और यह भय धीरे-धीरे बढ़ता गया। पहली बार मुझे एलेक्जैन्डरा में भय लगा था, लेकिन जब से यहाँ मिशन हाउस में मुझे उस हत्या की ख़बर सुनायी गयी थी, तभी से वह भय असहनीय हो गया।—कुमालो रुक गये और फ़र्श की तरफ़ देखने लगे, मानो वह कुछ याद कर रहे हों और उस याद करने में ही बिल्कुल खो गये हों। वह बहुत देर तक इसी तरह नीचे की तरफ़ घूरते रहे और तब वह फिर बोले—सिमांगु ने मुझसे यह कहा था कि ऐसे शहर में जहाँ हज़ार आदमी हैं, इस एक चीज़ से क्या डरना है ? उससे मुझे सान्त्वना मिली।

और कुमालो ने जिस ढङ्ग से यह बात कही, फ़ादर विन्सेन्ट के लिए ऐसा असह्य लगा, कि वह साँस रोके हुए, जड़ बने बैठे रहे और यह आशा करने लगे कि यह बात जल्दी ख़त्म हो जाय।

—उससे मुझे सान्त्वना मिली,—कुमालो ने कहा—फिर भी उससे सान्त्वना नहीं मिली। और अब तक मैं यह बिश्वास नहीं कर पा रहा हूँ कि यह बात, जोकि हज़ारों में एक बार होती है, वह मेरे साथ हुई है। क्यों ? कभी-कभी तो, कुछ क्षणों के लिए, मैं यह भी विश्वास कर लेता हूँ कि यह-सब नहीं हुआ है, कि मैं जब जागूँगा, तो मालूम होगा कि यह नहीं हुआ। लेकिन ऐसा केवल कुछ क्षणों के लिए ही होता है।

और फिर कुमालो ने कहा – और फिर यह सोचना कि मैं और मेरी पत्नी जीवन-भर इन्डाटशेनी में भोलेपन से रहे, और यह पता नहीं था कि ऐसी बात धीरे-धीरे हमारे जीवन में आती जा रही है। काश, पहले पता चल जाता !—वह बोले—अगर यह बता भर दिया जाता कि यह क़दम उठाया गया है, और यह क़दम उठाया जानेवाला है, अगर यह बता-भर दिया जाता !

—पर हमें बताया न गया,—कुमालो कहते गये—अब हमें दिखायी पड़ रहा है, पर तब न दिखायी पड़ा। पर औरों ने देखा। जिन लोगों के लिए यह कुछ न था, उन्हें पता चला। उन्होंने उसे कदम-कदम पर देखा। उन्होंने कहा, यह जोहैन्सबर्ग है, यह लड़का बुरी राह जा रहा है, वैसे ही, जैसे जोहैन्सबर्ग में और लड़के बुरी राह गये हैं। पर हमारे लिए, यह ज़िन्दगी और मौत था, यह न पता चला।

फ़ादर विन्सेन्ट ने अपनी आँखों पर हाथ रख लिया, रोशनी से बचाने के लिए, उस व्यक्ति की नज़रों से छुपाने के लिए, जो बोल रहा था। वह खुद कुछ बोलना

चाहते थे उस दर्द-भरे जाल को तोड़ने के लिए, जो उनके चारों तरफ़ धीरे-धीरे फैल रहा था, लेकिन कोई चीज़ उन्हें बोलने से रोक देती थी। और फिर कुछ बोलने के लिए उनके पास शब्द भी तो नहीं थे।

कुमालो बोले—घास पर एक आदमी पड़ा हुआ सो रहा है और उसपर उसकी ज़िन्दगी का सबसे भयंकर तूफ़ान घिर रहा है, ऐसी बिजली और बादल की गरज आनेवाली है,जैसे पहले कभी न देखी गयी हो और उसके साथ-साथ मौत और बर्बादी। लोग उसके पास से भय से सुरक्षित स्थानों को भाग रहे हैं, और या तो वे उसे घास में देख नहीं रहे हैं या वह पल-भर भी रुकने में डरते हैं, लेकिन वह उसे जगाते नहीं है और सोने देते हैं।

और इसके बाद ऐसा लगा कि कुमालो को जो-कुछ कहना था, वह कह चुके और वे दोनों बहुत देर तक चुप रहे। फ़ादर विन्सेन्ट ने कुछ बोलने का प्रयत्न किया, कई वाक्य उनके मन में आये भी, लेकिन कोई ठीक नहीं लगा। लेकिन इतना तो उन्होंने ज़रूर कहा - मेरे मित्र....—और यद्यपि इसके आगे उन्होंने कुछ भी नहीं कहा, किन्तु वह आशा करते थे कि कुमालो इन दो शब्दों को इस बात का संकेत समझेंगे कि वह अभी कुछ और बोलनेवाले हैं और वह स्वयं और कुछ न कहेंगे।

और उन्होंने फिर कहा—तो, मित्र....

—जी, फ़ादर।

—मित्र, आपकी चिन्ता भय में बदल गयी, और आपका भय शोक में बदल गया। लेकिन दुःख भय से अच्छा है। भय मनुष्य को सदा दीन बनाता है, जबकि शोक समृद्ध कर सकता है।

कुमालो ने उनकी ओर ऐसी गंभीर, तेज़ दृष्टि से देखा, जो इस तरह के विनम्र व्यक्ति के लिए विचित्र थी और उसका सामना करना कठिन था।

—पता नहीं कि मैं समृद्ध हो गया हूँ,—वह बोले।

—शोक भय से अच्छा है,—फ़ादर विन्सेन्ट अपनी बात पर अड़े रहे—भय तो एक यात्रा की तरह है, एक भयानक यात्रा की तरह, लेकिन शोक कम-से-कम एक मंजिल तो है।

—मैं किस मंज़िल पर पहुँचा हूँ!—कुमालो ने प्रश्न किया।

और फ़ादर विन्सेन्ट ने ज़ुलू बोली की सी प्रतीकात्मक भाषा में कहा—जब तूफ़ान घिर रहा होता है, तो आदमी को अपने मकान की चिन्ता होती है, भय होता है, लेकिन जब मकान गिर जाता है, तब कुछ करने के लिए रहता है। तूफ़ान को रोकने के लिए तो वह कुछ नहीं कर सकता, लेकिन मकान को तो वह फिर से बना सकता है।

—मेरी उम्र में!--कुमालो ने पूछा—देखिए न, उस मकान को क्या हो गया,

जो मैंने तब बनाया था, जब मैं जवान और तन्दुरुस्त था ? अब मैं किस तरह का मकान बनाऊँ ?

और परेशान होकर फ़ादर विन्सेन्ट ने कहा—भगवान की महिमा कौन जानता है !

कुमालो ने उनकी तरफ़ देखा, क्रोध से नहीं, दोषी ठहराने के लिए नहीं, तिरस्कार के लिए नहीं—ऐसा लगता है कि भगवान मुझसे विमुख हो गये हैं।

—ऐसा लग सकता है, लेकिन ऐसा कभी होता नहीं है, कभी नहीं, ऐसा कभी नहीं होता !

और कुमालो ने नम्रता से उत्तर दिया—मुझे आपकी इन बातों से सुख मिल रहा है।

फ़ादर विन्सेन्ट फिर बोले—हम जीवन सुधारने की बात कर रहे थे, आपके लड़के का जीवन सुधारने की बात ! और चूँकि आप पादरी हैं, आपके लिए तो यह बात और अधिक महत्वपूर्ण है, स्वयं आपकी वेदना या आपकी पत्नी के दुख से अधिक।

—यह सच है, लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसा जीवन अब कैसे सुधारा जा सकता है ?

—आपको तो इस बात में कोई शंका नहीं होनी चाहिए, आप ईसाई हैं। जो व्यक्ति क्रूस पर टाँगा गया था, उसे भी तो लोगों ने चोर कहा था !

—मेरा लड़का चोर नहीं था,—कुमालो ने कठोरता से कहा—एक अंग्रेज था, जो भला आदमी था, अपने बीवी-बच्चों से प्यार करता था, और सबसे बड़ी बात कि वह हमारी जाति से प्यार करता था और उसकी पत्नी, उसके बच्चे, मेरे बेटे के कारण शोकग्रस्त हुए। मेरी दृष्टि में यह सबसे बड़ा पाप है !

—लेकिन किसी भी पाप का प्रायश्चित तो है ही।

—वह प्रायश्चित ज़रूर करेगा !—कुमालो कटुता से बोले—अगर मैं उससे कहूँगा कि क्या तुम अपने पाप का प्रायश्चित करोगे, तो वह उत्तर देगा कि जैसा मेरे पिता कहें। अगर मैं उससे पूछूँगा, कि, क्या यह पाप नहीं था ? तो वह उत्तर देगा, यह पाप था। पर अगर मैं उससे कुछ और न कहलाते हुए दूसरी ही तरह कहूँ, जैसे अब तुम क्या करोगे ? तो वह कहेगा, मैं नहीं जानता। या वह कहेगा, जैसा मेरे पिता कहें।—कुमालो की आवाज़ और तेज़ हो गयी, मानो कोई वेदना उन्हें विवश कर रही हो—वह मेरे लिए अजनबी है। मैं उसे छू नहीं सकता, मैं उसके पास पहुँच नहीं सकता। मुझे उसमें ज़रा भी लज्जा नहीं दिखायी देती। उन लोगों के लिए उसके दिल में ज़रा भी दया नहीं, जिन्हें उसने पीड़ा पहुँचायी है। उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं, पर लगता है कि वह केवल अपने ही लिए रोता है, अपनी

बुराइयों के लिए नहीं, पर अपने भय के लिए। और वह रोने लगे—क्या आदमी पाप का ज्ञान बिल्कुल खो सकता है?—और फिर ऐसा लड़का, जिसका पालन-पोषण इस तरह हुआ हो, जैसे उसका हुआ था! उसने दो बच्चों को अनाथ बना दिया है, मैं कहता हूँ कि जो-कोई उन नन्हें-नन्हें बच्चों के साथ अत्याचार कर सकता है, उसे तो....

—आप चुप हो जाइए!—फ़ादर विन्सेन्ट चिल्लाये—आप होश में नहीं हैं। जाइए, प्रार्थना करके आराम कीजिए और अपने बेटे के विषय में इतना-सब एक साथ ही मत सोचिए। शायद सदमे से वह भी चुप हो गया हो, और इसी लिए वह आपसे यह कहता है कि जो-कुछ मेरे पिता चाहेंगे, मैं वैसा ही करूँगा, या हाँ, ऐसा तो है....या मैं कुछ नहीं जानता।

कुमालो खड़े हो गये—मैं भी यही समझता हूँ,—वह बोले—लेकिन मुझे अब कोई आशा नहीं है। आप क्या कह रहे थे कि मुझे क्या करना होगा? हाँ, प्रार्थना और आराम।—उन की आवाज़ में उपहास न था।

और फ़ादर विन्सेन्ट जानते थे कि इस आदमी के स्वभाव में उपहास में बात करना है ही नहीं, लेकिन शब्द ऐसे उपहासमय थे कि फ़ादर विन्सेन्ट ने उनकी बाह पकड़ ली और उनसे आग्रहपूर्वक कहा—बैठ जाइए, अब मुझे आपसे पादरी की हैसियत से बात करनी होगी!

जब कुमालो बैठ गये, तो फ़ादर विन्सेन्ट ने उनसे कहा—हाँ, मैंने कहा था प्रार्थना और आराम के लिए! और आप ऐसा ही कीजिए, चाहे आपकी प्रार्थना में केवल कोरे शब्द ही हों और आराम करने के नाम से आप पलंग पर केवल लेटे हो रहें। और अपने लिए प्रार्थना मत कीजिए और न इसलिए कि आप भगवान की महिमा समझना चाहते हैं, क्योंकि वह रहस्य है। कौन जानता है कि जीवन क्या है? जीवन तो एक रहस्य है। आप क्यों एक लड़की पर इतने दयालु हैं, जबकि स्वयं आपको किसी की दया नहीं मिलती? यह भी एक रहस्य है। और आप क्यों ज़िन्दा हैं, जबकि मर जाना ही अच्छा होगा? यह भी एक रहस्य है। आप इन-सब चीज़ों को समझने के लिए इस समय प्रार्थना मत कीजिए, क्योंकि इसके लिए फिर समय आयगा। आप इस समय गर्टरूड और उसके बच्चे के लिए प्रार्थना कीजिए और उस लड़की के लिए, जो आपके बेटे की पत्नी बनेगी और उस बच्चे के लिए, जो अभी पैदा नहीं हुआ है और जो आपका नाती होगा। हाँ, आप अपनी पत्नी के लिए और इन्डाटशेनी के लोगों के लिए प्रार्थना कीजिए, उस औरत और उसके बच्चों के लिए प्रार्थना कीजिए, जो अनाथ हो गये हैं और उस व्यक्ति की आत्मा के लिए, जिसकी हत्या हो गयी है। आप उन लोगों के लिए प्रार्थना कीजिए, जो यहाँ मिशन हाउस में रहते हैं और एज़ेनज़ेलेनी के उन लोगों के लिए,

जो विनाश के स्थान में पुनर्निर्माण का प्रयत्न कर रहे हैं। आप स्वयं अपने पुनर्निर्माण के लिए प्रार्थना कीजिए। सारी अंग्रेज़ जाति के लिए प्रार्थना कीजिए, उनके लिए, जो न्याय करते हैं और जो न्याय कर सकते थे, यदि वे भयभीत न होते। और अपने बेटे के लिए प्रार्थना करने से, और उसके सुधार के लिए प्रार्थना करने से भी न डरिए!

कुमालो ने नम्रतापूर्वक कहा—मैं आपकी बातें सुन रहा हूँ।

—और जिन्हें धन्यवाद दे सकते हैं, उन्हें धन्यवाद दीजिए, क्योंकि उससे बड़ी कोई अच्छाई नहीं है। क्या आपकी पत्नी, श्रीमती लिथेबी, सिमांगु और सुधार-गृह के अंग्रेज़ युवक-जैसे लोग नहीं हैं? और रही आपके लड़के की और उसके सुधार की बात, वह आप मेरे और सिमांगु के ऊपर छोड़ दीजिए, क्योंकि आप इस समय बहुत व्याकुल हैं और आप यह नहीं समझ सकते कि भगवान की क्या इच्छा है। और अब उठो, मेरे पुत्र, जाओ और प्रार्थना करो, जाओ और आराम करो!

उन्होंने कुमालो को उठाकर खड़ा किया और उन्हें उनका हैट दिया। और जब कुमालो उन्हें धन्यवाद देने को हुए, तो फ़ादर विन्सेन्ट ने कहा—हम वही करते हैं, जो हम में है। और वह हममें क्यों है, यह भी एक रहस्य है। हमारे अन्दर वह ईसा हैं, जो पुकार रहे हैं कि लोगों की सहायता करो और लोगों को क्षमा करो, तब भी, जब लोग भगवान को भी भूल गये हों!

फ़ादर विन्सेन्ट कुमालो को मिशन हाउस के दरवाज़े तक ले गये और वहाँ उनसे बिदा ली और कहा—यह तो मैं करूँगा ही, मैं दिन-रात आपके लिए प्रार्थना करूँगा। अगर आप और कुछ भी चाहेंगे, तो वह भी करूँगा।

दूसरे दिन कुमालो ने, जो उस बड़े नगर के मार्गों को पहचानने की कोशिश कर रहे थे, उस लड़की से मिलने के लिए, जो उनके लड़के से मातृत्व अवस्था में थी, पिमविल के लिए गाड़ी ली। जाने का यह समय उन्होंने इसलिए चुना था कि सिमांगु उनके साथ न जा सकें, इसलिए नहीं कि वह सिमांगु से नाराज़ थे, बल्कि इसलिए कि उनका अकेले जाना अधिक अच्छा था। वह धीरे-धीरे सोचते और काम भी धीरे-धीरे करते, यह निस्सदेह इसलिए कि उनका जीवन अपनी जाति के साथ ताल-मेल में चलता था। और यहाँ उन्होंने यह देख लिया था कि इससे उनके साथ के लोग खीझ जाते हैं और उन्होंने यह भी अनुभव कर लिया था कि उन लोगों के बिना भी वह अपने ध्येय तक अधिक निश्चित रूप से पहुँच सकेंगे।

उन्होंने मकान ढूँढ़ लिया पर बिना, काठेनाई के नहीं। और दरवाजा खटखटाया, और भीतर से उस लड़की ने दरवाज़ा खोल दिया। और उन्हें देखकर वह मुस्करा दी, कुछ कई अनिश्चित भावों से, कुछ भय से, कुछ ऐसे ढंग से, जिसमें बचपना भी था और स्वागत भी।

—तुम कैसे हो, मेरी बच्ची ?

—मैं ठीक हूँ, उम्फ़ुन्दीस।

कमरे में पड़ी अकेली कुर्सी पर वह बैठ गये सँभलकर। और अपना माथा पोंछा।

—तुम्हें अपने पति की कोई ख़बर मिली ?—उन्होंने पूछा। उन्होंने 'पति' शब्द का प्रयोग गलत किया। लेकिन पति के वास्तविक अर्थ क्या वही होते हैं ?

लड़की के चेहरे की मुस्कान ग़ायब हो गयी—नहीं, मुझे अब तक कोई ख़बर नहीं मिली।

—मुझे जो कुछ कहना है, वह भारी बात है।....वह जेल में है !

—जेल में ?

—हाँ, जेल में। एक बहुत भयानक अपराध के लिए, सबसे भयानक अपराध, जोकि आदमी कर सकता है !

लेकिन उनकी बात लड़की की समझ में नहीं आयी और वह धैर्य से उनके आगे बोलने की प्रतीक्षा करती रही। सचमुच वह नादान बच्ची ही थी।

—उसने एक अंग्रेज़ की हत्या की है।

—एँ ?—उसके मुँह से निकल पड़ा। उसने अपने हाथों से अपना मुँह ढँक लिया।

और इसके आगे कुमालो भी नहीं बोल पाये, क्योंकि शब्द छुरियों की तरह थे, जो उस घाव में चुभ रहे थे, जो अभी हरा और खुला हुआ था। लड़की एक बकस पर बैठ गयी और ज़मीन की ओर ताकने लगी और आँसू ढुलककर उसके गालों पर धीरे-धीरे बहने लगे।

—मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहता, बेटी। क्या तुम पढ़ सकती हो ? अंग्रेज़ी का अख़बार ?

—कुछ-कुछ।

—तो मैं यह तुम्हारे पास छोड़े देता हूँ। लेकिन किसी और को मत दिखाना।

—मैं और किसी को नहीं दिखाऊँगी, उम्फ़ुन्दीस।

—मैं उस बारे में और बात नहीं करना चाहता। मैं तुमसे एक और विषय पर बात करने आया हूँ। क्या तुम मेरे लड़के के साथ शादी करना चाहती हो ?

—जैसा आप ठीक समझें, उम्फ़ुन्दीस।

—नहीं, बेटी, मैं तुमसे पूछता हूँ।

—जी, हाँ, मैं तैयार हूँ।

—तैयार....

लड़की ने कुमालो की तरफ़ देखा, क्योंकि वह ऐसे प्रश्न का मतलब नहीं समझ पा रही थी।

—तुम उससे क्यों शादी करना चाहती हो?

दुविधा में मुस्कुराती हुई वह बकस में से छोटे-छोटे टुकड़े तोड़ने लगी—वह मेरे पति हैं,—उसने उत्तर दिया। शायद उसने भी पति शब्द का ग़लत प्रयोग किया, लेकिन क्या 'पति' के वास्तविक अर्थ वही होते हैं?

—लेकिन पहले तो तुमने उससे शादी करने की इच्छा प्रगट नहीं की थी?

इन प्रश्नों ने उसे परेशानी में डाल दिया था। वह खड़ी हो गयी, पर कुछ करना तो था नहीं, और वह फिर बैठ गयी, और फिर बकस से टुकड़े तोड़ने लगी।

—बोलो, बेटी!

—समझ में नहीं आता कि क्या कहूँ, उम्फ़ुन्दीस।

—क्या वास्तव में तुम्हारी इच्छा उससे शादी करने की है?

—सचमुच मेरी इच्छा उनसे शादी करने की है।

—मैं इस विषय में बिल्कुल निश्चित होना चाहता हूँ। अगर तुम राज़ी नहीं हो, तो मैं तुम्हें अपने परिवार में लेने की इच्छा नहीं करता।

इन शब्दों को सुनकर लड़की ने उत्सुकता से कुमालो की तरफ़ देखा—मैं राज़ी हूँ,—वह बोली।

और कुमालो ने कहा—हम बहुत दूर रहते हैं। वहाँ सड़कें, रोशनी और बसें नहीं हैं। सिर्फ मैं और मेरी पत्नी हैं। और वह जगह बड़ी सूनी है। तुम ज़ुलू हो?

—जी हाँ, उम्फ़ुन्दीस।

—तुम्हारा जन्म कहाँ हुआ था?

—एलेक्जैन्डरा में।

—और तुम्हारे माता-पिता हैं?

—मेरे पिता ने मेरी माँ को छोड़ दिया था, उम्फ़ुन्दीस, और मेरे सौतेले पिता की मुझसे पटी नहीं।

—तुम्हारे पिता ने माँ को क्यों छोड़ दिया था?

—उनका झगड़ा हुआ करता था, उम्फ़ुन्दीस। मेरी माँ प्रायः सदा ही पिये रहती थी।

—इसलिए तुम्हारे पिता ने उन्हें छोड़ दिया और उन्होंने तुम्हें भी त्याग दिया?

—उन्हींने हमें छोड़ दिया, मुझे और मेरे दो छोटे भाइयों को।

—और तुम्हारे दोनों भाई अब कहाँ हैं?

—एक तो उसी स्कूल में है, उम्फ़ुन्दीस, जिसमें एबसेलाम थे। और दूसरा

एलेक्जैन्डरा में है। लेकिन वह कहना नहीं मानता और वह भी शायद उसी स्कूल में भेजा जायगा।

—लेकिन तुम्हारे पिता ने तुम्हें इस तरह छोड़ कैसे दिया ?

और उस लड़की ने उनकी तरफ़ एक अजीब-सी मासूमियत से देखा—मैं नहीं जानती,—उसने कहा।

—और अपने सौतेले पिता से तुम्हारी पटी नहीं।....उसके बाद तुमने फिर क्या किया ?

—मैंने अपना वह घर छोड़ दिया।

—और उसके बाद ?

—मैं सोफ़िया टाउन में रहने लगी।

—अकेली ?

—नहीं, अकेली नहीं।

—अपने पहले पति के साथ ?—कुमालो ने कठोरता से पूछा।

—हाँ, अपने पहले पति के साथ,—कुमालो की आवाज की कठोरता न समझकर उसने हामी भरी।

—तो अब तक तुम्हारे कितने पति हो चुके हैं ?

लड़की घबराकर हँसने लगी और अपने उस हाथ की तरफ़ देखने लगी, जो बकस से टुकड़े तोड़ रहा था। फिर उसने सर ऊपर उठाया और उनकी आँखें अपने ऊपर लगी देखकर घबरा उठी—सिर्फ तीन,—वह बोली।

—और तुम्हारे पहले पति को क्या हुआ ?

—वह पकड़ा गया, उम्फ़ुन्दीस।

—और दूसरा ?

—वह भी पकड़ा गया।

—और अब तीसरा भी पकड़ लिया गया है !

वह खड़े हो गये और उनके अन्दर इस बात की इच्छा हुई कि वह उसे चोट पहुँचायें। यद्यपि वह यह जानते थे कि ऐसा करना उचित नहीं, फिर भी वह इस इच्छा के वश में हो गये—हाँ, तुम्हारा तीसरा पति भी पकड़ा लिया गया है ! पर इस बार हत्या के अपराध में ! तुम्हारा और कोई पति भी खूनी था ?—और कुमालो उसकी तरफ़ थोड़ा बढ़े और डरकर वह बकस पर से पीछे हटी चिल्लाती हुई—नहीं-नहीं !....

और डरकर कि कहीं बाहर के लोग न सुन ल, कुमालो और धीमी आवाज़ में उससे बोले—डरो नहीं,—और एक कदम पीछे हट गये। लेकिन जैसे ही वह फिर कुछ ठीक हुई, वैसे ही कुमालो के अन्दर फिर उसे चोट पहुँचाने की इच्छा हुई।

और उन्होंने उससे पूछा—अब तुम चौथा पति करोगी ?

और हताश होकर वह बोली—नहीं-नहीं ! अब मुझे और पति नहीं चाहिए !

और उस हिंस्र और क्रूर मनः-स्थिति में उनके मन में एक और हिंस्र विचार उठा—अगर मैं तुम्हें चाहूँ, तो भी नहीं ?

—आप ?—और डरकर वह उनसे और दूर हट गयी ।

—हाँ, मैं !—वह बोले ।

उसने कमरे में चारों ओर ऐसे देखा, जैसे कोई फँसा हुआ हो । और बोली—नहीं-नहीं, यह उचित नहीं होगा !

—क्या पहले यह उचित था ?

—नहीं, यह उचित नहीं था !

—तो तुम राज़ी हो ?

वह फिर घबराहट में हँसने लगी और उसने चारों तरफ़ देखा और फिर वह बकस से टुकड़े तोड़ने लगी । लेकिन उसे लगा कि कुमालो उसी की तरफ घूरकर देख रहे हैं और इसी लिए उसने धीमी आवाज़ में कहा—हाँ, मैं तैयार हूँ ।

कुमालो बैठ गये और उन्होंने अपने हाथों से अपना चेहरा ढँक लिया । उन्हें देखकर, लज्जित और प्रताड़ित वह भी सुबकने लगी । और कुमालो उसे देखकर, और उसके शरीर की दुर्बलता को देखकर,अपनी क्रूरता पर, उसके राज़ी हो जाने पर नहीं, लज्जित हो गये ।

वह उठकर उसके पास गये और बोले—तुम्हारी क्या उम्र है, बेटी ?

मुझे नहीं मालूम,—उसने सिसकते हुए उत्तर दिया—लेकिन मेरे ख़्याल से मैं सोलह वर्ष की हूँ ।

और कुमालो में असीम करुणा उमड़ पड़ी और उन्होंने उसके सर पर अपना हाथ रख दिया । और यह पादरी का स्पर्श था, या असीम दया उँगलियों या हथेली में प्रवाहित हो उठी थी, या कोई और कारण था, पर लड़की का सिसकना बन्द हो गया और कुमालो ने यह अनुभव किया कि उनके हाथ के नीचे सर शान्त है । और उन्होंने उसके हाथ अपने दूसरे हाथ में ले लिये और उन्हें उनमें इस उजाड़ घर के लिए किये गये अर्थहीन कामों से पड़े दागों के स्पर्श का अनुभव हुआ ।

—मुझे खेद है, मैं लज्जित हूँ कि मैंने तुमसे ऐसा प्रश्न किया !

—मेरी समझ में न आया कि क्या जवाब दूँ ।

—मुझे मालूम था कि तुम्हारी समझ में न आयगा, इसी लिए तो मैं लज्जित हूँ । मुझे बताओ, क्या तुम सचमुच मेरे लड़के के साथ शादी करना चाहती हो ?

उसने कुमालो के हाथ पकड़ लिये और बोली—हाँ, मैं चाहती हूँ !

—और एक शान्त और दूर जगह चलना चाहोगी और हमारी बेटी बनोगी ?

उसके उल्लसित स्वर में कोई भ्रम नहीं था, वह बोली—मैं चाहती हूँ !

—बहुत ?

—बहुत !

— मेरी बच्ची !

—उम्फ़ुन्दीस !

— लेकिन मैं तुमसे एक कड़ी चीज़ और पूछूँगा ।

— पूछिए, उम्फ़ुन्दीस ।

— उस छोटे-से ख़ामोश गाँव में जब तुम्हारे अन्दर वासना पैदा होगी, तो तुम क्या करोगी ? मैं पादरी हूँ और गिरजे में ही रहता भी हूँ और हमारा जीवन शांत और संयमित है । मैं नहीं चाहता कि तुम किसी ऐसी बात का वचन दो, जो तुम पूरी न कर सको।

—मैं समझ रही हूँ, उम्फ़ुन्दीस, अच्छी तरह समझ रही हूँ !—छलकते हुए आँसुओं में से उसने कुमालो की तरफ़ देखा—आपको मेरे कारण कभी लज्जित नहीं होना पड़ेगा, मेरे लिए आप न डरें । आप इसकी चिन्ता न करें कि वहाँ सूनापन है । सूनापन ही तो अब मैं चाहती हूँ !—इस शब्द से, 'चाह' शब्द से, उसमें ज्योति-सी भर गयी—जी, हाँ, यही मेरी चाह है । अगर भविष्य में भी कभी मुझे किसी चीज की इच्छा होगी, तो केवल इसी की होगी !

कुमालो को इस उत्तर से आश्चर्य हुआ और वह बोले—मैं तुम्हारी बात समझ गया । मैं जितना समझता था, तुम उससे ज्यादा होशियार हो ।

और उस लड़की ने आतुरता से कहा—स्कूल में मैं होशियार थी ।

कुमालो एकदम हँस पड़े और उस हँसी की अजीब-सी आवाज सुनकर उन्हें स्वयं ताज्जुब हुआ ।

—तुम किस गिरजे की अनुयायी हो ?

लड़की ने आतुरता से उत्तर दिया—इंग्लिस्तान के गिरजे की, उम्फ़ुन्दीस ।

और उसके सीधेपन पर कुमालो फिर हँस दिये और उतने ही सहसा वह फिर गम्भीर भी हो गये—मैं केवल तुमसे एक वचन चाहता हूँ, एक बड़ा वचन !

और उसने भी गम्भीरता से पूछा—क्या, उम्फ़ुन्दीस ?

—अगर बाद को, यहाँ पर या वहाँ दूर हमारे घर पर, तुम्हें कभी इस बात पर पछतावा हो, तो अपनी उस बात को अपने ही अन्दर मत घुटने देना और न वहाँ से हमसे बिना पूछे भागना, जैसे तुम अपनी माँ के पास से भागी थी । वचन दो कि तुम मुझसे कह दोगी कि तुम्हें पछतावा हुआ ?

—मैं वचन देती हूँ,—उसने गम्भीरता से कहा और तब वह आतुरता से बोली—मुझे कभी पछतावा न होगा!

और इस बात पर कुमालो एक बार फिर हँस पड़े। उन्होंने उसके हाथ छोड़ दिये और अपना हैट उठा लिया।

—जब शादी की तैयारी हो जायगी, तब मैं तुम्हें लेने आऊँगा। तुम्हारे पास कपड़े हैं?

—मेरे पास कुछ कपड़े हैं, मैं उन्हें तैयार कर लूँगी, उम्फुन्दीस।

—और अब तुम यहाँ नहीं रहोगी। क्या मैं तुम्हारे लिए अपने पास कोई जगह तलाश कर लूँ?

—मैं यही चाहती हूँ, उम्फुन्दीस,—और वह बच्चों की तरह ताली बजाने लगी—जल्दी से तय कर लीजिए, ताकि मैं अपना यह कमरा फौरन ही छोड़ दूँ!

—अच्छा, तो मैं चलता हूँ। खुश रहो, बेटी!

—अच्छा, बिदा, उम्फुन्दीस!

कुमालो मकान के बाहर निकल आये और वह उन्हें छोटे-से फाटक तक पहुँचाने आयी। जब कुमालो ने मुड़कर उसकी ओर देखा, तो उन्हें वह देखकर मुस्कुरा रही थी और कुमालो चल दिये, उस व्यक्ति की तरह, जिसकी वेदना कुछ हल्की हो गयी हो, बिल्कुल नहीं, पर कुछ कम अवश्य हो गयी हो। उन्हें यह भी याद आया कि अभी कुछ देर पहले वह हँसे थे और उस हँसने से उन्हें कष्ट हुआ था, जैसे किसी बीमार आदमी को हँसने से कष्ट होता है। और अचानक उन्हें एक ज़ोर का धक्का लगा, उन्हें याद आया कि फ़ादर विन्सेन्ट ने कहा था कि वह दिन रात उनके लिए प्रार्थना करेंगे। मोड़ पर पहुँचकर उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, वह लड़की अब तक उन्हीं की ओर देख रही थी।

(१७)

कुछ लोग ऐसे हैं, जो अपने मकान के कमरे किराये पर नहीं उठाते हैं और श्रीमती लिथेबी उनमें से एक हैं। उनके पति एक भले और ईमानदार राज थे। उनके बच्चे नहीं हुए थे। उन्होंने ही श्रीमती लिथेबी के लिए यह अच्छा और बड़ा मकान बनाया था। इस मकान में एक खाने और एक ओर एक बैठने का कमरा और तीन सोने के कमरे थे। एक में श्रीमती लिथेबी रहती थीं, एक उन्होंने कुमालो को दे दिया था, और इस बात पर वह खुश थीं, क्योंकि घर में किसी पादरी का रहना और प्रार्थना करना अच्छी बात थी। और एक कमरा उन्होंने गर्टरूड और उसके बच्चे को दे दिया था, क्योंकि वे भी तो कुमालो के सम्बन्धी थे। लेकिन किसी

अनजान को वह मकान में बिल्कुल नहीं ठहराती थीं, क्योंकि उनके पास काफी धन था।

इस पादरी के लिए उन्हें बहुत अफसोस था, गर्टरूड और उसके बच्चे के लिए भी उन्हें बहुत अफसोस था और सबसे ज्यादा अफसोस उन्हें कुमालो के बेटे के लिए था। कुमालो की भलाई में उन्हें कोई शंका नहीं थी। वह दयालु और सज्जन थे और श्रीमती लिथेबी से वह नम्रता और सम्मान का व्यवहार करते थे और उनके घर का उपयोग ऐसे करते थे, मानो वह उनका ही घर हो। और कुमालो ने जो-कुछ किया था, गर्टरूड और उसके बच्चे के उद्धार के लिए किया था। उन्होंने अपनी बहन के लिए एक नयी पोशाक और उसके सर के लिए साफ-सफेद कपड़ा और बच्चे के लिए कमीज और जर्सी और पतलून खरीदे थे। श्रीमती लिथेबी उनकी प्रशंसा करती थीं। प्रथा के अनुसार गर्टरूड ने अपने भाई को इन चीजों के लिए धन्यवाद दिया था।

और गर्टरूड और उसके बच्चे का घर में होना भी कितना सुखकर था! गर्टरूड साफ-सुथरी थी और काम-काज में वह मदद देती थी। उसके आचरण में जरूर एक अजीब-सी लापरवाही थी, और वह अनजान लोगों से, विशेषकर पुरुषों से, बड़ी जल्दी बातें करने लगती थी। श्रीमती लिथेबी जानती थीं कि गर्टरूड की शादी हो चुकी है और गर्टरूड भी यह जानती थी कि श्रीमती लिथेबी अपने मकान के बारे में कड़े विचारों की स्त्री हैं। वह इन बातों को समझती थी और आज्ञा-पालन करती थी।

लेकिन सबसे ज्यादा अफसोस तो उन्हें कुमालो के लड़के के बारे में था। वह दोनों औरतें प्रथा के अनुसार उसके लिए रोयी थीं और विलाप किया था, गर्टरूड और श्रीमती लिथेबी इस विषय पर बहुत सी बातें करती थीं। अब तो लगभग वह केवल इसी विषय पर ही बातें किया करती थीं। वृद्ध कुमालो खामोश ही रहते थे और उनके चेहरे पर विषाद और वेदना की एक गहरी और स्थायी-सी छाप अंकित रहती था। लेकिन श्रीमती लिथेबी उनकी प्रार्थनाओं में वह-सब सुन लिया करती थीं और उन्हें कुमालो से हार्दिक सहानुभूति थी। और यद्यपि वह बहुत-बहुत देर तक कुर्सी पर बैठे अपनी उदास आँखों से सामने शून्य में टकटकी लगाये रहते थे, फिर भी जब कभी वह उनसे बातें करती थीं, उनमें जान आ जाती और उनके चेहरे पर मुस्कराहट आ जाती और लगता कि जैसे विषाद की वह काली छाप बिल्कुल मिट गयी हो। श्रीमती लिथेबी के साथ कुमालो का व्यवहार सदैव ही पूर्ण नम्रता और आदर का रहता था। वास्तव में जब वह गर्टरूड के बच्चे के साथ खेलनेलगते थे, तो जैसे उनके अन्दर से कोई चीज बाहर निकल आती थी और वह बिल्कुल बदल-से जाते थे। लेकिन फिर भी कभी-कभी वह चुप हो जाते थे और श्रीमती लिथेबी

देखती थीं कि बच्चा प्रश्न करता है और प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता, और वह दरवाजे में से देखती थीं, और वह चुप बैठ रहते थे, अपने विचारों की दुनिया में अकले खोये हुए, और उनके चेहरे पर वेदना की छाप दिखायी पड़ने लगती थी।

*

—श्रीमती लिथेबी!

—उम्फ्रुन्दीस!

—श्रीमती लिथेबी, आप मुझपर बहुत दयालु रही हैं। अब एक कृपा और चाहता हूँ।

—कहिए, मुझसे हो सकेगा, तो क्यों न होगा?

श्रीमती लिथेबी, आपने उस लड़की के बारे में सुना ही है, जो मेरे बेटे से सन्तानवती होनेवाली है....

—सुना है।

—वह पिमविल में किसी दूसरे के मकान के एक कमरे में रहती है। वह मेरे लड़के से शादी करना चाहती है और मेरा विश्वास है कि इसका प्रबन्ध हो सकता है। उसके बाद, चाहे जो भी हो, वह मेरे साथ इन्डाटशेनी चली जायगी और वहाँ एक साफ और भले घर में प्रसव करेगी। इस समय मैं उसे उस जगह से हटाने के लिए बेचैन हूँ। और मैं सोच रहा था....मैं आपको कष्ट नहीं देना चाहता था....माँ....

—आप उसे यहाँ लाना चाहते हैं, उम्फ्रुन्दीस?

—सचमुच, यह बड़ी कृपा होगी!

—मैं उसे रख लूँगी,—श्रीमती लिथेबी बोलीं—वह उस कमरे में सो सकती है जिसमें हम लोग खाना खाते हैं। पर मेरे पास उसके लिए कोई पलंग नहीं है।

—कोई बात नहीं, एक भले घर में फर्श पर सोना कहीं अच्छा है,

—सच है, सच है।

—माँ, मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ, तुम सचमुच मेरी माता हो!

—इतना भी अगर हम नहीं कर सकते, तो फिर हम जिन्दा ही किसलिए हैं!

इसके बाद वह बहुत प्रसन्न हो गये। और उन्होंने बच्चे को अपने पास बुलाया और उसे अपने घुटनों पर बिठाकर ऐसी तेजी से हिलाया-डुलाया, जैसे वह घोड़े पर बैठा हो। लेकिन यह खेल अच्छा नहीं है, क्योंकि वृद्ध आदमी तो जल्दी ही थक जाता है और बच्चा थकता ही नहीं है। इसलिए खेलने के लिए उन्होंने लकड़ी के चौकोर टुकड़े निकाल लिये और उनसे ऊँची-ऊँची इमारतें बनायीं, जैसी जोहैन्सबर्ग में होती हैं, और फिर उन्हें शोर मचाकर हँसते हुए ढहा दिया।

—अच्छा, अब चलना है,—कुमालो ने बच्चे से कहा—मुझे तुम्हारी नयी बहन को लाना है।

उन्होंने अपनी पूँजी गिनी। अब सिर्फ़ एक-दो नोट ही रह गये थे। जल्दी ही उन्हें डाकखाने की किताब में जमा किये हुए रुपयों को भी हाथ लगाना पड़ेगा! उन्होंने एक हल्की-सी साँस ली और फिर कोट पहना, हैट लगाया और छड़ी हाथ में ली। उनकी पत्नी को अभी स्टोव ख़रीदने के लिए और ज़्यादा दिन रुकना पड़ेगा और उन्हें गिरजे की अपनी नयी काली पोशाक और कालर के लिए और भी अधिक दिनों ठहरना पड़ेगा।

*

यह लड़की गर्टरूड की तरह नहीं है। यह स्पष्टतः इस मकान में आने पर खुश है। उसके पास कपड़े कम हैं, मगर साफ़ हैं, क्योंकि काफ़ी मेहनत से उसने उन्हें तैयार किया है। बाक़ी सामान उसके पास लगभग नहीं के बराबर है। वह कमरों के दरवाज़े खोलकर कमरों में देखती है, और प्रसन्न है, क्योंकि वह पहले कभी ऐसे किसी मकान में नहीं रही है। वह श्रीमती लिथेबी को 'माँ' कहकर पुकारती है और इससे वह भली औरत बहुत प्रसन्न है। और श्रीमती लिथेबी इसलिए भी प्रसन्न हैं कि वह लड़की उनकी भाषा, सिसूटो, भी टूटी-फूटी बोल लेती है।

गर्टरूड ने भी उसका स्वागत किया, क्योंकि उसकी इस मकान में तबीअत नहीं लगती थी। अब वे दोनों आपस में काफ़ी बातें करेंगी।

गर्टरूड और वह लड़की साथ-साथ हँस रही थीं कि इतने में ही श्रीमती लिथेबी कमरे में आ गयीं। दोनों चुप हो गयीं। गर्टरूड की आँखों में अब भी कुछ उपहास था, लेकिन लड़की घबरा गयी थी। श्रीमती लिथेबी को इस प्रकार की हँसी में संयम-हीनता झलकती थी। वह लड़की को काम करने के लिए रसोई में ले गयीं और कहा—मुझे ऐसी हँसी पसन्द नहीं है।....तुम एक भले घर में हो, बेटी।

—हाँ, माँ,—लड़की ने निगाह नीची किये हुए उत्तर दिया।

—और एक अच्छे और दयालु आदमी तुम्हें यहाँ लाये हैं, वह इतने भले हैं कि उनके गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता!

लड़की ने उत्सुकता से निगाह ऊपर करके कहा—जी, हाँ, माँ।

—अच्छा, अगर तुम इस बात से खुश हो कि वह तुम्हें यहाँ लाये हैं, तो तुम इतनी लापरवाही से फिर कभी मत हँसना!

—जी, हाँ, माँ।

—तुम अभी बच्ची ही हो और हँसना बच्चों के लिए अच्छा होता है, लेकिन हँसी भी कई प्रकार की होती है।

—जी, हाँ, माँ।

—तुम मेरा मतलब समझी ?

—मैं आपकी बात बिल्कुल समझ गयी।

—इस वृद्ध को बहुत कष्ट मिला है। मेरा मतलब तुम समझी ?

—मैं आपकी बात ठीक से समझ रही हूँ।

—और अब मैं उन्हें कोई कष्ट नहीं होने दूँगी, कम-से कम अपने मकान में।

—मैं आपकी बात समझ रही हूँ, माँ।

—तो, जाओ, बेटी, पर जो बात हमने कही है, वह किसी से कहना मत !

—बहुत अच्छा, माँ।

—क्या तुम यहाँ आने से सुखी और सन्तुष्ट हो, बेटी ?

लड़की ने श्रीमती लिथेबी की ओर खुलकर देखा और अपने हाथ फैला दिये, मानो वह कोई भाव प्रकट करना चाहती हो—मैं सन्तुष्ट हूँ,—वह बोली—मैं अब यहीं रहना चाहती हूँ, कहीं और नहीं। मैं उम्फ्रुन्दीस के अतिरिक्त किसी और को पिता के रूप में नहीं चाहती। मैं ऐसा कुछ नहीं चाहती, जो यहाँ नहीं है।

—मैं समझ गयी कि तुम सन्तुष्ट हो। और हाँ, बेटी, एक बात और। जब पेट में बच्चा हिले-डुले, तो अपने शरीर के अन्दर उसे दबने नहीं देना। ऐसे दिनों में तुम्हें काफ़ी होशियार रहना चाहिए।

—मैं समझ गयी, माँ।

—तो अब जाओ। इस घर को अपना ही घर समझना।

इसके बाद फिर कभी वह संयमहीन हँसी नहीं सुनायी दी। वह लड़की शान्त और आज्ञाकारी थी। और गर्टरूड भी समझ गयी कि वह अभी बच्ची ही है। इसलिए उनका सम्बन्ध उतना गहरा नहीं हुआ और वह अपनी ही मनः-स्थिति के अनुसार अकेले ही उदासीन या खुश हो लेती थी।

*

उस लम्बी-मोटी दीवार में बने हुए बड़े-से फाटक में से कुमालो फिर जेल के अन्दर घुसे और फिर उनका लड़का उनसे मिलने के लिए लाया गया। फिर उन्होंने उसके निर्जीव हाथों को अपने हाथों में थाम लिया, और फिर एक बार उनकी आँखों में आँसू भर आये इस बार अपने लड़के को हताश देखकर।

—तुम ठीक हो, बेटा ?

लड़का खड़ा था। उसने अपना सर एक ओर घुमा लिया और कुछ देर तक एक खिड़की की तरफ़ देखा और फिर सर मोड़कर दूसरी खिड़की की तरफ़ देखा, लेकिन अपने पिता की तरफ़ नहीं।

—मैं ठीक हूँ, पिताजी।

—मैं तुम्हारे पास एक काम से आया हूँ, बेटे। क्या तुम्हारी यह इच्छा है कि उस लड़की के साथ तुम्हारी शादी हो जाय ?

—हाँ, मैं उससे शादी करने को तैयार हूँ।

—मेरे एक मित्र हैं, एक अंग्रेज़ पादरी, और वह इसका प्रबन्ध करने की कोशिश करेंगे और बिशप से मिलकर वह इस बात का भी प्रयत्न करेंगे कि शादी हो जाय। वह तुम्हारे लिए एक वकील का भी प्रबन्ध करेंगे।

लड़के की आँखों में जीवन की एक चमक आ गयी, शायद आशा की।

—क्या तुम वकील करना पसन्द करोगे ?

—लोग कहते तो हैं कि वकील से काफ़ी मदद मिल जाती है।

—तुमने क्या पुलीस से यह कहा था कि वे दोनों लड़के तुम्हारे साथ थे ?

—मैंने उनसे यह कहा था। और अब उनसे मैंने फिर कहा है।

—और तब ?

—और तब उन्होंने उन दोनों को उनकी कोठरियों से बुलवाया।

—और तब ?

—और तब वे मुझसे खफ़ा थे और पुलीस के सामने मुझे बुरा-भला कहा और बोले कि मैं उन्हें फँसाना चाहता हूँ।

—और तब ?

—और तब उन्होंने पूछा कि इस बात का मेरे पास क्या सबूत है ? मेरे पास इस बात का केवल एक ही सबूत है और वह यह कि जो-कुछ मैंने उन्हें बताया था, वह बिल्कुल सत्य था, वे दोनों उस मकान में मेरे साथ थे, मैं यहाँ खड़ा था और वे वहाँ।—उसने अपने पिता को अपने हाथों के इशारे से दूरी बतायी और उसकी आँखों में आँसू आ गये। और वह बोला—और उन्होंने मुझे फिर बुरा-भला कहा और मेरी तरफ़ क्रोध से देखते हुए खड़े रहे। और एक ने दूसरे से कहा, यह हमारे बारे में इतना झूठ कैसे बोल सकता है !

—वह लोग तुम्हारे दोस्त हैं ?

—जी, वह मेरे दोस्त थे।

—और वह तुम्हें मुसीबत में छोड़ देना चाहते हैं ?

—हाँ, अब सब मेरी समझ में आ रहा है।

—और क्या अब तक वह ऐसे मित्र थे, जिनपर तुम विश्वास कर सकते थे ?

—मैं उनपर विश्वास करता था।

—समझा। क्या तुम्हारा यह मतलब है कि वे इस प्रकार के मित्र थे, जिन्हें कोई भी भला आदमी अपना मित्र चुन सकता था, सच्चे, ईमानदार, मेहनती और कानून माननेवाले ?

बूढ़े आदमी, उसे छोड़ दो ! उसे सताओ मत ! तुम पहले तो उसे इतनी दूर ले जाते हो और फिर उसपर झपट पड़ते हो। वह क्रोध और शोक से तुम्हारी ओर देख रहा है, जल्दी ही ऐसा होगा कि वह तुम्हारी बातों का जवाब तक नहीं देगा !

—बताओ, क्या वह ऐसे दोस्त थे ?

लेकिन लड़के ने उत्तर नहीं दिया।

— और अब उन्होंने तुम्हें छोड़ दिया है ?

कुछ देर चुप रहकर लड़के ने उत्तर दिया—मैं समझ रहा हूँ।

—क्या पहले यह बात तुम्हारी समझ में नहीं आयी थी ?

और बिना इच्छा के लड़के ने उत्तर दिया—पहले भी मैं समझता था।

और कुमालो की इच्छा हुई कि पूछें, तो फिर तुम उनके साथ क्यों रहे, क्यों रहे ? लेकिन लड़के की आँखों में आँसू छलक आये थे और पिता की ममता ने प्रश्न पूछने की उस इच्छा से संघर्ष किया और उसपर विजय पायी। उन्होंने अपने बेटे के हाथ अपने हाथों में ले लिये। इस बार वे हाथ उतने निर्जीव नहीं थे, उनमें कुछ जान थी और कुमालो ने उन हाथों को कसकर सान्त्वना देने के लिए थाम लिया।

—हिम्मत बाँधो, बेटे। वकील की बात न भूलो। लेकिन यह याद रखना कि तुम्हें उनको सब सत्य ही बताना है।

—मैं उन्हें सच ही बताऊँगा, पिताजी,—और लड़के ने फिर कुछ इस तरह मुँह खोला, मानो वह कुछ और कहना चाहता हो, लेकिन उसने कहा कुछ नहीं।

—डरो मत, बताओ, क्या बात है ?

—उन्हें जल्दी ही आना चाहिए, पिताजी,—एबसेलाम ने खिड़की की तरफ़ देखा और उसकी आँखों में फिर आँसू आ गये। उसने लापरवाही से बात पूरी करने की कोशिश की—नहीं तो फिर कहीं देर न हो जाय।

—इस बात के लिए मत डरो। वह जल्दी ही आयँगे। अच्छा, तो मैं चलूँ और देखूँ कि वह कब आ सकते हैं।

—जाइए, पिताजी, जल्दी, पिताजी, जल्दी....

—और फ़ादर विन्सेन्ट तुमसे मिलने आयँगे, ताकि तुम भगवान के सामने अपने सब पाप स्वीकार कर लो, तुम्हें क्षमा मिल जाय और तुम्हारा जीवन सुधर जाय।

—यह तो अच्छी बात है, पिताजी।

—और हो सका, तो हम तुम्हारी शादी का भी प्रबन्ध करा देंगे। और वह लड़की, मैंने तुम्हें नहीं बताया, वह मेरे साथ सोफ़िया टाउन में ही रह रही है। वह मेरे साथ इन्डाटशेनी भी वापस जायगी और वहीं बच्चा पैदा होगा।

—यह बहुत अच्छा हुआ, पिताजी।

—तुम अपनी माँ को अब पत्र लिख सकते हो।

—मैं उन्हें पत्र लिखूँगा, पिताजी।

—अच्छा, अब अपने आँसू पोंछ डालो।

लड़का खड़ा हो गया और अपने पिता के दिये रूमाल से उसने अपने आँसू पोंछ लिये। इसके बाद दोनों ने हाथ मिलाया। लड़के के हाथों में अब कुछ जान आ गयी थी।

जेल के वार्डर ने लड़के से कहा—तुम यहीं ठहरो, तुमसे कोई वकील मिलने आया है।—और कुमालो से वह बोला—बुड्ढे, तुम जाओ।

और कुमालो अपने लड़के को छोड़कर चल पड़े। दरवाजे पर एक अंग्रेज़ अन्दर आने की प्रतीक्षा में था। वह अंग्रेज़ लम्बे क़द का, गम्भीर आदमी था, जो सूरत से ही महत्वपूर्ण काम करने का अभ्यस्त मालूम पड़ता था। वार्डर उसे पहचानता था और उसके प्रति उसने बहुत आदर दिखाया। वह अंग्रेज़ ऐसा व्यक्ति लगता था, मानो वह एक काले युवक के किसी अंग्रेज़ की हत्या करनेवाले मामले से ज़्यादा गम्भीर और महत्त्वपूर्ण मामलों का आदी हो। वह बहुत गम्भीरता से कमरे में घुसा, इस तरह से, जैसे अफसर हो।

*

कुमालो मिशन हाउस लौट आये और वहाँ उन्होंने फ़ादर विन्सेन्ट के साथ चाय पी। चाय खत्म होने पर दरवाजे पर थपथपाहट हुई और वह लम्बा, गम्भीर आदमी कमरे में आया। फ़ादर विन्सेन्ट ने बहुत आदर से उसका स्वागत किया और उसे 'श्रीमान' और बाद को 'श्री कारमाइकेल' कहकर संबोधित किया। उन्होंने कुमालो से भी श्री कारमाइकेल का परिचय कराया और उन्होंने कुमालो से 'श्री कुमालो' कहकर हाथ मिलाया, हालाँकि यह बात रिवाज के ख़िलाफ़ थी। और चाय पी गयी और उसके बाद वे लोग कुमालो के लड़के के मुक़दमे के बारे में बातें करने लगे।

—श्री कुमालो, मैं आपका मुक़दमा लड़ूँगा,—श्री कारमाइकेल ने कहा—मैं आपका मुक़दमा धर्मार्थ लड़ूँगा? यह सीधा-सादा मुकदमा है, क्योंकि लड़का सीधे-साधे यह कहता है कि उसने गोली इसलिए चलायी कि वह डर गया था, हत्या करने के मतलब से नहीं। और यह पूरी तौर से जज और असेसरों पर निर्भर करता है। मेरे विचार से हम उन्हीं की माँग करें, जूरी की नहीं। पर उन दोनों लड़कों के बारे में, उनके विषय में, मैं नहीं जनता कि क्या कहूँ। मैंने सुना है, श्री कुमालो, कि आपके भाई ने उन दोनों के लिए कोई दूसरा वकील कर लिया है। मैं तो उनका मुक़दमा करना ही नहीं चाहता था, क्योंकि मैंने सुना है कि वह यह बचाव रखेंगे कि वे दोनों वहाँ पर थे ही नहीं और आपका लड़का, न जाने क्यों, उन्हें फाँसने की कोशिश कर रहा है। यह सच है या नहीं, यह तो अदालत ही फैसला

देगी, लेकिन मेरा अपना विचार यह है कि आपका लड़का सच बात कह रहा है और उन्हें फाँसने में उसका कोई मतलब नहीं है। यह मेरा काम है कि मैं अदालत को यह समझाऊँ कि आपका लड़का बिल्कुल सच कह रहा है और उसकी यह बात बिल्कुल सच है कि उसने गोली केवल भय के कारण ही चलायी थी। ऐसी हालत में स्पष्ट है कि मैं उन दोनों का मुकदमा नहीं ले सकता, जो यह कह रहे हैं कि वह सच नहीं बोल रहा है। आप समझ गये न, श्री कुमालो ?

—जी, मैं समझ गया।

—अब मुझे आपके लड़के के बारे में सारी बातें जाननी होंगी, कुमालो। वह कहाँ और कब पैदा हुआ, बचपन में वह कैसा था, क्या वह सच बोलनेवाला और आज्ञाकारी था ? कब और क्यों उसने घर छोड़ा और जोहैन्सबर्ग आने के बाद उसने क्या किया ? आप समझे न ?

—जी, श्रीमान, मैं समझ गया।

—जितनी जल्दी हो सके, मुझे यह-सब जानकारी चाहिए, श्री कुमालो, क्योंकि यह मुक़दमा शायद कचहरी की अगली बैठक में सुना जायगा। जो-कुछ उसने यहाँ किया है, उसका पता सिर्फ उससे ही नहीं, बल्कि औरों से भी लगाइए। एक बात को दूसरी से मिलाकर जाँच कीजिए और अन्तर हो तो वह भी आप मुझे बताइए। मैं भी अपनी ओर से यह पता लगाऊँगा। आप समझ गये न ?

—जी, समझ गया।

—अच्छा तो, फ़ादर विन्सेन्ट, हम लोग स्कूल के उस मामले पर भी बात कर लें ?

—अवश्य, श्रीमान !....श्री कुमालो, क्या आप थोड़ी देर के लिए हमें क्षमा करेंगे ?

थायदर विन्सेन्ट कुमालो को कमरे के दरवाजे तक ले गये और बाहर खड़े होकर किवाड़ बन्द कर दिये।

—भगवान को धन्यवाद दीजिए कि यह आदमी मिल गया ! यह महान् व्यक्ति हैं और दक्षिण अफ्रीका के सबसे प्रसिद्ध वकीलों में से हैं और आपकी जाति के बहुत बड़े सहायक भी हैं।

—मैं वास्तव में भगवान को धन्धवाद देता हूँ और आपको भी, फादर ! लेकिन मुझे एक बात की चिन्ता है। इस-सबका ख़र्च क्या होगा ? मेरी थोड़ी-सी पूँजी तो अब लगभग समाप्त हो गयी है।

—क्या आपने उन्हें यह कहते नहीं सुना कि वह मुक़दमे को 'धर्मार्थ' लड़ेंगे ? ओ-हो ! आपने शायद पहले यह नहीं सुना है ! इसका मतलब है, भगवान के नाम पर ! आपको इसमें कुछ भी नहीं, या बहुत थोड़ा-सा ही ख़र्च करना पड़ेगा !

—वह यह मुक़दमा भगवान के नाम पर ले रहे हैं?

—जी, हाँ, इस शब्द का यह अर्थ तो पुराने जमाने में इसाई धर्म के आरंभिक युग में था, यद्यपि वे अर्थ बहुत कुछ भुला दिये गये हैं। लेकिन अब भी इसके ये मतलब तो होते ही हैं कि मुक़दमा निःशुल्क ही लिया गया है।

कुमालो की ज़बान लड़खड़ा गयी—ऐसी दया मैंने पहले कभी नहीं देखी!—उन्होंने कहा और मुँह मोड़ दिया, क्योंकि इन दिनों वह बहुत जल्दी रोने लगते थे।

फ़ादर विन्सेन्ट उनकी तरफ़ देखकर मुस्करा दिये—अब आप इतमिनान से जाइए!—और वह अन्दर उस वकील के पास लौट गये, जो इस मुक़दमे को धर्मार्थ कर रहा था।

———

भाग दो

(१)

सुदूर अफ्रीका में इकोपो से एक सुहानी सड़क पहाड़ों को जाती है। ये पहाड़ हरी दूबों से ढँके हुए हैं, जो हमेशा लहराती-सी रहती हैं। इनके सौन्दर्य का बखान नहीं किया जा सकता। यह सड़क पहाड़ों में सात मील तक जाकर कैरिसब्रुक पहुँचती है और अगर कोहरा न हुआ, तो वहाँ से आपको अफ्रीका की सबसे ख़ूबसूरत वादी दिखायी पड़ सकती है। आपके चारों तरफ़ घास और कँटीली झाड़ियाँ दूर-दूर तक फैली हुई होंगी और वादी के एक पक्षी, टिटिहोया, की करुण पुकार आपको सुनायी देगी। और नीचे ड्रेकेन्सबर्ग से समुद्र की ओर बहती हुई, उमज़िम कुलू की वादी होगी और नदी के उस पार और पीछे की ओर बड़े-बड़े पर्वत और उनके पीछे इन्गेलो और पूर्वी ग्रीकालैंड के पहाड़ हैं।

दूब ऐसी घनी और उलझी हुई है कि ज़मीन दिखायी नहीं पड़ सकती। यह घास वर्षा और कोहरे को जज़्ब कर लेती है और पानी धरती में से रिसकर झरनों के रूप में प्रगट होता है। इस घास का बहुत ध्यान रखा जाता है और उसपर बहुत जानवर नहीं चरते और बहुत आग नहीं जलायी जाती कि कहीं धरती नंगी न हो जाय।

दोनों पहाड़ियों के बीच उन ऊँचाइयों पर एक छोटी सुहानी-सी घाटी है, पहाड़ियाँ उसकी रक्षा करती हैं। वहाँ एक मकान है और उसके पास फैले हुए समतल जुते खेत हैं। लोग आपको बतायेंगे कि इस प्रदेश के सबसे अच्छे खेत यही हैं। इस जगह का नाम 'हाई प्लेस' है और यह जेम्स जारविस की ज़मींदारी और उनका निवास-स्थान है। इन्डाटशेनी और उमज़िन कुलू की विशाल वादी के बहुत ऊपर हैं।

*

जारविस अपने खेतों की जुताई उदास आँखों से देख रहे थे। अक्तूबर की गर्म दुपहरी के सूरज की धूप खेतों पर बरस रही थी और आसमान पर बिल्कुल बादल नहीं थे। वर्षा, वर्षा, वर्षा नहीं हुई थी। ज़मीन में से सिर्फ़ सख्त और सूखे हुए ढेले उभर रहे थे और जगह-जगह पर हल उस लोहे-सी ज़मीन पर योंही फिसलते हुए निकल जाते थे। खेत के अन्त तक पहुँचकर हल रुक गये और गर्मी और धूप में पसीने से लथपथ बैल थककर ज़ोर-ज़ोर की साँस लेने लगे।

—बेकार है, ऊमनूमज़ान (हुज़ूर)!

—काम जारी रखो, टामस। मैं ज़रा ऊपर चोटी तक जा रहा हूँ, वहाँ से देखूँगा कि बात क्या है।

—आपको कुछ भी नहीं दीखेगा, ऊमनूमज़ान। मुझे पता है, क्योंकि मैं पहले ही देख चुका हूँ।

जारविस गुर्राये और अपने कुत्ते को बुलाकर काले मज़दूरोंवाले रास्ते से पहाड़ की चोटी की तरफ़ चल दिये। वहाँ सूखे का कोई निशान नहीं था, क्योंकि वहाँ की घास को कोहरे से जीवन मिलता रहता था। हवा के झोंके जारविस के मुँह पर का पसीना सुखाकर ठंडक पहुँचा रहे थे। लेकिन पहाड़ की उन चोटियों के नीचे के मैदानों में घास सूखी हुई थी और इन्डाटशेनी के पहाड़ नंगे और सुखे लग रहे थे और इन चोटियों पर रहनेवाले किसान भी डरने लगे थे कि वहाँ की-सी निर्जनता धीरे-धीरे मील-मील करके उन तक भी किसी दिन पहुँच जायगी।

सचमुच वे आपस में इस बात की अक्सर चर्चा किया करते थे। जब कभी वे एक-दूसरे से मिलने जाते और लम्बे और शीतल बरामदों में बैठकर चाय पीते, तो उनकी आँखों के सामने उजाड़ और बंजर वादियों और नंगे पहाड़ फैले रहते। उनके कुछ मजदूर इन्डाटशेनी के रहनेवाले थे और उन्हें पता रहता था कि किस तरह वर्ष-प्रति-वर्ष उन लोगों के इलाकों में अन्न की उपज घटती जाती है। वहाँ बहुत अधिक जानवर थे और भूमि कटी हुई और बंजर थी। हर नया खेत वहाँ की बर्बादी और आगे बढ़ा देता था। अगर उन लोगों को यह मालूम होता कि भूमि को कटने से कैसे रोका जाय, अगर धरती को कटने से बचाने के लिए उन्हें बाँध बनाना आता होता और अगर पहाड़ों के ऊपर की जमीन पर ही वह जोताई करते, तो शायद कुछ हो सकता। लेकिन पहाड़ बहुत ढालू थे और उनमें से कुछ तो जोतने के काबिल बिल्कुल नहीं थे। बैल भी कमजोर थे, इसलिए केवल नीचे की ही तरफ ज़मीन जोतना आसान था। और फिर लोग अज्ञानी थे और उन्हें खेती करने के ढंगों के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था।

यह वास्तव में एक ऐसी समस्या थी, जिसका कोई हल नहीं था। कुछ लोग कहते थे कि शिक्षा का और ज्यादा प्रचार होना चाहिए, लेकिन पढ़े-लिखे लड़के खेतों में काम करना पसन्द नहीं करते थे और मन का काम ढूँढ़ने के लिए शहर चले जाते थे। सारा काम औरतें और बुड्ढे आदमी करते थे। और जवान आदमी जब शहरों और खानों से अपने गाँव वापस लौटते, तो बस, धूप में बैठकर शराब पीते और बातें ही करते रहते। कुछ लोग कहते थे कि ज़मीन बहुत कम है और वहाँ रहनेवाले उसपर किसी हालत में भी गुजारा नहीं कर सकते, चाहे खेती के कितने ही वैज्ञानिक और आधुनिक ढंग क्यों न अपना लिये जायँ। लेकिन इस प्रश्न के कई पहलू थे। अगर उनको और जमीन भी मिल जाती और उसके साथ भी वह वही हिसाब रखते, जो वह अपनी पहले की जमीन के साथ अभी रखते थे,

तो धीरे-धीरे सारा देश ही रेगिस्तान बन जाता। और ज्यादा ज़मीन आती भी कहाँ से और उसका मूल्य कौन देता? और एक दूसरा तर्क यह भी था कि अगर उन्हें ज्यादा ज़मीन मिल भी जाती और उसपर किसी तरह गुजारा भी कर लेते, तो फिर अंग्रेजों के खेतों में काम कौन करता? एक प्रथा तो यह थी कि कोई भी मूल निवासी इन्डाटशेनी में रह सकता था और आस-पास के अंग्रेज़ों के खेतों में अपनी तबीअत से काम कर सकता था; और दूसरी प्रथा यह थी कि किसी भी मूल निवासी को किसान से भूमि मिल सकती थी, जिसपर वह बाड़ा बनाकर अपने परिवार के साथ ज़मीन की उपज पर गुज़ारा करके रह सकता था, लेकिन बदले में उसे हर साल अंग्रेज़ ज़मींदार को मज़दूरों की एक नियत संख्या देना आवश्यक था। लेकिन यह व्यवस्था पूरी तौर से ठीक नहीं थी, क्योंकि जिनको ज़मीन दी जाती थी, उनके लड़के और लड़कियाँ काम करने शहर भाग जाते थे और फिर शर्त पूरी करने लौटते नहीं थे, इसके अलावा कुछ लोग मिली हुई भूमि का दुरुपयोग भी करते थे। कुछ लोग गोश्त के लिए अपने मालिकों की भेड़-बकरियाँ चुरा लेते थे, कुछ ठलुए और निकम्मे थे। और होता यह था कि अंग्रेज़ मालिकों को उन्हें अपनी ज़मीन से निकाल देना पड़ता था, क्योंकि उन्हें यह भी विश्वास नहीं था कि दूसरे जो होंगे, वे भी उनसे किसी हालत में अच्छे होंगे।

जारविस के दिमाग़ में यही पुराने विचार चक्कर काट रहे थे और वह पहाड़ की चोटी की तरफ चढ़ते जा रहे थे। वहाँ पहुँचकर वह एक बड़ी-सी चट्टान पर बैठ गये और उन्होंने हैट उतार दिया, ताकि वह शीतल हवा में ठंडे हो लें। उमज़िम कुलु की इस विशाल वादी का सौन्दर्य कुछ ऐसा था, जिसे देखते रहने पर भी आँखें थकती नहीं थीं।

जारविस वहाँ बैठकर उन हरे-भरे पहाड़ों को देख रहे थे, जो उन्हें अपने पिता से विरासत में मिले थे और नीचे की तरफ वह उस समृद्ध वादी को देख रहे थे, जिसमें वह रहते थे और खेती करते थे। उनकी इच्छा थी कि उनका लड़का, जो उनकी एक मात्र सन्तान था, इन खेतों का ही काम देखे, लेकिन युवक के विचार कुछ और ही थे और वह इन्जीनियर बन गया। ख़ैर। भगवान उसको सफल बनाये! उसने एक अच्छी लड़की से शादी कर ली थी और उनके दो नाती थे। जारविस को बहुत दुख हुआ था, जब उनके लड़के ने 'हाई प्लेस' का काम न देखने का निश्चय किया था, लेकिन उसका अपना जीवन अपना ही था और इस बात में किसी दूसरे को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं था।

नीचे वादी में एक गाड़ी उनके मकान की तरफ जा रही थी। उन्होंने उसे देखकर पहचान लिया कि यह इकोपो की पुलीस की गाड़ी है और इसमें बिनेन-डाइक गश्त पर होगा। अच्छा आदमी है बिनेनडाइक, अफ्रीकान जाति का होते

हुए भी। अब तो इकोपो में अफ्रीकान जाति के लोगों की भरमार है, हालाँकि पहले वहाँ इस जाति के लोग थे ही नहीं। अब सारी पुलीस, डाकघर के बाबू और रेल के स्टेशन के कर्मचारी, सब अफ्रीकान थे और गाँव के लोगों की इनके साथ भले-बुरे पट ही रही थी। इनमें से काफ़ी लोगों ने अंग्रेज़ी बोलनेवाली लड़कियों के साथ शादी भी कर ली थी और अब तो सारे देश में क़रीब-क़रीब यही हो रहा था। उनके पिता ने तो यह कसम खा ली थी कि अगर उनके किसी बच्चे ने किसी अफ्रीकान से शादी की, तो वह उसे त्याग ही देंगे। लेकिन अब ज़माना बदल चुका था। महायुद्ध ने इस प्रवृत्ति को कुछ दबा दिया था, क्योंकि कुछ अफ्रीकान लोग फौज में भरती हो गये थे और कुछ ऐसे थे, जो युद्ध के पक्ष में तो थे, लेकिन वह सेना में भरती नहीं हुए थे, कुछ केवल निष्पक्ष नीति के समर्थक थे और अगर उनके मन में कुछ भावनाएँ थीं भी, तो वे उन्हें गुप्त रखते थे, और कुछ स्पष्ट रूप में जर्मनी के समर्थक थे, लेकिन उनके लिए बुद्धिमानी इसी में थी कि वे अपना मत प्रगट न करें।

उनकी पत्नी मोटर से आये हुए व्यक्तियों का स्वागत करने के लिए घर के बाहर आ रही थीं और दो पुलीस के अधिकारी मोटर से उतर रहे थे, उनमें से एक तो शायद पुलीस का कप्तान, वैन जार्सवेल्ड, मालूम पड़ता था। गाँव में वह काफ़ी लोकप्रिय था। वह अपने ज़माने में 'रगबी' का अच्छा खिलाड़ी, और पिछले महा-युद्ध में सैनिक रह चुका था। जारविस का खयाल था कि इकोपो-जैसे अंग्रेज़ी-भाषी जिले के लिए सरकार अच्छे ही अफ़सर चुनती होगी। शायद वे लोग उन्हीं से मिलने आये हैं, क्योंकि उनकी पत्नी उसी शिखर की तरफ संकेत कर रही थीं। वह नीचे उतरने को तैयार हुए, लेकिन जाने से पहले उन्होंने फिर सामने की चौड़ी वादी की तरफ़ एक बार देखा। वर्षा का कोई चिन्ह नहीं था और न ऐसा लगता था कि वर्षा कभी होगी भी। उन्होंने अपने कुत्ते को आवाज़ दी और फिर उस रास्ते पर चल दिये, जो नीचे की चट्टनों में एकदम ढालू जाता था। आधे रास्ते की पठार-नुमा ज़मीन के पास वह पहुँचे ही थे कि उन्होंने देखा कि वैन जार्सवेल्ड और बिनेन-डाइक ने ढाल पर चढ़ना शुरू कर दिया है और पथरीले रास्ते पर वे अपनी कार आखिरी खेत तक ले आये। उन लोगों ने जारविस को देखा, तो जारविस ने हाथ हिलाया और एक बड़े से पत्थर पर बैठकर वह उनकी प्रतीक्षा करने लगे। बिनेन-डाइक पीछे रह गये, और कप्तान उनसे मिलने के लिए बढ़ा।

—कहो, कैप्टेन, हम लोगों के लिए वर्षा लाये हो?

कप्तान ने मुड़कर उस चौड़ी वादी के उस पार के पहाड़ों की तरफ़ देखा—नहीं, श्री जारविस, मुझे वर्षा के कोई चिन्ह दिखायी नहीं देते।

—मुझे भी दिखायी नहीं देते। आज कैसे आये?

जारविस ने कत्तान से हाथ मिलाया। कत्तान उनके चेहरे की तरफ़ देख रहा था—श्री जारविस !

—कहिए !

—मैं आपके लिए एक बहुत बुरी ख़बर लाया हूँ।

—बुरी खबर ?

जारविस फिर बैठ गये और उनका दिल ज़ोर से धड़कने लगा।

—क्या खबर मेरे लड़के के बारे में है ?

—हाँ, श्री जारविस !

—क्या उसकी मृत्यु हो गयी है ?

—हाँ, श्री जारविस,—यह कहकर कत्तान कुछ रुका—आज दोपहर में डेढ़ बजे जोहैन्सबर्ग में गोली लग जाने से उनकी मृत्यु हो गयी।

जारविस उठ पड़े। उनका मुँह काँप रहा था—गोली लगने से ? किसने मारी ?

—सन्देह है कि उनकी हत्या किसी देसी चोर ने की है। आप को पता है, कि उनकी पत्नी घर पर नहीं थीं।

—हाँ, यह मैं जानता हूँ।

—और उस दिन वह घर पर ही थे, उनकी तबीअत कुछ ख़राब थी। मेरे ख्याल से चोर ने यह सोचा होगा कि घर पर कोई नहीं है। लगता है कि आपके लड़के ने घर में कुछ शोर सुना और वह पता लगाने के लिए नीचे आये और चोर ने उन्हें गोली मार दी। मार-पीट का कोई निशान नहीं मिला।

—हे भगवान !

—मुझे अफ़सोस है, श्री जारविस। आपको इतनी बुरी ख़बर सुनाने का मुझे दुख है।

कत्तान ने अपना हाथ बढ़ाया, लेकिन जारविस फिर उस पत्थर पर बैठ गये और उन्होंने कत्तान का बढ़ा हुआ हाथ नहीं देखा। वह बोले—हे भगवान !

वैन जोर्सवेल्ड ख़ामोश खड़े रहे। वृद्ध जारविस अपने-आपको सँभालने का प्रयत्न कर रहे थे।

—आपने मेरी पत्नी को तो नहीं बताया, कत्तान ?

—नहीं, श्री जारविस।

जारविस की भवें सिकुड़ गयीं। वह यह सोच रहे थे कि पत्नी को यह ख़बर देना कितना मुश्किल होगा !

—वह मज़बूत नहीं है, पता नहीं, वह इस ख़बर को कैसे सहेगी।

—श्री जारविस, मुझे आपको हर प्रकार की सहायता देने का आदेश मिला

है। अगर आप चाहें, तो बिनेनडाइक आपको कार पर आपको पीटरमैरित्ज़ बर्ग तक पहुँचा आयगा। आप नौ बजे डाकगाड़ी पकड़ सकेंगे। सुबह ग्यारह बजे आप जोहैन्सबर्ग पहुँच जायँगे। आपके और श्रीमती जारविस के लिए एक अलग डिब्बा रिज़र्व करा दिया गया है।

—यह तो आपने बहुत कृपा की!

—आप जो भी कहें, मैं करने को तैयार हूँ, श्री जारविस!

—इस समय क्या बजा है?

—साढ़े तीन, श्री जारविस।

—अब से दो घंटे पहले....

—हाँ, श्री जारविस।

—अभी तीन घंटे पहले वह ज़िन्दा था!

—हाँ, श्री जारविस!

—हे भगवान्!

—अगर आप उस गाड़ी से जाना चाहें, तो आप यहाँ से छः बजे चल दें। या अगर चाहें, तो हवाई जहाज से भी जा सकते हैं। एक हवाई जहाज पीटरमैरित्ज़-बर्ग में प्रतीक्षा कर रहा है। लेकिन चार बजे तक उन्हें बता देना होगा। आधी रात को आप जोहैन्सबर्ग पहुँच जायँगे।

—हाँ-हाँ, मैं इस वक्त कुछ नहीं सोच पा रहा हूँ।

—हाँ, मैं समझता हूँ।

—क्या ज्यादा ठीक होगा?

—मेरे ख़्याल से हवाई जहाज से ही जाना ज्यादा अच्छा होगा, श्री जारविस।

—अच्छा, तो हम उसी से जायँगे। आप कह रहे थे न कि उन लोगों को बता देना होगा?

—हाँ, घर पहुँचते ही मैं उन लोगों को खबर कर दूँगा। क्या मैं किसी ऐसी जगह से टेलीफ़ोन कर सकता हूँ, जहाँ से श्रीमती जारविस न सुन पायँ? मुझे जल्दी करना है!

—हाँ हाँ, आप ऐसा कर सकते हैं।

—अच्छा, तो अब चलना चाहिए।

लेकिन जारविस निश्चल बैठे रहे।

—आप खड़े हो सकते हैं न? उठने में मैं आपकी सहायता नहीं करना चाहता, आपकी पत्नी हमें देख रही हैं।

—वह हैरान है, कप्तान। इतनी दूर से भी वह समझ रही है कि कुछ गड़-बड़ है।

—ऐसा हो सकता है। शायद उन्होंने मेरे चेहरे से कुछ समझ लिया हो, हालाँकि मैंने छुपाने की पूरी कोशिश की थी।

जारविस खड़े हो गये—हे भगवान ! अभी यह भी करना है !

जब वह ढाल पर उतरने लगे, तो बिनेनडाइक उनके आगे-आगे चल रहा था। जारविस स्तब्ध-से चल रहे थे, साफ आसमान से ऐसी बातें टूट पड़ती हैं....

—गोली मार दी गयी ?—वह बोले।

—हाँ, श्री जारविस।

—उन लोगों ने अपराधी को पकड़ लिया है ?

—अभी नहीं, श्री जारविस।

आँखों में आँसू भर आये और दाँतों ने होंठ काट लिये—इससे क्या होता है ?—वह बोले। वह पहाड़ से उतरकर खेतों के पास आ पहुँचे थे। धुँधली आँखों से उन्होंने हल को ज़मीन से ढेले उखाड़ते और फिर लोहे-सी ज़मीन पर से बेकार फिसलते हुए देखा।

—बन्द कर दो, टामस,—उन्होंने कहा—वह हमारा इकलौता लड़का था, कैप्टेन !

—यह मुझे मालूम है, श्री जारविस।

वह लोग मोटर में बैठ गये और थोड़ी देर में घर पहुँच गये।

—क्या बात है, जेम्स ?

—कुछ गड़बड़ है, प्रिये। मेरे साथ दफ़्तर में चलो। कप्तान, आप टेलीफोन करना चाहते थे न, आपको मालूम है, कहाँ रखा है ?

—हाँ, श्री जारविस।

कप्तान टेलीफ़ोन करने चला गया। टेलीफोन की लाइन सम्मिलित थी। दो पड़ोसी बात कर रहे थे।

—आप लोग मेहरबानी करके अपने टेलीफोन रख दीजिए,—कप्तान ने कहा—पुलीस को बहुत आवश्यक काम से बात करना है। मेहरबानी कर अपने टेलीफोन रख दीजिए।

कप्तान ने ज़ोरों से टेलीफोन की घंटी बजायी, लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। इन गाँवों के लिए पुलीस की एक अलग लाइन होनी चाहिए, वह इसका प्रबन्ध करेगा। उसने और जोरों से घंटी बजायी और बोला—एक्सचेंज ! पीटरमैरित्ज़-बर्ग की पुलीस ! बहुत ज़रूरी है !

—आपको फ़ौरन लाइन मिलती है,—एक्सचेन्ज का उत्तर आया।

विचित्र दुर्बोध स्वरों को सुनते हुए वह अधीरता से प्रतीक्षा करने लगा।

—पीटरमैरित्ज़बर्ग की पुलीस को आपका टेलीफोन !—एक्सचेन्ज ने कहा।

कप्तान ने हवाई जहाज के प्रबन्ध के बारे में बात शुरू कर दी, वह दूसरे कान का भोंपू भी ढूँढ़ने लगा, ताकि उसे एक औरत के रोने और सिसकने की आवाज़ सुनायी न दे।

(२)

हवाई अड्डे पर उन्हें एक युवक मिला।

—आप श्री और श्रीमती जारविस हैं?

—हाँ।

—मैं जान हैरीसन हूँ, मेरी का भाई। शायद आपको मेरी याद होगी। जब इससे पहले आपने मुझे देखा था, तब मैं बहुत छोटा था। लाइए, मैं आपका सामान ले चलूँ, मैं आपके लिए एक गाड़ी लाया हूँ।

जब वे तीनों हवाई अड्डे के कन्ट्रोल घर की तरफ़ बढ़ने लगे, तो युवक बोला—आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि हम लोग कितने दुखी हैं, श्री जारविस। आर्थर से अच्छा आदमी मैंने अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखा।

गाड़ी में वह फिर कहने लगा—मेरी और उसके बच्चे मेरी माँ के घर पर हैं और हम लोग आशा करते हैं कि आप हमारे साथ ही ठहरेंगे।

—मेरी का क्या हाल है?

—आघात से वह व्यथित है, जारविस, लेकिन वह बहुत बहादुर है।

—और बच्चे?

—उनपर बहुत बुरा असर हुआ है, श्री जारविस! और इससे मेरी को अपने को काम में लगाये रहने को कुछ मिल गया है।

फिर रास्ते-भर उन लोगों ने कोई बात नहीं की। जारविस अपनी पत्नी का हाथ थामे बैठे हुए थे। तीनों अलग-अलग अपने-अपने विचारों में खोये रहने के कारण तब तक चुप थे। गाड़ी शहर के बाहर के बंगले के फाटक में घुसी और एक बरसाती में खड़ी हो गयी। एक युवती मोटर की आवाज़ सुनकर बाहर निकली। वह श्रीमती जारविस से लिपट गयी और फिर दोनों रोने लगीं। इसके बाद वह युवती जारविस की ओर मुड़ी और उनसे भी मिली। यह मिलना समाप्त होते ही श्री और श्रीमती हैरीसन भी बाहर निकल आये और अभिवादन के बाद और समयानुकूल बातचीत के बाद सब लोग मकान में गये।

हैरीसन ने जारविस से पूछा—क्या आप कुछ पीना पसन्द करेंगे?

—हाँ, अच्छा रहेगा।

—तो मेरे पढ़नेवाले कमरे में चलिए।

—और अब आप अपनी तबीअत के अनुसार कीजिए। अगर हमारे करने-योग्य कोई काम हो, तो बस आपको कहना-भर होगा। अगर आप तुरन्त शवगृह जाना चाहें, तो जान आपके साथ चला चला जायगा। और अगर आप चाहें तो कल सुबह जा सकते हैं। पुलीस के लोग आपसे मिलना चाहते हैं, लेकिन आज रात को वह आपको कष्ट नहीं देंगे।

—मैं अपनी पत्नी से पूछ लूँ, हैरिसन। अभी हमने उस बारे में मुश्किल से कोई बात की है। मैं उनके पास जा रहा हूँ। आप आने का कष्ट न करें।

—मैं आपका इन्तज़ार यहीं करूँगा।

जारविस ने देखा कि उनकी पत्नी और उनकी बहू बहुत आहिस्ता-आहिस्ता उस कमरे के बाहर निकल रही थीं, जिसमें उनके पोते-पोती सो रहे थे। जारविस के बात करते ही वह फिर फूट पड़ीं और उनसे चिपटकर रोने लगीं।

—अब, —रोते-रोते उन्होंने कहा।

जारविस ने हैरीसन के पास लौटकर गिलास में बची हुई मदिरा घूँट ली और फिर वह और उनकी पत्नी और उनकी बहू गाड़ी में बैठने के लिए बाहर निकल आये जान उनका इन्तज़ार कर रहा था।

पुलीस प्रयोगशाला जाते समय रास्ते में जान ने जारविस को उस हत्या से सम्बन्धित वह बातें बतायीं, जो उसे मालूम थीं। पुलीस आर्थर के नौकर के होश में आने की किस तरह प्रतीक्षा कर रही है और पुलीस ने अपराधियों की तलाश में पार्क-वोल्ड पहाड़ी पर के बागानों का चप्पा चप्पा कैसे छान मारा है। और जान ने उन्हें उस लेख के विषय में भी बताया, जो आर्थर अपनी मृत्यु होने के पहले लिख रहा था और जिसका विषय था, 'मूल जातियों के अपराधों के पीछे क्या सत्य है'।

—मैं उसे देखना चाहूँगा,—जारविस ने कहा।

—कल ला दूँगा।

—मुझमें और मेरे बेटे में मूल जातियों के प्रश्न पर एक मत नहीं था, जान! यहाँ तक कि अक्सर इस विषय पर हम लोगों की काफी गर्म बहस भी हो जाती थी। लेकिन मैं यह देखना चाहूँगा कि उसने क्या लिखा है।

—मेरे पिता और मैं भी इस प्रश्न पर एकमत नहीं हैं, श्री जारविस। आप जानते हैं, सारे दक्षिणी अफ्रीका में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है, जिसने इस सम्बन्ध में आर्थर से ज़्यादा सफाई और गहराई से सोचा हो। वह कहा करते थे कि दक्षिणी अफ्रीका में इस समस्या से बढ़कर गहराई और स्पष्टता से सोचने को और कुछ नहीं है

वे पुलीस पयोगशाला पहुँच गये थे। जान कार में ही बैठा रहा और बाकी लोग उस कठोर कार्य को करने अन्दर चले गये, जिसे करना ही था। कुछ देर बाद

वे चुपचाप बाहर निकल आये। दोनों औरतें रो रही थीं। फिर उसी तरह ख़ामोशी से वे लोग घर वापस लौट गये और मेरी के पिता ने दरवाजा खोला।

—और पियेंगे, जारविस, या अब आप सोने जायँगे ?

और जारविस ने अपनी पत्नी से पूछा—मार्गरेट, तुम्हारे साथ ऊपर चलूँ ?

—नहीं, तुम यहीं रहो और कुछ पी लो।।

—अच्छा, तो नमस्कार !

—नमस्कार, जेम्स !

जारविस ने अपनी पत्नी का चुम्बन किया और वह पल-भर को उनसे चिमट कर रह गयी।

—हर सहायता के लिए तुम्हें मेरा धन्यवाद !—श्रीमती जारविस ने हल्के से अपने पति से कहा। उनकी आँखों में आँसू आ गये और आँसू तो जारविस की आँखों भी आ गये थे। जारविस अपनी पत्नी और बहू को सीढ़ियाँ चढ़ते देखते रहे और जब वे लोग अपने-अपने कमरों में चली गयीं, तो वह और हैरीसन कमरे में चले गये।

—माँ को सदा अधिक दुःख होता है, जारविस।

—हाँ,—और जारविस इसी बात पर मनन करते रहे और तब बोले—उन्हें अपने लड़के से बहुत प्यार था। उन्हें उसके कारण कभी लज्जित नहीं होना पड़ा था।

वे लोग शराब के गिलास लेकर बैठ गये और हैरीसन ने उन्हें बताया कि इस हत्या से पार्कवोल्ड में रहनेवाले लोगों को बहुत धक्का लगा है और अनगिनत सम्वेदना के पत्र उनके घर पर आये थे।

—लगभग हर जगह से हर तरह के लोगों के सम्वेदना के ये पत्र आये हैं। और हाँ, जारविस, हम लोगों ने कल तीसरे पहर शरीर दफ़नाने का प्रबन्ध किया है, तीन बजे पार्कवोल्ड गिरजे में। इसी सम्बन्ध में प्रार्थना होगी, और उसके बाद....

जारविस ने सिर हिला दिया—ठीक है,—वह बोले—धन्यवाद !

—सम्वेदना के वे-सब पत्र हमने आपको दिखाने के लिए रख छोड़े हैं। उसमें विशप का पत्र है, स्थानापन्न प्रधान मंत्री का है, मेयर का है और ऐसे दर्जनों और पत्र भी हैं। और मूल जातियों की संस्थाओं की ओर से भी पत्र आये हैं। एक संस्था का नाम है, 'अफ़्रीका की पुत्रियाँ'। और बहुतों के नाम याद नहीं आते। काली जाति के लोगों के, भारतवासियों के, यहूदियों के, हर जाति के व्यक्ति ने पत्र भेजे हैं।

जारविस को अपने अन्दर एक विषादपूर्ण गर्व उमड़ता-सा लगा।

—हाँ, वह योग्य था। यह गुण उसे अपनी माँ से मिला था।

—हाँ, वह वास्तव में योग्य था। इस बारे में तो जान की बातें सुनें। लेकिन और लोग भी उसे बहुत चाहते थे, हर वर्ग और हर श्रेणी के लोग। आपको पता है,

वह अफ्रीकान भाषा बिल्कुल अफ्रीकान जाति के लोगों की तरह ही बोलता था ?

—मुझे मालूम है, कि उसने सीखी थी।

—भगवान की कृपा से मैं उस वाहियात भाषा के बारे में कुछ नहीं जानता। लेकिन आर्थर का ख्याल था कि उसे वह भाषा सीखनी ही चाहिए। इसलिए उसने उसका अध्ययन किया और इसी लिए वह कुछ दिन किसी अफ्रीकान जाति के खेत पर रहा था। आपको पता ही होगा कि जुलू वह बोल ही लेता था और सिसूटो सीखने की भी बात कर रहा था। आप तो जानते ही होंगे कि दक्षिणी अफ्रीका की संसद में भूल जातियों के भी कुछ सदस्य होते हैं। अभी पिछले दिनों अपने प्रतिनिधि के रूप में आर्थर को अगले चुनाव में संसद की सदस्यता के लिए खड़ा करने की बात हो रही थी।

—मुझे यह नहीं मालूम था।

—हाँ, वह जहाँ-तहाँ भाषण देने जाता था, आप समझे न, काली जाति के अपराधों पर, काली जातियों के लिए और ज्यादा स्कूल खुलने चाहिएँ आदि विषयों पर। और अख़बारों में तो उसने देशी अस्पतालों की दशा पर ख़ासा शोर मचा दिया था। और खानों में चलनेवाली 'बाड़ा' प्रथा पर तो वह बहुत ही गरम था और चाहता था कि चेम्बर मज़दूरों की स्थायी व्यवस्था का पूरा प्रबन्ध करे। आप समझे न? वह कहता था कि खानों के मज़दूरों को अपना परिवार, बीबी-बच्चे वगैरह रखने की पूरी सुविधा मिलनी चाहिए।

जारविस धीरे-धीरे अपना पाइप भरते रहे और अपने बेटे के जीवन की कहानी सुनते रहे एक अपरिचित की जीवन-कथा-सी।

—खानों की परिषद के सदस्य हैथवे ने मुझसे इस सम्बन्ध में बातें की थीं,—हैरीसन बोले—उन्होंने कहा कि मैं आर्थर को समझा दूँ कि वह इन प्रश्नों पर इतना शोर न मचाये, क्योंकि उनकी कम्पनी को उन खानों से बहुत काम मिलता रहता था। इसी कारण मैंने आर्थर से इस विषय पर बात भी की थी। मैंने उसे समझाया कि मैं जानता हूँ कि वह इन बातों पर गंभीरता से सोचता है, लेकिन फिर भी उसे कुछ रुककर काम करना चाहिए। आखिर उसे मेरी और बच्चों का भी ख़्याल रखना है। मैं मेरी की ही भलाई के लिए उसे यह नहीं समझा रहा था। जवान आदमियों की बातों में दख़ल देने की मेरी आदत नहीं है, आप समझे?

—मैं समझ रहा हूँ।

—आर्थर ने मुझे जवाब दिया कि वह मेरी से इस सम्बन्ध में बात कर चुका है और वे दोनों इस बात पर सहमत थे कि सच बोलना धन कमाने से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

हैरीसन इसपर हँस दिये, लेकिन विषाद के अवसर का स्मरण कर सहसा रुक गये।

—मेरा लड़का जान आर्थर की तरफ़ ऐसे देखता था, मानो आर्थर भगवान हो! ऐसी हालत में मैं क्या कह सकता था?

कुछ देर तक वे चुपचाप बैठे हुए पाइप पीते रहे।

—फिर मैंने उससे पूछा कि उसके और जो हिस्सेदार हैं, इस बारे में उनका क्या मत है, आख़िर खानों को मशीनें बेचना लोगों का व्यवसाय है। लेकिन आर्थर ने इस बात पर यह कहा कि वह अपने सहयोगियों से भी इस विषय पर बातें कर चुका है और अगर कभी समस्या खड़ी होगी, तो वह अलग हो जायगा। और इसपर मैंने उससे पूछा कि उसके बाद तुम क्या करोगे? और उत्तेजित होकर उसने उत्तर दिया था कि वह क्या नहीं करेगा? फिर मैं और क्या कह सकता था।

जारविस ने कोई उत्तर नहीं दिया। उनका यह बेटा जाने किन अज्ञात प्रदेशों में यात्रा करता रहता था, उसके माता-पिता को पता ही नहीं था, लेकिन शायद उसकी माँ को पता था। उन्हें इस बात पर आश्चर्य नहीं होगा अगर उसकी माँ को पता हो। लेकिन स्वयं वह कभी उस अज्ञात मार्ग पर नहीं चले थे। वह इसके बारे में कुछ नहीं कह सकते थे।

—क्यों, क्या मेरी बातों से आप थक गये? या आप यह चाहते हैं कि किसी और विषय पर बातें की जायँ!....या आप सोने जाना चाहते हैं?

—हैरिसन, मुझसे बातें कर आप बहुत अच्छा कर रहे हैं।

—हाँ, तो ऐसा था वह। यूँ आम तौर पर हम लोग इन विषयों पर ज़्यादा बात नहीं करते थे। देश की इन बातों में मेरी उतनी दिलचस्पी भी नहीं है। मैं देशी लोगों के साथ अच्छा व्यवहार तो करना चाहता हूँ, लेकिन वह मेरी रोटी पानी नहीं है। और सच पूछिए, तो उनके इस प्रकार के अपराधों से मैं परेशान हूँ। मैं कहता हूँ, जारविस, आजकल जोहैन्सबर्ग में हम लोग बुरी तरह घबराये हुए हैं।

—इन अपराधों से?

—हाँ, मूल जातियों के इन अपराधों से। न जाने कितने खून होते हैं, लूट होती है, क्रूर आक्रमण होते हैं! मैं कहता हूँ, रात को हम लोग मकान को पूरी तरह सुरक्षित किये बिना नहीं सोते हैं। यहीं, तीन मकान छोड़कर, फ़िलिपसन के मकान में एक गिरोह रात को घुस पड़ा। उन्होंने फ़िलिपसन को मारकार बेहोश कर दिया और उनकी पत्नी को पीटा। भाग्य से लड़कियाँ बाहर नाच के लिए गयी हुई थीं, वर्ना पता नहीं उनके साथ क्या होता। मैंने यह घटना आर्थर को बतायी, लेकिन उसने उत्तर दिया कि किसी तरह इसमें हमीं लोगों का दोष है। कह नहीं सकता कि मैं उसकी बातें हमेशा समझ पाता था, लेकिन उसके अन्दर एक गहरी ईमानदारी

अवश्य थी। उसकी बातें सुनकर आपको यह महसूस होने लगता था कि अगर आप थोड़ा समय देकर उन बातों को ग़ौर से सोचें, तो उनमें समझदारी मिलेगी।

—लेकिन एक बात मेरी समझ मे नहीं आती,—जारविस ने कहा—यह घटना हुई क्यों ?

—आपका मतलब है....कि औरों को छोड़कर उसी के साथ ऐसा क्यों हुआ ?

—हाँ।

—हम लोगों ने भी सबसे पहले यही बात कही थी। वह दिन-रात एक प्रकार के कर्त्तव्य में लगा रहता था। और वही मारा गया।

—लेकिन देखिए, लेकिन देखिए,—जारविस ने एक बात पर आकर कहा—मेरा मतलब है कि हमारे धर्म-प्रचारकों की भी तो हत्या हुई है।

हैरीसन ने कोई उत्तर नहीं दिया। और वे दोनों ख़ामोशी से अपने पाइप पीते रहे। धर्म-प्रचारक, जारविस सोचने लगे कि यह कितनी अजीब बात है कि उन्होंने अपने बेटे को धर्म-प्रचारक कहा। स्वयं उन्होंने इन प्रचारकों को कभी ज्यादा महत्व नहीं दिया था। हाँ, इतना जरूर था कि गिरजे ने धर्म-प्रचारकों को बहुत महत्त्व दिया था और विशेष अवसरों पर दान भी दिया था, लेकिन ऐसी चीज़ें तो प्रचारकों में विश्वास न रखकर भी मनुष्य करता है। इन्डाटशेनी में उनके घर के पास एक मिशन था। पर जो कुछ उन्हें याद था, उसके अनुसार वह सूनी जगह थी, एक पुराना, गन्दा, लकड़ी और लोहे का बना हुआ गिरजा, टूटा-फूटा और सूना-सा, और एक बुड्ढा, गन्दा पादरी और यह एक ऐसी बंजर घाटी में था, जहाँ घास भी मुश्किल से उगती थी। वहाँ एक गंदा, पुराना स्कूल भी था और कभी-कभी उधर से घोड़े पर आते-जाते वक़्त उन्होंने वहाँ कुछ गन्दे बच्चों को तोते की तरह उन चीज़ों को रटते सुना था, जो उनके किसी मतलब की न थीं।

—तो अब सोओगे, जारविस, या एक गिलास और ?

—अब सोचता हूँ कि सोने ही जाऊँ। क्या तुमने कहा था कि पुलीस आयगी ?

—हाँ, नौ बजे वे लोग यहाँ आयँगे।

—मैं वह मकान देखना चाहूँगा।

—मैं समझता था, तुम देखोगे। वे लोग तुमको वहाँ ले जायँगे।

—बड़ा अच्छा है। तो मैं सोने जा रहा हूँ। अपनी पत्नी से मेरी ओर से नमस्कार कह दीजिएगा।

—ज़रूर ! आपको अपना कमरा मालूम है न ?....और नाश्ता ? सुबह साढ़े आठ बजे।

—साढ़े आठ। अच्छा, नमस्कार, हैरीसन, और तुम्हारी कृपाओं के लिए तुम्हें बहुत बहुत धन्यवाद।

—धन्यवाद की क्या ज़रूरत है ? इसमें हमें क्या कष्ट हुआ ? अच्छा, नमस्कार जारविस ! आशा करता हूँ कि तुम्हें और मार्गरेट को कुछ नींद आ जायगी।

सीढ़ियाँ चढ़कर जारविस कमरे में पहुँच गये। वह चुपचाप कमरे में घुसे और दरवाज़ा बन्द कर दिया। बत्ती भी उन्होंने नहीं जलायी। खिड़की में से चाँदनी आ रही थी। और वह अन्दर खड़े-खड़े बाहर की दुनिया देख रहे थे। जो-कुछ उन्होंने अभी सुना था, वह उनके दिमाग़ में अब भी चुपचाप चक्कर काट रहा था। उनकी पत्नी ने पलंग पर करवट ली और कहा—जेम्स !

—प्रिये !

—तुम क्या सोच रहे थे, प्यारे ?

उत्तर की तलाश में वह चुप रहे—इन्हीं सब बातों के बारे में,—वह बोले।

—मैं सोच रही थी कि तुम कभी आओगे ही नहीं।

जारविस फौरन अपनी पत्नी के पास गये और उन्होंने अपने पति के हाथ थाम लिये। और जारविस ने कहा—हम लोग अपने बेटे के बारे में ही बात कर रहे थे, उसने जो-कुछ किया, और करने का प्रयत्न किया। संतप्त लोगों के बारे में बातें करते थे।

—मुझे भी बताओ, प्यारे !

और जारविस ने धीमी आवाज़ में वह-सब बताया, जो उन्होंने अभी सुना था। उनकी पत्नी को थोड़ा आश्चर्य भी हुआ, क्योंकि उनके पति में ज़्यादा बात करने का स्वभाव नहीं था। लेकिन आज रात को उन्होंने अपनी पत्नी को वह सब-कुछ बताया, जो उन्होंने हैरीसन से सुना था।

—इससे मुझे गर्व हो रहा है,—माँ ने फुसफुसाहट में कहा।

—लेकिन तुम तो हमेशा ही जानती थी कि वह ऐसा है।

—हाँ, मैं जानती थी।

—मैं भी यह जानता था कि वह बहुत भला था, लेकिन तुम सदा ही मुझसे अधिक उसके समीप रही।

—माँ के लिए यह ज़्यादा आसान होता है, जेम्स।

—यही बात है। लेकिन अब मेरी इच्छा होती है कि, काश, मैं उसे और अधिक जानता होता। तुम तो जानती हो कि जो-कुछ वह कर रहा था, उससे मेरा कभी उतना ज्यादा सम्बन्ध नहीं था।

—और मेरा भी नहीं था, जेम्स। उसका जीवन हमारे जीवन से बिल्कुल भिन्न था।

—उसका जीवन सब तरह से अच्छा था,—और अपने विचार, अपनी स्मृतियाँ और अपने शोक में वह बैठे रहे और उनकी पत्नी चुपचाप लेटी रहीं।

—उसका जीवन हमसे भिन्न था, फिर भी तुम उसे समझती थी।—वह बोले।

—हाँ, जेम्स।

—मुझे अफ़सोस है कि मैंने नहीं समझा।

और फिर उन्होंने फुसफुसाहट में कहा—मैं यह नहीं जानता था कि उसे समझना कभी इतना आवश्यक होगा।

—ओफ़, जेम्स, ओफ़!—श्रीमती जारविस के हाथ अपने पति के शरीर से लेपट गये और वह रो पड़ीं और जारविस उसी धीमी आवाज़ में कहते रहे—बस, एक बात समझ में नहीं आती कि उसी के साथ ऐसा क्यों होना था?

और माँ भी लेटी-लेटी सोच रही थीं। बहुत गहरी वेदना थी, जो हटायी नहीं जा सकती थी। उन्होंने पति के शरीर को हाथों से और कस लिया—जेम्स, आओ, सोने की कोशिश करें!

(३)

जारविस अपने लड़के की कुर्सी पर बैठ थे। उनकी पत्नी और मेरी उन्हें वहीं छोड़कर हैरीसन के घर लौट गयी थीं। उस घर में किताबें-हीं-किताबें थीं। इतनी किताबें कि उन्होंने आज तक किसी मकान में नहीं देखी थीं। मेज़ पर कागज, खत और कुछ और किताबें।

....श्री आर्थर, क्या आप पार्कवोल्ड मेथाडिस्ट गिल्ड में भाषण देंगे?

....श्री आर्थर, क्या आप सोफ़ियाटाउन के ऐंग्लिकन युवक संघ में भाषण देने आइएगा?

....श्री आर्थर, क्या आप युनिवर्सिटी की एक गोष्ठी में भाषण दे सकेंगे?

....नहीं, श्री आर्थर अब कहीं भी भाषण देने नहीं जा सकेंगे!

....श्री आर्थर, यहूदियों और इसाइयों के वार्षिक सम्मेलन में आपका आमंत्रण है।

....श्री तथा श्रीमती आर्थर, आपका और आपकी पत्नी का श्री और श्रीमती एच-बी-सिंह की लड़की, सरोजिनी, की शादी में निमंत्रण है।

....श्री तथा श्रीमती आर्थर, आप लोग वैन वाइक वैली की टाक 'एच' की अतिथि-रात्रि में आमंत्रित हैं।

....नहीं, श्री आर्थर इन निमंत्रणों को स्वीकार करने में असमर्थ हैं, वह कहीं न जा सकेंगे!

दीवाल पर किताबों की कतारों के बीच-बीच में चार चित्र थे, क्रास पर भगवान

ईसा, एब्राहम लिंकन, वर्गेलेगेन की सफेद कोठी और जाड़े के मौसम में नदी के किनारे लगे हुए पत्ते-रहित 'विलो' के वृक्ष।

किताबें देखने के लिए जारविस कुर्सी से उठे। एक तरफ़ एब्राहम लिन्कन पर सैकड़ों किताबें लगी हुई थीं। जारविस ने कभी इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि एक व्यक्ति पर इतनी सारी किताबें लिखी गयी हैं, किताबों की एक पूरी अलमारी उनसे ठसाठस भरी हुई थी। और दूसरी में दक्षिणी अफ्रीका पर किताबें भरी थीं, साराह गर्टरूड मिलिन की लिखी हुई पुस्तक रोड्स का जीवन, स्मट्स पर उनकी लिखी पुस्तकें, ऐंगलेनबर्ग की 'लुई बोथा की जीवनी' और दक्षिणी अफ्रीका की जातियों की समस्या पर किताबें, दक्षिणी अफ्रीका के पक्षियों पर, क्रूगर पार्क पर और अन्य असंख्य दूसरी पुस्तकें। एक दूसरी अलमारी में अफ्रीकान भाषा की पुस्तकें थीं, लेकिन उनके नामों से जारविस के पल्ले कुछ नहीं पड़ा। और धर्म की किताबें थीं और सोवियत रूस के बारे में, अपराधों और अपराधियों के बारे में और कविताओं की पुस्तकें थीं। जारविस ने शेक्सपियर के ग्रंथों को ढूँढ़ा, और शेक्शपियर भी था!

वह फिर लौटकर कुर्सी पर बैठ गये और देर तक उन चित्रों की तरफ देखते रहे, क्रास पर भगवान ईसा, एब्राहम लिन्कन, वर्गेलेगेन और नदी तट पर लगे हुए 'विलो' के पेड़। और तब उन्होंने कुछ कागज़ के टुकड़े उठाये।

पहला कागज उनके बेटे के नाम एक पत्र था, जिसे, क्लेयरमांट की ग्लेडियोलस स्ट्रीट में स्थित 'क्लेयरमांट अफ्रीकान युवक क्लब' के मंत्री ने लिखा था। उसमें उन्होंने इस बात पर खेद प्रगट किया था कि आर्थर उनके क्लब के सालाना जलसे में उपस्थित नहीं हुए। और उन्होंने आर्थर को सूचना दी थी कि अपनी अनुपस्थिति में भी वह क्लब के सभापति चुन लिये गये थे। पत्र के अन्त में मंत्री ने विलक्षण शब्दावली में लिखा था:

इस बात पर आपको बधाई देने और हमारे साथ आपने जो समय बिताया है और क्लब को जो उपहार आप देते रहे हैं, उनपर असंख्य धन्यवाद देने को वार्षिक सम्मेलन ने मुझे आदेश दिया है। आपकी सहायता के बिना यह क्लब कैसे चल सकेगा, यह हममें से बहुतों के विचारों में एक रहस्य ही है। इन्हीं सब कारणों से हमने एक बार फिर आपको अपना सभापति चुना है।

इस कागज पर पत्र लिखने के लिए मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। क्योंकि कुछ परिस्थितियों में क्लब का पत्र लिखने का कागज खो गया है।

आपका आज्ञाकारी सेवक,
वाशिंगटन लेफ़ीफ़ी।

और दूसरे कागज उनके लड़के की लिखावट में थे। देखने से ही यह मालूम

पड़ता था कि वह किसी बड़े लेख के अंश हैं, क्योंकि पहले कागज का प्रथम वाक्य किसी पिछले वाक्य का अंश था और उन कागजों का अन्तिम वाक्य भी अधूरा ही था। जारविस ने बाक़ी लेख की भी तालाश की, लेकिन जब उन्हें और कागज नहीं मिले, तो वह उन्हीं को पढ़ने बैठ गये: ...की भी आज्ञा दी जा सकती थी। जो-कुछ हम लोगों ने दक्षिणी अफ्रीका में आकर किया, उसकी भी आज्ञा दी जा सकती थी। इसकी आज्ञा दी जा सकती थी कि जो मज़दूर मिलें, उनसे हम अपने महान् साधनों का विकास करें। मोटे कामों के लिए नये मज़दूरों से काम लेना भी उचित माना जा सकता था, लेकिन यह उचित नहीं माना जा सकता कि साधारण कामों के लिए मजदूरों को नया ही रखा जाय।

सोने की खानों का पता लगने पर मज़दूरों को खानों के पास लाया जाना उचित समझा जा सकता था। यह उचित था कि बाड़े बना दिये जायँ और बीवी और बच्चों को शहर से दूर रखा जाय। जितना हमें पता था, उसके अनुसार प्रयोग के रूप में यह उचित था। लेकिन जो-कुछ हम अब जानते हैं, उसके अनुसार कुछ बातों को छोड़कर यह और आगे उचित नहीं है, जब हम जानते हैं कि हम किस चीज का विनाश कर रहे हैं, तब पारिवारिक जीवन का विनाश उचित नहीं।

यदि मज़दूर मिलते हैं, तो किसी भी साधन का विकास उचित है। परन्तु मज़दूरों के मूल्य पर किसी भी साधन का विकास उचित नहीं। सोना निकालने, चीज़ बनाने और ज़मीन जोतने की इजाज़त उस हालत में बिल्कुल नहीं दी जा सकती, यदि इन उद्योगों की सफलता इसी नीति पर निर्भर हो कि मज़दूरों को गरीब रखा जाय। यदि दूसरों के मूल्य पर सम्पत्ति बढ़ायी जाय, तो वह उचित नहीं है। इस तरह के विकास का केवल एक नाम है, और वह है शोषण।

ये बातें तभी चल सकती थीं, जब हम इस देश में नये आये थे और हमें यह पता नहीं था कि इस नीति को अपनाकर हमें क्या क़ीमत चुकानी पड़ेगी। हमारी इस नीति का कई रूपों में प्रभाव पड़ा है, मूल जातियों के पारिवारिक जीवन नष्ट होने के रूप में, उनके सामाजिक संगठन का अन्त हो जाने के रूप में, दरिद्रता के रूप में, गन्दी बस्तियों और अपराधों की मात्रा बढ़ जाने के रूप में, पर अब जब कि उसके मूल्य का पता चल गया है, यह सब और अधिक दिनों नहीं चलने दिया जा सकता।

यह ठीक हो सकता था कि हम मूल जातियों की शिक्षा का भार उन्हीं लोगों पर छोड़ दें, जो उसे विकसित करना चाहते थे। उसके उपयोग में शंका करना ठीक था, लेकिन जो-कुछ हम जानते हैं, उसे देखते हुए यह अब उचित नहीं है। कुछ तो इस कारण कि उसके कारण देश की औद्योगिक उन्नति हुई थी और कुछ इस वजह से कि यह बात हमारी इच्छाओं के विरुद्ध भी हुई थी। आज नगरवासी

मूल जातियों की संख्या काफ़ी अधिक है। समाज ने यह चाहा है कि उसके बच्चे शिक्षित हों, ताकि वह बड़े होकर सामाजिक लक्ष्य और उद्देश्य के पोषक बनकर कानून का पालन करें। दूसरा कोई और तरीका नहीं है, जिससे यह किया जा सके और फिर भी हम मूल जातियों की शिक्षा का आरम्भ केवल उन्हीं कुछ योरोपीय लोगों पर छोड़े हुए हैं, जो इसे बहुत आवश्यक मानते हैं। और इसके प्रसार के लिए अवसर और धन में कोताही करते हैं। यह उचित नहीं है। अपने स्वार्थ के लिए ही ऐसी अवस्था रहने देना भयावह है।

यहाँ की उस दक़ियानूसी जाति-व्यवस्था को भी, जो देश के उत्थान में बाधक थी, तोड़ना ठीक हो सकता था और यह सोचना भी ठीक हो सकता था कि उस व्यवस्था का अन्त हो जाना भी स्वाभाविक ही है, लेकिन उसे बर्बाद होते हुए देखते रहना क़तई जायज़ नहीं है और फिर उस टूटती हुई व्यवस्था के स्थान पर कोई ऐसी व्यवस्था न करना भी अनुचित है, जिसके अभाव में एक पूरे राष्ट्र का शारीरिक और नैतिक पतन हो रहा है।

यद्यपि यहाँ की पुरानी जाति-व्यवस्था में जंगलीपन था, वहशीपन था, अन्धविश्वास था और अज्ञान था, फिर भी वह एक नैतिक व्यवस्था थी। आज हमारी मूल जातियाँ अपराधी और वेश्याएँ और शराबी उत्पन्न करती हैं। इसलिए नहीं कि यह उनकी प्रकृति है, बल्कि इसलिए कि उनकी उस परम्परागत सहज व्यवस्था का नाश कर दिया गया है। वह नाश हमारी अपनी सभ्यता के टकराने से हुआ। इसलिए हमारी सभ्यता का यह आवश्यक कर्त्तव्य हो जाता है कि परम्पराओं, विश्वासों और मान्यताओं से परिपूर्ण हम एक नयी व्यवस्था का निर्माण करें।

यह सही है कि हमने पृथक्-निवास की नीति से मूल-व्यवस्था को बचाये रखने की आशा की थी। यह बात तो जायज मानी जा सकती थी, लेकिन उस नीति का भी हमने कभी पूरी तौर से और सचाई से पालन नहीं किया। और अस्सी प्रतिशत लोगों को भूमि का केवल दस प्रतिशत भाग ही दिया और इसलिए हमने यह अनिवार्य कर दिया, कुछ लोगों का मत तो यह है कि ऐसा हमने जान-बूझकर किया, कि मज़दूर शहरों में आकर रहें। हम अपने ही स्वार्थ के शिकंजे में फँस गये हैं।

कोई ऐसा नहीं है, जो समस्या को उसके वास्तविक रूप से छोटा दिखाने की इच्छा रखता है। कोई भी उसके हल करने की क्रिया को सरल बताने की इच्छा रखता है, कोई भी नहीं चाहता कि जो भय हमें घेरे हुए है, उसे कम करके दिखाये। लेकिन चाहें हम डरे हुए हों, या नहीं, इसाई होने के नाते हम कभी नैतिक समस्याओं को टाल नहीं सकते। अब वह समय आ गया है, जब....

और यहाँ वह पृष्ठ और लेख समाप्त हो गया। जारविस, जो अब तक उस लेख को पढ़ने में तन्मय थे, अब उठे और उन्होंने मेज़ पर पड़े हुए कागज़ों में फिर

उस अधूरे लेख का बाकी अंश ढूँढ़ा, लेकिन उन्हें कोई ऐसा कागज़ नहीं मिला, जिससे यह मालूम हो कि इसके आगे भी कुछ लिखा गया था। उन्होंने अपना पाइप जलाया और वही कागज़ फिर उठाकर लेख के उस अंश को दुबारा पढ़ने लगे।

जब वह उसे दूसरी बार भी पढ़ चुके, तब वह पाइप पीते हुए काफ़ी देर तक विचारों में खोये रहे। उसके बाद वह कुर्सी से उठे और फिर जाकर किताबों की उस अलमारी के सामने खड़े हो गये, जिसमें की सब किताबें एब्राहम लिंकन पर थीं और उन्होंने उस व्यक्ति के चित्र की तरफ़ देखा, जिसने उनके लड़के पर इतना गहरा प्रभाव डाला था। फिर उन्होंने उन सैकड़ों किताबों की तरफ देखा, और फिर उसके शीशे का दरवाजा खिसकाकर एक पुस्तक निकाली। लौटकर वह अपनी कुर्सी पर बैठ गये और किताब के पन्ने पलटने लगे। उसमें एक अध्याय का शीर्षक था, 'गेटिसबर्ग का प्रसिद्ध भाषण' जो कि प्रगट रूप से असफल भाषण था, लेकिन तब से वह संसार के महान् भाषणों में गिना जाता था। प्रारम्भिक पृष्ठों को पलटकर उन्होंने वह भाषण निकाला और उसे बहुत ध्यान से पढ़ा। उसे पढ़ लेने के बाद गहन ध्यान में मग्न हो उन्होंने फिर अपना पाइप पिया। कुछ देर बाद उन्होंने पुस्तक को अलमारी में रख दिया और अलमारी बन्द कर दी। फिर उन्होंने अलमारी को दुबारा खोला और पुस्तक को अपनी जेब में डाल लिया और अलमारी बन्द कर दी। फिर उन्होंने घड़ी देखी, पाइप को अंगीठी में साफ किया, हैट लगाया और घड़ी उठायी। धीरे-धीरे सीढ़ियों से उतरकर उन्होंने उस घातक कमरे का द्वार खोला। हैट उतारकर उन्होंने फर्श पर पड़े हुए गहरे लाल धब्बे की तरफ़ देखा। कदाचित, बिना चाहे ही एक छोटे बच्चे का चित्र उनके दिमाग़ में उतर आया, उस बच्चे का, जो कभी 'हाई प्लेस' में अपनी नक़ली लकड़ी की बन्दूकों से खेला करता था। बिना कुछ देखे ही वह उस कमरे में होकर उस दरवाज़े से बाहर निकल गये, जिसमें होकर मृत्यु बिल्कुल अचानक घुस आयी थी। वहाँ ड्युटी पर एक सिपाही खड़ा था। उसने उन्हें सलाम किया और उन्होंने उसको उन शब्दों में उत्तर दिया, जिनका कोई अर्थ नहीं निकलता था। उन्होंने अपना हैट लगा लिया और मकान के बाहरी फाटक तक पहुँच गये। अनिश्चित भाव से उन्होंने सामने की सड़क पर इधर-उधर देखा और फिर कुछ प्रयत्न कर वह चल पड़े। लम्बी साँस लेकर सिपाही ढीला पड़ गया।

(४)

पार्कवोल्ड गिरजे में प्रार्थना ख़त्म हो गयी थी। जितने लोग वहाँ इकट्ठे हुए थे, उनके लिए वह गिरजा बहुत छोटा था, गोरे लोग, काले लोग, भूरे लोग, भारतवासी। यह पहला अवसर था, जब जारविस और उनकी पत्नी गिरजे में ऐसे लोगों के साथ बैठे, जो गोरे नहीं थे। बिशप ने स्वयं कहा था कि लोग इस पहेली को नहीं समझ पाते, इतना होनहार युवक, जिसकी जवानी में भविष्य की आशाओं के बीज थे, क्यों अपनी चढ़ती हुई जवानी में मारा गया? क्यों एक औरत विधवा कर दी गयी और क्यों बच्चे अनाथ कर दिये गये? क्यों देश से उसका-ऐसा व्यक्ति छीन लिया गया, जो उसकी महान सेवा कर सकता था? और जब दक्षिणी अफ्रीका के बारे में बिशप बोले, तो उनकी आवाज़ कुछ ऊँची हो गयी। उनके शब्दों में बहुत सौन्दर्य आ गया और शब्दों के सम्मोहन से जारविस कुछ देर तक बिना किसी वेदना के सुनते रहे। और बिशप ने कहा कि एक व्यक्ति था, जिसका जीवन दक्षिणी अफ्रीका की सेवा में रत था और उसमें बुद्धि थी, साहस था और एक ऐसा सर्वव्यापक स्नेह था, जो भय को हटा देता है और जारविस के हृदय में गर्व उमड़ आया, गर्व उस अनजान पर, जो उनका बेटा था।

अन्त्येष्टि-प्रार्थना समाप्त हो चुकी थी। पीतल के दरवाजे, बिना किसी शब्द के खुले और उनमें से बिना किसी शब्द के शव का सन्दूक उस भट्ठी में खिसक गया था, जो उसे राख कर देगी।

जिन लोगों को जारविस जानते तक न थे, उन्होंने भी उनसे हाथ मिलाया और संक्षिप्त शिष्टाचार के शब्दों में अपनी समवेदना प्रगट की। कुछ लोगों ने तो केवल उनके लड़के के ही विषय में बातें कीं। और हाँ, काले आदमियों से भी आज जीवन में पहली बार उन्होंने हाथ मिलाया।

इस सबके बाद वे लोग हैरीसन के मकान को लौट गये, क्योंकि वह रात, जो तमाम रातों से ज्यादा ख़राब रात होती है, वह आ ही जाती है। कम-से-कम मार्गरेट के लिए तो वह ऐसी ही रात होगी, वह आज अपनी पत्नी को अकेले सोने नहीं जाने देंगे। लेकिन उनके स्वयं के लिए वह रात खत्म हो चुकी थी। वह हैरीसन के कमरे में चुपचाप बैठकर ह्विस्की पी सकते थे, पाइप पी सकते थे और जिस विषय पर भी हैरिसन चाहें, वह बातें कर सकते थे, यहाँ तक कि अपने बेटे के बारे में भी।

—यहाँ कब तक और ठहरोगे, जारविस? वैसे तुम यहाँ जब तक चाहो ठहर सकते हो।

—धन्यवाद, हैरीसन। मैं सोचता हूँ कि मार्गरेट, मेरी और बच्चे घर चले जायँगे,

और वहाँ हम उनकी देख-भाल के लिए एक पड़ोसी के लड़के का प्रबन्ध कर देंगे। बहुत अच्छा लड़का है, अभी हाल ही में उसे सेना से अवकाश मिला है। लेकिन मैं कम-से-कम शुरू में आर्थर के मामलों को निपटाने के लिए यहाँ रहूँगा।

—और हाँ, पुलीस ने क्या कहा ?

—वह अब तक आर्थर के नौकर के होश में आने का इन्तज़ार कर रही है। वह आशा करती है कि वह अपराधियों में से किसी को पहचान लेगा। उनका कहना है कि अन्यथा बड़ी कठिनाई होगी। पूरी घटना झटपट हो गयी थी। वह यह भी आशा करती है कि शायद किसी ने उनको भागते हुए देखा हो। उनका विचार है कि वे लोग डरे और उत्तेजित थे, और सहज ढंग से नहीं गये होंगे।

—मैं भी भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि वह उन्हें किसी तरह पकड़ लें और सबको बाँध लें। क्षमा करना, जारविस।

—मैं तुम्हारा मतलब ठीक-ठीक समझता हूँ।

—हम लोग सुरक्षित नहीं हैं, जारविस। मैं यह भी नहीं कह सकता कि उन्हें पकड़ने से भी हम बचे रहेंगे। कभी-कभी तो मुझे यह लगता है कि बात हमारे काबू के बाहर हो गयी है।

—मैं जानता हूँ कि तुम्हारा क्या मतलब है, लेकिन मैं....शायद उस बारे में सोचने के लिए अभी बहुत जल्दी है।

—मैं भी जानता हूँ कि तुम्हारा क्या मतलब है। मैं समझता हूँ, कुछ-कुछ समझता हूँ, यह उस बात का वह पहलू नहीं है, जिसके बारे में तुम विशेष रूप से सोचते हो। मेरे साथ भी शायद यही बात ठीक हो। मैं वास्तव में नहीं जानता।

—जानता तो मैं भी नहीं हूँ। लेकिन तुम ठीक कह रहे हो। यह वह पहलू नहीं है, जो महत्वपूर्ण हो। कम-से-कम अभी नहीं। लेकिन मैं कुछ अनुभव करता हूँ कि दूसरा पहलू अवश्य है।

—हम लोग पुलीस के लिए ज़्यादा आन्दोलन करते रहे हैं, जारविस। कल पार्कवोल्ड में एक बहुत बड़ी आम सभा होनेवाली है। वहाँ के लोग इस घटना से बहुत उत्तेजित हो गये हैं और नाराज़ हैं। तुम्हें बताता हूँ, जारविस, कि नगर के बाहर की इन बस्तियों में शायद ही ऐसा कोई मकान-मालिक हो, जो यह पूरी तरह जानता है कि उसके मकान के नौकरों की कोठरियों में कौन-कौन रहता है। मैं तो कभी यह बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैंने तो अपने नौकरों से साफ कह दिया है कि वहाँ सोना तो दूर रहा, मकान के आस-पास भी मैं किसी अजनबी को फटकने नहीं दूँगा। हमारे यहाँ जो लड़की काम करती है, उसका पति कभी-कभी बिनानी या स्प्रिंग्स या जहाँ भी वह काम करता है, वहाँ से आता है, और क्योंकि वह उसे ढंग से लाती है, इसलिए मैंने उसे आज्ञा दे दी है। लेकिन और किसी को मैं यह आज्ञा नहीं देता।

अगर मैं इतनी हिफ़ाज़त न रखूँ या इतनी कड़ी निगरानी न रखूँ, तो मेरे सारे घर-भर में उन्हीं लोगों के निकम्मे चाचा-भाई-भतीजे घुस पड़ें।

—हाँ, मेरे ख़्याल से जोहैन्सबर्ग में यह होता रहता है।

—और मकानों के पीछे कूड़े के लिए यह जो गलियाँ हैं, हमने सरकार से अनुरोध किया है कि इन्हें बन्द करवा दे, क्योंकि अब नालियों का उचित प्रबन्ध हो गया है। यह गलियाँ अँधेरी और ख़तरनाक होती हैं और यह कमबख़्त लफंगे इन गलियों को छुपने के काम में लाते हैं। भगवान जाने इस देश की क्या दशा होनी है! मैं तो नहीं समझ पाता। मैं इन काले लोगों से नफ़रत नहीं करता, जारविस, मैं उन्हें हर उचित सुविधा देने का प्रयत्न करता हूँ, अच्छी तनख्वाह, साफ़ कमरा और उचित छुट्टियाँ। इसी लिए हमारे यहाँ नौकर बरसों टिकते हैं। लेकिन आम तौर पर देसी लोग क़ाबू के बाहर होते जा रहे हैं। उन्होंने ट्रेड यूनियनें भी शुरू कर दी हैं। तुम्हें इसका पता था?

—नहीं, मुझे यह नहीं मालूम था।

—हाँ, ऐसा कह रहे हैं वे लोग। वे लोग दस शिलिंग रोज़ मज़दूरी करवाने के लिए यहाँ की खानों में हड़ताल की धमकी दे रहे हैं। आजकल उन लोगों को एक प्राली का तीन शिलिंग मिलता है, अब तो कुछ खानें बन्द होने को हैं। वे बढ़िया बस्ती में रहते हैं, कुछ बिल्कुल आधुनिक ढंग की बस्तियों में, जिनमें रहने में मुझे स्वयं आपत्ति न होती। उन्हें अच्छा, सन्तुलित खाना मिलता है, जो उनके घर के खाने से कहीं अच्छा होता है। मुफ़्त इलाज, और न जाने कितनी और सुविधाएँ हैं। मैं तुमसे कहता हूँ, जारविस, कि अगर इन खानों पर खर्च और अधिक बढ़ा, तो वह-सब चौपट हो जायँगी। और फिर दक्षिणी अफ्रीका का क्या होगा? और इन काले आदमियों का ख़ुद क्या होगा? हज़ारों की तादाद में वे भी भूखे मर जायँगे।

जान ने अपने पिता के कमरे में घुसते हुए पूछा—मैंने आप लोगों की बातों में बाधा तो नहीं डाली?

—बैठ जाओ, जॉन,—हैरीसन ने कहा।

और जान बैठ गया और उसके पिता, जो बोलते-बोलते काफ़ी उत्तेजित हो गये थे, अपनी बात को समझाते हुए फिर बोले—और जो खेती करते हैं, उनका भी क्या होगा, जारविस? अपनी उपजें कहाँ बेचेंगे और कौन उसे ख़रीद सकेगा? न कोई सरकारी सहायता होगी और न कोई उद्योग ही रहेगा। उद्योग तो उन खानों पर ही निर्भर हैं, जो उनकी बनायी हुई चीजों को ख़रीदने के लिए धन पैदा करती हैं। और यह हमारी सरकार बहुत इतमीनान से हर साल खानों के मुनाफ़े का सत्तर प्रतिशत स्वयं हड़प लेती है। और खानें जब नहीं होंगी, तो उनका भी क्या

होगा ? देश के आधे अफ्रीकान बेकार हो जायँगे, सरकारी अफसरों की नौकरियाँ खत्म हो जायँगी, उनमें से आधे लोग भी बेकार हो जायँगे।

हैरीसन ने अपने और जारविस के गिलासों में थोड़ी-थोड़ी ह्विस्की और उँडेली और फिर उसी विषय पर बात जारी कर दी।

—मैं तुमसे कहता हूँ कि अगर यह खानें नहीं रहेंगी, तो पूरा दक्षिणी अफ्रीका खत्म हो जायगा। यहाँ से बोरिया-बधना समेटकर आप यह देश इन काली जातियों को लौटा देंगे। इसी लिए तो मुझे इतना क्रोध आता है। जब लोग खानों की आलोचना करते हैं, खास तौर से यह कि अफ्रीकान जाति के लोगों के दिमाग में यह बेवकूफी का ख्याल है कि मालिक विदेशी हैं, स्वार्थ के लिए यहाँ का खून चूस रहे हैं। और जब मुर्गी अंडे देना बन्द कर देगी, तो वे यहाँ से खिसक जायँगे। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि इन खानों के ज्यादातर हिस्से इसी देश में हैं। वे खानें हमारी खानें हैं। इन बातों से मैं परेशान हो जाता हूँ और थक जाता हूँ। हूँ-हूँ! प्रजातन्त्र! अगर यहाँ कभी भी प्रजातन्त्रात्मक शासन हुआ, तो हम लोगों का क्या होगा ?

—अच्छा, हैरीसन, मैं तो अब सोने चलता हूँ। मैं नहीं चाहता कि मार्गरेट अकेली सोने जाय।

—अरे, मुझे अफ़सोस है, मैं तो बातों में भूल ही गया था।

—इसमें अफ़सोस की कोई बात नहीं है। तुम्हारी बातें सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने खुद बहुत बातें नहीं कीं, वह इसलिए नहीं कि बातें करने में मुझे दिलचस्पी नहीं है। आशा है, तुम समझ जाओगे।

—नहीं, मुझे बहुत दुख है, बहुत दुख है!—हैरिसन ने बड़ी नम्रता से कहा—मैं अपने को बिल्कुल ही भूल गया था।

—विश्वास करो,—जारविस ने कहा—मैं वास्तव में सच कह रहा हूँ कि मुझे तुम्हारी बातों ने बहुत फायदा पहुँचाया है!—जारविस ने उन पिता और पुत्र की ओर देखा—मैं नहीं चाहता कि ज्यादा देर तक मृत्यु के ही बारे में बात करें।

हैरीसन ने जारविस की तरफ कुछ परेशानी से देखा—सच, तुमने मेरे भार को हल्का कर दिया।

और जारविस ने कहा—मैं यह चाहता था कि आज आर्थर यहाँ होता, और मैं उसकी तुमारे साथ बहस सुनता।

—तो आपको बहुत आनन्द मिलता, श्री जारविस!—उस व्यक्ति के बारे में बात करने के लिए, जिसे मरे अभी ज्यादा समय नहीं हुआ था, जान बहुत उत्सुकता से बोला—मैंने इन विषयों पर आज तक किसी को भी इतनी अच्छी तरह बहस करते हुए नहीं सुना।

—मैं उससे सहमत तो नहीं था,—हैरीसन बोले। उनकी परेशानी अब तक ख़त्म हो चुकी थी—लेकिन जो-कुछ वह कहता था, उसका मैं बहुत आदर करता था।

—वह अच्छा आदमी था, हैरीसन! मुझे इस बात का दुख नहीं है कि वह हमारा बेटा था। अच्छा, नमस्कार!

—नमस्कार, जारविस! कल रात तुम और मार्गरेट सो सके थे?

—हाँ, हम दोनों ही थोड़ा-थोड़ा सोये थे।

—आशा है, आज तुम लोग और अच्छी तरह सो सकोगे। यह न भूलना कि यह घर तुम्हारी सेवा के लिए है।

—धन्यवाद! नमस्कार! जान!

—जी, श्री जारविस।

—क्या क्लेयरमांट की ग्लेडियोलस स्ट्रीट में स्थित युवक क्लब को जानते हो?

—अच्छी तरह। वह हमारा ही क्लब तो है, आर्थर का और मेरा!

—मैं उसे देखना चाहूँगा। जब भी तुम्हें फ़ुर्सत हो।

—आपको वहाँ ले जाने में मुझे खुशी होगी, श्री जारविस! और, श्री जारविस.....

—हाँ, जान।

—मैं आपको यह भी बतलाना चाहता हूँ कि जब भी पिताजी अफ्रीकानेर लोगों का नाम लेते हैं, तो उनका मतलब राष्ट्रीय पार्टी के लोगों से ही होता है। आर्थर हमेशा उन्हें यही बताया करता था और पिताजी मान भी जाते थे। लेकिन शायद इन्हें यह बात ज्यादा देर तक याद नहीं रहती है।

जारविस मुस्करा दिये, पहले बेटे पर, फिर उसके पिता पर—हाँ, यह तो अच्छी बात है। अच्छा, नमस्कार हैरीसन, नमस्कार, जान!

दूसरे दिन सवेरे हैरीसन सीढ़ियों के नीचे खड़े हुए अपने अतिथि की प्रतीक्षा कर रहे थे।

—आओ, मेरे साथ ज़रा मेरे कमरे में चलो।

और कमरे में पहुँचकर हैरीसन ने दरवाजे बन्द कर लिये।

—पुलीस ने अभी टेलीफ़ोन किया है, जारविस। आर्थर के नौकर को आज सवेरे होश आ गया। वह कहता है कि अपराधी संख्या में तीन थे। वे अपने मुँह और नाक ढँके हुए थे, लेकिन उसे पूरा विश्वास है कि जिस व्यक्ति ने उसे मारकर बेहोश किया था, वह मेरी का एक पुराना माली था। किसी कारण से मेरी ने उसे निकाल दिया था। उसने उसे आँख मिचमिचाने के ढंग से पहचान लिया था। मेरी के यहाँ की नौकरी छोड़ने के बाद उसे डूर्नफ़ान्टेन के एक कपड़े के कार-

खाने में नौकरी मिल गयी थी। फिर बाद में उसने वह कारखाना भी छोड़ दिया था। और किसी को नहीं मालूम कि उसके बाद वह फिर कहाँ गया था। लेकिन पुलीस को एक ऐसे व्यक्ति का पता चल गया है, जिसकी उससे बहुत दोस्ती थी। वे लोग उसी के पीछे लगे हैं, ताकि उन्हें उस माली का पता मिल जाय। लगता है कि पुलीस काफी तेज़ी से काम कर रही है।

—ऐसा ही मालूम पड़ता है।

—और यह रही, 'भूल जातियों के अपराधों' पर आर्थर के लिखे हुए लेख की पांडुलिपि। मैं इसे यहाँ मेज़ पर ही छोड़ दूँ, ताकि नाश्ते के बाद तुम इसे शान्ति-पूर्वक पढ़ सको?

—धन्यवाद! छोड़ दीजिए।

—आपको रात नींद कैसी आयी? और मार्गरेट को?

—वह गहरी नींद सोयी, हैरिसन, उसे इसकी ज़रूरत थी!

—यह तो है ही। अच्छा, आइए नाश्ता करने।

नाश्ते के बाद जारविस हैरिसन के कमरे में लौट आये और उन्होंने अपने बेटे का लेख पढ़ना शुरू कर दिया। सबसे पहले उन्होंने लेख का अन्तिम पृष्ट उलटा, जिसका अन्तिम अपूर्ण अंश पढ़कर उन्हें असीम पीड़ा हुई। यह उनके बेटे का लगभग अन्तिम काम था। जब वह यह लिख रहा होगा, तब जीवित होगा। और उसी क्षण, जब कि इसका अन्तिम, अधूरा वाक्य हवा में रहा होगा, वह उठ पड़ा होगा और सीढ़ियों से अपने अन्तिम क्षण के लिए उतरा होगा। काश, उस वक्त कोई यह चिल्ला पड़ता, नीचे मत जाओ! काश, कोई उस समय कह देता, रुक जाओ, आगे खतरा है! लेकिन चिल्लाने के लिए कोई भी नहीं था। तब किसी को वह नहीं मालूम था, जो हमें अब मालूम है। लेकिन इन विचारों से क्या लाभ? कोरी कल्पना करने की जारविस की आदत नहीं थी। इस बात की कल्पना करने से क्या लाभ कि अगर कोई वहाँ रहा होता, तो वह-सब न हुआ होता, जो बाद को हुआ। पीड़ा के कारण ही यह व्यर्थ के ख़्याल दिमाग़ में आते हैं। वह अपने लड़के को समझाना चाहते थे, वह उस चीज़ की इच्छा अब नहीं कर सकते थे, जो अब इच्छा करने से अप्राप्य थी। इसलिए उन्होंने अपने-आपको अन्तिम पृष्ठ का अन्तिम पैरा-ग्राफ़ पढ़ने में लगा दिया, आहिस्ता आहिस्ता, दिमाग से पढ़ने की कोशिश करने लगे, ताकि वह उसे ठीक से समझ सकें, दिल से पढ़ने की नहीं:

सत्य तो यह है कि हमारी इसाई सभ्यता आज बुरी तरह उलझन में फँसी हुई है। हम मानवमात्र के बन्धुत्व में आस्था रखते हैं, लेकिन ऐसा हम दक्षिणी अफ़्रीका में नहीं चाहते। हम विश्वास करते हैं कि भगवान ने मनुष्यों को भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतिभाएँ प्रदान की हैं और मनुष्य के जीवन की सम्पूर्णता इसमें है कि वह उस

प्रतिभा को पूरी तरह काम में लाये और उसका सुख भोगे, लेकिन अपने इस विश्वास को ज़्यादा दूर तक ले जाते हुए हम डरते हैं। शोषित वर्ग की सहायता करने में हमारा विश्वास तो है, लेकिन हम चाहते हैं कि यह वर्ग हमेशा दबा रहे और इसी लिए अपने विश्वास को कायम रखने के लिए कि हम सच्चे इसाई हैं, हम उस सर्वशक्तिमान भगवान को, जो धरती और स्वर्ग का स्रष्टा है, अपने कर्मों का निर्देशक बताते हैं और चूँकि उसी ने काले और गोरे बनाये हैं, इसलिए दैवी इच्छाओं के अनुसार ही हम काली जातियों को आगे बढ़ने से रोकते हैं। और हम तो यहाँ तक कहते हैं कि उसी सर्वशक्तिमान् भगवान ने काली जातियों को गोरी जातियों का पानी भरने और लकड़ी काटने के लिए बनाया है। और यह कि उसी की इच्छाओं और आज्ञा के अनुसार हम काली जातियों को उनकी मूल प्रतिभाओं से लाभ उठाने से रोकते हैं, वह प्रतिभाएँ, जो उन्हें उसी भगवान् ने प्रदान की हैं। और इसी तर्क के साथ-साथ हम अपनी दमन की नीति को सही साबित करने के लिए नितान्त असंगत तर्क पेश करते हैं। हम कहते हैं कि हम उन मूल जातियों को शिक्षा इसलिए नहीं देना चाहते कि उनके बच्चों में उस शिक्षा से कुछ सीखने या लाभ उठाने की बुद्धि नहीं है। हम उनकी प्रतिभाओं को फलने-फूलने का अवसर इसलिए नहीं देते, क्योंकि प्रतिभा उनके पास है ही नहीं। हम अपने इस काम को इस तर्क से सही सिद्ध करना चाहते हैं कि सभ्यता के इस शिखर तक पहुँचने में हमें हज़ारों वर्ष लगे हैं, और यह सोचना मूर्खता होगी कि काला आदमी इससे कम समय लेगा, और इसलिए जल्दी की कोई आवश्यकता नहीं है! और हम अपनी बात फिर पलट देते हैं, जब काली जाति का कोई व्यक्ति कोई महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है और हम उस व्यक्ति के अकेलेपन पर तरस खाते हैं और निश्चय कर लेते हैं कि उसे सफल न होने देना ईसाइयों की-सी दया के काम हैं। इस प्रकार हमारा भगवान भी अजीब गड़बड़ और असंगत जीव हो जाता है, जो लोगों को प्रतिभा तो देता है, लेकिन उसका उपयोग वंचित कर देता है। इसलिए क्या यह अजीब बात है, कि आज हमारी सभ्यता एक बेतरह उलझन में फँसी हुई है? सच तो यह है कि हमारी सभ्यता इसाई सभ्यता नहीं है। हमारी सभ्यता ऊँचे आदर्शों और उनके भयावह प्रयोग का दुखद मिश्रण है, ऊँचे विश्वासों का और दम तोड़नेवाली चिन्ताओं का, स्नेह-पूर्ण दया का और ज़बरदस्त स्वार्थ का। मुझे चन्द मिनट दीजिए कि....

जारविस बैठे थे। वह काफ़ी विचलित हो उठे थे। इसलिए कि यह उनके बेटे का लेख था, या यह उनके बेटे का आख़िरी काम था, यह वह नहीं कह सकते थे, या उन शब्दों में कोई गुण था, यह भी वह नहीं बता सकते थे, क्योंकि अपने जीवन में वह शब्दों के या भाषा के पारखी नहीं रहे थे और उनसे आनन्द पाने, उठाने, लूटने का

उन्होंने कमी प्रयत्न नहीं किया था। और वह यह भी नहीं कह सकते थे कि लेख में के उन विचारों में भी ऐसी कोई शक्ति है, क्योंकि उन्होंने कभी इन बातों पर अपने जीवन में ध्यान नहीं दिया था। वह उठे और सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर अपने कमरे में गये और प्रसन्न हुए कि कमरे में उनकी पत्नी नहीं थीं, क्योंकि वह यह नहीं चाहते थे कि उनकी यह विचार-धारा टूट जाय। एब्राहम लिंकन की पुस्तक उन्होंने उठा ली और फिर हैरीसन के अध्ययन के कमरे में पहुँच गये। अमरीका के उस महान राष्ट्र-पति का दूसरा उद्घाटन भाषण उन्होंने किताब में से खोलकर निकाला और उसे पढ़ डाला। और एकाएक उन्हें यह लगा कि उनकी आत्मा का उत्थान हो रहा है, उनके सामने रहस्य खुल रहा है, उन्हें मार्ग मिल गया है। वह धीरे-धीरे उस अज-नबी को और ज्यादा समझ रहे थे। अब उनकी समझ में आना शुरू हुआ कि उनके बेटे के कमरे में इस व्यक्ति का चित्र क्यों लगा हुआ था, क्यों इतनी पुस्तकें थीं।

फिर उन्होंने लेख का अन्तिम पृष्ठ उठा लिया—अपने बेटे के लिए, शब्दों और विचारों को समझने के लिए नहीं। और उन्होंने उस अधूरे वाक्य को फिर देखा :

मुझे चन्द मिनट दीजिए....

और इसके आगे कुछ नहीं। वह उँगलियाँ अब फिर कभी कुछ नहीं लिखेंगी। मुझे चन्द मिनट दीजिए, नीचे रसोई में आवाज़ सुनायी पड़ रही है....मुझे चन्द मिनट दीजिए, मैं अपनी मृत्यु का सामना करने जा रहा हूँ....मुझे अनगिनत मिनट दीजिए, क्योंकि अब मैं लौटकर फिर कभी नहीं आऊँगा....

दिमाग पर छाते हुए विचारों को जैसे जारविस ने सिर हिलाकर हटा दिया और अपना पाइप सुलगा लिया। सारा लेख दुबारा पढ़ डालने के बाद वह फिर ध्यानमग्न हो पाइप पीते रहे।

—जेम्स !

वह चौक पड़े—हाँ, प्रिये !

—तुम अकेले मत बैठा करो,—उनकी पत्नी ने कहा।

वह हँस दिये—ज़्यादा चिन्तन करने की तो मेरी आदत नहीं है।

—तब फिर तुम क्या कर रहे थे ?

—सोच रहा था, चिन्ता में घुल थोड़े ही रहा था। सोच रहा था और पढ़ रहा था। यह पढ़ रहा था मैं....

मार्गरेट ने लेख हाथ में लिया, औह उसे देखा और सीने से लगा लिया।

हल्के-से जारविस बोले—इसे पढ़ना, यह पढ़ने-योग्य है !

मार्गरेट लेख पढ़ने बैठ गयीं। जारविस यह देख रहे थे, वह जानते थे कि

उनकी पत्नी ऐसा ही करेंगी। और वह अन्तिम पृष्ठ पर पहुँच गयीं, अन्तिम शब्दों तक पहुँच गयीं....मुझे चन्द मिनट दीजिए....कि वह उन शब्दों की ओर देखती रहीं। उन्होंने अपने पति की ओर देखा, वह बोलना चाहती थीं, जारविस समझ गये। पीड़ा इतनी जल्दी ख़त्म नहीं होती!

कचहरी के सिरे पर एक ऊँची कुर्सी है, जिसपर जज बैठता है। उसके नीचे कचहरी के अफ़सरों की मेज़ है और उस मेज़ के दायें-बायें कुछ और कुर्सियाँ हैं। इनमें से कुछ कुर्सियों से एक दायरा-सा बन जाता है, जिसके अन्दर जूरी के बैठने की जगह है, जहाँ आवश्यकता पड़ने पर जूरी बैठती है। मेज़ के सामने और भी कुर्सियाँ हैं, जो छोटे-छोटे गोल घेरों में पड़ी हुई हैं और इन गोलाई में पड़ी हुई कुर्सियों के सामने गोलाकार मेजें हैं, और इनपर वकील बैठते हैं। इनके पीछे कटघरा है, जहाँ से एक रास्ता एक ऐसे स्थान को जाता है, जो ज़मीन के अन्दर है और और उस स्थान से, जो ज़मीन के नीचे है, वे लोग लाये जाते हैं, जिनका न्याय करना होता है। और कचहरी के पीछे गैलरी में कुर्सियाँ लगी हैं, जहाँ प्रथा के अनुसार दायें हाथ को यूरोपियन दर्शक बैठते हैं और बायें हाथ को वे, जो यूरोपियन नहीं हैं।

आप कचहरी में सिगरेट नहीं पी सकते, न आप फुसफुसा सकते हैं, न हँस सकते हैं, न बात कर सकते हैं। अच्छे कपड़े पहनकर आना आवश्यक है, और यदि आप पुरुष हैं, तो आप अन्दर हैट नहीं लगा सकते, जब तक कि आप किसी ऐसे धर्म के न हों, जिसमें हैट लगाना आवश्यक माना जाता हो। यह राजा के सम्मान के लिए है और उस जज के सम्मान के लिए, जो उस राजा-द्वारा नियुक्त किया हुआ अधिकारी है, और जज में स्थापित न्याय के सम्मान के लिए और उन लोगों के सम्मान के लिए, जिनपर न्याय निर्भर करता है। जब जज प्रवेश करें तो आप खड़े हो जायँ और आप तब तक न बैठें, जब तक जज न बैठ जायँ। जब जज कचहरी से उठें, तब आप खड़े हो जायँ और जज के बाहर चले जाने तक आप कचहरी के कमरे से हिल नहीं सकते। यह सब जज के सम्मान के लिए है, और उन तमाम चीज़ों के सम्मान के लिए, जो उस जज के पीछे होती हैं।

जज को एक महान कर्त्तव्य सौंपा गया है, न्याय करना और दण्ड देना, मौत तक का दण्ड। इस ऊँचे पद के कारण जजों को 'माननीय' कहा जाता है और बड़े उत्सवों या अवसरों पर उनका स्थान अन्य अधिकारियों से आगे होता है। और काले और गोरे हर वर्ग के आदमी जज का आदर करते हैं। क्योंकि देश-भर में भय का राज्य है, इसलिए जज को निर्भय होना चाहिए, ताकि न्याय के अनुसार विचार हो सके। इसी कारण जज को प्रलोभनों में न आनेवाला होना चाहिए।

कानून जज नहीं बनाता है, कानून लोग बनाते हैं। यदि कानून अन्यायपूर्ण

है और जज कानून के अनुसार ही न्याय करता है, तो वह न्यायानुकूल विचार करता है, चाहे वह उचित न भी हो।

न्याय करना न्यायाधीश का कर्त्तव्य है। लेकिन जो कानून करता है, केवल वही न्यायपूर्ण हो सकता है। इसलिए अगर जज के किये हुए निर्णय में न्याय नहीं है, तो उसमें जज का कोई दोष नहीं है, दोष लोगों का है, याने गोरे लोगों का, क्योंकि क़ानून गोरे लोग ही बनाते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका को अपने न्यायाधीशों पर गर्व है, क्योंकि लोगों का विश्वास है कि वे प्रलोभनों से रहित हैं। यहाँ तक कि काले आदमियों को भी उनपर विश्वास है, यद्यपि कानून पर हमेशा उनका विश्वास नहीं होता है। भय से भरे हुए इस देश में जज की यह सच्चरित्रता, यह शक्ति उस रोशनी की तरह है, जो एक खम्भे पर लगी हुई है और घर के सब लोगों को प्रकाश देती रहती है।

*

कचहरी में ख़ामोश रहने की आवाज़ आती है, और लोग खड़े हो जाते हैं। अगर वहाँ कोई ऐसा व्यक्ति है, जो पद में जज से भी बड़ा है, तो उसको भी इस समय खड़ा होना पड़ता है, क्योंकि जज के पीछे ऐसी शक्तियाँ हैं, जो किसी भी व्यक्ति से बड़ी हैं।

जज अपने दो सहायकों के साथ कमरे में घुसे और वे तीनों अपने-अपने स्थानों पर बैठ गये। और बाकी लोग भी बैठ गये। कचहरी शुरू हो गयी।

जमीन के नीचे जो स्थान है, वहाँ से वे तीन व्यक्ति भी लाये गये, जिनका न्याय किया जाने वाला था और सब लोग उनकी तरफ़ देखने लगे। कुछ लोगों ने सोचा कि वे ख़ूनी लगते हैं, उन्होंने धीरे से यह कहा भी, यद्यपि धीमे बात करना भी भय-प्रद है। कुछ ने सोचा कि वे खूनी नहीं लगते। और कुछ ने सोचे कि यह तो ख़ूनी लगता है, लेकिन वह नहीं लगता।

एक गोरा व्यक्ति खड़ा हुआ और बोला कि यह तीनों मंगलवार, ८ अक्तूबर, १९४६ की दोपहर को प्लान्टेशन रोड, पार्कवोल्ड, जोहैन्सबर्ग निवासी, आर्थर ट्रिवीलयन जारविस की हत्या के अभियुक्त हैं। पहला एबसेलाम कुमालो है, दूसरा मैथ्यू कुमालो और तीसरा जोहैन्स पफ़ूरी है। उन तीनों से बारी-बारी से पूछा गया।

—तुमने अपराध किया या नहीं ?

और पहले ने कहा—मैं हत्या का अपराध स्वीकार करता हूँ, लेकिन हत्या करने का मेरा इरादा नहीं था।

दूसरे ने कहा—मैं अपराधी नहीं हूँ।

और तीसरे ने भी उसी प्रकार कहा।

हर चीज़ अंग्रेज़ी और ज़ुलू में कही गयी, ताकि तीनों ठीक से समझ लें। यद्यपि पफ़ूरी ज़ुलू नहीं था, लेकिन वह कहता था कि वह यह भाषा अच्छी तरह समझ लेता है।

वह अंग्रेज़ वकील, जिसने यह मुक़दमा केवल धर्मार्थ लिया था, बोला—एबसेलाम कुमालो गोली चलाने के अपराध को तो स्वीकार करता है, लेकिन खून के जुर्म को नहीं, क्योंकि उसका हत्या का कोई इरादा था ही नहीं।

लेकिन सरकारी वकील ने कहा—गोली चलाने का अभियोग तो लगाया ही नहीं गया है। अपराधी पर हत्या का, केवल हत्या का ही, अभियोग लगाया गया है। इसलिए और दूसरे दो अपराधियों की तरह एबसेलाम कुमालो का भी कहना है कि उसने अपराध नहीं किया!

इसके बाद सरकारी वकील बहुत देर तक बोलते रहे और उन्होंने न्यायालय को अपराध की पूरी कहानी बतायी। एबसेलाम कुमालो बराबर चुपचाप रहा, मगर अन्य दोनों यह सोचकर हक्के-बक्के और दुखित थे कि ऐसी-ऐसी बातें कही जा रही हैं।

*

—तो यह योजना बन जाने पर तुमने अक्तूबर का आठवाँ दिन निश्चित किया?

—ठीक है।

—यह दिन तुमने क्यों चुना?

—क्योंकि जोहैन्स ने कहा कि घर में कोई भी नहीं होगा।

—यही जोहैन्स पफ़ूरी?

—यही जोहैन्स पफ़ूरी, जो मेरे साथ अभियुक्त है।

—और तुमने डेढ़ बजे का समय चुना?

—जी, हाँ।

—लेकिन क्या यह बुरा समय नहीं चुना गया था? गोरे लोग इस समय खाना खाने घर आते हैं।

अभियुक्त ने कोई उत्तर नहीं दिया।

—तुमने यह समय क्यों चुना?

—जोहैन्स ने यह समय निश्चित किया था। उसने कहा था कि यह बात उसे एक आवाज़ ने बतायी थी।

—कैसी आवाज़?

—यह तो मैं नहीं जानता।

—कोई बुरी आवाज़?

और फिर उत्तर नहीं मिला।

—तो तब तुम तीनों मकान के पिछले दरवाज़े की तरफ़ गये ?

—जी।

—तुम और ये दोनों, जो तुम्हारे साथ अभियुक्त हैं ?

—मैं और यही दोनों।

—और तब ?

—तब हमने अपने चेहरों पर रूमाल बाँध लिये।

—और तब ?

—तब हम रसोई में गये।

—वहाँ कौन था ?

—उस घर का नौकर था।

—रिचर्ड पाइरिंग ?

—नहीं, मैं उसका नाम नहीं जानता।

—यह वही आदमी है ?

—जी, हाँ, यही वह आदमी है।

—फिर क्या हुआ ? अदालत को बताओ कि उसके बाद क्या हुआ ?

—यह आदमी डर गया था। इसने मेरा रिवालवर देख लिया था। वह उस टंकी से सटकर खड़ा रहा, जहाँ वह काम कर रहा था। उसने पूछा, तुम क्या चाहते हो ? जोहैन्स ने कहा, हम रुपया और कपड़े चाहते हैं। इस आदमी ने कहा, तुम ऐसा नहीं कर सकते। जोहैन्स ने कहा, क्या तुम मरना चाहते हो ? यह आदमी डर गया था, कुछ नहीं बोला। जोहैन्स फिर बोला, जब मैं बोलता हूँ, तो लोग काँप उठते हैं। तब फिर वह बोला, क्या तुम मरना चाहते हो ? यह आदमी फिर कुछ नहीं बोला, लेकिन फिर एकदम से चिल्ला पड़ा, मालिक ! मालिक !... तब जोहैन्स ने उस लोहे की छड़ से, जो वह पीछे छुपाये हुए था, उसके सर पर वार किया।

—कितनी बार उसने मारा ?

—एक ही बार।

—इसके बाद वह फिर चिल्लाया ?

—नहीं।

—तुमने क्या किया ?

—हम लोग चुप रहे। जोहैन्स ने कहा कि हमें ख़ामोश ही रहना चाहिए।

—तुमने क्या किया ? क्या तुम सुन रहे थे ?

—हम सुन रहे थे।

—तुम लोगों को कुछ सुनायी पड़ा ?

—हमें कुछ नहीं सुनायी पड़ा।

—तुम्हारा रिवालवर कहाँ था ?

—मेरे हाथ में।

—और तब ?

—तब एक अंग्रेज़ सीढ़ियों और रसोई के बीच के रास्ते में आ गया।

—फिर ?

—मैं डर गया और मैंने गोली चला दी।

—और उसके बाद ?

अभियुक्त की आँखें फ़र्श की तरफ झुक गयीं। वह बोला—अंग्रेज़ गिर पड़ा।

—फिर ?

—जोहैन्स ने कहा, जल्दी हम लोगों को भाग जाना चाहिए। इसलिए हम लोग जल्दी वहाँ से भाग निकले।

—पिछले दरवाज़े की तरफ़ ?

—जी।

—और फिर सड़क पार करके बगान में घुस गये ?

—जी।

—क्या तुम तीनों साथ ही रहे ?

—नहीं, मैं अकेला था।

—फिर तुम इन लोगों से कब मिले ?

—श्रीमती काइज के मकान पर।

यहाँ जज ने सरकारी वकील को रोका—आप कुछ देर बाद सवाल पूछ लीजिएगा। मुझे भी पहले अभियुक्त से एक-दो सवाल पूछने हैं।

—माननीय महोदय की जैसी इच्छा हो !

और जज ने एबसेलाम से पूछा—तुम साथ में वह रिवालवर क्यों लिये हुए थे ?

—घर के नौकर को डराने के लिए।

—लेकिन तुम रिवालवर रखते ही क्यों थे ?

लड़का चुप।

—तुम्हें मेरे प्रश्न का उत्तर देना होगा !

—उन्होंने मुझसे साथ रखने को कहा था।

—किन्होंने कहा था ?

—नहीं, उन्होंने मुझसे कहा था कि जोहैन्सबर्ग खतरनाक शहर है।

—उन्होंने कौन ?

लड़का चुप।

—तुम्हारा मतलब ऐसे आदमियों से है, जो चोरी करते हैं, डाका डालते हैं?

—नहीं, ऐसे आदमियों से मेरा मतलब नहीं है।

—तो फिर तुमसे किसने कहा था?

—मुझे याद नहीं। मुझसे यह बात किसी ऐसी जगह कही गयी थी, जहाँ मैं कभी था।

—तो तुम्हारा मतलब यह है कि तुम-सब उस जगह बैठे थे और किसी आदमी ने यह कहा था कि जोहैन्सबर्ग में रिवालवर साथ रखना चाहिए, यह खतरनाक जगह है?

—जी, मेरा यही मतलब है।

—और तुम्हें यह पता था कि रिवालवर में गोलियाँ भरी हुई हैं?

—जी, मुझे मालूम था।

—अगर यह रिवालवर सिर्फ डराने ही के लिए था, तो इसमे गोलियाँ क्यों भरी हुई थीं?

लड़का चुप।

—तो तुम गोली चलाने के लिए भी तैयार थे?

—नहीं, मैं किसी शरीफ़ आदमी को गोली नहीं मारना चाहता था। मगर कोई मेरे ऊपर गोली चलाता, तो मैं उसपर गोली चलाता।

—अगर कोई पुलीसवाला कर्त्तव्यपालन के लिए तुम पर गोली चलाता, तो उसपर गोली चलाते?

—नहीं, पुलीसवाले पर नहीं।

जज रुक गये। सब शान्त थे। तब वह गम्भीरता से बोले—और यह अंग्रेज़, जिसपर तुमने गोली चलायी, क्या शरीफ़ आदमी नहीं थे?

अपराधी की आँखें फिर फ़र्श की तरफ़ झुक गयीं और धीमी आवाज़ में बोला—मैं डर गया था, मैं डर गया था। उनको मारने का मेरा बिल्कुल इरादा नहीं था।

—तुम्हें यह रिवालवर कहाँ मिला?

—मैंने इसे एक आदमी से खरीदा था।

—कहाँ?

—एलेक्ज़ैन्डरा में।

—कौन है वह आदमी? उसका क्या नाम है?

—मुझे उसका नाम नहीं मालूम।

—वह कहाँ रहता है?

—मैं नहीं जानता।

—तुम उसे ढूँढ़ सकते हो?

—मैं उसे ढूँढ़ने की कोशिश कर सकता हूँ।

—तब इस रिवालवर में गोलियाँ भरी हुई थीं, जब तुमने इसे खरीदा था?

—इसमें दो गोलियाँ थीं।

—जब तुम इस मकान में गये थे, तब उसमें कितनी गोलियाँ थीं?

—एक गोली थी।

—दूसरी गोली क्या हुई?

—मैं रिवालवर लेकर एलेक्ज़ैन्डरा के पार पहाड़ियों पर बगानों में गया था, और वहाँ गोली चलायी थी।

—तुमने किस चीज़ पर गोली चलायी थी?

—एक पेड़ पर।

—तुमने उस पेड़ पर गोली मारी?

—जी।

—तब तुमने सोचा कि अब मैं रिवालवर चला सकता हूँ?

—जी, हाँ।

—लोहे की सलाख कौन लिये हुए था?

—जोहैन्स!

—तुम यह जानते थे कि छड़ उसके पास है?

—मैं यह जानता था।

—तुम यह जानते थे कि यह एक ख़तरनाक हथियार है? इससे आदमी मर सकता है?

लड़के की आवाज़ ऊँची उठ गयी—यह पीटने या हत्या करने के काम के लिए नहीं थी, धमकाने के लिए ही थी।

—लेकिन डराने-धमकाने के लिए तो तुम्हारे पास रिवालवर था?

—जी, लेकिन जोहैन्स ने कहा कि वह छड़ ले चलेगा। उसने कहा कि यह शुभ है।

—क्या माने?

—उसने यही कहा था।

—शुभ कहने से जोहैन्स का क्या मतलब था?

—मैं नहीं जानता।

—क्या उसका मतलब यह था कि किसी पादरी ने उस छड़ को आशीर्वाद दिया था?

—मैं नहीं जानता।

—तुमने पूछा नहीं?

—नहीं।

—तुम्हारे पिता पादरी हैं ?

लड़के ने फिर फ़र्श की तरफ़ देखा और धीमी आवाज़ में उत्तर दिया—जी।

—क्या वह ऐसी छुड़ को आशीर्वाद देंगे ?

—नहीं।

—तुमने जोहैन्स से यह नहीं कहा कि वह इस छुड़ को साथ न ले चले ?

—नहीं।

—तुमने उससे यह नहीं कहा कि ऐसी चीज़ को आशीर्वाद कैसे मिल सकता है ?

—नहीं।

—सरकारी वकील महोदय, अब आप प्रश्न कर सकते हैं !—जज ने सरकारी वकील से कहा।

*

—और अगर तुम्हारे दोनों साथी यह कहें कि श्रीमती काइज़ के घर पर हत्या या चोरी की कोई बात नहीं हुई, तो क्या वह झूठ बोलेंगे ?

—जी।

—और अगर वे लोग यह कहें कि श्रीमती काइज़ के घर पर उनसे मिल चुकने के बाद तुमने यह कहानी गढ़ी, तो क्या वह झूठ कहेंगे ?

—जी, वे झूठ कहेंगे।

—और अगर श्रीमती काइज़ कहें कि उनकी मौजूदगी में हत्या की कोई बात नहीं हुई, तो क्या वह भी झूठ बोलेंगी ?

—वह झूठ बोलेंगी। वह डर गयी थीं और उन्होंने कहा था कि हम उनका मकान फौरन छोड़ दें और फिर कभी वहाँ न जायँ।

—क्या तुम लोगों ने वह मकान एक साथ छोड़ा था ?

—नहीं, पहले मैंने छोड़ा था।

—और तुम कहाँ गये थे ?

—मैं एक बगान में गया था।

—और तुमने वहाँ क्या किया था ?

—मैंने रिवालवर गाड़ दिया था।

—क्या यही वह रिवालवर है, जो इस वक्त अदालत के सामने है ?

वह रिवालवर अभियुक्त को दिया गया और उसने ग़ौर से देखा।

—यह वही रिवालवर है।

—यह कैसे मिला ?

—मैंने पुलीस को बता दिया था कि कहाँ मिलेगा।

—उसके बाद तुमने क्या किया ?

—मैंने वहाँ प्रार्थना की।

लगा कि क्षण-भर के लिए सरकारी वकील धक्-से रह गये।

लेकिन जज ने कहा—किस बात के लिए तुमने प्रार्थना की ?

—मैंने क्षमा के लिए प्रार्थना की।

—और तुमने क्या प्रार्थना की ?

—नहीं, ऐसी कोई विशेष बात नहीं थी, जिसके लिए मैं प्रार्थना करना चाहता था।

*

—और दूसरे दिन तुम पैदल जोहैन्सबर्ग वापस लौटे ?

—हाँ।

—और तुम फिर उन लोगों के साथ चले, जो बसों का बायकाट कर रहे थे ?

—हाँ।

—क्या वे इस हत्या के बारे में तब भी बातें कर रहे थे ?

—वे तब भी बातें कर रहे थे। कुछ लोग कह रहे थे कि उन्होंने सुना है कि खूनी का पता जल्दी ही लग जायगा।

—और तब ?

—मैं डर गया।

—तो तुमने क्या किया ?

—उस रोज रात को मैं जर्मिस्टन गया।

—लेकिन दिन में तुमने क्या किया ? क्या तुम फिर छुप गये ?

—नहीं, मैंने एक कमीज खरीदी और उसका बन्डल लिये मैं घूमता रहा।

—तुमने ऐसा क्यों किया ?

—मैंने ऐसा इसलिए किया कि लोग यह समझें कि मैं कोई सन्देश पहुँचाने-वाला आदमी हूँ।

—तुमने कुछ और भी किया ?

—और कुछ नहीं।

—तब तुम जर्मिस्टन गये ? किस जगह ?

—लोरेंशन में १२ मसेरू स्ट्रीट जोसेफ़ मेंगू के मकान पर।

—फिर ?

—मैं वहीं पर था कि पुलीस आ गयी।

—तब क्या हुआ ?

—उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं ही एबसेलाम कुमालो हूँ ? और मैंने, हाँ, कह दिया। मैं डर गया था। मैंने सोचा था कि उसी दिन जाकर मैं पुलीस के सामने अपना अपराध स्वीकार कर लूँ। लेकिन अब मैं देखता हूँ कि मूर्खतावश मैंने देर कर दी थी।

—उन्होंने तुम्हें गिरफ़्तार कर लिया ?

—नहीं। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं बता सकता हूँ कि जोहैन्स कहाँ मिलेगा ? मैंने कहा, नहीं, मुझे पता नहीं है, लेकिन जोहैन्स ने नहीं, मैंने ही अंग्रेज की हत्या की है। जोहैन्स ने तो नौकर को मारा था। और मैंने उन्हें बता दिया कि मैथ्यू भी हमारे साथ था। और मैंने उन्हें यह भी कहा कि मैं उन्हें वह जगह दिखा दूँगा, जहाँ मैंने रिवालवर छुपाया है। मैंने उन्हें यह भी बताया कि मैं उसी दिन अपने अपराध को स्वीकार करने आनेवाला था, लेकिन डर के कारण मैंने देर करने की मूर्खता की थी।

—और तब तुमने जोहैन्सबर्ग के अतिरिक्त मैजिस्ट्रेट, एन्ड्रीज़ कोएतज़ी साहब, के सामने अपना बयान दिया ?

—मुझे उनका नाम नहीं मालूम।

—क्या यही वह बयान है ?

बयान लड़के को दिया गया। उसने देखकर कहा—हाँ, यही बयान है।

—हर शब्द सही है ?

—हर शब्द सही है।

—इसमें कुछ भी झूठ नहीं है ?

—इसमें कुछ झूठ नहीं है। मैंने अपने-आपसे यह कहा था कि अब कभी मैं झूठ नही बोलूँगा और न कोई ऐसा काम करूँगा, जो बुरा हो।

—तो वास्तव में तुमने पश्चात्ताप किया ?

—हाँ, मैंने पश्चात्ताप किया।

—क्योंकि तुम संकट में थे ?

—हाँ, क्योंकि मैं संकट में था।

—क्या पछताने का कोई और भी कारण था ?

—नहीं, पछताने का कोई और कारण नहीं था।

जब अदालत उठी, और जज और उसके साथवाले असेसर चलने लगे, तो लोग खड़े हो गये। और उसके बाद वह उन दरवाजों से चले गये, जो गोलाई में पड़ी हुई कुर्सियों के पीछे था। रिवाज के अनुसार यूरोपियन अपनी तरफ के द्वार से और जो यूरोपियन नहीं थे, वे अपने द्वार से निकल गये।

कुमालो और सिमांगु, गर्टरूड और श्रीमती लिथेबी साथ-साथ बाहर निकले और उन्होंने लोगों को यह कहते सुना कि वह उस अंग्रेज के पिता हैं, जिसकी हत्या हुई थी। और कुमालो ने देखा कि वह सच है।....वह रहे उस व्यक्ति के पिता, जिसकी हत्या हुई थी! इन्हीं के खेत इन्डाटशेनी के पास के पहाड़ के ऊपर हैं। इन्हीं को कुमालो ने अक्सर घोड़े पर बैठे हुए अपने गिरजे के पास से जाते हुए देखा था। और कुमालो काँपने लगे और फिर उस व्यक्ति की तरफ उन्होंने नहीं देखा। ऐसे व्यक्ति की ओर कोई कैसे देखे?

(६)

पार्कवोल्ड के आर्थर की हत्या के अभियुक्तों के मुकदमे की ओर लोग कम ध्यान दे रहे हैं। क्योंकि इसी समय सोने का पता लगा है, और अधिक सोने का, अच्छे सोने का! आरेन्ज फ्री स्टेट नामक प्रान्त में एक छोटी-सी जगह है, ओडेन-डाल्सरस्ट! कल तक वह बिल्कुल अज्ञात था, आज वह दुनिया की मशहूर जगहों में से है।

यह सोना वैसा ही अच्छा है, जैसा दक्षिणी अफ्रीका में निकलता है, जोहैन्सबर्ग की किसी भी चीज़ के समान अच्छा। लोग यह भविष्यवाणी कर रहे हैं कि वहाँ एक नया जोहैन्सबर्ग खड़ा होगा, ऊँचे-ऊँचे मकानों और चलती सड़कों का एक नया नगर। वे लोग, जो इस आशंका से चिन्तित थे कि जोहैन्सबर्ग का सोना सदा चलता रहेगा, वे खुश और उत्तेजित हैं। एक नयी ज़िन्दगी, वे कहते हैं, दक्षिणी अफ्रीका को एक नया जीवन मिला है।

जोहैन्सबर्ग में हलचल है। सट्टे के बाजार में लोग पागल हो गये हैं। वे चीखते हैं, चिल्लाते हैं, अपने हैट हवा में उछालते हैं, क्योंकि वे हिस्से, जो कभी उन्होंने आशा पर ही खरीदे थे, उन खानों के हिस्से, जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं था, उन्हीं शेयरों की कीमत अब उनकी आशाओं से भी ज्यादा ऊँची चढ़ी जा रही है।

पहले वहाँ कुछ भी नहीं था, बस आरेन्ज फ्री स्टेट के फैले हुए विस्तृत घास के मैदान थे, जानवर थे और भेड़ें थीं और काले चरवाहे थे। बस, घास और कुछ झाड़ियाँ थीं, और कहीं-कहीं पर मक्के के खेत। खान-जैसी किसी चीज का कोई चिन्ह नहीं दिखायी देता था। वहाँ जमीन में छेद करनेवाली मशीनों, धैर्यशील इंजीनियरों का, जो बड़े सब्र से धरती के गर्भ के रहस्य जानने की कोशिश करते हैं, कहीं नाम-निशान नहीं था। और उनकी ओर कोई ध्यान नहीं देता था, किसी युवक चरवाहे के या अफ्रीकान भाषा बोलनेवाले बूढ़े किसानों के अतिरिक्त, जो कभी-कभी घोड़ों पर बैठकर उधर से आते-जाते रहते थे और ये लोग अपनी प्रकृति के अनुसार उनकी

तरफ नफरत की या भय की या आशा की एक निगाह डालते हुए निकल जाते थे, बस !

ट्वीडी व्ली के आश्चर्यजनक हिस्से तो देखो ! बीस शिलिंग थे, फिर चालीस शिलिंग और तब साठ और उसके बाद, मानो या न मानो, अस्सी शिलिंग ! और बहुत-से लोग इस बात पर रो रहे थे कि उन्होंने दो बजे के बजाय बारह बजे ही अपने शेयर बेच दिये थे, या इसलिए कि बारह के बजाय दो बजे खरीदे थे। और जिसने अब शेयर बेचे थे, वह कल सवेरे और अफसोस करेगा, क्योंकि तब तक शेयर की कीमत सौ शिलिंग तक चढ़ जायगी।

ओह, यह अद्‌भुत है !....दक्षिणी अफ्रीका अद्‌भुत देश है ! हम अब जब कहीं विदेश में जायँगे, तो गर्व से सर थोड़ा और उठाकर चल सकेंगे और लोग हमसे कहेंगे, ओह, आपके दक्षिणी अफ्रीका में तो लोग धनी होते हैं !

आडेनडाल्स्रस्ट कितना जादूभरा नाम है ! फिर भी सड़े के बाजार में कुछ लोग अभी से यह कहने लगे हैं, क्योंकि अफ्रीकान भाषा ही अद्‌भुत है, जिसमें इससे आसान नाम होता। स्मट्स या स्मट्सविल से ज्यादा आसान नाम और क्या हो सकता है ? या हाफमेयर से आसान क्या हो सकता है ? लेकिन नहीं, हाफमेयर नाम तो एक जगह मौजूद है और इसके अलावा फिर, फिर यह कोई नाम भी तो नहीं हुआ।

इन खानों की सबसे बड़ी बुराई तो यही है कि इनके नाम का उच्चारण नहीं किया जा सकता। कितने अफसोस की बात है कि ऐसे बड़े उद्योगों की राह में, जिनका संचालन इतने योग्य व्यक्ति करते हैं, जिनको ऐसी सूझ-बूझ से आगे बढ़ाया गया है, ऐसे नाम बाधक हों, जिनका आसानी से उच्चारण भी नहीं किया जा सकता, ब्लाइवूरुईजिख्ट, वेलेडाख्ट और लैंगलाटे, और अब यह नया नाम आडेनडाल्स्रस्ट ! लेकिन ऐसी बातें हमें आपस में ही कहना चाहिए, अपने क्लबों में, क्योंकि हममें से अधिकांश संयुक्त दल के सदस्य हैं, जिसके उद्देश्य हैं, सहयोग, भाईचारा, भ्रातृत्व, प्रेम और पारस्परिक समझदारी ! लेकिन, अगर यह अफ्रीकानेर लोग यह समझ सकते कि दो भाषाएँ होने में कितना नुकसान है, तो न जाने कितना रुपया बच सकता था !

सोना, सोना, सोना ! देश फिर सम्पन्न होने जा रहा है ! शेयर बीस शिलिंग से सौ शिलिंग हो गये हैं ! सोचिए, तो इसके लिए भगवान को धन्यवाद दीजिए ! यह सच है कि कुछ लोग ऐसे हैं, जो भगवान के कृतज्ञ नहीं, लेकिन उन लोगों के तो ज्यादा शेयर भी नहीं हैं, बल्कि शायद बिल्कुल नहीं हैं। इनमें से कुछ लोग जनता में भाषण कर रहे थे। लोग यह देखकर परेशान हो रहे हैं कि इन लोगों के, जिनके पास शेयर नहीं थे, शब्दों में आकर्षण था, मानो किस्मत ने या प्रकृति ने, या जीवन-शक्ति ने या जो कोई भी इन-सब पर नियन्त्रण करता है, इन लोगों को शब्दों का यह आकर्षण मुआवज़े के रूप में दिया था, किसी दया-भाव से नहीं, व्यंग

रूप में नहीं, बल्कि बिल्कुल अविशिष्ट रूप से। लेकिन यह तो केवल कल्पना की एक बात है और वास्तव में तो इसको कहना भी नहीं चाहिए था। इन लोगों के पास शब्दों का कौशल है, लेकिन आर्थिक स्थिति नहीं है। वे केवल लेफ़्ट क्लब या चर्च गिल्ड-जैसी उन छोटी-छोटी संस्थाओं में ही अधिकतर भाषण देते हैं, जो पारस्परिक स्नेह और मानवी भ्रातृत्व को बढ़ाना चाहती हैं। और वे लिखते भी हैं, किन्तु अधिकतर छोटे-छोटे पत्र-पत्रिकाओं के लिए ही, जैसे 'न्यू सोसायटी' या 'मानवता उन्नति कर रही है', या उन लोगों के उस सबसे अद्भुत आठ पृष्ट के पैम्फ़लेट 'क्रास आज चौराहे पर खड़ा है'। इस पैम्फ़लेट को फ़ादर बेरेसफ़ोर्ड निकालते हैं, जिन्हें देखने से ही यह लगता है, जैसे इन्होंने हफ्तों से खाना नहीं खाया है, लेकिन वह सुन्दर अंग्रेजी बोलते हैं, वैसी ही जैसी आक्सफ़ोर्ड में बोली जाती है, मेरा मतलब है, वैसी नहीं, जैसी रोडस या स्टेलेनबाश में बोली जाती है, और इससे ही लोगों में उनका सत्कार है, क्योंकि वह कभी बालों को सँवारते नहीं और पतलून पर इस्तरी नहीं करते। वह सारी दुनिया को बदले हुए शेर की तरह देखते हैं; और उनकी आँखों में शेर की आँखों की-सी चमक है और वास्तव में अपना असाधारण पत्र लिखते समय वह रात के जंगलों में चमकते हैं। वह धर्मप्रचारक हैं और भगवान् में उनका विश्वास है, बहुत गहरा विश्वास, लेकिन संसार में सभी तरह के लोग होते हैं।

तो इनमें से कुछ लोग यह कहते हैं कि शेयर की कीमत बीस शिलिंग ही रहती, तो अच्छा था। बाकी के अस्सी शिलिंग देश की भूमि को बचाने के लिए किसी बड़े कटाव-अवरोधक व्यवस्था में लाना चाहिए था। अच्छा होता यदि उस रुपये को युवक और युवतियों की संस्थाओं की सहायता करने, जनसेवा केन्द्र और हस्पताल खोलने के काम में लगाया जाता, अच्छा होता, अगर खानों में काम करनेवाले मज़दूरों को अधिक रुपया दिया जाता।

सभी जानते हैं कि इस तरह के विचार असम्बद्ध हैं और शेयर की क़ीमतों का मज़दूरी से वास्तव में कोई सम्बन्ध ही नहीं, क्योंकि वह तो खानों के उत्पादन की कीमतों और सोने के मूल्य से है। और एक बात और भी कही जाती है, और प्रसंगवश यह भी कहा जाता है, कि उन खानों में वस्तुतः कुछ बड़े लोग हैं, जिनका उन खानों में कोई भी हिस्सा नहीं है और यह अजीब बात है, क्योंकि वास्तव में यह प्रलोभन होगा।

किसी भी हालत में हमें बहुत उदास नहीं होना चाहिए, जैसा कि हम यह सोचकर होते कि यह अस्सी शिलिंग कुछ ऐसी चीज़ में चले गये, जो कि अस्सी शिलिंग होने के पहले से ज़रा भी भिन्न नहीं है। हमें इस बात को एक दूसरे दृष्टिकोण से देखना चाहिए। जब शेयर का मूल्य बीस से सौ शिलिंग हो जाता है, तब किसी

अस्सी शिलिंग का लाभ होता है। यह ज़रूरी नहीं है कि यह लाभ एक ही व्यक्ति को हो, क्योंकि ऐसा होना असंभव-सा है। और अगर ऐसा हो, तो वह व्यक्ति पूँजी के क्षेत्र में जादूगर कहलाये और सरकार चलानेवाला हो। अधिकांशतः यह संभव है कि वह अस्सी शिलिंग अनेक लोग बाँट लेंगे, क्योंकि वे घबरा जाते हैं और शेयर बेच डालते हैं, जबकि उन शेयरों में काफ़ी दम रहता है। यह बात बिल्कुल सही है कि ये लोग उस धन को कमाने के लिए मेहनत नहीं करते हैं, मतलब यह कि वह अपने हाथों को श्रम से गंदा नहीं करते और पसीना नहीं बहाते हैं। पर आदमी को अपने साहस और दूरदर्शिता के लिए तो कुछ मिलना ही चाहिए, इसके सिवा दिमाग पर ज़ोर देने का भी तो ध्यान रखना चाहिए। तो वह अस्सी शिलिंग को खर्च करेंगे और दूसरे लोगों के लिए काम निकालेंगे, जिससे देश की औद्योगिक और आर्थिक उन्नति हो। इनमें से कुछ लोग दिल खोलकर बालकों और बालिकाओं की संस्थाओं को, समाज-सेवा केन्द्रों को और हस्पतालों को उदारतापूर्वक दान देते हैं, जैसा ब्लामफ़ान्टेन, ग्रैहैम्सटाउन और बोफ़र्ट वेस्ट-जैसे दूर के शहरों के लोग कहते हैं। उनका यह कहना ग़लत है कि यहाँ जोहैन्सबर्ग के लोग धन के बारे में ही सोचते हैं। यहाँ भी, और किसी नगर की तरह, अच्छे लोग हैं, अच्छे पिता और अच्छे पति हैं, और हमारे कई बड़े लोग कलाकृतियों का बड़ा संग्रह करते हैं, जिसके अर्थ हैं, कलाकारों को काम और इस तरह वे कला को समाप्त होने से बचा लेते हैं। और इनमें से कुछ लोगों के उत्तरी प्रदेशों में बड़े-बड़े खेत हैं, जहाँ वह शिकार खेलते हैं और प्रकृति के सौन्दर्य में खो जाते हैं।

और जब और लोगों को अधिक काम मिल जाता है, तब ये लोग अस्सी शिलिंग में से कुछ खर्च करना शुरू करते हैं। यह ठीक है कि सारा नहीं खर्च कर डालते, क्योंकि जो लोग सौ शिलिंग के मूल्य पर अपने शेयर बेचते हैं, उन्हें फिर कुछ रुपया इसलिए भी बचा रखना पड़ता है, ताकि वह उन शेयरों को उस समय फिर खरीद सकें, जब शेयर गिरने लगें और उनमें उतना दम न रहे। लेकिन किसान ज्यादा अन्न उपजाने में समर्थ होंगे, मिलों और कारखानेवाले ज़्यादा चीजें बनाने में समर्थ होंगे और सरकार लोगों को ज़्यादा ऊँची नौकरियाँ दे सकेगी, हालाँकि हमें ज़्यादा सरकारी नौकरों की आवश्यकता ही क्यों हो, इस प्रश्न पर विचार करने का यह अवसर नहीं है! और इन प्रदेशों में मूल निवासियों को भूखों मरने की ज़रूरत नहीं है। लोग खानों में काम करने के लिए आ सकते हैं और उनके लिए ज़्यादा अच्छे और बड़े बाड़े बनाये जा सकते हैं और उनके खाने में और अधिक शक्तिवर्द्धक पदार्थ मिलाये जा सकते हैं। लेकिन इस बात में हमें सतर्क रहना पड़ेगा, क्योंकि किसी ने यह पता लगाया है कि मजदूर जरूरत से ज़्यादा

शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। घटते उत्पादन के नियम का यह एक उदाहरण है।

और इस तरह शायद एक नये और महान नगर का जन्म होगा, एक दूसरा जोहैन्सबर्ग, जिसमें एक दूसरा पार्कटाउन होगा, एक दूसरा हाटेल, पार्कवोल्ड, केन्सिंगटन, जेप, ब्रेडेडर्प, पिमविल और शैन्टी टाउन....इस तरह की बस्तियाँ, कितनी ही बस्तियाँ उस बड़े शहर में होंगी। और इस बड़े नगर पर किस ओडेनडाल्स-रस्ट को गर्व न होगा! लेकिन क्या यह नाम हास्यात्मक नहीं है?

*

लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं, जो यह कहते हैं कि ऐसा नहीं होगा। सारे लोक-सेवक, और यह फ़ादर बैरेसफोर्ड और इन काले अफ्रीकनों के हिमायती यह काफिरबूटी, सब यही कहते हैं कि ऐसा नहीं होगा, लेकिन यह मानना पड़ेगा कि इनमें से अधिकांश के पास एक भी शेयर-सर्टीफ़िकेट नहीं है। और इन लोगों का साहस भी अद्भुत है, क्योंकि खानों के बड़े आदमी सर अरनेस्ट आपेन-हीमर भी यही कहते हैं कि ऐसा होने की ज़रूरत नहीं। वह कहते हैं कि अब अवसर है कि इस नये नगर में खानों के मज़दूरों की नयी व्यवस्था की जाय, जिसके अनुसार नये सिरे से मजदूरों को बाड़ों में नहीं, गाँवों में रखा जाय, ताकि वहाँ वह अपने बीवी-बच्चों के साथ रह सकें। इस बात की भी खबर है कि सरकार यहाँ पर अमरीका की टेनेसी वैली अथारिटी की तरह की कोई योजना शुरू करेगी, जिससे आरेंज फ्री स्टेट के प्रदेश की खानों का पूरा नियंत्रण किया जा सके।

सर अरनेस्ट आपेनहीमर! वे आपकी आवाज एक बार फिर सुनना चाहते हैं। कुछ लोग आपकी प्रशंसा करते हैं और वे भगवान को इस बात के लिए सोते समय भी दिल में धन्यवाद देते हैं। यह इस कारण है कि खानें आदमियों के लिए हैं, धन कमाने के लिए नहीं। और धन ऐसी चीज़ नहीं है, जिसके लिए लोग पागल हो जायँ, अपना हैट हवा में उछालें। धन इन्सानों को खाना देने के लिए है, कपड़ा और सुख देने के लिए है, जीवन का सामान्य सुख देने के लिए। धन इसलिए है कि नन्हें-नन्हें बच्चों के जीवन को सुखी बनाया जाय। धन सुरक्षा के लिए है, सपने सजाने के लिए है, आशाएँ और उद्देश्य पूरे करने के लिए है। धन उस धरती के फल-फूल खरीदने के लिए है, जिसपर आपका जन्म हुआ है।

*

धरती पर दूसरे जोहैन्सबर्ग की कोई जरूरत नहीं, एक ही काफ़ी है।

(७)

जारविस ने सोचा कि वह अपने बेटे के मकान में फिर जायँ। रसोई में से होकर, फर्श पर पड़े हुए खून के धब्बे को पार करके, सीढ़ियों पर चढ़कर शयनागार

में जाना मूर्खता थी। लेकिन जारविस उसी रास्ते से गये। वह सोने के कमरे में न जाकर उस कमरे में गये, जिसमें तमाम किताबें भरी हुई थीं। एक बार फिर उन्होंने उन्हीं पुस्तकों पर निगाह डाली, उस अलमारी पर, जिसमें अब्राहम लिंकन पर लिखी हुई पुस्तकें थीं, और उस अलमारी पर, जिसमें दक्षिणी अफ्रीका पर किताबें भरी हुई थीं, और उस अलमारी पर, जिसमें अफ्रीकान भाषा की किताबें थीं, और उसपर, जिसमें धर्म पर और सामाजिक विज्ञान पर और अपराधों पर और अपराधियों पर और कविता पर और जिनमें उपन्यास और शेक्सपियर की कृतियाँ थीं। उन्होंने उन तस्वीरों की ओर भी फिर से देखा, जिनमें भगवान ईसा को क्रास पर लटका हुआ दिखाया गया था, अब्राहम लिंकन का चित्र, बर्गेलेगेन का और जाड़े में वेद वृक्षों का। वह मेज के पास फिर बैठ गये। मेज पर वही सब निमंत्रण पड़े हुए थे, यहाँ आने के, वहाँ जाने के, यह करने के, वह करने के और वह लेख, वह अधूरा लेख, जिसमें यह लिखा हुआ था कि दक्षिणी अफ्रीका में क्या करना मान्य हो सकता है है और क्या मान्य नहीं हो सकता।

उन्होंने अपने बेटे की मेज़ की दराजें खोलीं, उनमें हिसाब के कागज थे और लिफाफे थे, कलम और पेन्सिलें, पुराने चेक, जिन्हें बैंक ने अपनी मोहर लगाकर वापस कर दिया था। और एक गहरी दराज में टाइप किये हुए कुछ लेख थे, हर एक सफाई से इकट्ठा करके पिन लगाये हुए एक-दूसरे पर चुने हुए रखे थे। एक लेख था, 'समाज सेवा केन्द्रों की आवश्यकता', दूसरा, 'पार्कवोल्ड उद्यान के पंछी' और तीसरा, 'भारत और दक्षिणी अफ्रीका' और यह रहा एक और लेख, 'दक्षिण अफ्रीका वासियों के विकास पर एक व्यक्तिगत निबन्ध'। इसे ही जारविस ने पढ़ना शुरू किया :

दक्षिणी अफ्रीका में पैदा होना दुर्भाग्य की बात है। आप अफ्रीकानेर जाति में जन्म ले सकते हैं, दक्षिणी अफ्रीकावासी अंग्रेज परिवार में पैदा हो सकते हैं, आप जुलू जाति में या अन्य किसी जाति में जन्म ले सकते हैं। आप घोड़े पर बैठकर सैर कर सकते हैं, हरे दूब से ढँके हुए पहाड़ों पर और चौड़ी मनोहर वादियों में, जैसे मैं अपने बचपन में घूमा करता था। जैसे मैं बचपन में बंटू जाति की बस्तियों को देखा करता था, वैसे ही आप देख सकते हैं। लेकिन फिर भी आप यह नहीं देख सकते कि वहाँ जो-कुछ है, उसके पीछे क्या हो रहा है। जैसे मैं बचपन में सुना करता था, वैसे ही आप भी सुन सकते हैं कि दक्षिणी अफ्रीका में अंग्रेजी बोलनेवालों से अफ्रीकान बोलनेवाले अधिक हैं, और फिर भी उनके बारे में कुछ जान नहीं सकते, देख नहीं सकते। जैसे मैं अपने बचपन में पढ़ा करता था, आप सुहाने दक्षिणी अफ्रीका के बारे में पुस्तिकाएँ पढ़ सकते हैं कि यह सूर्य और सौन्दर्य का देश है, जो संसार के तूफ़ानों से सुरक्षित है। और इन्हें पढ़कर आप उसपर गर्व कर सकते हैं, आप अपने सुहाने

देश के प्यार में अपने-आपको भूल सकते हैं, लेकिन फिर भी कुछ भी नहीं जान सकते ! आप ज्यों-ज्यों बढ़ते हैं, धीरे-धीरे यह सीखने लगते हैं कि सूरज और सोने और संतरों के अलावा भी और चीज़ें हैं। तभी आपको हमारे इस देश के भय और नफ़रत का पता चलता है, और तभी आपका प्रेम गंभीर और उत्कट हो जाता है, उसी तरह, जिस तरह उस औरत का प्रेम, जो सच्ची हो, झूठी हो, निर्भय हो, प्रेम करनेवाली हो, निर्दय हो और डरपोक हो।

मैं एक गाँव में पैदा हुआ था, एक सम्मानित माँ-बाप ने पाला, और मुझे वह सब सुविधाएँ मिली थीं, जिनकी किसी भी बच्चे को आवश्यकता या इच्छा हो सकती है। मेरे माता-पिता सीधे, सच्चे और क़ानून का पालन करनेवाले लोग थे। उन्होंने मुझे भगवान को प्रार्थना करना सिखाया था और वह मुझे नियमित रूप से गिरजे ले जाते थे। उन्हें नौकरों से कभी परेशानी नहीं उठानी पड़ती थी और मेरे पिता को कभी नौकरों की कमी न हुई। उन्हीं से मुझे वह शिक्षा मिली थी, जो हर बच्चे को सम्मान, दानशीलता और उदारता की मिलना चाहिए। यह-सब मैंने उनसे सीखा, लेकिन दक्षिणी अफ्रीका के बारे में कुछ भी नहीं जान पाया।

आघात खाकर और क्षुब्ध होकर जारविस ने कागज़ रख दिये। एक मिनट को उन्हें ऐसा लगा, जैसे उन्हें क्रोध आ गया है, लेकिन फिर उन्होंने अपनी आँखें उँगलियों से पोंछकर झटक दीं। लेकिन वह काँप रहे थे और आगे नहीं पढ़ सके। वह उठ पड़े और उन्होंने अपना हैट पहन लिया और फिर सीढ़ियों से उतरकर, वहाँ तक गये, जहाँ फ़र्श पर खून का धब्बा पड़ा था। पुलीसवाला उन्हें सलाम करने ही वाला था कि वह फिर लौट पड़े और फिर सीढ़ियाँ चढ़कर मेज़ के पास आकर बैठ गये। उन्होंने लेख फिर उठा लिया और इस बार उसे फिर अन्त तक पढ़ा। शायद वह शब्दों के पारखी थे, क्योंकि अन्तिम वाक्य से वह विचलित हो उठे। शायद उन्हें विचारों की परख थी :

इसलिए मैं अपने को, अपने समय को, अपनी शक्ति को और अपनी प्रतिभा को दक्षिणी अफ्रीका की सेवा में लगा दूँगा। मैं भविष्य में इस बात पर विचार नहीं करूँगा कि यह किया जाना चाहिए या वह, केवल यही विचारूँगा, कि वह सही है या नहीं। और मैं यह इस कारण नहीं करूँगा कि मैं महान् या निस्स्वार्थी हूँ, बल्कि इसलिए कि जीवन बीतता जा रहा है और मैं अपने इस लम्बे सफ़र के बाद एक ऐसे नक्षत्र की खोज में हूँ, जो मुझे धोखा न दे, एक ऐसा यन्त्र, जो गलत रास्ता न बताये। मैं यह-सब इस कारण नहीं करूँगा कि मैं हब्शी जाति का भला चाहनेवाला हूँ और अपनी जाति से घृणा करनेवाला, बल्कि इसलिए कि मैं इसके अतिरिक्त कुछ और कर ही नहीं सकता। मैं उलझ जाता हूँ, जब मैं दो पक्षों की तुलना करता हूँ, जब मैं यह यह प्रश्न करता हूँ कि इस बात में खतरा है या नहीं ? मैं

चकरा जाता हूँ, जब मैं यह सोचने लगता हूँ कि लोग अमुक बात को ठीक समझेंगे या नहीं, गोरे आदमी, काले आदमी, अंग्रेज या अफ्रीकानेर या यहूदी? इसी लिए मैं हमेशा सही काम करने और सत्य बोलने का प्रयत्न करूँगा।

मैं यह इसलिए नहीं करता हूँ कि मैं साहसी और ईमानदार हूँ, बल्कि इसलिए कि अपनी अन्तरात्मा का संघर्ष समाप्त करने का यही रास्ता है। मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ कि मैं यह नहीं कर सकता कि अपने व्यक्तित्व के एक भाग से तो आदर्श की इच्छा करूँ और दूसरे से उसका उल्टा करूँ। मैं इस तरह जीना नहीं चाहता, ऐसे जीने से तो मैं मृत्यु ही ज्यादा पसन्द करूँगा। मैं उन्हें महान समझता हूँ, जिन्होंने अपने आदर्शों के लिए अपनी जान दे दी और यह समझकर नहीं कि मरने में कोई बड़ी बात है, या बहादुरी है या कोई महानता है; उन्होंने जिन्दगी से मौत अच्छी समझी, इतनी सी बात।

हाँ, यह दिखाने में ईमानदारी नहीं होगी कि केवल एक अन्दरूनी स्वार्थ के कारण मैं यह काम कर रहा हूँ। मैं उस-सब से प्रेरित होकर ऐसा कर रहा हूँ, जिसमें मेरी नहीं है, जो मुझे केवल वही करने की प्रेरणा देती है, जो सत्य है और न्यायपूर्ण है, चाहे उसके लिए मुझे कितनी भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े। और मैं बहुत भाग्यवान हूँ कि मैंने एक ऐसी महिला से शादी की है, जो ठीक मेरी ही तरह सोचती है, जिसने अपने अन्तर के भय और घृणा पर विजय पाने का प्रयत्न किया है। यह कामना इस प्रकार मेरे लिए और भी सरल हो गयी है। मेरे बच्चे यह-सब सोचने के लिए अभी बहुत छोटे हैं। हाँ, इस बात का दुख अवश्य होगा, अगर बड़े होकर उनमें मेरे लिए भय हुआ या नफ़रत हुई या उन्होंने यह समझा कि मैंने अपनी सम्पत्ति नाम की चीज़ न बढ़ाकर या ख़त्म करके उनके साथ अन्याय किया है। और यदि बड़े होकर उन्होंने भी मेरी ही तरह सोचा, तो यह अपार सुख की बात होगी, यह इतनी बड़ी बात, इतने सौभाग्य की बात होगी कि इसके लिए हमें भगवान को धन्यवाद देना होगा। लेकिन उस खुशी का सौदा नहीं किया जा सकता। यह चीज़ या तो देनी होगी, या रोक लेनी होगी और चाहें यह हो या वह, कोई भी बात सत्य के मार्ग को बदल नहीं सकती।

जारविस बहुत देर तक बैठे पाइप पीते रहे। उन्होंने आगे नहीं पढ़ा। कागज दराज़ में रख दिये और उसे बन्द कर दिया। वह तब तक वहीं बैठे रहे, जब तक पाइप की तम्बाकू खत्म नहीं हो गयी। उसके बाद उन्होंने हैट लगाया और सीढ़ियाँ उतर आये। सीढ़ियाँ उतरने पर वह मुड़े और मकान के सामने दरवाजे की तरफ चले। उन्हें अब उस रास्ते से या फ़र्श पर पड़े हुए धब्बे से कोई डर नहीं था। वह उस रास्ते से फिर नहीं आयँगे, यही अन्तिम है।

सामने का दरवाज़ा अपने-आप बन्द होनेवाला था, उससे वह बाहर निकल

आये। उन्होंने ऊपर आसमान की तरफ़ देखा, किसान होने के कारण यह उनकी आदत-सी हो गयी थी। लेकिन इस अजनबी देश के इस आसमान से उन्हें कुछ पता न चला। मकान के सामने के रास्ते से चलकर वह फाटक के बाहर चले गये। पिछले दरवाज़े पर खड़े हुए पुलीसवाले ने सामने के दरवाज़े के ताले के बन्द होने की आवाज़ सुनी और उसने सर हिला दिया, मानो वह सब समझ गया हो। उसने अपने मन में कहा, अब वह इसे और ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकते।

वह वृद्ध सज्जन अब उसका सामना नहीं कर सकते।

(८)

मार्गरेट जारविस की एक प्रिय भतीजी थी, बार्बरा स्मिथ, जिसने स्प्रिंग्स में रहनेवाले किसी व्यक्ति से शादी की थी। एक दिन, जब अदालत में मामले की तारीख़ नहीं थी, जारविस और उनकी पत्नी उन लोगों के यहाँ एक दिन बिताने के लिए स्प्रिंग्स चले गये। उन्होंने यह सोचा था कि यह सैर उनकी पत्नी के लिए अच्छी रहेगी, क्योंकि मार्गरेट को अपने बेटे की मृत्यु का गम उससे भी ज़्यादा गहरा था, जितना वह समझते थे। मार्गरेट और उनकी भतीजी ने इकोपो और ल्यूफ़ाफ़ा और हाइफ्लैट्स और उमज़िमकुलू के लोगों के बारे में बातें कीं और जारविस उन्हें बातें करते छोड़कर बाहर बाग में टहलते रहे, क्योंकि वह ऐसे व्यक्तियों में से थे, जिनका सम्बन्ध धरती से होता है। कुछ देर बाद उन लोगों ने उनसे कहा कि वे शहर जा रहीं हैं और पूछा कि क्या वह उन लोगों के साथ शहर घूमने चलेंगे? लेकिन उन्होंने कहा कि वह घर पर ही रहना पसन्द करेंगे और जब तक वे लौटेंगी, तब तक वह अखबार पढ़ते रहेंगे। यही उन्होंने किया भी।

ओडेनडाल्सरस्ट में नये पाये गये सोने की ख़बरों से और शेयर मार्केट में अभी तक छाये ज़ोरों के जोश की खबरों से अखबार भरा था। कोई जानकार व्यक्ति लोगों को यह चेतावनी दे रहा था कि ऊँची चढ़ती हुई कीमतों पर शेयर नहीं खरीदने चाहिएँ, क्योंकि इसका कोई प्रमाण है नहीं कि इन शेयरों की वही वास्तविक कीमत है, जिनपर वे बिक रहे हैं। यह भी हो सकता है कि कुछ देर बाद उनका मूल्य गिर जाय और उस अवस्था में लोगों को बहुत घाटा और बड़ी परेशानी उठानी पड़े। कुछ अपराधों के भी समाचार थे, अधिकतर काले लोगों द्वारा यूरोपियनों पर आक्रमण के। लेकिन अखबार में ऐसी कोई भयानक खबर नहीं थी, जिसके कारण कुछ लोग अखबार खोलते भी डरते थे।

जब वह अखबार पढ़ रहे थे, तभी रसोई के दरवाजे पर दस्तक हुई। दरवाजा खोलने पर उन्होंने देखा कि चौके तक आनेवाली तीन सीढ़ियों के नीचे जड़े पत्थरों

के फ़र्श पर एक देशी पादरी खड़ा है। पादरी बुड्ढा था और उसके काले कपड़े पुराने होने के कारण बदरंग हो गये थे। उसका कालर पुराना होने या धूल से भूरा हो गया था। पादरी ने अपना हैट सर पर से उतार लिया जिससे उसका सफेद सर दिखायी देने लगा। वह घबराया और डरा लग रहा था और काँप रहा था।

—नमस्कार, उम्फ़ुन्दीस !—जारविस ने ज़ुलू में कहा। वह इस भाषा में पारंगत थे।

पादरी ने काँपती हुई आवाज़ में उत्तर दिया—ऊमनूमज़ान !

और जारविस को आश्चर्य हुआ, जब वह पादरी सबसे नीचे की सीढ़ी पर बैठ गया, मानो वह भूखा या बीमार हो। जारविस को मालूम था कि यह उस आदमी का उजड्डपन नहीं था, क्योंकि वह पादरी नम्र और शिष्ट मालूम पड़ता था। इसलिए जारविस स्वयं नीचे उतरकर उसके पास आये और बोले—क्या आपकी तबीअत ठीक नहीं है, उम्फ़ुन्दीस ?

लेकिन वृद्ध ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह अब भी काँप रहा था और जमीन की ओर ही देख रहा था। इसलिए जारविस उसका चेहरा ठीक से नहीं देख पा रहे थे और देख भी नहीं सकते थे, जब तक उनकी ठोड़ी अपने हाथों से ऊपर उठाकर नहीं देखते और ऐसी बात आसानी के नहीं की जाती।

—क्या आप बीमार हैं, उम्फ़ुन्दीस ?

—मैं अभी ठीक हो जाऊँगा, ऊमनूमज़ान।

—आपको पानी चाहिए या खाना ? आपको भूख तो नहीं लगी है ?

—नहीं, ऊमनूमज़ान, मैं अभी ठीक हो जाऊँगा।

जारविस सीढ़ियों के नीचे पत्थर के फ़र्श पर खड़े रहे, लेकिन वृद्ध जल्दी चंगा नहीं हो पा रहा था। वह अब भी काँप रहा था और ज़मीन की तरफ़ देख रहा था। कोई अंग्रेज़ किसी काले आदमी की प्रतीक्षा करे, यह मामूली बात नहीं है। लेकिन जारविस ने प्रतीक्षा की, क्योंकि यह प्रत्यक्ष था कि वृद्ध कमज़ोर था और बीमार था। वृद्ध ने अपनी छड़ी के सहारे उठने की कोशिश की, लेकिन छड़ी पत्थर पर फिसल गयी और खड़खड़ाती हुई पत्थर के फर्श पर गिर पड़ी। जारविस ने छड़ी उठा ली और उन्हें दे दी। लेकिन वृद्ध ने उसको इस तरह रख दिया, मानो वह कोई अटक हो, और अपना हैट भी रख दिया और हाथों को सीढ़ियों पर टेककर उठने का प्रयत्न किया। लेकिन उसका पहला प्रयत्न बेकार रहा और वह फिर बैठ गया और काँपने लगा। जारविस उसकी मदद कर देते, लेकिन यह काम इतना सामान्य नहीं होता, जैसे छड़ी उठाना। तब वृद्ध ने हाथों के बल फिर सीढ़ियों पर ज़ोर दिया और उठा। तब उसने अपना चेहरा भी ऊपर किया और जारविस की ओर देखा और जारविस ने देखा कि उसके चेहरे पर न तो भूख के चिह्न हैं, न बीमारी के, और जारविस ने

झुककर उसका हैट और छड़ी उठा लिये, उन्होंने हैट बड़ी सावधानी से पकड़ा था, क्योंकि वह पुराना और गंदा था।

—धन्यवाद, ऊमनूमज़ान!

—क्या आपको विश्वास है कि आपकी तबीअत ठीक है, उम्फ़ुन्दीस?

—जी, ऊमनूमज़ान, मैं अब ठीक हूँ।

—आप क्या चाहते हैं, उम्फ़ुन्दीस?

वृद्ध पादरी ने अपना हैट और छड़ी फिर सीढ़ी पर रख दिये और काँपते हुए हाथों से अपने पुराने-हरे कोट की अन्दर की जेब से अपना बटुआ निकाला। सब कागज जमीन पर गिर पड़े, क्योंकि उसके हाथ स्थिर नहीं थे।

—माफ़ कीजिएगा, ऊमनूमज़ान!

वह कागज उठाने के लिए झुका और तब वृद्ध होने के कारण उसे घुटनों के बल बैठ जाना पड़ा। कागज गन्दे और पुराने थे और उसने जो-कुछ कागज उठाये थे, वे और कागज उठाते-उठाते छूट गये और उसका बटुआ भी गिर पड़ा और उसके हाथ बराबर काँप रहे थे और हिल रहे थे। जारविस के अन्दर दया और चिड़चिड़ाहट के भावों में संघर्ष हो रहा था और वह परेशानी से खड़े यह-सब देख रहे थे।

—आपको रोक रखने के लिए मुझे खेद है, ऊमनूमज़ान!

—कोई बात नहीं, उम्फ़ुन्दीस।

आखिर सब कागज इकट्ठे हो गये और एक को छोड़कर बाकी सबको पादरी ने अपने बटुए में वापस रख दिया। यह कागज उसने जारविस को दिया। इसपर उस जगह का नाम और पता लिखा हुआ था, जहाँ वह लोग खड़े हुए थे।

—यही जगह है, उम्फ़ुन्दीस।

—मुझसे यहाँ आने को कहा गया था, ऊमनूमज़ान! इन्डाटशेनी में सिबेको नाम का एक आदमी है....

—इन्डाटशेनी, उस जगह को तो मैं जानता हूँ! मैं भी तो इन्डाटशेनी का ही रहनेवाला हूँ।

—उसकी एक लड़की थी, ऊमनूमज़ान, जो इकोपो के स्मिथ साहब के यहाँ काम करती थी....

—हाँ-हाँ।

—और जब स्मिथ साहब की लड़की की शादी हुई, तो उसने उन साहब से शादी कर ली, जिनका नाम इस पर्चे पर लिखा हुआ है।

—हाँ, ठीक है।

—और वह स्प्रिंग्स में रहने चले आये और सिबेको की लड़की भी उनके यहाँ

काम करने चली आयी। सिबेको को इस लड़की का इन बारह महीनों से कोई समाचार नहीं मिला है और उसने कहा था, मुझसे कहा था कि मैं इस लड़की का पता लगाऊँ।

जारविस घूमे और मकान में चले गये और उस लड़के को ले आये, जो वहाँ काम करता था।

—इससे आप पूछ लीजिए,—जारविस ने कहा और मकान के अन्दर फिर लौट गये। लेकिन अन्दर पहुँचते ही उन्हें एकदम ख्याल आया कि वह वृद्ध पादरी तो इन्डाटशेनी के ही गिरजे का पादरी है। और वह फिर बाहर निकल आये।

—जो आप चाहते थे, वह आपको पता लग गया, उम्फुन्दीस ?

—यह लड़का उसको नहीं जानता, ऊमनूमज़ान। जब इसने नौकरी शुरू की थी, तब तक वह नौकरी छोड़ चुकी थी।

—इस घर की मालकिन, जो स्मिथ की लड़की हैं, बाहर गयी हुई हैं। वह जल्दी ही लौट आयँगी। अगर आप चाहें तो उनकी राह देख लें।

जारविस ने उस नौकर से अन्दर वापस जाने को कहा और जब तक वह चला नहीं गया, तब तक वह खामोश रहे।

—मैं आपको जानता हूँ, उम्फुन्दीस,—वृद्ध के चेहरे पर जमी हुई गहरी वेदना ने जारविस के दिल पर चोट की। और वह बोले—आप बैठ जाइए, उम्फुन्दीस !

बैठ जाने से पादरी फिर जमीन की तरफ देख सकेगा और उसे जारविस की तरफ नहीं देखना पड़ेगा और जारविस को भी उसकी तरफ नहीं देखना पड़गा, क्योंकि उसकी ओर देखने से उन्हें परेशानी होती थी। वृद्ध बैठ गया और बिना उसकी ओर देखे जारविस उससे बोले—आपके और मेरे बीच में कोई बात जरूर है, लेकिन मैं नहीं जानता कि वह क्या बात है ?

—ऊमनूमज़ान !

—आप मुझसे डर रहे हैं, लेकिन मुझे पता नहीं कि बात क्या है। आपको मुझसे नहीं डरना चाहिए।

—आप ठीक कह रहे हैं, ऊमनूमज़ान। आप नहीं जानते कि क्या बात है।

—हाँ, मुझे नहीं मालूम, लेकिन मैं जानना चाहता हूँ।

—मुझे शक है कि मैं आपसे यह बता भी सकूँगा या नहीं, ऊमनूमज़ान।

—नहीं, आपको बताना ही होगा, उम्फुन्दीस ! क्या कोई गम्भीर बात है ?

—जी हाँ, ऊमनूमजान। मेरे जीवन की वह सबसे गम्भीर बात है !

उसने अपना चेहरा उठाया, उसपर ऐसी वेदना थी, जो जारविस ने पहले नहीं देखी थी। वह बोले—मुझे बता दीजिए, इससे आपके दिल का बोझ हल्का हो जायगा।

—मुझे डर लग रहा है, ऊमनूमज़ान !

—यह तो मैं देख रहा हूँ कि आपको डर लग रहा है। यही तो मेरी समझ में नहीं आता। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपको मुझसे डरने की कोई जरूरत नहीं, मैं नाराज नहीं होऊँगा, मेरे दिल में आपके लिए कोई नाराजी नहीं होगी।

—फिर वह बात जो मेरे जीवन की सबसे अभिशप्त और सबसे भारी घटना है, वही आपके जीवन की भी सबसे दुर्भाग्यपूर्ण घटना है।

हैरान होकर जारविस ने उस वृद्ध पादरी की तरफ़ देखा, लेकिन फिर जैसे बात कुछ-कुछ उनकी समझ में आयी। उन्होने कहा—आपका केवल एक ही मतलब हो सकता है....लेकिन फिर भी मैं बात ठीक से समझा नहीं।

—मेरे लड़के ने ही आपके पुत्र की हत्या की है,—वृद्ध बोला।

और दोनों चुप हो गये। जारविस उसे छोड़कर बाड़े में लगे हुए पेड़ों की ओर चले गये। चहारदीवारी के पास खड़े होकर उन्होंने उस पार के घास के मैदान की ओर देखा, खानों के चपटे और सफेद टीलों की तरफ देखा, जो धूप में पहाड़ों-जैसे लग रहे थे। जब वह लौटने को मुड़े तो उन्होने देखा कि कुमालो उठ पड़े हैं, उनके एक हाथ में छड़ी है, दूसरे में हैट, उनका सर झुका हुआ है और आँखें जमीन पर लगी हैं। और जारविस लौटकर कुमालो के पास पहुँचे।

—मैंने आपकी बात सुन ली। वह बात मैं समझ गया, जो मैं अब तक नहीं समझ पा रहा था। मेरे दिल मे आपके प्रति कोई क्रोध नहीं है।

—ऊमनूमज़ान !

—स्मिथ की लड़की, जो इस घर की मालकिन हैं, लौट आयी हैं। क्या आप उनसे मिलना चाहते हैं ? क्या आप अब बिल्कुल ठीक हैं ?

—इसी काम से तो मैं आया था, ऊमनूमज़ान।

—मैं समझा। और जब आपने मुझे देखा, तो आपको धक्का लगा। आप यह नहीं सोचते थे कि मैं यहाँ होऊँगा। आपने मुझे कैसे जाना ?

—मैंने आपको अक्सर इन्डाटशेनी में उस गिरजे के पास से घोड़े पर गुजरते हुए देखा है, जहाँ मैं काम करता हूँ।

घर के अन्दर से आती हुई आवाजों को जारविस ने ध्यान से सुना और फिर वह बहुत धीमे से बोले—शायद आपने मेरे लड़के को भी देखा होगा, वह भी इन्डाटशेनी में होकर अक्सर अपने घोड़े पर निकलता था, लाल रङ्ग के-से घोड़े पर, जिसका सर सफेद था। और वह छोटे बच्चों की तरह अपनी पेटी में लकड़ी की बन्दूकें लगाये रहता था।

कुमालो का चेहरा तिलमिला रहा था। वह अब भी जमीन की तरफ देख रहे थे, और जारविस ने देखा कि उनकी आँखों से आँसू निकलकर जमीन पर गिर

रहे हैं। वह स्वयं भी विचलित हो गये उस महान् दुख से और विवश भी। वह इस बात को समाप्त करना चाहते थे, लेकिन इसके लिए उन्हें जल्दी में शब्द नहीं मिल पा रहे थे।

—मुझे याद है, ऊमनूमज़ान! आपके बेटे में तेजस्विता थी।

—हाँ-हाँ, उसमें तेजस्विता थी!—जारविस बोले।

—ऊमनूमज़ान, कहने में ये शब्द कठिन हैं, लेकिन मेरे हृदय में आपके लिए बहुत दुःख है और बड़ी इन्कोसीगाज़ (श्रीमती) के लिए और छोटी इन्कोसीगाज़ के लिए और बच्चों के लिए भी।

—हाँ-हाँ!—और फिर भयानकता से जारविस ने कहा—मैं घर की मालकिन को बुलाये देता हूँ।

वह अन्दर गये और उन्हें अपने साथ ले आये। उन्होंने अंग्रेजी में कहा—यह वृद्ध आदमी सिबेको नाम के देशी आदमी की लड़की का पता लगाने आये हैं, वही जो तुम्हारे यहाँ इकोपो में काम करती थी। उसके घरवालों को उसकी महीनों से कोई खबर नहीं मिली है।

स्मिथ की बेटी ने कहा—हमें उसको हटा देना पड़ा। शुरू में तो वह अच्छी थी और मैंने उसके पिता से कहा था कि मैं उसकी देख-भाल करती रहूँगी, लेकिन फिर बाद में वह खराब हो गयी और अपने कमरे में ही शराब बनाने लगी थी। वह पकड़ ली गयी थी और उसे एक महीने की कैद हो गयी थी। और सच बात है कि उसके बाद मैं उसे अपने यहाँ नहीं रख सकती थी।

—अब तुम यह नहीं जानती कि वह कहाँ है?—जारविस ने पूछा।

और स्मिथ की लड़की ने अंग्रेज़ी में हा उत्तर दिया—मैं नहीं जानती और न मुझे इसकी परवाह है।

और जारविस ने ज़ुलू में कहा—इन्हें नहीं मालूम।—उन्होंने कुमालो से यह नहीं बताया कि स्मिथ की बेटी को इस बात की परवाह नहीं है।

—धन्यवाद,—वृद्ध ने ज़ुलू में कहा—भगवान आपको सुखी रखे, ऊमनूमज़ान!—और उन्होंने स्मिथ की लड़की को नमस्कार किया और उसने सर हिलाकर उसे स्वीकार किया।

हैट लगाकर, प्रथा के अनुसार, कुमालो पीछेवाले फाटक की तरफ चलने लगे। स्मिथ की बेटी घर में चली गयी और जारविस धीरे-धीरे कुमालो के पीछे चलने लगे, मानो वह उनके पीछे नहीं चल रहे हों। कुमालो ने फाटक खोला और उसके बाहर निकलकर उसे बन्द किया। उसे बन्द करने को ज्योंही वह मुड़े कि उन्होंने देखा कि जारविस उनके पीछे-पीछे आये हैं। और उन्होंने जारविस का झुककर अभिवादन किया।

—आप सुखी रहें, उम्फुन्दोस !—जारविस बोले ।

—भगवान आपको सुखी रखे, ऊमनूमज़ान !—कुमालो ने नमस्कार के लिए अपना हैट थोड़ा उठाकर फिर सर पर रख लिया । फिर वह सड़क पर धीरे-धीरे स्टेशन की तरफ़ चलने लगे और जब तक वह आँखों से ओझल नहीं हो गये, जारविस उन्हें देखते रहे । जब जारविस घर की तरफ़ लौटने को मुड़े, तो उन्होंने देखा कि उनकी पत्नी उन्हीं की तरफ चली आ रही हैं । गहरी पीड़ा के साथ उन्होंने देखा कि वह भी ऐसे चल रही हैं, मानो वह बुड्ढी हों । आगे बढ़कर वह पत्नी के पास पहुँच गये और उन्होंने पति के हाथों में अपने हाथ रख दिये ।

—तुम इतने परेशान क्यों हो, जेम्स ? जब तुम घर में आये थे, तब इतने परेशान क्यों थे ?

—कोई बीती बात उभर आयी थी । तुम तो जानती हो न कि बीती बातें कैसे एकदम से याद आ जाती हैं !

मार्गरेट को इस उत्तर से सन्तोष हो गया और वह बोलीं—हाँ, जानती हूँ ।

और उन्होंने अपने पति की बाँह और जोर से पकड़ ली ।

—बार्बरा खाने के लिए हमें अन्दर बुला रही है, जेम्स ।

(६)

मैदान में एक आम सभा में वह नादपूर्ण आवाज़ गूँज रही थी । वहाँ बहुत-से पुलीस के सिपाही थे, गोरे भी और काले भी । उन्हें वहाँ देखकर अवश्य ही शक्ति की अनुभूति होती थी । और इतने बहुत-से लोगों के बीच बैलों के नाद-सी जोरदार आवाज़ गुर्रा रही थी, उठ रही थी, गिर रही थी ।

उस सभा में कुछ लोग ऐसे थे, जो केवल उस आवाज़ से ही प्रभावित होकर उत्तेजित हो सकते थे । कुछ लोगों को अब तक वह दिन याद था, जब उन्होंने उस आवाज़ को पहली बार सुना था, मानो वह आज की ही बात हो; और उन्हें याद था वह अजीब-सा अनुभव, मानो उनके शरीर में बिजली दौड़ गयी हो । उस आवाज़ में जादू था, उसके अन्दर डराने-धमकाने की शक्ति थी, वह जैसे सारे अफ्रीका की ही आवाज़ हो, उस आवाज़ में जैसे शेर की गरज हो और काले पर्वतों के ऊपर कड़कड़ानेवाली बिजली का-सा घोष ।

ड्यूब्यूला और टामलिनसन उस आवाज़ को नफ़रत और ईर्ष्या के भावों से सुन रहे थे, क्योंकि यह वह आवाज़ थी, जो हज़ारों लोगों को प्रभावित कर सकती थी । लेकिन इस आवाज़ के पीछे वह दिमाग नहीं था, जो लोगों को यह बता सके

कि उन्हें क्या करना चाहिए, और अगर वह हाता भी, तो उसे व्यक्त करने की उसमें हिम्मत नहीं थी।

पुलीसवाले उस आवाज़ को सुनते थे और एक-दूसरे से कहते थे, यह आदमी ख़तरनाक है। और दूसरा कहता था, ऐसी बातों के बारे में सोचना मेरा काम नहीं है।

जान कह रहा था —जो दिया नहीं जा सकता, हम वह नहीं माँगते। हम केवल अपनी मेहनत की कमाई में से अपना हिस्सा माँग रहे हैं। नये सोने की खानों का पता लगा है और दक्षिणी अफ़्रीका फिर सम्पन्न होने जा रहा है। हम उसमें केवल अपना हिस्सा माँग रहे हैं। अगर हम न खोदें, तो यह सोना जमीन के अन्दर ही पड़ा रहेगा। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह सोना हमारा है, मैं केवल यह कह रहा हूँ कि हमें उसमें से हमारा हिस्सा मिलना चाहिए। यह सोना सब लोगों का है, गोरों का और कालों का, हिन्दुस्तानिओं का और दूसरे लोगों का, लेकिन सबसे अधिक कौन पायगा ?....

उस भारी कंठ में वह ज़ोरदार आवाज़ गुर्रा उठती है। श्रोताओं के समूह में उत्तेजना की एक लहर दौड़ जाती है। वे पुलीसवाले अधिक सतर्कता से खड़े हो जाते हैं, जिन्होंने यह आवाज़ पहले नहीं सुनी थी। जिन्होंने पहले यह आवाज़ सुनी थी, वे इस बात से परिचित थे कि जान यहाँ तक ही जाता है, उसके आगे नहीं बढ़ता। लेकिन तब क्या होगा, जब यह आवाज़ उन बातों को साफ तौर पर कहने लगेगी, जिन्हें वह अभी केवल अकेलेपन में ही कहती है, जब वह आवाज़ एक बार उठकर फिर गिरेगी नहीं, चढ़ती ही जायगी, ऊपर और ऊपर और उसके साथ-साथ लोग भी उत्तेजित होकर उठ खड़े होंगे, जब यह आवाज़ उनमें विद्रोह और आज़ादी के, शक्ति के और अधिकार के बीज बोकर उन्हें पागल बना देगी ? तब क्या होगा, जब यह आवाज़ जनता के सामने उस अफ़्रीका की तस्वीर खींच देगी, जो नींद से जाग रहा होगा, जो विद्रोह का झंडा ऊँचा किये होगा, उस खूँख्वार और जंगली अफ़्रीका की तस्वीर ? और ऐसा करना कोई मुश्किल काम नहीं होगा, क्योंकि ऐसी बातें सोचने और कहने के लिए दिमाग की ज़रूरत नहीं होती। लेकिन यह आदमी डरपोक है।....और गम्भीर, वज्र-सी गुर्राहट ठंढ़ी पड़ जाती है। और लोग काँपकर फिर आपे में आ जाते हैं।

जान बोल रहा था—....क्या ज़्यादा धन की माँग करना गलत बात है ? लेकिन हमें मिलता क्या है ? हम केवल अपना हिस्सा माँगते हैं, ताकि हम अपने परिवार को, अपने बीवी-बच्चों को भूखा मरने से बचा लें। हमें पूरी मजदूरी नहीं मिलती। लैन्सडाउन कमीशन की राय थी कि हमें उचित नहीं मिलता। स्मिट कमीशन की राय थी कि हमें उचित नहीं मिलता।....

और यहाँ आवाज़ फिर गूंजी उठी और लोग उत्तेजित हो उठे। जान कह रहा था—हमें मालूम है कि हमें पूरी मज़दूरी नहीं मिलती। हम केवल वही चीज़ें माँगते हैं, जिनके लिए संसार के हर देश के मज़दूर आज लड़ रहे हैं, अपनी मेहनत को सही मूल्य पर बेचने का अधिकार, उस अधिकार के लिए कि हम भी और भले लोगों की तरह अपने परिवार का पालन-पोषण कर सकें। कहा जाता है कि मज़दूरी बढ़ाने से खानों को बन्द कर देना पड़ेगा। तो वह खानों का व्यवसाय किस काम का? अगर यह हमारी गरीबी को ज़िन्दा रखने के लिए है, तो इसे क्यों ज़िन्दा रहने देना चाहिए? कहा जाता है कि इससे देश समृद्ध होता है, पर हम इस समृद्धि का क्या देखते हैं? क्या दूसरों की सम्पन्नता कायम रखने के लिए हमें गरीब ही रखना आवश्यक है?....

भीड़ काँप उठती है, मानो किसी तूफ़ान ने हिला दिया हो उन्हें। यह अवसर है, जान, जब तुम्हारी आवाज़ स्वर्ग के दरवाज़ों तक पहुँच सकती है! अब उत्तेजक शब्दों का अवसर है, ऐसे असंयत, स्वच्छन्द शब्दों का, जो लोगों को झकझोरकर जगा दें, पागल बना दें और उन्हें उच्छृंखल बना दें। लेकिन जान यह जानता है! जो महान् शक्ति उसमें है, उसे वह जानता है और वह शक्ति से डरता है। और आवाज़ उसी तरह शान्त हो जाती है, जैसे पहाड़ों पर बादलों की गरज शान्त हो जाती है और उसकी प्रतिध्वनि धीरे-धीरे डूब जाती है।

—मैं कहता हूँ कि यह आदमी ख़तरनाक है!—एक पुलीसवाले ने कहा।

—हाँ, इसका भाषण सुनकर मुझे भी अब विश्वास हो गया है। इस हरामज़ादे को जेल में क्यों नहीं बन्द कर दिया जाता?—दूसरे कहा।

और पहले ने कहा—इसे गोली से क्यों नहीं मार देते?

और दूसरे ने पुष्टि की—हाँ, गोली क्यों नहीं मार देते?

—सरकार आग से खेल रही है!—पहले ने टिप्पणी की।

—तुम ठीक कहते हो!—दूसरे ने ताईद की।

जान का भाषण चल रहा है—हम केवल न्याय चाहते हैं। हम समानता की, वर्ण-भेद हटाने की, या वोट देने के अधिकार की माँग नहीं कर रहे हैं, हम संसार के सबसे सम्पन्न उद्योगपतियों से केवल ज़्यादा मज़दूरी की माँग कर रहे हैं। हमारी मेहनत के बिना यह उद्योग शक्तिहीन है, हम काम बन्द कर दें, तो इस उद्योग की मौत हो जाय। और मैं कहता हूँ कि इतनी मज़दूरी पर काम करने से अच्छा है कि हम काम बन्द कर दें!....

देशी पुलीसवाले बहुत चुस्त और सतर्क हैं, वे अपने स्थानों पर सिपाहियों की तरह अटल खड़े हैं। पता नहीं, वे इस भाषण के बारे में क्या सोच रहे हैं। पता नहीं, कुछ सोच भी रहे हैं या नहीं? सभा शान्त और संयत है। जब तक वह

शान्त और संयत है, तब तक कुछ नहीं करना है। लेकिन तनिक-सी भी गड़बड़ी होने पर जान को मंच पर से उतारकर, पुलीस की गाड़ी में बन्द करके कहीं और ले जाया जायगा। और तब उस बढ़ई की दूकान का क्या होगा, जिससे वह हर हफ्ते आठ-दस-बारह पाउण्ड कमा लेता है? और उस दूकान का क्या होगा, जहाँ लोग देश के हर भाग से उसकी बातें सुनने या उससे बातें करने आते थे?

कुछ ऐसे लोग होते हैं, जो बलिदान होने की कामना करते हैं, कुछ ऐसे लोग हैं, जो जानते हैं कि जेल जाने से उन्हें महानता मिलेगी। कुछ ऐसे भी है, जो महानता मिले या न मिले, वे जेल जायँगे। लेकिन जान इनमें से नहीं है। जेल में वाहवाही नहीं मिलती। वह कहता है—मैं आपको अधिक देर नहीं रोकूँगा। अब देर हो रही है और अभी दूसरे वक्ता हैं। फिर अगर आप लोग देर से घर पहुँचेंगे, तो पुलीस आपको परेशान करेगी। मेरे लिए तो कोई बात नहीं, पर चिन्ता उन लोगों के लिए है, जिन्हें पास रखना पड़ता है। और हम पुलीस को परेशान नहीं करना चाहते। मैं अन्त में फिर यह कहना चाहता हूँ कि हमें अपनी मेहनत बेचना है और यह एक मानवी अधिकार है कि उचित मूल्य पर ही अपना श्रम बेचें। इसी अधिकार के लिए ही अभी यह लड़ाई लड़ी गयी थी, इसी के लिए हमारे बहुत-से अफ्रीकी सिपाही लड़ते रहे हैं।

और आवाज़ में फिर जोर आया। फिर कुछ होनेवाला है—सिर्फ यहीं नहीं, सारे अफ्रीका में और उस समस्त महाद्वीप में जहाँ हम अफ्रीकावासी रहते हैं!

लोग भी गुर्रा उठे। इसके एक अर्थ तो ठीक हैं, पर दूसरे अर्थ भयप्रद हैं! पर जान कहता एक बात है और उसका अर्थ दूसरा होता है।

—....इसलिए हम अपना श्रम केवल उसके उचित मूल्य पर ही बेचेंगे और अगर उद्योगपति हमारे श्रम को मोल नहीं ले सकता, तो उस उद्योग को मर जाने दो, पर किसी उद्योग को जीवित रखने के लिए अपने श्रम को सस्ता मत बेचो!

जान बैठ जाता है, और लोग उसकी प्रशंसा करते हैं और तालियों और शोर से वायुमंडल गूँज जाता है। ये सीधे-सादे लोग हैं, जो यह नहीं जानते कि इस देश के सबसे ज़ोरदार वक्ता में एक बहुत बड़ी कमी है। उन्होंने केवल वह जोरदार आवाज़ ही सुनी थी, उस आवाज़ ने उन्हें ऊपर उठाया था और फिर गिरा दिया था। साथ ही यह वह आवाज थी, जो गिराने के बाद उन्हें फिर से उठा सकती थी।

—आपने इनको सुन लिया?—सिमांगु ने पूछा।

स्टीफेन कुमालो ने सर हिलाया—मैंने ऐसा भाषण कभी नहीं सुना था। वह मेरे साथ, अपने भाई के साथ तक ऐसा खेला, जैसे मैं बच्चा हूँ!

—शक्ति!—सिमांगु ने कहा—ऐसी शक्ति भगवान लोगों को क्यों देता है, यह

हमारे समझने की बात नहीं है। अगर यह आदमी धर्मोपदेशक होता, तो शायद सारा संसार ही इसके पीछे चलता।

—मैंने ऐसा भाषण कभी नहीं सुना!

और सिमांगु ने गम्भीरता से कहा—शायद हमें भगवान को इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहिए कि जान भ्रष्ट है, क्योंकि अगर वह भ्रष्ट न होता, तो इसकी आवाज देश में खून की नदियाँ बहा देती। उसकी सम्पत्ति ने उसे भ्रष्ट कर दिया है और उसे उस सम्पत्ति के चले जाने का भय है, वह उस शक्ति के चले जाने से डरता है, जो उसे प्राप्त है। हम कभी इस बात को नहीं समझ सकते। हम लोग चलें, या इस टामलिनसन का भाषण सुनिएगा?

—मैं सुनना तो चाहता हूँ।

—तो फिर और नजदीक चलें, क्योंकि इसकी आवाज आसानी से सुनायी नहीं पड़ती।

*

—हम लोग चलें, श्री जारविस?

—हाँ, जान, चलो चला जाय।

—आपका उसके बारे में क्या मत है, श्री जारविस?

—मैं इस तरह की बातों की परवाह नहीं करता,—जारविस ने संक्षेप में कहा।

—मेरा मतलब यह नहीं था, मेरा मतलब था कि ऐसी बातें हो रही हैं न?

जारविस गुर्राये—नहीं, मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं, जान। चलो, तुम्हारे क्लब चला जाय।

और जान हैरीसन ने अपने मन में सोचा, मेरे पिता की तरह यह भी उस बात का सामना करने या उसे सहने के लिए ज्यादा बुड्ढे हो गये हैं।

वह कार में बैठ गया और उसने इंजन चला दिया।

लेकिन हमें तो उसका सामना करना ही है, गम्भीरतापूर्वक उसने सोचा।

*

कप्तान ने बड़े अफसर को सलाम किया।

—यह रिपोर्ट है, हुजूर।

—कैसा रहा, कैप्टेन?

—कोई झगड़ा तो नहीं हुआ, हुजूर। लेकिन जान आदमी है खतरनाक। यह भीड़ को एक हद तक तो उकसाता है, लेकिन फिर ठंडा कर देता है। लेकिन यह मैं जानता हूँ कि अगर हम लोग वहाँ न रहें, तो पता नहीं वह क्या कहे।

—हूँ। तो हम लोगों को वहाँ रहना ही होगा! ताज्जुब है कि हर बार यही

खबर मिलती है कि वह हमेशा एक हद तक ही जाता है, उसके आगे नहीं! तो फिर तुम्हारा यह कहने का क्या मतलब है कि वह खतरनाक है?

—उसकी आवाज़, हुजूर। ऐसी आवाज़ मैंने कभी नहीं सुनी, साहब। वह बाजे के सबसे ऊँचे स्वर की तरह है, सब लोगों को झकझोर डालती है। मैंने स्वयं यह महसूस किया। बिल्कुल ऐसा लगता है, मानो वह खुद भी समझ जाता है कि क्या हो रहा है और अपने को रोक लेता है।

—हाँ, मैंने भी उस आवाज़ की इस विशेषता के बारे में सुना है। किसी दिन मैं भी उस आवाज को जाकर सुनूँगा।

—क्या हड़ताल होगी, साहब?

—काश, मुझे इस बारे में कुछ पता होता! ऐसा हुआ, तो बहुत परेशानी होगी। हू-हः! जैसे हम यहाँ हाथ-पर-हाथ रखे ही तो बैठे हैं! अच्छा, अब तुम घर जा सकते हो।

—नमस्कार, साहब।

—नमस्कार, हैरी।....हैरी!

—जी, साहब।

—मेरे ख्याल से तुम्हारी तरक्की होनेवाली है।

—ओह, धन्यवाद, साहब!

—अब तुम्हें एक दिन मेरी जगह भी मिल जायगी। अच्छा वेतन, ऊँचा ओहदा, इज़्ज़त! और उसके साथ-ही साथ दुनिया-भर की परेशानी, जैसे ज्वालामुखी की चोटी पर बैठना हो! भगवान जाने, यह-सब चीजें पाने-योग्य हैं भी? अच्छा, नमस्कार, हैरी।

—नमस्कार, साहब!

ऊँचे अधिकारी ने एक लम्बी साँस ली और सामने रखे हुए कागज अपने पास खींचे। माथे पर चिन्ता की लकीरें सिमट आयीं।

वेतन! ऊँचा ओहदा! इज्जत! हुँ-हः!.... और फिर काम करने में लग गये।

*

अगर दूसरी हड़ताल हुई, तो स्थिति बहुत गम्भीर हो जायगी, क्योंकि विट्वाटर्सरैन्ड में लगभग तीन लाख काले मजदूर खानों में काम करते हैं। यह सब या तो ट्रान्सकेई के या बसूटोलैंड के या बेचुआनालैंड के या जुलूलैंड के या सेकूकूनीलैंड के रहनेवाले हैं या अफ्रीका के बाहर के लोग हैं। वे सीधे-सादे लोग हैं, अनपढ़, आदिम जाति के लोग, जिन्हें आसानी से प्रभावित किया जा सकता है। और हड़ताल करने पर वे पागल हो सकते हैं, वे खानों के अधिकारियों को उनके दफ्तरों में कैद कर लेते हैं, पत्थर और शीशे फेंकते हैं, आग लगा देते हैं। यह ठीक है कि वे सैकड़ों

खानों में काम करते हैं और बाड़ों में रहते हैं और इसलिए उनपर काबू पाना आसान है। लेकिन फिर भी वे लोग बहुत नुकसान तो कर ही सकते हैं, उनके कारण लोगों की जानें तो खतरे में पड़ सकती हैं और दक्षिणी अफ्रीका के महान व्यवसाय को ठप कर सकते हैं, वह उद्योग, जिसपर दक्षिणी अफ्रीका बना है और जिसपर वह खड़ा है।

इस बात की चिन्ताजनक अफवाहें फैल रही थीं कि यह हड़ताल केवल खानों तक ही सीमित नहीं होगी, हर व्यवसाय और उद्योग में फैल जायगी, यहाँ तक कि रेलों और जहाजों में भी। यह बात भी सुनी गयी थी कि हर काला आदमी और हर काली औरत, उस जाति का बच्चा-बच्चा काम करना बन्द कर देगा; हर स्कूल, हर गिरजा बन्द हो जायगा और ये लोग लगभग अस्सी लाख आदमी, हर शहर में, हर कस्बे में, हर गाँव में, हर सड़क पर और हर खेत पर गुस्से में बेकार खड़े रहेंगे और काम को हाथ नहीं लगायँगे। लेकिन यह तो बकवास मालूम पड़ती है। उन लोगों में इतना ज़बरदस्त संगठन नहीं है। उन्हें जबरदस्त तकलीफें उठानी पड़ेंगी, भूखों मरना पड़ेगा। हड़ताल की इतनी जबरदस्त मुसीबत का ख्याल आते ही भय लगता था और अंग्रेजों को तब इस बात का अहसास होता था कि किस हद तक वे यहाँ के मजदूरों पर निर्भर हैं!

यह चिन्ताओं और परेशानियों का समय है, इसमें सन्देह नहीं। दुनिया में अजीब-अजीब तरह की घटनाएँ हो रही हैं और दुनिया में होनेवाली घटनाओं का हमेशा ही दक्षिणी अफ्रीका पर प्रभाव पड़ा है।

*

हड़ताल हुई भी और खत्म भी हो गयी। खानों के अलावा और कहीं हड़ताल नहीं हुई। सबसे अधिक संकट ड्रीफ़ान्टेन में रहा, जहाँ पर पुलीस को बुलाना पड़ा था काले मजदूरों को खानों में जबरदस्ती भेजने के लिए। लड़ाई हुई थी और तीन काले मजदूर मारे गये थे। लेकिन खबर यह है कि अब बिल्कुल शांति है, बिल्कुल शान्ति।

जोहैन्सबर्ग के पादरियों के वार्षिक सम्मेलन से खानों के बारे में अधिक ज्ञान की आशा नहीं की जा सकती। अब वह दिन खत्म-से लगते थे, जब इन सम्मेलनों और संस्थाओं का सम्बन्ध केवल धर्म से ही होता था। इस सम्मेलन के एक सदस्य पादरी ने इस बारे में एक भाषण भी दिया था। उन्होंने कहा था कि अब वह समय आ गया है, जब अफ्रीकन खान मजदूर यूनियन को मान्यता प्रदान करना आवश्यक हो गया है और उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि अगर ऐसा नहीं किया जायगा, तो खून की नदियाँ बह जायँगी। यह समझा जाता था कि उनका मतलब केवल इतना ही था कि यूनियन को एक ऐसी जिम्मेदार संस्था मान लिया जाय, जिसे

मालिकों से मजदूरों की समस्याओं के बारे में और मजदूरी के बारे में समझौता करने का अधिकार हो। लेकिन एक प्रतिनिधि व्यक्ति ने बताया था कि खानों में काम करनेवाले ये मजदूर सीधे-सादे आदमी, मूर्ख होते हैं, समझौता करने के योग्य नहीं होते और उभाड़नेवालों के सहज शिकार हो सकते हैं। फिर यह बात सब जानते हैं कि उत्पादन की कीमत बढ़ जाने से खानों के अस्तित्व तक को खतरा है, दक्षिणी अफ्रीका के अस्तित्व तक को खतरा है।

इस कठिन समस्या के कई पहलू हैं। और लोग अब तक भूमि कटने की समस्या और जातियों की बर्बादी, स्कूलों की कमी और अपराधों के विवाद का आग्रह करते हैं, जैसे इस-सबका भी इस मुश्किल समस्या से कोई सम्बन्ध है। अगर आप इसके बारे में अधिक विचार करें, तो आपको प्रजातन्त्रों के बारे में और दोभाषावाद के बारे में, प्रवासियों के विषय में, फ़िलिस्तीन की समस्याओं के बारे में और न जाने किस-किस चीज के बारे में भी सोचना पड़ेगा। इसलिए एक तरह से यही अच्छा है कि आप इसके बारे में कुछ सोचें ही नहीं।

इसी बीच हड़ताल समाप्त हो गयी और बहुत ही कम लोगों की मृत्यु हुई। खबर यह है कि अब तक पूर्ण शांति स्थापित हो चुकी है, पूर्ण शान्ति!

सुनसान बन्दरगाह में अब भी पानी है, जो किनारे से टकराता है; अँधेरे और शान्त वन में अब भी एक-आध पत्ती गिर पड़ती है; पालिशदार दरवाजों के पीछे दीमक लकड़ी खा रही है। कहीं शान्ति नहीं है, मूर्खों के अतिरिक्त कुछ भी शान्त नहीं है!

(१०)

श्रीमती लिथेबी और गर्टरूड घर में घुसीं और श्रीमती लिथेबी ने अन्दर आकर किवाड़ बन्द कर दिये।

—मैंने तुम्हें समझने की बहुत कोशिश की है, बेटी, लेकिन मैं इसमें सफल नहीं हो पाती।

—मैंने कोई गलती तो नहीं की?

—मैं नहीं कहती कि तुमने गलती की। लेकिन तुम इस घर को नहीं समझ सकी हो, यहाँ जो लोग रहते हैं, उन्हें नहीं समझ सकी हो।

गर्टरूड रूठकर खड़ी रही—मैं बिल्कुल समझती हूँ।

—तो फिर, बेटी, तुम ऐसे लोगों से क्यों बात करती हो?

—मैं यह नहीं जानती थी कि वह भले आदमी नहीं हैं।

—जिस ढंग से वे बोलते हैं, हँसते हैं, वह नहीं सुनती ? उनकी संयमहीन और उच्छृङ्खल हँसी नहीं सुनती ?

—मुझे नहीं मालूम था कि यह बुरा है।

—मैं यह नहीं कहती कि वह बुरा है। जिस ढंग से वह हँसते-बोलते हैं, वह संयम-हीन और उच्छृङ्खल है। क्या तुम भली औरत बनने की कोशिश नहीं कर रही हो ?

—कर तो रही हूँ।

—तो ऐसे लोगों से काम नहीं चलेगा।

—मैं सुन रही हूँ।

—मैं तुम्हें झिड़की देना नहीं चाहती। पर तुम्हारे भाई, उम्फ़ुन्दीस, काफी कष्ट और दुख उठा चुके हैं।

—हाँ, उन्होंने बहुत कष्ट सहा है।

—तब, बेटी, उन्हें और दुख मत पहुँचाओ।

—इस शहर को छोड़कर मुझे खुशी होगी,—गर्टरूड बोली। उसकी आँखों में आँसू आ गये—मेरी समझ में नहीं आता कि यहाँ क्या करूँ।

—इसी जगह की बात नहीं है। इन्डाटशेनी में भी ऐसे लोग मिलेंगे, जो असंयमता और उच्छृङ्खलता से हँसते-बोलते हैं।

गर्टरूड बोली—यही जगह है। इस जोहैन्सबर्ग में मुझे मुसीबतों के सिवा कुछ भी नहीं मिला है। यहाँ से जाने में मुझे खुशी होगी।

—तुम जल्दी ही जाओगी। मुकदमा कल खत्म हो जायगा। लेकिन मुझे तुम्हारे लिए चिन्ता है और उम्फ़ुन्दीस के लिए भी।

—चिन्ता की कोई ज़रूरत नहीं।

—मुझे यह सुनकर बहुत खुशी हुई, बेटी। उस लड़की के बारे में मुझे बिल्कुल चिन्ता नहीं है। वह ठीक होना चाहती है और आज्ञाकारी भी है। वह उम्फ़ुन्दीस को खुश करना चाहती है और ऐसा होना ही चाहिए, क्योंकि जो उसे अपने सगे पिता से नहीं मिला था, वह उसे उम्फ़ुन्दीस से मिलता है।

—क्यों, वह भी तो उच्छृङ्खल ढङ्ग से बात कर सकती है ?

—मैं अन्धी नहीं हूँ, बच्ची। लेकिन वह दूसरे ढङ्ग की बातें सीखना चाहती है और उन्हें जल्दी सीख भी लेती है। अच्छा, इस बात को खत्म करो, कोई आ रहा है।

किसी ने दरवाजा खटखटाया और एक लम्बी-चौड़ी औरत आ खड़ी हुई। घर तक आने में वह हाँफ उठी थी। वह बोली—अख़बार में एक बुरी खबर है। मैं उसी को तुम्हें दिखाने लायी हूँ।—उस औरत ने मेज़ पर अखबार रखकर काला-मोटा शीर्षक इन औरतों को दिखाया।

शहर में एक और हत्या। देसी चोर ने यूरोपियन गृहस्वामी को गोली मार दी।

इस खबर से उन लोगों को धक्का लगा। ऐसे ही शीर्षकों की लोगों को आज कल आशंका रहती थी। गृहस्थों को उनसे आशंका रहती और उनकी औरतें उनसे डरती थीं, वे सब डरते थे, जो दक्षिणी अफ्रीका की सेवा में लगे थे, सारे न्याय-परायण काले लोग उनसे डरते थे। कुछ लोगों का आग्रह था कि ऐसी खबरों के शीर्षक से देशी शब्द निकाल दें। कुछ दूसरे ऐसे थे, जो यह नहीं समझ पाते थे कि इस कटु सत्य को छुपाने से क्या लाभ होगा।

इस मोटी-ताज़ी औरत ने कहा—इस घटना का ऐसे मौके पर होना बहुत ही दुर्भाग्य की बात है, जब कि कल ही वह मुकदमा खत्म होनेवाला है।—वह उस मुकदमे के बारे में सब-कुछ जानती थी और श्रीमती लिथेबी के साथ अदालत की हर पेशी में गयी थी।

—तुम ठीक ही कह रही हो,—श्रीमती लिथेबी बोलीं।

उन्होंने तभी फाटक खुलने की आवाज़ सुनी और अखबार को कुर्सी के नीचे फेंक दिया। कुमालो लड़की के साथ आये थे। लड़की उनका हाथ पकड़े हुए थी, क्योंकि इन दिनों वह बहुत कमजोर-से हो गये थे। वह कुमालो को उनके कमरे तक पहुँचाने गयी। वह फाटक एक बार फिर खुला और सिमांगु आये। उनकी नजर फौरन अखबार पर पड़ी और उन्होंने उसे कुर्सी के नीचे से उठा लिया।

—क्या उन्होंने इसे देखा है?

—नहीं, उम्फुन्दीस,— तगड़ी औरत ने उत्तर दिया—क्या यह दुर्भाग्य नहीं है कि यह घटना इस अवसर पर हुई?

—जज बहुत बड़ा न्यायकर्ता है। लेकिन जैसा आप कह रही हैं, यह फिर भी दुर्भाग्य की बात है। कुमालो अखबार के शौकीन हैं। अब क्या करें?

—यह जो अख़बार लायी हैं, उसके सिवा और कोई अख़बार यहाँ नहीं है,—श्रीमती लिथेबी ने कहा—लेकिन जब वह मिशन हाउस खाना-खाने जायँगे, तो वहाँ वह अख़बार देख ही लेंगे।

—हाँ, इसी लिए तो मैं आया था,— सिमांगु बोले—माँ, क्या हम लोग आज रात को यहीं खाना नहीं खा सकते?

—यह तो कोई बड़ी बात नहीं है। घर में खाना काफ़ी है, यद्यपि वह मामूली है।

—वास्तव में, माँ, तुम हमेशा ही हमारी सहायक होती हो!

—हमारा जीवन आखिर और है किसलिए?

—और खाने के बाद हम सीधे सभा में चले जायँगे। कल परेशानी नहीं होगी, क्योंकि उस दिन वह अखबार नहीं पढ़ते, जिस रोज मुकदमा होता है और उसके बाद कोई बात नहीं।

और उन लोगों ने अखबार छुपा दिया। फिर उन-सब लोगों ने वहीं खाना खाया और उसके बाद वे लोग गिरजे की एक सभा में चले गये। वहाँ एक काली औरत ने अपने 'नन' होने की प्रेरणा और संसार को त्यागने पर भाषण दिया और किस प्रकार भगवान् ने उसमें से स्त्री-सुलभ इच्छाओं को निकाल दिया।

सभा के बाद जब सिमांगु चले गये और कुमालो अपने कमरे में जा चुके और लड़की भोजन के कमरे में अपना बिस्तर लगा रही थी, तो गर्टरूड श्रीमती लिथेबी के पीछे-पीछे उनके कमरे में गयी।

—क्या मैं आपसे कुछ बातें कर सकती हूँ, माँ ?

—इसमें पूछने की क्या बात है, बेटी !

उन्होंने दरवाजा बन्द कर लिया और प्रतीक्षा करने लगीं कि गर्टरूड बात शुरू करें।

—मैंने उस देसी बहन का व्याख्यान सुना और, माँ, मुझे लगता है, मैं भी 'नन' बन जाऊँ।

श्रीमती लिथेबी ने खुशी में ताली बजायी और फिर वह गम्भीर हो गयीं।

—मैंने ताली इसलिए नहीं बजायी कि तुम ऐसा करो, पर इसलिए कि तुम ऐसा सोचती हो। पर इस बच्चे का क्या होगा ?

गर्टरूड की आँखों में आँसू छलक आये।

—मेरी भाभी शायद इस बच्चे की ज्यादा अच्छी तरह देख-रेख कर लेंगी। आप तो जानती ही हैं कि मेरे अन्दर बहुत-सी कमजोरियाँ हैं। मैं असंयत हँसी हँसती हूँ और बोलती भी हूँ। शायद 'नन' बन जाना मेरे लिए ठीक रहेगा।

—तुम्हारा मतलब वासनाओं से है ?

गर्टरूड ने सर लटका लिया।

—जी, मेरा वही मतलब है।

श्रीमती लिथेबी ने गर्टरूड का हाथ अपने हाथों में ले लिया—यह बड़ी बात होगी। लेकिन लोग कहते हैं कि ऐसे काम जल्दी में या योंही नहीं किये जाते। क्या उस 'नन' ने यह नहीं कहा था ?

—जी, हाँ, माँ, कहा था।

—अभी इस बात को हम अपने सिवा किसी से न कहें। मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँगी और तुम भी प्रार्थना करना। कुछ समय बाद हम लोग फिर बात करेंगे। तुम समझती हो न कि ऐसा करना बुद्धिमानी है ?

यह बड़ी बुद्धिमानी की बात है।

—अच्छा तो अब जाकर आराम से सोओ, बेटी। मैं नहीं जानती कि ऐसा होगा ही, मगर यदि ऐसा हुआ, तो वृद्ध को इस बात से बहुत सुख मिलेगा।

—अच्छा, माँ, आप भी आराम कीजिए।

गर्टरूड ने श्रीमती लिथेबी के कमरे के किवाड़ बन्द कर दिये। वह अपने कमरे की तरफ़ चलने लगी, लेकिन बीच में ही एकाएक किसी उमंग से प्रेरित होकर वह लड़की के बिस्तर के पास ज़मीन पर बैठ गयी।

—मैं 'नन' हो जाने की बात सोच रही हूँ।

लड़की फ़ौरन उठ बैठी—ऐं? यह तो बहुत मुश्किल है!

—हाँ, मुश्किल तो है। मैंने अभी पक्का निश्चय नहीं किया है। लेकिन अगर ऐसा हो जाय, तो क्या तुम लड़के की देख-भाल कर लोगी?

—हाँ,—लड़की ने उत्तर दिया, और उसके चेहरे पर उत्सुकता थी।

—मैं ज़रूर उसकी देख-भाल कर लूँगी।

—वैसे ही जैसे वह तुम्हारा ही है।

—बिल्कुल वैसे ही, अपने ही की तरह।

—और तुम उसके सामने उच्छृंखल बातें तो नहीं करोगी?

लड़की गम्भीर हो गयी—वैसी बातें अब मैं नहीं करती!

गर्टरूड बोली—मैं भी उस तरह की बातें अब नहीं करूँगी। लेकिन यह ध्यान रखना कि अभी मैंने निश्चय नहीं किया है।

—मैं ध्यान रखूँगी।

—और अभी किसी से यह बताना भी मत। भैया को दुख होगा अगर हमने बातें कीं, लेकिन फिर वैसा किया नहीं।

—मैं तुम्हारी बात समझ गयी।

—अच्छा, नन्हीं, अब सो जाओ।

—अच्छा।

(११)

लोग खड़े हो जाते हैं, जब जज महोदय अदालत के कमरे में आते हैं। आज वह और अधिक सम्मान से और गम्भीरता से खड़े होते हैं, क्योंकि आज फैसला सुनाने का दिन है। जज महोदय बैठ जाते हैं और तब उनके दो सहायक बैठते हैं। और तब सब लोग बैठ जाते हैं; और तीनों अपराधी अदालत के नीचे की जगह से लाये जाते हैं।

जज बोलते हैं—मैंने इस मुकदमे पर बहुत सोच-विचार किया है और मेरे सहायकों ने भी खूब सोचा-विचारा है। हमने उन-सब प्रमाणों को ध्यान से सुना है, जो हमारे सामने लाये गये, उनपर पूरी बहस की गयी और उनको एक-एक कर परखा है।

और दुभाषिया ज़ुलू में उस बात का अनुवाद करता है, जो जज कहते हैं।

—अभियुक्त एबसेलाम कुमालो ने अपने अपराध को अस्वीकार नहीं किया है। बचाव-पक्ष के वकील ने अपराधी को गवाहों के कठघरे में खड़ा किया, जहाँ उसने सीधे-सादे यह घटना बता दी कि उसने किस तरह पार्कवोल्ड- निवासी स्वर्गीय आर्थर जारविस की, उनके मकान में गोली मारकर, हत्या की थी। उसने यह भी स्वीकार किया है कि उसका हत्या करने या गोली चलाने तक का कोई इरादा नहीं था और यह कि वह हथियार मृत व्यक्ति के रिचर्ड पाइरिंग नामक नौकर को धमकाने के लिए लाया गया था और यह कि वह समझता था कि मालिक कहीं और है। इस बात पर हम फिर विचार करेंगे। लेकिन इसमें का कुछ अंश दूसरे और तीसरे अभियुक्तों के अपराध के विचार में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। पहला अपराधी कहता है कि इस घटना की योजना अपराधी नम्बर तीन, जोहैन्स पफ़ूरी, ने बनायी थी और पफ़ूरी ने ही वह चोट मारी थी, जिससे नौकर पाइरिंग बेहोश हुआ था। उसके इस कथन की पुष्टि पाइरिंग-द्वारा स्वयं हुई है। उसका कहना है कि उसने पफ़ूरी को नक़ाब के ऊपर आँखों के फड़कने से पहचान लिया था। यह भी सत्य है कि पाइरिंग ने पफ़ूरी को उसी तरह के वेश के दस व्यक्तियों के बीच में से भी पहचान लिया था, जिनमें एक से अधिक में वही आँखें फड़कने की विशेषता थी, जो पफ़ूरी में है। पर बचाव पक्ष के वकील ने इस बात की ओर ध्यान दिलाया है कि फड़कनें समान थीं, पर अभिन्न नहीं थीं, ऐसे थोड़े-से आदमियों का ढूँढ़ निकालना कठिन होगा, जिनकी समान डीलडौल की बनावट हो और ज़रा-सी भी फड़कन हो। पफ़ूरी को पाइरिंग अच्छी तरह जानता था। बचाव का तर्क है कि शिनाख़्त तब जायज़ होती, अगर दसों आदमी एक सी बनावट के होते और उनमें अभिन्न फड़कने होतीं। पहले इस तर्क को हम पूरी तरह से नहीं मान सकते, क्योंकि इसका तो यह मतलब होता है कि शिनाख़्त तभी जायज़ हो सकती है, जब वे सब लोग, जिनकी शिनाख़्त होनी है, एक साँचे में ही ढले हों। लेकिन इस तर्क की कुछ बातें स्पष्टतः सही हैं। आँखें फड़कने की विशेषता के आधार पर शिनाख़्त सही भी हो सकती है और गलत भी, खास तौर पर जब कि चेहरे का निचला भाग ढँका हो यह तो मानना ही पड़ेगा कि पहचान नक्शे पर पूरे नमूने की पहचान पर निर्भर करती है। और उस हालत में यह अनिश्चित हो जाता है, जबकि व्यक्तित्व का कुछ भाग छुपा हुआ हो। वास्तव में इस आधार पर पहचान कराना बहुत

खतरनाक भी हो सकता है, क्योंकि ऐसा होना भी सम्भव है कि आकार में जो भिन्नताएँ हैं, वह ढँक जायँ और केवल वही चीज़ें दिखायी दें, जो दोनों में एक-सी हैं। उदाहरणार्थ हम यह कह सकते हैं कि दो व्यक्ति, जिनके शरीर पर एक-सा दाग़ है, उस हालत में एक दूसरे में आसानी से गड़बड़ पैदा कर देते हैं, जबकि पहचान करनेवाले को सारा शरीर ढाँककर केवल वही दागों के निशान दिखाये जायँ। इसलिए पाइरिंग का उस व्यक्ति को पहचान लेना, जिसने उसके चोट मारी थी, इस बात को साबित नहीं करता कि पफ़ूरी ही वह आदमी था।

—इसके सिवा इस बात की ओर भी ध्यान देना पड़ेगा कि हालाँकि प्रथम अभियुक्त एबसेलाम कुमालो ने यह बयान दिया है कि पफ़ूरी इस काम में उसका साथी था और उसी ने पाइरिंग पर आक्रमण किया, लेकिन ऐसा उसने पुलीस-द्वारा पफ़ूरी का पता पूछने के बाद ही कहा था। क्या यह बात तभी उसके ख्याल में आयी थी? या पफ़ूरी का इस हत्या से कोई पहले से भी सम्बन्ध था? पहले अभियुक्त के वकील ने कहा है कि एबसेलाम कुमालो कुछ दिनों तक निरन्तर भय की स्थिति में रहा, और एक बार गिरफ्तार होने पर, उसके सामने एक या अधिक कोई भी नाम रखे जाने पर भी, वह उस बात को स्वीकार कर लेता, जो उसके मन पर बड़ा भारी बोझ बन रहा था, और यह मनःस्थिति ही थी, पफ़ूरी का नाम नहीं, जिसके कारण उसने अपराध स्वीकार कर लिया। इस भयानक स्थिति का उसका बयान ही इस कल्पना को बल देता है। पर इस संभावना को अलग नहीं किया जा सकता कि सुनते ही उसने पफ़ूरी का नाम पकड़ लिया और कहा कि तीन में पफ़ूरी भी था। इतने भयानक अपराध में उसने अकेले न रहना चाहा। पर वह अपने असली साथियों के नाम क्यों नहीं बताता, क्योंकि पाइरिंग की गवाही में सन्देह करने का कोई कारण नहीं दिखायी देता कि रसोई में तीन आदमी आये थे। उसने अपने कामों का साफ बयान दिया है। तब फिर वह दो निरपराध व्यक्तियों को क्यों फाँसना चाहता है, क्यों दो अपराधी आदमियों के नाम छुपाना चाहता है?

—इस विचित्र संयोग पर भी ध्यान देना पड़ेगा कि जिस बात से गलत शिनाख़्त का तर्क किया जाता है, उसी से एक ऐसे साथी का पता लगा, जिसने फौरन ही अपने अपराध को स्वीकार कर लिया।

—इस पेचीदा मुकदमे में एक और कठिनाई सामने आती है। शेष दोनों अभियुक्त या वह औरत श्रीमती काइज़ इस बात से इनकार नहीं करते कि वे चारों हत्या के बादवाली रात को मकान नम्बर ७६-तेईसवाँ एवेन्यू, एलेक्जैन्डरा में उपस्थित थे। क्या इन लोगों का यह मिलना भी एक ऐसी घटना थी, जो संयोग से ही हुई थी और जिसके कारण पहले अभियुक्त ने दूसरे और तीसरे अभियुक्त

को अपना साथी बनाया ? या क्या यह मिलना उसी तरह का है, जैसा कि वह बता रहा है ? क्या उस मिलने के अवसर पर हत्या के बारे में बातें हुई थीं ? यह औरत श्रीमती काइज़ अत्यन्त असन्तोषप्रद गवाह है और हालाँकि सरकारी वकील ने और पहले अपराधी के वकील ने भी इस बात को बहुत साफ तौर पर सिद्ध कर दिया है, लेकिन वे दोनों उस बात को अच्छी तरह से प्रमाणित नहीं कर पाये हैं कि इस मुलाकात में ही हत्या पर बात हुई थी। यह औरत पहले पुलीस से झूठ बोली कि उसने पहले अभियुक्त को लगभग एक साल से देखा ही नहीं है। वह घबरायी, परस्पर विरोधी बातें कहनेवाली और डरी हुई गवाह है, लेकिन क्या यह डर और उससे उत्पन्न घबराहट केवल इसलिए थी कि वह अदालत में लायी गयी थी या यह दूसरे उन अपराधों की जानकारी से थी, जिनमें वह उनके साथ रह चुकी थी या यह-सब इस जानकारी के कारण था कि वास्तव में हत्या के सम्बन्ध में बातें हुई थीं ? यह बात स्पष्टतः सिद्ध हुई नहीं लगती।

—सरकारी वकील ने तीनों अभियुक्तों के पहले के मेल-जोल पर बहुत जोर दिया है और वास्तव में इतना प्रबल तर्क उपस्थित किया है कि इस मेल-जोल के बारे में आगे जाँच करना जरूरी है। पर पहले का मेल-जोल, अपराधी प्रकृति का होने पर भी, अपने आप में उस गम्भीर अपराध में साथ होने का प्रमाण नहीं हैं, जिसमें तीनों व्यक्ति अभियुक्त हैं।

—बहुत सोच-विचार के बाद मेरे सहायक और मैं इस परिणाम पर पहुँचे कि अभियुक्त दो और तीन का अपराध साबित नहीं होता और इसलिए उन दोनों को मुक्त कर दिया जायगा। लेकिन मुझे इस बात मे कोई सन्देह नहीं है कि इन लोगों के पिछले अपराधों में साथ रहने की भी छान-बीन आगे अच्छी तरह की जायगी।

अदालत में एक संकेत होता है। नाटक का एक अंक समाप्त हो चुका। अभियुक्त एबसेलाम के चेहरे पर किसी प्रकार का भाव नहीं आता। वह उन दोनों की ओर भी नहीं देखता, जो अब छूट गये हैं। लेकिन पफूरी के चेहरे से यह प्रगट होता है, मानो वह कह रहा हो, यही तो ठीक है, न्याय है, यही जो-कुछ हुआ है।

मुकदमा अब केवल पहले अभियुक्त के ही ख़िलाफ है। उसका बयान, जिसमें उसने अपराध को स्वीकार किया था, अच्छी तरह जाँच लिया गया है और वह सही मिलता है। यह मानने का कोई कारण नहीं दिखायी पड़ता कि एक निरपराध व्यक्ति ऐसे अपराध को स्वीकार कर रहा है, जो उसने वास्तव में किया हो नहीं। उसका विद्वान् वकील इस बात की प्रार्थना करता है कि उसको कड़ी सजा न दी जाय। वह बहस करता है कि वह अपने अपराध से दुखी है, उसे पश्चाताप है।

वह उसके सीधे-सच्चे ढङ्ग से अपराध स्वीकार करने की प्रशंसा करता है। और वह सीधे-साधे मूल जाति के बालक के चरित्र पर पड़े और नगर के संकटजनक प्रभाव की ओर ध्यान आकर्षित करता है। वह इस संकट का गम्भीरतापूर्वक निरूपण करता है, जो हमारी मूल जाति पर छा रहा है और इस अपराध में हमारा हाथ रहने का प्रबल तर्क देता है। पर अगर यह सही भी हो कि डर और स्वार्थ और नासमझी के कारण हमने ऐसे विनाश की सृष्टि की है कि जिसके सुधार के लिए कुछ नहीं करते, अगर यह भी सही हो कि उससे हम लज्जित हों और जो-कुछ किया है, उससे कुछ अधिक साहसपूर्ण और ठीक काम करते, फिर भी एक कानून तो है, और इस दोषपूर्ण समाज के सबसे अधिक स्मरण करने-योग्य अच्छे कामों में से एक यह है कि इसने कानून बनाया है और उसकी व्यवस्था के लिए जजों को नियुक्त किया है, और उन जजों को कानून के निर्णय के अतिरिक्त अन्य सारे उत्तरदायित्व से मुक्त कर दिया है। जज कानून के साथ इस कारण खिलवाड़ नहीं कर सकते कि हमारा समाज दोषी है। अगर वह कानून किसी ऐसे समाज का बनाया हुआ है, जिसे कुछ लोग अन्यायी समझते हैं, तो कानून को और समाज को ही बदलना पड़ेगा। वर्त्तमान समय में एक कानून जारी है, जिसके अनुसार ही निर्णय करना होगा और जज का यह पवित्र कर्त्तव्य होगा कि वह उसी के अनुसार न्याय करें। और यह बात कि जज उस न्याय की व्याख्या करने के लिए स्वतन्त्र हैं, यह उस दोषी समाज की न्यायप्रियता ही मानी जायगी, जो दूसरी बातों में न्यायप्रिय न हो। यहाँ पर वास्तव में यह नहीं कहा जा सकता कि बचाव-पक्ष का वकील पल-भर को भी यह सोचता था कि न्याय न किया जाय। वह केवल इतना ही कहना चाहता था कि जज समाज के दोषों के प्रभाव में नहीं आ सकता, न आये, न साहस करे कि वह न्याय-व्यवस्था के अतिरिक्त कुछ और करे।

कानून के मुताबिक़ व्यक्ति अपने कामों के लिए उत्तरदायी होता है, जब तक कि कुछ विशेष परिस्थितियाँ न हों, जिनका इस मुकदमे में किसी ने निर्देश नहीं किया है। अगर क़ानून की निगाह में कोई व्यक्ति दोषी है, तो जज का यह अधिकार नहीं है कि वह वास्तव में यह जानने की कोशिश करे कि वह व्यक्ति दोषी है या नहीं। जज को दया दिखाने का भी अधिकार नहीं है। उससे ऊँचे अधिकारियों को ही, केवल गवर्नर जनरल और उनकी कौंसिल को ही यह अधिकार प्राप्त है। इस मुकदमे में तथ्या क्या है? यह युवक चोरी के इरादे से उस मकान में घुसता है। वह अपने साथ एक भरा रिवालवर लिये हुए है। वह कहता है कि यह डराने के लिए ही था। तो फिर वह भरा क्यों गया था? उसका कहना है कि उसका हत्या का कोई इरादा नहीं था। फिर भी उसके एक साथी ने वहाँ के देशी नौकर

को क्रूरता से मार गिराया, जिससे कोई भी समझ सकता है कि नौकर आसानी से मर सकता था। वह स्वयं कहता है कि वह हथियार लोहे की छड़ था और निश्चय ही ऐसा काम करने के लिए इससे अधिक क्रूर, इससे अधिक खतरनाक तरीका नहीं है। इस योजना में उसकी राय थी और जब अदालत ने उससे सवाल किया, तो उसने कहा कि उसने इस सांघातिक और भयानक अस्त्र को रखने का विरोध नहीं किया। यह सच है कि जिस आदमी के चोट लगी, थी वह काली जाति का था। और कुछ लोग हैं, जिनके ख्याल में इस प्रकार का अपराध कम गम्भीर होता है, जब अपराध काले आदमी के प्रति हो, लेकिन कोई भी अदालत ऐसे विचारों का अनुमोदन नहीं कर सकती।

इस सम्बन्ध में सबसे महत्त्वपूर्ण बात अभियुक्त का बारम्बार यह कहना है कि हत्या करने का उसका कोई इरादा नहीं था और यह कि अंग्रेज़ का आ जाना बिल्कुल आकस्मिक था और उसने डरकर और आतंकित होकर रिवालवर चला दिया। अगर अदालत इस बात को सच मान लेती, तो उसे यह निर्णय देना पड़ता कि अभियुक्त ने हत्या नहीं की।

मुकदमे में फिर भी क्या तथ्य है? इस बात के सिवा कोई क्या मान ले कि इसमें तीन हत्यारे भयानत युवक थे? यह सच है कि वे मकान में ख़ून करने के इरादे से ही नहीं गये थे। लेकिन यह भी सच है कि वह अपने साथ ऐसे अस्त्र तो लिये हुए थे, जिनसे किसी भी आदमी की हत्या हो सकती थी, जो उनके इस ग़ैरकानूनी काम में बाधक होता।

दक्षिणी अफ्रीका के एक बहुत बड़े जज ने इस बात पर कानून को साफ़ कर दिया है; हत्या करने का इरादा, वह कहता है, हत्या के अपराध में बहुत महत्त्वपूर्ण चीज़ है, लेकिन ऐसा इरादा है या नहीं, यह उस घटना से सम्बन्धित परिस्थितियों से ही जाना जा सकता है। अब प्रश्न यह है कि क्या जो बाते इस मुक़दमे के सम्बन्ध में प्रमाणित हुई हैं, उनसे इस प्रकार का नतीजा सही-सही निकाला गया? यह इरादा केवल उन्हीं उदाहरणों में ही नहीं पाया जाता, जहाँ अपराधी का हत्या करने का निश्चित उद्देश्य हो। यह इरादा उन उदाहरणों में भी उपस्थित होता है, जहाँ अपराधी किसी व्यक्ति के शरीर पर ज़बरदस्त चोट मारना चाहता है, इतनी चोट, जिससे मौत हो सके, चाहे फिर उस चोट के फलस्वरूप मृत्यु हो या न हो।

क्या हम यह मान लें कि इस छोटे-से कमरे में, जहाँ इतनी थोड़ी देर में एक बेगुनाह काला आदमी बड़ी निर्दयता से मार गिराया गया और एक निर्दोष अंग्रेज़ को गोली मार दी गयी, इन अपराधियों का यह इरादा नहीं था कि वे, ज़रूरत पड़ने पर, उन लोगों को मारकर उनके शरीर को गहरी चोटें पहुँचायँ? ऐसी बात कोई किसी हालत में भी नहीं मान सकता।

अदालत में सब लोग ख़ामोश हैं और जज भी मौन हैं, कहीं कोई आवाज़ नहीं है। न कोई खाँसता है, न हिलता-डोलता है, न आह भरता है।

जज ने बोलना शुरू किया—एबसेलाम कुमालो! अदालत तुम्हें आर्थर ट्रेवेल्यन जारविस की, अक्टूबर के आठवें दिन, १६४६ में, उसके निवास-स्थान पार्कवोल्ड में हत्या का अपराधी क़रार देती है। और मैथ्यू कुमालो और जोहैन्स पफ़ूरी, तुम्हें यह अदालत निर्दोष घोषित करती है और इसलिए तुम दोनों को रिहा करती है।

इसलिए वे दोनों फिर उस स्थान को लौट गये, जो जमीन के नीचे था और तीसरा रह गया। वह उन दोनों को जाते हुए देखता है। शायद वह दिल में सोचता है, अब मैं अकेला रह गया हूँ।

जज फिर बोलते हैं। वह पूछते हैं—किस आधार पर अदालत दया की सिफारिश कर सकती है? हमने इस बात पर बहुत देर तक और गम्भीरता से सोचा है और हमें ऐसा कोई कारण नहीं दिखायी देता, जिससे अपराधी के साथ दया दिखायी जा सके। यह युवक है, लेकिन अब यह पूरा आदमी बन चुका है। यह अपने दो और साथियों के साथ एक मकान में जाता है और ये लोग अपने साथ दो खतरनाक अस्त्र ले जाते हैं, जिनमें से किसी एक से भी आदमी की हत्या की जा सकती है। ये दोनों अस्त्र इस्तेमाल किये जाते हैं, एक से तो बहुत गहरा और दूसरे से सांघातिक परिणाम निकला। इस अदालत का सबसे बड़ा कर्त्तव्य यह है कि वह समाज को खतरनाक आदमियों के हमलों से बचाय, चाहे वे बूढ़े हों या जवान। और इस अदालत का यह भी कर्त्तव्य है कि वह साफ़ तौर से दिखा दे कि वह ऐसे अपराधियों को उचित दंड देती है। इसलिए मैं दया करने की कोई सिफारिश नहीं कर सकता।

जज लड़के से पूछते हैं—इसके पहले कि मैं फैसला सुनाऊँ, तुम्हें कुछ कहना है?

—मुझे केवल यह कहना है कि मैंने इस आदमी की हत्या की ज़रूर है, लेकिन उन्हें मारने का मेरा कोई इरादा नहीं था, मैं सिर्फ डर गया था।

अदालत में पूरी ख़ामोशी है, फिर भी एक अंग्रेज़ ऊँची आवाज़ में लोगों से ख़मोश होने को चिल्लाता है। कुमालो अपने हाथों से अपना चेहरा ढँक लेते हैं। वह समझ गये थे कि क्या होनेवाला है। जारविस गम्भीर मुद्रा में अपनी कुर्सी पर सीधे बैठे हैं। अंग्रेज़ युवक ठीक सामने की ओर देख रहा है और उसके माथे पर क्रोध की रेखाएँ उभर आयी हैं। लड़की जैसे बच्चा है, वैसे ही बच्चों की तरह बैठी है, उसकी आँखें जज पर लगी हुई हैं, अपने प्रेमी पर नहीं।

—एबसेलाम कुमालो! मैं तुम्हें सजा देता हूँ कि तुम्हें जेल में वापस कर दिया जाय और तुम्हें फाँसी लगा दी जाय। भगवान् तुम्हारी आत्मा को शान्ति दे!

जज उठते हैं। और लोग भी उठते हैं। लेकिन अब उतनी खामोशी नहीं है। अपराधी रोता और सिसकता फ़र्श पर गिर पड़ता है। एक औरत जोर-जोर से रो रही है। और एक वृद्ध आदमी रो रहा है और कहता जा रहा है—टिको-टिको!—अब कोई चुप रहने को नहीं पुकारता, यद्यपि अभी जज गये नहीं हैं। हृदय को फटने से कौन रोक सकता है!

लोग अदालत से बाहर आते हैं। रिवाज-अनुसार, एक तरफ़ गोरे और दूसरी तरफ़ काले। लेकिन अंग्रेज़ युवक रिवाज तोड़ देता है और वह और सिमांगु गम से टूटे हुए वृद्ध को दोनों ओर से सहारा देकर बाहर ला रहे हैं। ऐसा बहुत कम होता है कि यह रिवाज टूटता हो। अंग्रेज़ युवक की भवें तनी हुई हैं और वह क्रोध से अपने सामने देख रहा है। ऐसा कुछ तो अनुभव की तीव्रता और गहराई के कारण है और कुछ इस कारण कि एक परम्परा टूट रही है। ऐसी बातें आसानी से नहीं होती हैं।

(१२)

जेल की मनहूस, ऊँची दीवार में बने हुए भारी फाटक में से वे लोग एक बार फिर निकले, फ़ादर विन्सेंट, कुमालो, गर्टरूड, सिमांगु और वह लड़की। अंदर पहुँचने पर एबसेलाम उनके सामने लाया गया। पल-भर को उसकी आँखों में कोई महान् आशा झिलमिला उठी और उसका शरीर सिहर उठा। लेकिन कुमालो ने उससे नम्रता से कहा—हम लोग तुम्हारी शादी करने के लिए आये हैं।

और एबसेलाम की आशा मुरझा गयी।

—बेटा, यह तुम्हारी भावी पत्नी है।

लड़के और लड़की ने एक-दूसरे का अजनबी व्यक्तियों की तरह अभिवादन किया। उन्होंने एक-दूसरे की तरफ निर्जीव हाथ बढ़ाया, हाथ मिलाने के लिए नहीं, बस यूँही ढीले हाथ थाम लेने के लिए, जिससे वे आसानी से छूटकर अलग हो गये। यूरोपियनों की तरह उन्होंने एक दूसरे का चुम्बन नहीं किया, असीम व्यथा में बँधे हुए-से, खामोशी से एक दूसरे को खड़े देखते रहे। आखिर में उस लड़की ने पूछा ही-तुम्हारी तबीअत तो ठीक है न?

और उसने धीमे से उत्तर दिया—हाँ, बहुत अच्छी और तुम्हारी तबीअत ठीक है?

और उस लड़की ने भी उत्तर दिया—हाँ, बहुत ठीक।

और इसके अतिरिक्त उन दोनों में कोई बात नहीं हुई।

फ़ादर विन्सेन्ट उन्हें छोड़कर चले गये और वे सब वैसे ही दुख से बँधे हुए-

से खड़े रहे। सिमांगु ने देखा कि गर्टरूड बस अब रोने ही वाली है और इसलिए उन्होंने लोगों की ओर से पीठ मोड़कर उससे गम्भीरता से चुपचाप कहा, जो-कुछ होना था, वह तो हो ही गया। अब तो इनकी शादी होने जा रही है। रोने-पीटने से चला जाना अच्छा है। जब उसने कोई उत्तर नहीं दिया, तो उन्होंने ज्यादा कड़ेपन से कहा—तुम मेरी बात समझती हो?

और नाराज़ होकर उसने उत्तर दिया,—हाँ, मैं आपकी बात समझती हूँ।

सिमांगु उसे छोड़कर चले गये और कमरे की मोटी, क्रूर दीवार में बन हुई खिड़की के पास जाकर खड़े हो गये। गर्टरूड रूठकर चुप हो गयी। लेकिन सिमांगु यह जानते थे कि अब वह वैसा नहीं करेगी, जो वह करनेवाली थी।

ख़ामोशी से परेशान होकर कुमालो ने अपने लड़के से पूछा—तुम ठीक तो हो?

और लड़के ने उत्तर दिया—जी, हाँ और आप, पिताजी, ठीक से हैं?

कुमालो ने उत्तर दिया—हाँ, मैं बिल्कुल ठीक से हूँ,—वह और भी बहुत-सी बातें कहना चाहते थे, लेकिन उन बातों के लिए उन्हें शब्द नहीं मिल रहे थे। और वास्तव में यह उन-सब के लिए दया हुई, जब एक अंग्रेज उन-सबको जेलों के गिर्जे में ले जाने के लिए आया।

फ़ादर विन्सेन्ट वहाँ अपना लबादा पहने प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने अपनी बाइबिल की पोथी में से पढ़ना शुरू किया। इसके बाद उन्होंने एबसेलाम से पूछा—क्या तुम इस लड़की को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करते हो?—और ऐसा ही प्रश्न उन्होंने लकड़ी से भी किया—क्या इन्हें तुम अपने पति के रूप में स्वीकार करती हो?

और उन्होंने बाइबिल के शब्दों के अनुसार उत्तर दिये कि हाँ, भले-बुरे में, गरीबी में या अमीरी में, बीमारी में या तन्दरुस्ती में, उस समय तक के लिए, जब तक कि मौत ही उन्हें अलग न कर दे। विवाह हो गया। तब फादर विन्सेन्ट ने उस नये ब्याहे जोड़े को कुछ शिक्षा दी कि वे एक-दूसरे के प्रति वफादार रहें और अपने बच्चों का धर्म के अनुसार पालन करें। इस प्रकार उनका विवाह हो गया और उन्होंने किताब में दस्तखत कर दिये।

यह हो जाने पर, पादरी और गर्टरूड नववधू और पिता-पुत्र को छोड़कर चले गये। और तब कुमालो ने अपने लड़के से कहा—मुझे खुशी है कि तुम्हारी शादी हो गयी।

—मुझे भी इस बात की खुशी है, पिताजी।

—मैं तुम्हारे होनेवाले बच्चे की अच्छी तरह देख-भाल करूँगा, अपने बच्चे की तरह।

लेकिन जब उन्हें ख्याल आया कि वह यह क्या कह बैठे, तो उनके होंठ काँप गये। और वह वैसा कुछ करने ही वाले थे, जो वह खुद न करने का निश्चय किये हुए थे कि एबसेलाम ने अपनी दिल की टीस को दबाने के लिए कहा—आप इन्डाटशेनी कब लौटेंगे, पिताजी।

—कल, बेटे।

—कल ?

—हाँ, कल।

—आप माताजी से कह दीजिएगा कि मैं उन्हें याद कर रहा था।

हाँ, जरूर-जरूर ! मैं अवश्य उनसे तुम्हारा संदेशा कह दूँगा। हाँ-हाँ, कहूँगा क्यों नहीं ! लेकिन ये शब्द कुमालो ने कहे नहीं, केवल सर हिला दिया।

—और, पिताजी ?

—हाँ, बेटे।

—पोस्ट आफिस में मेरा कुछ रुपया जमा है, करीब चार पाउंड। वह बच्चे के लिए है। वह आपको मिल जायगा, मैंने इसका इन्तजाम कर दिया है।

—हाँ, जरूर ! मैं ले लूँगा ! हाँ-हाँ, मैं ले लूँगा, जैसा तुमने प्रबन्ध किया है। जरूर।

—और, पिताजी ?

—हाँ, बेटे।

—अगर बच्चा लड़का हो, तो मैं चाहता हूँ कि उसका नाम पीटर रखा जाय।

और कुमालो ने रुँधे गले से कहा—पीटर ?

—हाँ, मैं चाहता हूँ कि उसका नाम पीटर रखा जाय।

—और अगर लड़की हो ?

—नहीं, अगर लड़की हुई, तो मैंने उसके लिए कोई नाम नहीं सोचा है। और, पिताजी !

—क्या, बेटे ?

—नम्बर १२, मसेरू स्ट्रीट जर्मिंसटन में जोसेफ मेंगू के मकान में मेरा एक पार्सल पड़ा है। मैं चाहता हूँ कि वह मेरे बेटे के लिए बेच दिया जाय।

—मैं सुन रहा हूँ।

—मेरी कुछ चीज़ें पफ़ूरी के पास भी हैं, लेकिन मेरा खयाल है कि वह इनकार कर देगा कि वे मेरी हैं।

—पफ़ूरी ? वही पफ़ूरी ?

—हाँ, पिताजी।

—उन्हें भूल ही जाना ठीक है।

—आप ठीक ही कहते हैं, पिताजी !

—और जर्मिंसटन में जो तुम्हारा सामान है, मेरी समझ में नहीं आता कि मैं उसे कैसे ले सकूँगा, क्योंकि कल ही तो हम लौट रहे हैं।

—तो कोई बात नहीं।

पर कुमालो को लगा कि बात है, वह बोले—मैं रेवरेन्ड सिमांगु से कह दूँगा।

—यही ठीक होगा।

—और उस पफूरी को और तुम्हारे चचेरे भाई को क्षमा करना मुश्किल है!—कुमालो की आवाज़ में कटुता थी।

एबसेलाम ने लाचारी से कन्धे हिला दिये—वे झूठ बोले थे, पिताजी। जैसा मैंने कहा था, वे वहीं थे।

—हाँ, जरूर थे, पर अब तो वे यहाँ नहीं हैं।

—वे यही हैं, पिताजी ! उनके खिलाफ एक दूसरा मुकदमा है।

—मेरा यह मतलब नहीं था, बेटे। मेरा मतलब था, मेरा मतलब था....—कुमालो वह नहीं कह पाये, जो वह कहना चाहते थे।

उनकी बात न समझते हुए एबसेलाम बोला—वे यहीं हैं, यहीं, इसी जगह। वास्तव में, पिताजी, यह तो....मुझे जाना ही पड़ेगा।

—जाना ?

—हाँ, मुझे जाना पड़ेगा।

और कुमालो ने धीमे से पूछा—प्रिटोरिया को ?

इन डरावने शब्दों को सुनकर एबसेलाम फर्श पर गिर पड़ा। वह फर्श पर इस ढंग से गिर पड़ा, जैसे कुछ भारतवासी प्रार्थना करने के लिए दण्डवत् करते हैं। और वह हृदयवेधक सुबकियाँ भरने लगा, जिससे वह ऐंठा जा रहा था। कोई भी बालक मृत्यु से डरता है। कुमालो, अपनी अन्दर की स्वाभाविक करुणा के कारण झुककर अपने लड़के के पास बैठ गये और उसके सर पर हाथ फेरने लगे।

—हिम्मत रखो, बेटे।

—मुझे डर लग रहा है, पिताजी, डर लग रहा है।

—हिम्मत न हारो, बेटे।

लड़का कूल्हे के बल उठा। उसने कुछ न छुपाया, उसका चेहरा रोने से विकृत हो गया था—होःहो ! मुझे फाँसी लगने से डर लग रहा है !—वह सुबककर बोला—मुझे फाँसी से डर लगता है !

झुके-ही-झुके पिता ने अपने बेटे के हाथ अपने हाथों में ले लिये। अब वे हाथ बेजान नहीं थे, वे अपने पिता के हाथों से कसके जुड़ गये थे और उनमें सांत्वना

ढूँढ रहे थे, आशा ढूँढ रहे थे और वृद्ध उन्हें और ज़्यादा कसकर थामे हुए थे। वह बोले—हिम्मत रखो, बेटे।

अंग्रेज़ वार्डर ने रोने की आवाज़ें सुनीं और आकर क्रूरता से नहीं, दया से बोला—अब आपको जाना होगा।

—मैं जा ही रहा हूँ, साहब, अभी जा रहा हूँ। लेकिन, हमें कुछ समय और दे दीजिए!

और वार्डर ने उत्तर दिया—अच्छा, कुछ देर और।—वह चला गया।

—अपने आँसू पोंछ डालो, बेटे।

और एबसेलाम ने उस कपड़े से आँसू पोंछ डाले, जो उसके पिता ने उसे दिया था। वह घुटनों के बल झुका हुआ था और यद्यपि रोना बन्द हो गया था, फिर भी उसकी आँखों में पीड़ा थी और उनमें एक शून्यता थी।

—अच्छा, बेटे, अब मुझे जाना पड़ेगा! भगवान् तुम्हारी रक्षा करे! मैं तुम्हारी पत्नी और बच्चे का पूरा ख्याल रखूँगा।

—ठीक है, ठीक है,— एबसेलाम बोला। लेकिन वह किसी पत्नी या बच्चे के बारे में नहीं सोच रहा था। जहाँ उसके विचार इस समय थे, वहाँ पत्नी और बच्चों के लिए कोई स्थान नहीं था। जहाँ उसकी दृष्टि थी, वहाँ शादियाँ नहीं थीं।

—अच्छा, तो अब मैं चलता हूँ।

वह उठ पड़े। लेकिन एबसेलाम ने अपने पिता के घुटने पकड़ लिये और रो पड़ा—मुझे मत छोड़िए, पिताजी, मत छोड़िए!—और फिर वह जोर से सिसकियाँ लेकर फूट पड़ा—नहीं, पिताजी, आप मत जाइए, मुझे मत छोड़िए।

अंग्रेज वार्डर फिर कमरे में आया और इस बार उसने सख़्ती से कहा—बुड्ढे, अब जाना पड़ेगा!

और कुमालो चले जाते, लेकिन एबसेलाम रो रहा था और उसने अपने पिता के घुटने पकड़ रखे थे। वार्डर ने एबसेलाम के हाथों को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन वह छुड़ा नहीं सका और उसने सहायता के लिए एक और आदमी को बुलाया। दोनों ने मिलकर एबसेलाम को खींचा और कुमालो ने हताश होकर कहा— भगवान तुम्हारी रक्षा करे, बेटा!

लेकिन लड़के को यह नहीं सुनायी पड़ा।

और वे दोनों अगल हो गये।

अपार वेदना के भार से दबे हुए कुमालो वहाँ से चले आये और दीवार में बने फाटक की तरफ गये, जहाँ और लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। और लड़की सकुचायी हुई उनके पास आयी और मुस्कुराकर बोली - उम्फ़ुन्दीस!

—हाँ, बच्ची।

—अब मैं आपकी लड़की हूँ न?

और कुमालो ने उसकी तरफ़ देखकर मुस्कराने की कोशिश की।

—हाँ, ठीक तो है,—उन्होंने कहा।

लड़की इसके बारे में ज्यादा उत्सुकता से बात करना चाहती थी, लेकिन जब उसने कुमालो की तरफ देखा, तो वह समझ गयी कि वह इन चीजों के बारे में नहीं, और ज्यादा गम्भीर और गहरी बातों के बारे में सोच रहे हैं। इसलिए आगे उसने इस बारे में कोई और बात नहीं की।

*

जेल से लौटने के बाद, कुमालो उस पहाड़ी पर चढ़कर उस सड़क पर पहुँचे, जहाँ उनके भाई की बढ़ई की दूकान थी। आश्चर्य की बात थी कि उस समय दूकान में उस लम्बे-तड़ंगे आदमी के सिवा कोई नहीं था। उसने उनका कुछ असमंजस से स्वागत किया।

—मैं तुमसे बिदा लेने के लिए आया हूँ, भाई।

—अच्छा-अच्छा, तो आप इन्डाटशेनी लौट रहे हैं? हाँ, आपको वहाँ से आये हुए बहुत दिन भी हो गये हैं। भाभी भी आपका इन्तज़ार कर रही होंगी। आप जा कब रहे हैं?

—हम कल उस गाड़ी से जा रहे हैं, जो नौ बजे छूटती है।

—तो गर्टरूड भी आपके साथ जा रही है और उसका बच्चा भी? यह काम आप बहुत अच्छा कर रहे हैं, भाई साहब। जोहैन्सबर्ग ऐसा शहर नहीं है, जहाँ कोई औरत रह सके। लेकिन चाय तो पी लीजिए।

वह उठ पड़ा, मकान के पीछे के हिस्से में रहनेवाली औरत से चाय मँगवाने के लिए, लेकिन कुमालो ने कहा—इस वक्त चाय पीने का मन नहीं।

और जान कुमालो ने कहा—जैसा आप चाहें! अपने मेहमानों की चाय से ही खातिर करना तो मेरा कर्त्तव्य है।

वह बैठ गया और उसने बड़े दिखावे के साथ एक बड़ा-सा पाइप दाँतों के बीच में लगाया और मेज पर रखे हुए कागज़ों में दियासलाई ढूँढ़ने लगा, लेकिन अपने भाई की तरफ़ नहीं देखा।

—आप यह बहुत अच्छा कर रहे हैं, भाई साहब। जोहैन्सबर्ग वास्तव में किसी औरत के अकेले रहने की जगह नहीं है। और बच्चा गाँव में रहने से अच्छा रहेगा।

—मैं अपने साथ एक और बच्चे को भी लिए जा रहा हूँ, अपते लड़के की पत्नी को और उसके भी बच्चा होनेवाला है।

—हाँ-हाँ, मैं सुन चुका हूँ यह बात,—पाइप के ऊपर जलती हुई दियासलाई की लौ की ओर ही जान कुमालो का ध्यान था—यह एक और अच्छा काम आप कर रहे हैं।

जान कुमालो का पाइप सुलग रहा था और वह अंगूठे से जलती हुई तम्बाकू को हल्के-हल्के दबा रहा था। इसी क्रिया की ओर उसका पूरा ध्यान था। लेकिन कुछ देर में यह काम खत्म भी हो गया और कुछ करने को न रहा। जान ने पाइप से उठते हुए धुएँ के पीछे से अपने भाई की तरफ़ देखा—एक आदमी ने नहीं, कई आदमियों ने मुझसे यह कहा है कि आप बहुत ही अच्छे काम कर रहे हैं। भाभी को और हमारे वहाँ के और दोस्तों को मेरा प्रणाम कहिएगा। तड़के ही आप पीटरमैरित्ज़बर्ग पहुँच जायँगे। वहाँ से आपको डानीब्रुक के लिए गाड़ी मिलेगी शाम तक आप इन्डाटशेनी पहुँच जायँगे। काफ़ी लम्बा सफ़र है।

—मुझे तुमसे एक बात कहनी है।

—जैसा आप चाहें।

— मैंने उस बात पर काफी विचार कर लिया है। मैं यहाँ तुम्हें भला-बुरा कहने नहीं आया हूँ।

और जान कुमालो जल्दी से बोल पड़ा, मानो वह ऐसी किसी बात की प्रतीक्षा ही कर रहा हो—भला-बुरा कहने ? लेकिन आप क्यों भला-बुरा कहेंगे मुझे ? वह तो एक मुक़दमा था और उसमें जज था, हमारा या, आपका या किसी और का उसमें क्या ?— उसके भारी गले की नसें तन गयीं।

कुमालो ने फ़ौरन ही उत्तर दिया—हाँ, मैं यह नहीं कहता कि मुझको तुम्हें डाँटना फटकारना चाहिए। जैसा तुम खुद ही कह रहे हो, यह तो एक मुकदमा था और उसमें जज था। उससे भी बड़ा एक और जज है, जिसके बारे में हम बात नहीं करते। खैर। मुझे इस समय तुमसे एक दूसरी बात कहनी है।

—जी, हाँ, मैं समझ रहा हूँ। क्या बात है ?

—एक बात तो यह है कि जाने के पहले तुमसे विदा लेना है और विदा लेते वक्त ऐसा नहीं हो सकता कि मैं मौन रहूँ। तुम देख चुके हो कि मेरे लड़के का क्या अन्त हुआ है। वह अपना घर छोड़कर यहाँ आया था और यहाँ वह बर्बाद हो गया। इसलिए मैं यह चाहता हूँ कि तुम्हें भी चेतावनी दे दूँ कि तुम्हारे लड़के ने भी घर छोड़ दिया है, उसका भविष्य क्या होगा।

—मैं उसके सम्बन्ध में सोच रहा हूँ। यह बखेड़ा तय हो जाय, तो मैं उसे यहाँ वापस ले आऊँगा।

—क्या तुमने इस बात का निश्चय कर लिया है ?

—क़तई ! मैं आपको वचन देता हूँ !—और वह जोर से हँस पड़ा—सब अच्छे काम आप ही के लिए नहीं छोड़ दूँगा। बलि के बछड़े का यहाँ वध होगा।

—अच्छा, तो वह कथा तुम्हें याद है ?

—जी, हाँ ! भले उपदेश मैं यों ही नहीं फेंक देता, क्योंकि....आप तो जानते हैं....

—एक आखिरी बात और भी है।

—कहिए, आप बड़े भाई हैं, जो आप चाहें कहिए।

—वह है तुम्हारी राजनीति के बारे में। तुम्हारी यह राजनीति आखिर तुम्हें किधर लिये जा रही है, कुछ मालूम है ?

जान कुमालो के भारी गले की नसें एक बार फिर क्रोध से तन गयीं—मेरी राजनीति क्या हो, यह तो मेरा अपना मामला है। मैं तो आपके धार्मिक मामलों में दखल नहीं देता।

—अच्छा, जाने दो। तुम्हीं ने तो कहा था कि जो मैं ठीक समझूँ, कह सकता हूँ।

—हाँ, मैंने कहा तो था। खैर, कहिए, मैं सुन रहा हूँ।

—तुम्हारी यह राजनीति तुम्हें किधर लिये जा रही है ?

—मैं अच्छी तरह जानता हूँ, भाई साहब, कि मैं किस बात के लिए लड़ रहा हूँ,—जान कुमालो जोर से हँस दिया—क्षमा कीजिएगा, अगर एक बात कहूँ। रेवरेन्ड सिमांगु तो यहाँ हैं नहीं, इसलिए मुझे क्षमा कीजिएगा अगर मैं अंग्रेजी में बोलूँ।

—हाँ, बोलो।

—आपने इतिहास तो पढ़ा ही है, भाई साहब। आप यह भी जानते ही होंगे कि इतिहास हमें यह बताता है कि जो लोग मेहनत करते हैं, उन्हें हमेशा दबाकर नहीं रखा जा सकता। अगर वे एक होकर उठ खड़े हों, तो कौन उनका सामना करेगा ? हमारे देश के लोग अब इस बात को ज्यादा अच्छी तरह से समझते जा रहे हैं। जब वे-सब यह समझकर एक ही निश्चय पर पहुँच जायँगे, तो तमाम दक्षिणी अफ्रीका में काम बन्द हो जायगा।

—तुम्हारा मतलब है कि वह हड़ताल कर देंगे ?

—जी, हाँ, मेरा यही मतलब है।

—लेकिन पिछली हड़ताल तो सफल नहीं रही।

जान कुमालो उठ पड़ा और उसकी आवाज गरज उठी—देखिए, सरकार ने हमारे साथ क्या व्यवहार किया था ? हमें गुलामों की तरह खानों में काम करने को मजबूर किया गया था। क्या हमें अपनी मेहनत पर भी अधिकार नहीं है ?

—क्यों, भाई, क्या तुम गोरे आदमियों से नफरत करते हो ?

जान कुमालो ने अपने भाई की तरफ शंका से देखा—मैं किसी से नफ़रत नहीं करता। मैं केवल अन्याय से नफरत करता हूँ।

—लेकिन मैंने तुम्हारी ही कही हुई कुछ बातें सुनी हैं।

—क्या बातें ?

—मैंने सुना है, उनमें से कुछ बातें खतरनाक हैं। मैंने सुना है कि सरकार तुम्हारे ऊपर आँख रखती है और मौका आने पर तुम्हें गिरफ़्तार भी कर लेगी। मैं तुम्हें यही बात बताना चाहता था, क्योंकि तुम मेरे भाई हो।

इसमें कोई शक नहीं कि जान कुमालो की आँखों में भय आ गया। वह लम्बा-तड़ंगा आदमी ऐसा लग रहा था, मानो कोई बच्चा शरारत करते हुए पकड़ लिया गया हो।

—मैं नहीं जानता कि ऐसी क्या बातें हैं।

—मैंने सुना है कि इनमें से कुछ बातें तो तुम्हारी दूकान में ही कही जाती हैं।

—इस दूकान में ? यह किसी को क्या मालूम कि इस दूकान में क्या बातें होती हैं ?

अपनी उन तमाम प्रार्थनाओं के बावजूद भी, जो उन्होंने भगवान् से क्षमा-प्रदान करने की शक्ति पाने के लिए की थीं, कुमालो के मन में अपने भाई को चोट पहुँचाने की इच्छा हुई—क्या तुम उन-सब लोगों को जानते हो, जो यहाँ इस दूकान में आते हैं ? तुम्हें धोखा देने के लिए कोई नहीं भेजा जा सकता ?

उस लम्बे-तड़ंगे आदमी ने अपने माथे का पसीना पोंछा। कुमालो जानते थे कि वह अपने मन में अवश्य यह सोच रहा होगा कि कहीं ऐसा हो न जाय। और तमाम प्रार्थनाओं के बावजूद भी उनके अन्दर भाई को सताने की इच्छा ज्यादा बलवती थी, इतनी ज्यादा कि उन्हें झूठ बोलने का प्रलोभन हुआ और उस प्रलोभन के वशीभूत होकर वह झूठ बोले—मैंने सुना है कि एक आदमी दोस्त के रूप में तुम्हें धोखा देने के लिए इस दूकान पर भेजा गया था।

—आपने यह सुना था ?

इस प्रश्न से कुमालो को अपने झूठ का अहसास हुआ और वह शर्मिन्दा हो गये। लेकिन फिर भी उन्होंने उत्तर दिया—हाँ, मैंने सुना था।

—ओफ़ ! कैसे दोस्त थे वे, कैसे दोस्त ?

और कुमालो ने दुखी होकर कहा—मेरे लड़के के ऐसे दो दोस्त थे !

जान कुमालो ने अपने भाई की ओर देखा—आपका लड़का ?—और तब सारी बात उसकी समझ में आ गयी और अपार क्रोध उसपर छा गया—निकल जाओ मेरी दूकान से ! निकल जाओ !

और सामने की मेज़ को गुस्से में ठोकर मारकर जान अपने भाई की तरफ़ बढ़ा और कुमालो को दरवाज़े के बाहर निकलकर सड़क पर आ जाना पड़ा। किवाड़ ज़ोर से बन्द हो गये और कुमालो ने सुना कि अन्दर उनके भाई ने गुस्से में सिटकनी लगाकर ताला लगा दिया।

सड़क पर वह अपने-आपको बहुत अपमानित और शर्मिन्दा महसूस कर रहे थे। अपमानित तो इसलिए कि राह चलते लोग उनकी ओर ताज्जुब से देख रहे थे, और शर्मिन्दा इसलिए कि वह इस इरादे से तो यहाँ कतई नहीं आये थे। वह तो अपने भाई को यह समझाने आये थे कि शक्ति-लोलुपता से आदमी का पतन होता है और जो लोग न्याय का पक्ष ऊँचा रखने के लिए लड़ना चाहते हैं, उन्हें स्वयं बिल्कुल निर्दोष और शुद्ध होना चाहिए। और वह यह भी बताना चाहते थे कि प्रेम शक्ति से ज्यादा बड़ी चीज़ है। और इनमें से एक बात भी उन्होंने नहीं की थी। टीको, मुझ पर दया करो! ईसूमसीह मुझपर दया करना!

कुमालो फिर दूकान के दरवाज़े की तरफ मुड़े, लेकिन वह बन्द था और उसमें ताला लगा था। एक ही पेट के भाई ने भाई को निकाल दिया था।

लोग अब भी उनकी तरफ़ देख रहे थे, इसलिए वह हतोत्साह एक ओर चल दिये।

*

—मैं तुम्हें पूरी तरह धन्यवाद नहीं दे सकता!—जारविस ने कहा।

—जारविस, अगर हमारी शक्ति में होता, तो हम तुम्हारे लिए और भी बहुत-कुछ करते।

जान हैरीसन मोटर निकाल लाया था। जारविस और हैरीसन कुछ देर तक मोटर के बाहर खड़े-खड़े ही बातें करते रहे।

—मार्गरेट को, मेरी को और उसके बच्चों को मेरी ओर से प्यार कह देना, जारविस, हम लोग कभी तुम्हारे यहाँ आयेंगे।

—अवश्य, हैरीसन! हम हमेशा तुम्हारा स्वागत करने को तैयार रहेंगे।

और हैरीसन ने हल्की आवाज़ में कहा—मैं तुमसे एक और बात कहना चाहता था मुक़दमे के फैसले के बारे में। यह तो ठीक है कि अपराधी को फाँसी देने से, जो मर चुका है, वह फिर जीवित नहीं हो सकता, लेकिन फिर भी यह सजा देना ठीक है। मेरे ख्याल से तो केवल यही सज़ा देनी भी चाहिए थी। अगर कुछ और सज़ा दी जाती, तो दुनिया में कहीं न्याय है ही नहीं। मुझे तो अफ़सोस इस बात का है कि वह दोनों अपराधी छूट गये। सरकारी वकील ने इस मुक़दमे को बिल्कुल ख़राब कर दिया। उस औरत, काइज़, को तो ठोंक ही देना चाहिए था।

—हाँ, मेरा भी ख़्याल था। अच्छा, तो अब बिदा, और एक बार फिर धन्यवाद!

—जो-कुछ हमने किया, उससे हमें बहुत खुशी हुई।

जारविस ने जान हैरीसन को एक लिफ़ाफ़ा दिया—जब मैं चला जाऊँ, तब इसे खोलना।

जब ट्रेन चली गयी, तो जान हैरिसन ने लिफ़ाफ़ा खोला। उसमें लिखा था—अपने क्लब के लिए जो काम तुम और आर्थर करना चाहते थे, करो और अगर उस क्लब का नाम तुम 'आर्थर जारविस क्लब' रखना चाहो, तो मुझे बहुत खुशी होगी। लेकिन मेरी ओर से यह कोई शर्त नहीं है।

जान ने उसके नीचे लगी चेक देखने के लिए उसे पलटा। फिर उसने दूर जाती हुई ट्रेन की ओर ऐसे देखा, मानो वह दौड़कर उसे पकड़ लेगा!

एक हजार पाउण्ड! दानवीर! एक हजार पाउण्ड!

श्रीमती लिथेबी के मकान पर सिमांगु ने दावत दी थी। वह दावत खुशी की नहीं थी, ऐसा कौन सोच सकता था। लेकिन खाना काफी था और वहाँ के सारे वातावरण में कुछ अजीब उदास-सी खुशी थी। यूरोपियन प्रथा के अनुसार सिमांगु खाने की मेज़ का नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने कुमालो के गुणों की प्रशंसा की और श्रीमती लिथेबी के उस मातृत्वपूर्ण स्नेह की भी, जो उन्होंने अपने घर में रहनेवाले उन लोगों को दिया था। कुमालो भी कुछ बोले, लेकिन झूठ बोलने की शर्म और भाई से झगड़ा होने की वह बात अब भी उनके दिमाग में ताज़ा थी और इस कारण शब्द रुक-रुककर और अटक-अटककर निकल रहे थे। उन्होंने सिमांगु को और श्रीमती लिथेबी को उनकी दया और सहायता के लिए धन्यवाद दिया। श्रीमती लिथेबी कछ नहीं बोलीं और लड़कियों की तरह हँस दीं। कहने लगीं कि ऐसी भलाई करने के लिए ही तो आदमी जन्म लेता है। लेकिन वह तगड़ी औरत, जो उनकी दोस्त थी, श्रीमती लिथेबी की ओर से बोली। वह बहुत देर तक दोनों पादरियों की दया और शील और गुणों की प्रशंसा करती रही और श्रीमती लिथेबी की भलाई की भी उसने तारीफ की। ऐसा लगता था कि उसका यह भाषण कभी खत्म होगा ही नहीं। उसने गर्टरूड और उस लड़की को अपने कर्त्तव्यों के बारे में भी सचेत किया और उनसे कहा कि अपने जीवन को सुधार कर उन्हें उस दया की कृतज्ञता का मूल्य चुकाना चाहिए, जो उन्हें इन-सब लोगों से मिली है। और यह बातें करते-करते वह जोहैन्सबर्ग के बारे में बोलने लगी। उसने इस विशाल नगर के सारे दुर्गुण बताये और यह भी बताया कि सोफियाटाउन, क्लेयरमान्ट, एलक्जैन्डरा और पिमविल में रहनेवाली काली जातियों के जीवन में कितना पाप है। सिमांगु को लाचार बीच में उठकर उसे टोकना पड़ा था कि, माँ,

हमें कल सवेरे बहुत जल्दी उठना है, वर्ना हम आपकी बातें हमेशा सुनते रहते! और तब वह औरत मुस्कराकर प्रसन्नता से बैठ गयी। इसके बाद सिमांगु ने उन लोगों से कहा कि उन्हें उन लोगों को एक विशेष खबर देनी है। यह खबर उन्होंने अब तक केवल अपने ही तक रखी थी और पहली बार यहीं पर वह उस खबर को बता रहे थे। उन्होंने कहा कि उन्होंने यह निश्चय कर लिया है कि अब वह अपने तमाम सांसारिक बन्धनों को और उस-सबका त्याग देंगे, जो अब तक उनका अपना था। दक्षिणी अफ्रीका के इतिहास में कोई काला आदमी पहली बार ही ऐसा कर रहा था। लोगों ने तालियाँ बजायीं और उन्हें उनके इस ऊँचे निश्चय के लिए धन्यवाद दिया। और गर्टरूड इस शानदार दावत के भाषणों को बड़ी प्रसन्नता से सुन रही थी, और बच्चा उसकी छाती से चिपटा हुआ सो रहा था। और वह लड़की भी खुले मुँह, आग्रहपूर्वक यह-सब सुन रही थी, क्योंकि अपने सारे जीवन में उसे ऐसा देखने को कभी नहीं मिला था।

इसके बाद सिमांगु ने कहा—अच्छा, अब हम लोगों को सोने जाना चाहिए। कल सुबह बहुत जल्दी उठना है, क्योंकि टैक्सीवाला ठीक सात बजे यहाँ आ जायगा।

इसलिए प्रार्थना का गीत गाकर उन्होंने दावत खत्म कर दी। वह मोटी औरत एक बार फिर श्रीमती लिथेबी को उनकी उस दया के लिए धन्यवाद देकर चली गयी, जो उन्होंने इन-सब लोगों पर की थी। कुमालो अपने मित्र को बाहर फाटक तक छोड़ने गये और सिमांगु बोले—अब तो मैं इस दुनिया को छोड़ रहा हूँ, लेकिन कुछ रुपया मैंने बचाया है। मेरे माता-पिता भी नहीं हैं या ऐसा कोई भी नहीं, जो मुझपर निर्भर हो। और इसलिए गिरजे ने मुझे इस बात की आज्ञा दे दी है कि, मित्र, वह सब रुपया मैं आपको दे दूँ। आपने जोहैन्सबर्ग में जो खर्च किया है और जो सारी नयी जिम्मेदारियाँ आपने उठायी हैं, उसमें यह काम आयगा। यह किताब अब आपके नाम पर है।

सिमांगु ने वह किताब कुमालो के हाथ में रख दी और कुमालो उसे छूने से समझ गये कि यह डाकखाने की किताब है। और कुमालो ने डाकखाने की किताब-सहित अपने हाथ फाटक के ऊपर रख दिये और उसके ऊपर अपना सर रखकर वह फूट-फूटकर रोने लगे। और सिमांगु ने कहा—इस तरह दुखी होकर मेरे सुख को नष्ट मत कीजिए, क्योंकि ऐसा सुख मुझे पहले कभी नहीं मिला!

इन शब्दों को सुनकर वृद्ध का रोना बन्द हो गया और वह सिसकने लगे और सिमांगु बोले—देखिए, कोई आ रहा है, चुप हो जाओ, भाई!

वे दोनों चुप हो गये और जब वह आदमी निकल गया, तब कुमालो ने कहा—अपने सारे जीवन में मुझे आप-जैसा कोई नहीं मिला!

सिमांगु ने तुरत उत्तर दिया —मैं निर्बल और पापी हूँ, लेकिन भगवान ने अपने हाथ मुझपर रखे हैं। बस, इतना ही है। और एबसेलाम के बारे में गवर्नर जनरल और उनकी काउन्सिल को निर्णय करना होगा कि उसपर दया की जाय या नहीं। जैसे ही फादर विन्सेन्ट को उनका निर्णय मालूम होगा, वह आपको खबर देंगे।

—और उन्होंने अगर उसके विरुद्ध निर्णय किया, तो ?

—अगर वे उसके विरुद्ध निर्णय करेंगे, तो हममें से एक व्यक्ति उस दिन प्रिटोरिया जयागा और आपको खबर देगा। तब यह-सब सामाप्त हो जायगा। अच्छा, अब मैं चलूँ, मित्र। सुबह जल्दी उठना है। लेकिन आपसे मैं एक दया की याचना करता हूँ।

—जो-कुछ मेरा है, वह-सब आपकी सेवा के लिए है, मित्र !

—मैं चाहता हूँ कि आप मेरे इस नये जीवन और निश्चय के लिए प्रार्थना करें !

—मैं रोज, हर दिन, सुबह-शाम आपकी सफलता के लिए प्रार्थना किया करूँगा !

—अच्छा तो नमस्कार, मित्र !

—नमस्कार, सिमांगु।....मित्रों के मित्र !भगवान तुम्हारी सदैव रक्षा करे !

—और आपकी भी।

कुमालो ने सिमांगु को सड़क पर जाते हुए और मिशन हाउस की तरफ मुड़ते हुए देखा। उसके बाद वह अपने कमरे में लौट गये। मोमबत्ती जलायी और डाक-खाने की किताब खोलकर देखी। उसमें तैंतीस पाउन्ड, चार शिलिंग और पाँच पेंस जमा थे। वह घुटने के बल झुक गये और अन्तर्पीड़ा से कराह उठे, और अपने उस झूठ पर, यो वह अपने भाई से बोले थे, और झगड़े पर पश्चात्ताप किया। वह इसी क्षण अपने भाई के पास जाते, जैसा कि धर्मपुस्तक में आदेश है। लेकिन बहुत रात हो गयी थी। पर वह अपने भाई को पत्र लिखेंगे। उन्होंने भगवान को मनुष्य की दया के लिए धन्यवाद दिया। इससे उन्हें सान्त्वना मिली और मन हल्का हुआ। और इसके बाद उन्होंने अपने बेटे के लिए प्रार्थना की।

कल वे-सब घर चले जायँगे, उनके बेटे के सिवा सब लोग। बस, वही रह जायगा, जहाँ उसे रखा जायगा, प्रिटोरिया की बड़ी जेल में, लोहे की सलाखों-लगी अकेली कोठरी में। और अगर उसे दया न मिली, तो वह उस समय तक वहीं रहेगा, जब तक उसे फाँसी न दे दी जाय।

लेकिन कभी उन्हीं हाथों ने, जिन्होंने खून किया था, अपनी माँ के स्तनों को अपने प्यासे मुँह में लगाकर दूध चूसा था, कभी वही नन्हे-नन्हे हाथ अँधियारे से डरकर अपने पिता के हाथों को कसके पकड़ लेते थे। हाँ, मौत से डरनेवाला हत्यारा कभी बच्चा था, जो रात के अन्धकार से भी डर जाता था !

सुबह कुमालो तड़के उठे। अभी तक अँधेरा था। उन्होंने बत्ती जलायी और वह सिमांगु के लिए प्रार्थना करने को झुक गये। धीरे से दरवाजा खोलकर उन्होंने हल्के से लड़की को हिलाया—उठो, समय हो गया।

वह आतुरता से कम्बल फेंककर उठ बैठी—जी, मुझे तैयार होने में ज्यादा देर नहीं लगेगी।

उसकी आतुरता देखकर कुमालो मुस्करा दिये। इन्डाटशेनी, कल हम इन्डाटशेनी में होंगे।

इन्होंने गर्टरूड के कमरे का दरवाजा भी खोला और मोमबत्ती की रोशनी से उसके कमरे में देखा। लेकिन गर्डरूड वहाँ नहीं थी, वह जा चुकी थी। उसका बच्चा वहाँ था, गर्टरूड की लाल पोशाक और सफेद हैट भी वहीं थे, लेकिन गर्टरूड जा चुकी थी!

———

भाग तीन

(१)

ट्रान्सवाल के हरे-भरे प्रदेश में होकर गाड़ी भाप छोड़ती, सीटी बजाती जाती है। खानों की चपटी, सफेद पहाड़ियाँ पीछे छूटती जाती हैं और जहाँ तक दृष्टि पहुँचती है, खुला हुआ विस्तृत प्रदेश फैला हुआ है।

सब लोग साथ-साथ बैठे हुए थे, कुमालो, और उनके घुटनों पर नन्हा बच्चा, और वह लड़की, जिसका कुल सामान कागज की वैसी थैलियों में रखा हुआ था, जो दूकानों में मिलती हैं। नन्हे लड़के ने अपनी माँ के बारे में पूछा था और कुमालो ने कह दिया था कि वह चली गयी और उसने फिर नहीं पूछा।

वोल्कस्रस्ट में भापवाला इंजिन उन्हें छोड़ देता है। वहाँ एक दूसरा इंजिन लग जाता है, जिसमें ऊपर एक पिंजड़ा लगा है, और जो ऊपर तने हुए धातु के रस्सों से शक्ति लेता रहता है। उसके बाद उनकी गाड़ी घूमती हुई नेटाल के पहाड़ी प्रदेश में आ गयी। कुमालो ने लड़की को बताया कि यह नेटाल है, और पहली बार इस प्रदेश को देखकर लड़की उत्तेजित हो उठी।

उसके बाद अँधियारा हो आया और वह अँधेरी रात में उन प्रदेशों पर से धड़धड़ाते हुए निकले, जो बहुत दिनों पहले के युद्ध-स्थल थे। उन्हें बिना देखे वे मुई खिर, रोजेटा और बालगोवाँ के प्रदेशों से गुजरे। सूर्योदय के साथ वे सबसे ऊँची पर्वतमाला का चक्कर काटते हुए सुन्दर नगर पीटरमैरित्ज़बर्ग में उतरे।

यहाँ वे दूसरी गाड़ी में बैठ गये। गन्दी, काली, मजदूर-बस्तियों को, एडेनडेल को, इलैंडस्काप को पीछे छोड़ती हुई गाड़ी उमसिनदूसी की वादी में होकर गुजरी। फिर उमकोयास की विशाल वादी में गाड़ी उतर आयी, जहाँ मूल जातियाँ रहती हैं और जहाँ की धरती का रोग असाध्य है। और लोग कुमालो से कहते हैं कि वर्षा नहीं होगी, वे जमीन की जोताई या बोआई नहीं कर सकते और इस घाटी में अकाल पड़ेगा।

डानीब्रुक में वे एक और गाड़ी में बैठे, छोटी खिलौना गाड़ी में जो ईस्टवोल्ड्स और ल्यूफाफा के हरे-भरे पहाड़ों पर से होती हुई इकोपो जाती है। और इकोपो में वे उतरे और लोगों ने उनका अभिवादन किया और कहा—अरे! आप बहुत दिन बाहर रहे, उम्फुन्दीस!

यहाँ वे उस अन्तिम गाड़ी में बैठे, जो उस सुहानी सड़क के किनारे-किनारे चलती है, जो पहाड़ी में चली जाती है। बहुत-से लोग उन्हें जानते हैं और वह उनके प्रश्नों से डर रहे थे। वे लोग बच्चों की तरह बात करते हैं। वे पूछते थे—यह कौन है आपके साथ? यह लड़की कौन है, यह बच्चा कौन है?....ये लोग कहाँ से आ रहे

हैं, कहाँ जा रहे हैं !—और वे यह भी पूछ सकते थे, आपकी बहन कैसी हैं ! आपके लड़के का क्या हाल है ! इसलिए कुमालो बाइबिल खोलकर पढ़ने लगे, और वे लोग दूसरे व्यक्ति की तरफ मुड़ गये, जिसे शायद बात करने में ज्यादा दिलचस्पी थी।

पूर्वी ग्रीकालैन्ड के पहाड़ों के पीछे उमज़िम्कुलू की विशाल वादी पर सूर्य अस्त हो रहा है। स्टेशन पर कुमालो की पत्नी और एक मित्र थैले उठाने में सहायता के लिए आये थे। कुमालो जल्दी से अपनी पत्नी के पास गये और योरोपीय ढंग से उनका आलिंगन किया। घर लौटने की उन्हें बहुत खुशी थी।

पत्नी ने जब आँखों से ही प्रश्न किया, तो कुमालो ने उन्हें उत्तर दिया—हमारे लड़के को फाँसी होगी, या शायद, दया-प्रार्थना सुन ली जाय, पर अभी इस बारे में बात न करेंगे।

—मैं आपका आशय समझती हूँ,—पत्नी ने कहा।

—और गर्टरूड, उसको लाने की पूरी तैयारी की थी। हम-सब एक ही मकान में रह रहे थे, लेकिन जब मैं सुबह उसे जगाने गया, तो वह जा चुकी थी। इस विषय पर अभी बातें न करें।

वह अपना सर झुका लेती हैं।

—और यह नन्हा लड़का उसी का है....और यह है हमारी नयी बेटी।

कुमालो की पत्नी ने बच्चे को गोद में उठा लिया और योरोपियन लोगों के ढंग से उसे चूमा—तुम मेरे बच्चे हो !—उन्होंने कहा और बच्चे को उतार दिया और उस लड़की की तरफ गयी, जो बड़ी दीनता से अपना कागज़ का थैला लिये एक तरफ़ को खड़ी थी। उन्होंने यूरोपियनों की तरह ही उसे भी अपनी बाहों में ले लिया—तुम मेरी बेटी हो !—और लड़की एकदम फूट पड़ी। कुमालो की पत्नी ने उससे कहा—चुप करो, रोते नहीं हैं।—और फिर उन्होंने कहा—हमारा घर शान्त और सीधा-सादा है, बड़ी-बड़ी चीज़ें नहीं हैं।

लड़की ने सर उठाकर डबडबायी आँखों से देखा और कहा—माँ, यही तो मैं चाहती हूँ !—जैसे गहराई में कुछ छू गया, कुछ जो गहरा हो और सुखद हो। यद्यपि वह आँसुओं के साथ उभरकर बाहर आया था, फिर भी वेदना की उस मरू-भूमि में वह सुख की फुहार की तरह था।

कुमालो ने अपने मित्र से हाथ मिलाया। सब लोग उस सड़क पर चल पड़े, जो इन्डाटशेनी की वादी में होकर डूबते हुए सूरज की ओर जा रही थी। तभी एक आदमी ने पुकारा—उम्फुन्दीस ! आप लौट आये ! यह अच्छा हुआ कि आप लौट आये !

और कोई औरत दूसरी औरत से बोल पड़ी—देखो, देखो ! उम्फुन्दीस लौट आये !

और यूरोपियन कपड़े पहने हुए एक औरत ने उन्हें देखकर खुशी में अपना लबादा सर पर डाल लिया और अपनी झोपड़ी की तरफ भाग गयी। वह औरत से कहीं अधिक बच्चे की तरह चीख रही थी—उम्फुन्दीस लौट आये!—वह अपने बच्चों को झोपड़ी के दरवाजे पर ले आयी और बच्चे अपनी माँ के कपड़ों के पीछे यह देखने के लिए झाँकने लगे कि उम्फुन्दीस लौट आये।

एक बच्ची कुमालो के सामने खड़ी हो गयी और कुमालो को खड़ा हो जाना पड़ा। उसने कहा—हम बहुत खुश हैं कि उम्फुन्दीस फिर यहाँ आ गये!

—लेकिन एक उम्फुन्दीस तो थे यहाँ पर?—कुमालो ने उस युवक पादरी के बारे में बताया, जिसे बिशप ने उनकी जगह काम करने के लिए यहाँ भेजा था।

—उन उम्फुन्दीस की बात हम नहीं समझते। हम तो अपने ही उम्फुन्दीस की बात समझते हैं। हम बहुत प्रसन्न हैं कि आप लौट आये!

अब रास्ता ढालू हो गया था, उन हरे-भरे पहाड़ों पर से, जहाँ कोहरा घास और झाड़ियों में भिदकर उन्हें जीवन देता है। रास्ता पत्थरों में होकर गया था और उसपर होशियारी से चलना पड़ता था, क्योंकि वह ढालू है। गर्भवती औरत को तो बहुत सँभलकर चलना चाहिए, इसी लिए कुमालो की पत्नी लड़की के आगे-आगे चलने लगीं और उसे बताती जा रही थीं—देखो, यहाँ पत्थर है, ज़रा सँभलकर, कहीं फिसल न जाना....

रात घिर रही है और पूर्वी ग्रीकालैंड के पहाड़ आकाश की पृष्ठभूमि में नीले और काले हो रहे हैं।

रास्ता इन्डाटशेनी की लाल धरती पर उतर गया। यह बंजर धरती है, बुड्ढे आदमी, औरत और बच्चे की धरती है। मक्का मुश्किल से आदमी की ऊँचाई के बराबर होती है। फिर भी यहाँ उनके घर हैं।

—यहाँ सूखा पड़ रहा है, उम्फुन्दीस! हम वर्षा को पुकार कर रहे हैं!

—मैं यह सुन चुका हूँ, मित्र।

—हमारा पुराना, बचा हुआ अन्न अब लगभग खत्म हो रहा है, उम्फुन्दीस! अब केवल भगवान ही जानें कि हम क्या खायँगे।

रास्ता अब अधिक समतल हो गया था। वह उस छोटी नदी के बराबर गया था, जो गिरजे के पास से बहती है।

कुमालो नदी का शब्द सुनने के लिए रुके, पर सुनने को कुछ नहीं था।

—नदी में पानी नहीं है, मित्र!

—नहीं, उम्फुन्दीस, यह तो महीने-भर से सूखी पड़ी है।

—तो फिर हम लोगों को पानी कहाँ से मिलता है!

—औरतों को उस नदी पर पानी भरने जाना पड़ता है, जो जारविस साहब के मकान के पास से आती है।

जारविस का नाम सुनकर कुमालो को भय और पीड़ा की अनुभूति हुई, लेकिन किसी तरह उन्होंने पूछा—जारविस कैसे हैं?

—वह कल लौटे हैं, उम्फुन्दीस। पता नहीं, वह कैसे हैं। लेकिन इंकोसिगाज़ कई हफ्ते पहले लौट आयी थीं और लोग कहते हैं कि वह बीमार हैं और दुबली हैं। मैं अब वहीं काम कर रहा हूँ, उम्फुन्दीस।

कुमालो चुप थे, वह बोल नहीं पा रहे थे।

उनके साथी ने कहा—वह बात यहाँ सबको मालूम है।

—आह, वह बात मालूम है?

—हाँ, सबको मालूम है, उम्फुन्दीस।

इसके बाद कोई नहीं बोला। रास्ता झोपड़ियों और लाल सूखे खेतों में होकर समतल हो गया था और अन्धकार में से आवाजें आ रही थीं। किसी स्थान पर कोई किसी को पुकार रहा था। अगर आप जुलू हैं, तो आप समझ सकते हैं कि वह लोग क्या कह रहे हैं, लेकिन अगर आप उस जाति के नहीं हैं, तो चाहे आप वह भाषा जानते भी हों, फिर भी उसका कोई अर्थ लगाना कठिन होगा। कुछ अंग्रेज़ तो कहते हैं कि यह जादू है, लेकिन यह जादू नहीं है, केवल एक पारंगत कला है। यह प्यारा देश अफ्रीका है!

—वे पुकार कर कह रहे हैं कि आप आ गये हैं, उम्फुन्दीस!

वास्तव में वे लोग सन्तुष्ट हैं। वे लोग झोपड़ियों से सड़क पर आ रहे हैं, पहाड़ों के ऊपर से वे अँधेरे में उस ओर भागे चले आ रहे हैं। बच्चे पुकार रहे हैं, चिल्ला रहे हैं, एक अजीब-सी काँपती हुई पुकार, जो केवल इसी प्रदेश में पायी जाती है।

—उम्फुन्दीस, आप लौट आये?

—उम्फुन्दीस, हम धन्यवाद देते हैं कि आप लौट आये!

—उम्फुन्दीस, आप बहुत ज्यादा दिन बाहर रहे!

एक बच्चे ने उनसे पुकारकर कहा—हमारे स्कूल में एक नयी मास्टरनी आयी हैं।

दूसरे बच्चे ने कहा—बुद्धू, उसको आये तो बहुत दिन हुए!

एक बच्चे ने स्कूल में सीखे ढंग से सलाम किया और चिल्लाया—उम्फुन्दीस!

—और जवाब की कोई प्रतीक्षा न कर वह घूम गया। और उसी विशेष प्रकार की काँपती हुई आवाज़ में वह पुकार उठा, किसी व्यक्ति विशेष को नहीं, बल्कि खाली हवा में। और फिर मुड़कर वह धीरे-धीरे नाचने लगा, किसी विशेष व्यक्ति को दिखाने के लिए नहीं, केवल अपनी खुशी ही में।

गिरजे के बाहर एक लैम्प लटका हुआ था, जो गिरजे में प्रार्थना के समय जलाया जाता है। लैम्प के नीचे बहुत-सी औरतें लाल धरती पर बैठी हुई थीं। वे सफेद कपड़े पहने हुए थीं और हर एक के गले में एक हरा कपड़ा पड़ा हुआ था। जब ये लोग पहुँचे, तो वे सब उठ पड़ीं और एक औरत के कंठ से एक मधुर गीत जोरों से फूट पड़ा। उस गीत की लय इतनी तेज थी कि उसे वह निभा नहीं पा रही थी, लेकिन और औरतें इस बीच में शामिल हो गयीं और उसे सहारा देकर निभा ले गयीं, और कुछ आदमी भी आ गये, जिनके स्वर सच्चे और गहरे थे।

कुमालों ने अपना हैट उतार लिया और वह, उनका साथी और उनकी पत्नी भी उन लोगों के साथ गाने लगे।

लड़की आश्चर्य से खड़ी हुई यह-सब देख रही थी। वह ईश्वर के धन्यवाद का गीत था, जिसमें आदमी भगवान को याद करता है, उसका आवाहन करता है और नत होकर भगवान् को उसकी अनन्त दया के लिए धन्यवाद देता है। और वह स्तुति-गान सूखे, लाल पहाड़ियों में गूँज रहा था, सूखे, बेजान, लाल खेतों में गूँज रहा था, जहाँ की जातियाँ बिखर गयी थीं। यह गान इस प्रदेश में नम्रता से, प्रेम से, कृतज्ञता से गाया जाता है और इस गीत में वह नम्र, सीधे-सादे लोग अपना जीवन उँड़ेल देते हैं।

और कुमालो प्रार्थना करने लगे—टीको! हम तुझे तेरी अनन्त दया के लिए धन्यवाद देते हैं, हम तुझे अपने घर सकुशल लौट आने के लिए धन्यवाद देते हैं, अपने बन्धुओं और कुटुम्ब के स्नेह के लिए हम तुझे धन्यवाद देते हैं, तेरी सारी दया के लिए हम तुझे धन्यवाद देते हैं!....टीको! हमें वर्षा दो, हम प्रार्थना करते हैं!

और शेष लोग कह उठे—आमीन!

जब तक सब न कह चुके, कुमालो को रुकना पड़ा। फिर वह आगे बढ़े—टीको! देव! हमें वर्षा दो! हम तुझसे याचना करते हैं! ताकि हम अपनी जमीन जोत सकें और बीज बो सकें। अगर वर्षा न हो, तो भूख और अकाल से हमारी रक्षा करना, हम तुझसे विनती करते हैं!

और यहाँ लोग फिर कह उठे— आमीन!

उन्हें फिर तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ी, जब तक सब कह न चुके।

उनका दिल भर उठा कि इन लोगों ने इस तरह उनका स्वागत किया और उनका डर निकल गया। वह फिर हृदय से प्रार्थना करने लगे—टीको! इस छोटे-से बच्चे को इन्डाटशेनी स्वीकार कर ले, यह यहाँ पर पले और बड़ा हो! और इसकी माँ....—उनकी आवाज ऐसे रुक गयी, मानो वह यह नहीं कह सकते, पर उन्होंने

अपने-आपको और दीन कर लिया और धीमी आवाज में बोले—और इसकी माँ को, उसकी गलतियों और भूलों को क्षमा करना !

एक औरत भीड़ में कराह उठी। कुमालो उस औरत को जानते थे और वह यह भी जानते थे कि वह औरत बातें फैलाने में बहुत तेज है। इसलिए उन्होंने फौरन ही दूसरी बात कही—हम-सबको क्षमा करना, टीको, क्योंकि हम-सबमें त्रुटियाँ हैं, हम सब गलतियाँ करते हैं ! और, टीको ! इस लड़की को भी इन्डाटशेनी के लोग और यहाँ की भूमि स्वीकार कर लें और उसका बच्चा यहाँ सकुशल पैदा हो !

और फिर कुछ रुककर वह आहिस्ते से बोले—जिस चीज की इसे खोज है, यह पा जाय और जिस चीज़ की इसे इच्छा है, वह इसे मिल जाय !

और इसके बाद जिस बात के लिए प्रार्थना करनी थी, उसे कहना बहुत मुश्किल था, लेकिन कुमालो ने विनत होकर कहा—और टीको ! मेरे बेटे की....

लोग कराह नहीं रहे, वे चुप थे। वह औरत भी, जो अफवाहें फैलाने की आदी थी, चुप थी। कुमालो की आवाज बहुत धीमी हो गयी—गलतियों को भी क्षमा करना !

वह बात भी आखिर कह दी गयी, जिसे कहना बहुत कठिन था। कुमालो जानते थे कि इन शब्दों को कह सकने की शक्ति उनमें स्वयं नहीं थी, वह उन्हें इन्हीं लोगों से मिली थी !

—प्रार्थना करने के लिए झुक जाओ !

और सब लोग खुली लाल भूमि पर झुक गये और कुमालो ने अपना हाथ उठाया और अपनी आवाज भी ऊँची की और उस टूटे आदमी में भी अब शक्ति आ गयी थी, क्योंकि वह पादरी था न—भगवान तुम सबका भला करे और तुम्हारी रक्षा करे और तुम्हारे ऊपर अपनी दया-दृष्टि रखे और तुम्हें शान्ति दे, अब, और सदा के लिए ! और प्रभु ईसूमसीह की कृपा, भगवान् का प्रेम और परम पवित्र आत्मा का साहचर्य सदा तुम्हारे साथ रहे और तुम्हें पथ-निर्देश करती रहे, तुम्हारा और उन-सबका, जो तुम्हें प्रिय हैं, अब, और सदा-सर्वदा ! आमीन !

सब लोग उठे पड़े। नयी मास्टरनी ने कहा—क्या हम अपना राष्ट्रीय गान, कोसी सिकेलेल इ अफ्रीका (भगवान अफ्रीका की रक्षा करे) नहीं गा सकते ?

और पुरानी मास्टरनी ने उत्तर दिया—नहीं, यहाँ के लोग अभी उस गाने को नहीं जानते।

नयी मास्टरनी ने कहा—लेकिन पीटरमैरित्ज़बर्ग में तो लोग यह गाना गाते हैं। वहाँ यह प्रचलित है। क्या यहाँ हम उसे नहीं गा सकते ?

और पुरानी मास्टरनी ने उत्तर दिया—यह पीटरमैरित्जबर्ग नहीं है। हमें अपने स्कूल में बहुत-कुछ करना है !—पुरानी मास्टरनी नयी मास्टरनी से खुश नहीं है और

वह इस बात पर भी लज्जित थी कि उसे वह गाना नहीं आता, भगवान अफ्रीका की रक्षा करे !

हाँ, भगवान अफ्रीका की रक्षा करे, हमारे प्यारे देश अफ्रीका की रक्षा करे ! हमें गहरे पापों से उबारे ! भगवान, हमारे अन्दर से वह भय निकाल दो, जो न्याय से डरता है, हमारे अन्दर से वह भय निकाल दो, जो आदमियों से डरता है ! भगवान, हम सबकी रक्षा करो !

चिल्लाओ, बच्चो ! अपनी उस लम्बी काँपती हुई आवाज़ में पुकारो, जो पहाड़ों पर गूँजती है। नाचो, बच्चो ! उस नाच की पहली, धीमी ताल में नाचो, जो तुम सिर्फ़ अपनी ही खुशी के लिए नाचते हो! चिल्लाओ और नाचो, भोले बच्चो ! उस वक्त तक चिल्लाओ और नाचो, जब तक ऐसा सम्भव न हो जाय। क्योंकि जो-कुछ अब है, वह तो भविष्य की केवल एक भूमिका है, आरम्भ ही है। धीरे-धीरे उसमें अजीब-अजीब बातें गुँथ जायँगी, उन आदमियों-द्वारा जिनके बारे में तुमने कभी नहीं सुना है और उन जगहों-द्वारा जिन्हें तुमने कभी नहीं देखा है। इस जीवन में तुम जी रहे हो, तुम्हें डर नहीं है, क्योंकि तुम जानते नहीं। इसलिए चिल्लाओ और नाचो ! चिल्लाओ और नाचो ! जब तक यह कर सको !

*

इस समय तक सब लोग जा चुके थे। कुमालो अपने साथी की ओर मुड़े—मुझे तुमसे कुछ बातें कहनी हैं। कुछ तो मैं तुम्हें फिर कभी बताऊँगा, लेकिन कुछ अभी ही बताता हूँ। मेरी बहन गर्ट्रूड हमारे साथ आनेवाली थी। हम सब लोग साथ थे। मकान में सब तैयार थे। लेकिन सुबह मैं जब उसे जगाने गया, तो वह चली गयी थी।

—सच, उम्फुन्दीस ?

—और मेरे लड़के को फाँसी की सजा दी गयी है। हो सकता है कि उसे दया मिल जाय। जब यह फैसला होगा, मुझे खबर मिल जायगी।

—सच, उम्फुन्दीस ?

—यह बातें तुम अपने मित्रों से कह देना। वे लोग भी अपने मित्रों से यह बात कह देंगे। यह बात छुपायी नहीं जा सकती। इसलिए यह बात तुम्हीं सबसे कह देना।

—मैं कह दूँगा, उम्फुन्दीस।

—मेरी समझ में नहीं आता कि अब मुझे यहाँ कैसे रहना चाहिए, मित्र ?

—क्यों, उम्फुन्दीस ?

—क्यों ?—कुमालो ने कटुता से कहा—जिसकी बहन अपने बच्चे को छोड़कर

चली गयी हो, जिसके बेटे ने एक व्यक्ति का खून किया हो, उसे यहाँ रहने का क्या अधिकार है ?

—उम्फुन्दीस, वैसे जो आप चाहें, वह होगा ही, लेकिन मैं आपको बताता हूँ कि यहाँ एक भी आदमी या औरत नहीं है, जो यह चाहे। यहाँ एक भी आदमी या औरत ऐसा नहीं है, जिसे आपके दुख में दुख न होगा, जो आपके लौटने पर प्रसन्न या सन्तुष्ट न हुआ हो। क्या आपने अपनी आँखों से नहीं देखा ? क्या आप पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा ?

—मैंने वह-सब देखा और मुझपर उसका प्रभाव पड़ा है। सारे कष्टों के बाद यही तो सन्तोष की एक बात है। मित्र, मैं यहाँ से जाना भी नहीं चाहता, यह तो मेरा घर है। यहाँ मैं इतने दिन रह चुका हूँ। इस जगह को छोड़ने की मुझे इच्छा कैसे हो सकती है!

—यह तो अच्छी बात है, उम्फुन्दीस। और जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं आपसे अलग नहीं रहना चाहता, क्योंकि अब तक मैं अन्धकार में था....

—तुम मुझे विचलित करते हो, मित्र!

—और, उम्फुन्दीस, आपने सिबेको की लड़की का पता लगाया ? आपको याद है न ?

—हाँ, मुझे याद है। वह भी चली गयी है। कहाँ चली गयी है, इसका किसी को पता नहीं। लोगों ने बताया कि उसका पता वे नहीं जानते।—और एकाएक कुमालो के अन्दर कहीं से कुछ कटुता भर आयी—उन लोगों ने यह भी कहा था कि उन्हें उसकी चिन्ता भी नहीं है।

—अयँ ? सच, उम्फुन्दीस ?

—मुझे अफ़सोस है, मित्र!

—यह दुनिया कष्टों से भरी है, उम्फुन्दीस।

—इसे अधिक अच्छी तरह और कौन जानता है!

—फिर भी आप विश्वास करते हैं ?

लैम्प की रोशनी में कुमालो ने उसकी ओर देखा—मैं विश्वास करता हूँ, लेकिन मैंने सीखा है कि यह एक रहस्य है। वेदना और कष्ट, दोनों ही रहस्य हैं! दया और प्रेम भी रहस्य हैं। परन्तु दया और प्रेम से वेदना और पीड़ा पर विजय पायी जा सकती है। मेरी पत्नी हैं, तुम मेरे मित्र हो, इन्डाटशेनी के ये सब लोग हैं, जिन्होंने इतने उत्साह से मेरा स्वागत किया है, वह बच्ची है, जो हमारे साथ रहने के लिए बहुत उत्सुक है, इस प्रकार अपने दुःख में मैं विश्वास कर सकता हूँ।

—एक इसाई कष्टों से कभी मुक्त होगा, यह मैंने कभी नहीं सोचा, उम्फुन्दीस, क्योंकि हमारे प्रभु ने कष्ट उठाये। और मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ कि उन्होंने

कष्ट उठाये हमें दुःख से बचाने के लिए नहीं, बल्कि हमें यह सिखाने के लिए कि उन कष्टों को कैसे सहन किया जाय, क्योंकि वह जानते थे कि बिना कष्ट के जीवन नहीं है।

कुमालो ने उल्लास से अपने मित्र की ओर देखा—तुम तो अच्छे उपदेशक हो!

उनके मित्र ने अपने भद्दे, खुरदुरे हाथों को आगे बढ़ाते हुए पूछा—क्या मैं उपदेशक-सा लगता हूँ?

कुमालो हँस पड़े—मैं तुम्हारे हृदय को देखता हूँ, हाथों को नहीं। तुम्हारी सहायता के लिए धन्यवाद, मित्र!

—मैं तो हमेशा आपकी सेवा के लिए तैयार हूँ, उम्फुन्दीस। अच्छा, बिदा!

— भगवान तुम्हें सुखी रखे, मित्र! पर तुम किस ओर से जा रहे हो?

—सिबेको के मकान की तरफ से,—उस मनुष्य ने एक गहरी साँस ली—मैंने उससे वायदा किया था कि पता लगते ही उसे खबर दूँगा।

कुमालो अपने मकान की तरफ गंभीरतापूर्वक चलने लगे। लेकिन फिर अचानक उन्होंने मुड़कर अपने मित्र को पुकारा— देखो, मैं तुम्हें पूरी बात समझा दूँ। स्मिथ साहब की लड़की ने यह कहा था कि वह उसका पता नहीं जानतीं, उन्हें उसकी कोई परवाह नहीं है, उन्होंने यह अंग्रेजी में कहा था। और जब जारविस साहब ने वही बात मुझे जुलू भाषा में बतायी, तब उन्होंने मुझे केवल इतना ही बताया था कि वह उसका पता नहीं जानतीं; और जारविस ने मुझसे यह नहीं कहा था कि उन्हें उसकी कोई परवाह नहीं है।

— मैं समझ गया, उम्फुन्दीस।

—बिदा, मित्र!

—बिदा, उम्फुन्दीस!

कुमालो फिर मुड़ गये और अपने मकान में अन्दर चले गये। उनकी पत्नी और लड़की भोजन कर रही थीं।

—बच्चा कहाँ है?

—सो रहा है, स्टीफेन। तुम्हें बाहर बात करने में बहुत देर लग गयी।

—हाँ, बहुत-सी बातें करनी थीं।

—तुमने लैम्प बुझा दिया?

—उसे अभी थोड़ी देर और जलने दो।

— तो गिरजे के पास इतना पैसा है?

कुमालो अपनी पत्नी की ओर देखकर, मुस्कराकर बोले—आज की रात तो विशेष रात है!

कुमालो की पत्नी की भवें किसी गहरी अन्तर्वेदना के कारण सिकुड़ गयीं। कुमालो जानते थे कि वह क्या सोच रही हैं। उन्होंने कहा—मैं अभी बुझाये देता हूँ।

—अभी थोड़ी देर और जलने दो। खाना खाने के बाद बुझा देना।

—यह ठीक होगा,—उन्होंने गम्भीरता से उत्तर दिया—उसे उन बातों के लिए अभी जलने दो, जो यहाँ हुई हैं। इसके अतिरिक्त जो-कुछ हुआ है, उसके लिए वह बुझा दिया जायगा।

कुमालो ने लड़की के सर पर हाथ रखा—तुम खा चुकी, बेटी ?

लड़की ने मुस्कराते हुए उनकी तरफ देखा—जी हाँ, मैं खा चुकी।

—अच्छा, तो अब सोने जाओ, बच्ची।

—अच्छा, पिताजी।

वह अपनी कुर्सी से उठ पड़ी—अच्छी तरह सोइएगा, माताजी, अच्छी तरह सोइएगा, पिताजी !

कुमालो की पत्नी ने कहा—चलो, मैं तुम्हें तुम्हारा कमरा बता दूँ, बच्ची।

जब वह लौटकर आयीं, तो कुमालो डाकखाने की किताब देख रहे थे। उन्होंने वह किताब अपनी पत्नी को दे दी—यह ले लो। इसमें रुपया जमा है, जितना हमारे पास कभी भी था, उससे भी ज्यादा।

पत्नी ने किताब खोलकर देखा और इतना रुपया देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ।

—क्या यह सब हमारा है ?

—हाँ, यह हमारा है। यह उस आदमी का उपहार है, जिससे अच्छा आदमी मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा !

—अब तो तुम नये कपड़े बनवा सकते हो, काली पोशाक, नये सफ़ेद कालर और नया हैट।

—और तुम भी नये कपड़े बनवाना और स्टोव भी खरीद लेना। अच्छा, बैठो, मैं तुम्हें सिमांगु के बारे में और दूसरी बातों के बारे में बताऊँ।

काँपती हुई वह बैठ गयीं— मैं सुन रही हूँ।

(२)

कुमालो ने अपने गिरजे में इन्डाटशेनी के पुनर्निर्माण के लिए नियमित रूप से प्रार्थना आरम्भ कर दी। लेकिन वह यह जानते थे कि इतना ही काफ़ी नहीं है, यहीं, इसी धरती पर आदमियों का संगठित होकर कुछ सोचना, कुछ करना

आवश्यक है। और अपने प्रान्त में तो उन्हें केवल दो ही व्यक्ति दिखायी पड़ते थे, जाति के सरदार और स्कूल के हेडमास्टर। सरदार एक लम्बे-तड़ंगे आदमी थे, बिरजिस पहनते थे और रोंयेदार टोपी लगाते थे, वैसी ही जैसी लोग ठंढे देशों में लगाते हैं, और वह घोड़े पर बैठकर सलाहकारों के साथ घूमा करते थे, लेकिन यह कोई नहीं समझ सकता था कि आखिर वे लोग उन्हें सलाह किस बात की देते हैं। हेडमास्टर एक छोटा-सा हँसमुख आदमी था, जो बड़ा-बड़ा, गोल-गोल चश्मा लगाता था और उसके दफ़्तर में हमेशा ही लाल, नीले, हरे इश्तहार लगे रहते थे। नीति के अनुसार कुमालो ने यही तय किया था कि पहले वह सरदार से ही इस बारे में बात करेंगे।

सुबह से ही असह्य गर्मी थी। आकाश में बादल नहीं थे और वर्षा का कोई चिन्ह नहीं था। देश में ऐसा सूखा कभी नहीं पड़ा था। जाति के बुजुर्ग-से-बुजुर्ग लोगों के होश में ऐसा समय कभी नहीं आया था। पत्तियाँ पेड़ से झड़ गयी थीं और शाखाएँ ऐसी नंगी लग रही थीं, मानो जाड़ा आ गया हो। पुष्ट पैरोंवाले छोटे-छोटे लड़के धरती के तपन से पेड़ की छाँह से दूसरे पेड़ की छाँह में भागते। घास पर चलो, तो वह पैरों के नीचे चुरमरा जाती थी, मानो आग में झुलस गयी हो और सारी वादी में एक भी जल-धारा ऐसी नहीं थी, जिसमें पानी हो। चोटियों पर की घास तक पीली पड़ गयी थी और न वहाँ और न नीचे की वादी में जोताई हो रही थी। निर्मम प्रकाश से सूरज आग बरसा रहा था और दुबले, मरियल पशु मैदानों में और सूखी हुई नदियों के किनारे बेजान-से घूम रहे थे। और केवल कभी-कभी सूखी हुई नदियों के तट पर उन्हें ज़रा-सी जली हुई घास के कुछ तृण मिल जाते थे।

पहाड़ पर चढ़कर कुमालो सरदार के निवास-स्थान पर पहुँचे। उनसे प्रतीक्षा करने को कहा गया। इसमें कोई आश्चर्यजनक बात नहीं थी, क्योंकि तबीअत हो तो सरदार किसी भी आदमी को इन्तज़ार करा सकता था, क्योंकि वह सरदार था! अगर वह चाहता, तो किसी भी आदमी से इन्तज़ार करने को कह सकता था, जब कि वह स्वयं ठलुआ बैठे दाँत कुरेदता होता या वादी को देखते हुए सोचता रहता। लेकिन कुमालो इस प्रतीक्षा से खुश थे, क्योंकि पहाड़ को चढ़ाई के बाद उन्हें आराम करने का थोड़-सा समय मिल गया था। उन्होंने अपना कोट उतार दिया और एक झोपड़े के साये में बैठकर वह सरदार के जीवन के बारे में सोचने लगे, क्योंकि इस निर्जन प्रदेश का सरदार होना कौन पसन्द करेगा? अंग्रेज़ों का ही यह काम था, पहले तो उन्होंने सरदारों और इनकी शक्ति का पूर्ण दमन कर दिया और फिर उन्हें ही उठाकर खड़ा कर दिया, ताकि टूटे हुए टुकड़ों को बाँधकर रखें। लेकिन अधिकतर सूत्र तो अंग्रेज़ों ने ही बिल्कुल नष्ट कर दिये थे। और

कुछ सरदार अब तक रंजित आँखें लिये हुए अपने दयनीय राज्यों पर बैठे थे, जिनका कोई मतलब नहीं था। लेकिन सब ऐसे नहीं थे। कुछ ऐसे थे, जो लोगों की मदद करते थे, और उन्होंने अपने बच्चों को स्कूलों में शिक्षा के लिए भेजा था। और सरकार भी इनकी मदद करने की कोशिश करती थी, लेकिन उनकी सहायता करना ऐसा था, जैसा किसी बूढ़े, बेजान आदमी को दूध पिलाना और इस भ्रम में रहना कि शायद किसी दिन वह फिर बच्चा हो जायगा।

एकाएक कुमालो उन विचारों से पलटकर आपे में आ गये और उन्होंने महसूस किया कि जोहैन्सबर्ग जाने के समय से उन्होंने न जाने कितनी दूर की यात्रा की है और कितना ज्ञान प्राप्त किया है। उस बड़े शहर ने उनकी आँखें खोलकर कुछ दिखा दिया था, जो शुरू हो गया था और अब उसे जारी रखना होगा। जोहैन्सबर्ग में जो-कुछ हो रहा था, उसका किसी जाति के सरदार से कोई सम्बन्ध नहीं था।....और इसी बीच यह खबर आयी कि सरदार उन्हें बुला रहे हैं। और वह उठ खड़े हुए।

उन्होंने अभिवादन किया और उस अभिवादन को जितना आदरपूर्ण वह बना सकते थे, उतना बनाया, क्योंकि वह जानते थे कि सरदारों के कान ऐसी बातें सुनने के लिए बहुत तेज़ होते हैं।

—आप क्या चाहते हैं, उम्फ़ुन्दीस ?

—मैं अभी हाल ही में जोहैन्सबर्ग से लौटा हूँ, इन्कोसि।

—हाँ, यह तो मुझे पता लगा था।

—वहाँ हमारी जाति के बहुत-से आदमी हैं, इन्कोसि।

—हूँ।

—और मैंने यह सोचा है, इन्कोसि, कि उनमें से कुछ को हम यहाँ रखने का प्रयत्न करें।

—हूँ। मगर यह हम कैसे करेंगे ?

—अपनी ज़मीन की ओर ध्यान देकर, इसके पहले कि वह बिल्कुल बर्बाद हो जाय; लोगों को स्कूलों में इस बात की शिक्षा देकर कि ज़मीन को कैसे और ज्यादा उपजाऊ और लाभदायक बनाया जाय। ऐसा करने से कम-से-कम कुछ लोग तो इन्डाटशेनी में रह सकेंगे।

सरदार ख़ामोश हो गये और अपने विचारों में खो गये। ऐसी प्रथा नहीं है कि लोग सरदार को टोकें, जब वह इस प्रकार सोच रहे हों। लेकिन कुमालो समझ गये कि उनकी समझ में नहीं आ रहा है कि क्या कहें। उन्होंने कई बार कुछ बोलना आरम्भ किया, लेकिन, या तो इसलिए कि उन्होंने स्वयं अपने-आपको रोक लिया, या वह दिमाग में आयी हुई बात पूरी तरह नहीं सोच पा रहे थे, इसलिए वह नहीं बोले। यह कुमालो की समझ में नहीं आ रहा था। वास्तव में ऐसा अक्सर

होता है, जब किसी के सामने कोई ऐसे गम्भीर प्रश्न लाता है, जिनके बारे में उन्होंने अक्सर विचार तो किया हो, लेकिन कभी उन्हें अपने अन्दर ही से कोई ठीक उत्तर न मिला हो।

लेकिन अन्त में सरदार बोले—मैंने कई बार इन गम्भीर बातों पर विचार किया है।

—जी, इन्कोसि!

—और मैंने इस समस्या पर भी विचार किया है कि क्या करना चाहिए?

—जी, इन्कोसि!

—इसलिए मैं इस बात पर बहुत खुश हूँ कि तुमने भी इन बातों पर विचार किया है।

यह कहने के बाद फिर खामोशी छा गयी। और कुमालो देख रहे थे कि सरदार फिर शब्दों के लिए उलझ गये हैं।

—आप जानते हैं, उम्फ़ुन्दीस, कि हम लोग कई वर्षों से इस बात की शिक्षा स्कूलों में दे रहे हैं। अंग्रेज़ इन्सपेक्टर से कई बार हमारी इस सम्बन्ध में बात हुई है।

—मुझे यह मालूम है, इन्कोसि।

—इन्सपेक्टर जल्दी ही यहाँ फिर आनेवाले हैं और हम इस सम्बन्ध में और आगे बात करेंगे।—प्रोत्साहन और आशा के भाव के साथ सरदार ने अपनी बात इस प्रकार समाप्त की, जैसे उनके और कुमालो के बीच यह बात अब सफल समाप्ति पर पहुँच गयी हो।

कुमालो जानते थे कि यह भेंट जल्दी ही समाप्त हो जायगी। फिर भी, यह जानकर भी कि ऐसा करना बिल्कुल ठीक नहीं होगा, साहस बटोरकर उन्होंने इस प्रकार बात कही, जिससे यह प्रगट होता था कि आगे भी अभी वह और कुछ कहना चाहते हैं—इन्कोसि?

—हूँ।

—यह ठीक है, इन्कोसि, कि यह बातें वर्षों से पढ़ाई जा रही हैं। लेकिन जहाँ इस तरह की पढ़ाई होती है, वहाँ की हालत देखकर दुःख होता है। यहाँ न घास है, न पानी। और वर्षा अगर होती भी है, तब भी वहाँ मक्का आदमी के बराबर ऊँची नहीं हो पाती। यहाँ जानवर मर रहे हैं और यहाँ दूध नहीं होता है। मलूसी के बच्चे की मृत्यु हो गयी है, कुलूसे का बच्चा मर रहा है। और यह टीको ही जानें कि अभी और कौन मरेंगे।

और कुमालो जानते थे कि उन्होंने बहुत कड़ी और कड़ुवी बात कह दी है और उन्होंने उस आशा को और प्रोत्साहन को भी खत्म कर दिया है। इसलिए बात का

सफलतापूर्वक अन्त नहीं हुआ था। शायद सरदार को क्रोध आ गया हो, इसलिए नहीं कि ये बातें सही नहीं थीं, बल्कि इसलिए कि कुमालो ने सरदार को उस ढंग से बात को समाप्त नहीं करने दिया था।

—सूखा पड़ रहा है, उम्फ़ुन्दीस, यह आपको भूलना नहीं चाहिए।

—मैं इस बात को भूला नहीं हूँ,—कुमालो ने आदर-सहित कहा—लेकिन सूखा हो या न हो, यह हालत ही यहाँ कई वर्षों से चल रही है।

और सरदार फिर चुप हो गये, वह निरुत्तर थे। वह भी यह जरूर सोच रहे होंगे कि नाराज़ होकर वह इस बात को ख़त्म कर सकते हैं, लेकिन पादरी से ऐसा करना भी तो उतना आसान नहीं था।

अन्त में अनिच्छापूर्वक वह बोले—मैं मैजिस्ट्रेट से मिलूँगा,—और फिर गम्भीरता वह बोले—मैंने भी वही बातें देखी हैं, जो आप देखते हैं।

कुछ देर तक वह अपने विचारों में खोये-से बैठे रहे। और चूँकि ऐसा कहना सरल नहीं है, इसलिए उसके बाद वह कठिनाई से बोले—मैं इस सम्बन्ध में मैजिस्ट्रेट से पहले भी बातें कर चुका हूँ।

इसके बाद वह माथे पर बल डाले और परेशान बैठे रहे। कुमालो जानते थे कि और कुछ होना-जाना नहीं है, इसलिए वह धीरे-धीरे उठे, जिससे सरदार यह समझ जायँ कि अब वह जाने को तैयार हैं। सरदार की आज्ञा की प्रतीक्षा करते समय उन्होंने सरदार के सलाहकारों की ओर देखा, जो सरदार के पीछे खड़े थे और उन्होंने यह भी देखा कि उनके माथे पर बल थे और वे परेशान थे कि इस बात में उनके पास कुछ भी सलाह देने को नहीं था। एक टूटी हुई जाति के सरदार के सलाहकारों के पास और बातों के लिए सलाह तो है, लेकिन अपनी उस टूटी हुई जाति की समस्याओं के बारे में उनके पास कोई सलाह नहीं होती।

सरदार परेशान-से उठ खड़े हुए और उन्होंने पादरी की ओर हाथ बढ़ाया—अच्छा, तो मैं मैजिस्ट्रेट से मिलने जाऊँगा। विदा, उम्फ़ुन्दीस।

—आप सुखी रहें, इन्कोसि!

पहाड़ी ढलवान पर से उतरकर कुमालो सीधे गिरजे में जाकर रुके और वहाँ उन्होंने सरदार के लिए और इन्डाटशेनी के पुनर्निर्माण के लिए प्रार्थना की। लकड़ी और लोहे की बनी वह इमारत भट्ठी की तरह तप रही थी और कुमालो का मन मरा-सा था। उस बेदम कर देनेवाली गर्मी में उनकी निराशा और भी बढ़ गयी थी। इसलिए उन्होंने संक्षेप में प्रार्थना की—भगवान्, इन्डाटशेनी को तेरे हाथों में छोड़ता हूँ!

इसके बाद वह स्कूल के हेडमास्टर से मिलने के लिए फिर धूप में ही निकल पड़े।

लेकिन वहाँ भी वह अधिक सफल नहीं हुए। अपना बड़ा चश्मा लगाये हुए हेडमास्टर ने उनसे नम्रता और सौजन्य से बात की और उन्हें ऐसी चीज़ें दिखायीं, जिन्हें वह काम करने की योजना कहते थे। फूल और बीजों के चित्र दिखाये और नलियों में भिन्न-भिन्न प्रकार की मिट्टियों के नमूने दिखाये। हेडमास्टर ने उन्हें यह भी समझाया कि स्कूल इस बात का प्रयत्न कर रहा है कि बच्चों के जीवन का जाति के जीवन से सम्बन्ध स्थापित हो। और उन्होंने कुमालो को वह सूचनाएँ भी दिखायीं, जो पीटरमैरित्ज़बर्ग में स्थित शिक्षा-विभाग-द्वारा इस सम्बन्ध में भेजी गयी थीं। वह कुमालो को बाहर कड़ी धूप में ले गये और उन्हें स्कूल का बाग़ीचा दिखाया। लेकिन यह-सब कोरा किताबी लेक्चर था, क्योंकि पानी नहीं था और सब-कुछ सूखा पड़ा था। लेकिन शायद वह-सब इतना किताबी भी नहीं था, क्योंकि वादी में भी सब-कुछ सूखा था, यहाँ तक कि बच्चे भी मर रहे थे।

कुमालो ने हेडमास्टर से पूछा कि इन बच्चों को मरने से और युवकों को यहाँ से भागने से कैसे रोका जाय। हेडमास्टर ने सर हिला दिया और आर्थिक कारणों की बात कही और कहा कि स्कूल में इसकी सामर्थ्य नहीं है और कुमालो फिर अपने गिरजे में लौट आये और दुखी और हताश बैठ गये। वह महान स्वप्न कहाँ गया, जो उन्होंने एजेनजेलेनी में देखा था, वह स्वप्न, जिसका जन्म महान कष्टों और पीड़ाओं से हुआ था? कैसे कोई पादरी अपने गाँव को लोगों के लिए वास्तविक जीवन का और बच्चों के निर्माण का स्थान बना सकता है? तो क्या अब वह बिल्कुल वृद्ध और असमर्थ हो गये हैं या उनकी कल्पना केवल भ्रम थी, और यह सारी चीजें वश के बाहर हैं? भगवान की शक्ति के अतिरिक्त कोई ऐसी शक्ति नहीं, जो इस महान और अद्भुत काम को कर सकती है। और उन्होंने फिर संक्षेप में प्रार्थना की—भगवान, मैं इन्डाटशेनी को तेरे हाथों सौंपता हूँ!

इसके बाद वह घर में चले गये और उस भयानक गर्मी में गिरजे के हिसाब से तब तक उलझे रहे, जब तक उन्होंने घोड़े की आवाज़ न सुनी और उसे बाहर रुकते न सुना। वह अपनी कुर्सी से उठे और देखने के लिए बाहर गये कि कौन इस कठोर धूप में घोड़े पर घूम रहा है। बाहर आकर वह क्षण-भर के लिए स्तम्भित रह गये, क्योंकि एक लाल घोड़े पर एक छोटा अंग्रेज़ बालक था, ठीक वैसा ही, जैसा बरसों पहले एक अंग्रेज़ बालक इधर से कभी-कभी घोड़े पर निकला करता था।

छोटा बालक कुमालो को देखकर मुस्कराया और अपना छोटा-सा हैट उठाकर उसने कहा—नमस्ते!

और इसपर कुमालो गर्व से फूल उठे और इस बात पर उन्होंने अपने अन्दर विनीत भाव का अनुभव किया। उन्हें इस बात पर आश्चर्य हुआ कि छोटे अंग्रेज़ बालक को प्रथा नहीं मालूम।

—नमस्ते, इन्कोसान (बालकों के लिए आदरसूचक)! घुड़सवारी के लिए आज बहुत गर्म है।

—मुझे तो गर्मी नहीं लगती। क्या यह आपका गिरजा है?

—हाँ, यह मेरा ही गिरजा है।

—मैं सेंट मार्कस के गिरजे के स्कूल में पढ़ता हूँ। वह जोहैन्सबर्ग का सबसे अच्छा स्कूल है। उसमें भी एक छोटा गिरजा है।

—सेंट मार्कस !—कुमालो ने उत्तेजित होकर कहा—यह भी सेंट मार्कस का ही गिरजा है, लेकिन तुम्हारे स्कूल का छोटा गिरजा, बेशक वह इससे अच्छा होगा।

—हाँ-हाँ, वह अच्छा है !—बच्चे ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—लेकिन वह शहर में है। आपका घर कहाँ है?

—वह मेरा घर है।

—क्या मैं उसके अन्दर जा सकता हूँ? मैं कभी किसी पादरी के घर के अन्दर नहीं गया हूँ। मेरा मतलब है, किसी देसी पादरी के घर में।

—प्रसन्नतापूर्वक देख सकते हो, इन्कोसान !

नन्हा बालक अपने घोड़े पर से कूद पड़ा और घोड़े को उनमें से एक खम्भे से बाँध दिया, जो गिरजे में आनेवाले आदमियों के घोड़ों के लिए लगे थे। फिर कुमालो के घर के बाहर पड़ी हुई फटी हुइ चटाई पर उसने अपने जूते झाड़े और अपना हैट उतारकर घर में घुसा।

—यह घर तो अच्छा है। मुझे आशा नहीं थी कि यह ऐसा अच्छा होगा।

—हम लोगों के सब मकान ऐसे नहीं होते,—कुमालो ने नम्रता से कहा—लेकिन पादरियों को तो अपना घर अच्छा रखना ही चाहिए। शायद आपने यहाँ के और मकान भी देखे हैं?

—हाँ, देखे हैं। बाबा के खेतों के पास। वे इसकी तरह अच्छे नहीं हैं। क्या यह आपका किया हुआ काम है?

—हाँ, इन्कोसान।

—अंक गणित-जैसा लगता है?

—अंक गणित ही है, गिरजे का हिसाब है।

—मुझे नहीं पता था कि गिरजे में भी हिसाब होता है। मैं समझता था कि दूकानों में ही हिसाब रखा जाता है।

इसपर कुमालो हँस दिये। और एक बार हँसकर फिर हँसे कि बालक ने उनसे पूछा—आप हँस क्यों रहे हैं?—वह बालक भी हँस रहा था। कुमालो के हँसने का उसने बुरा नहीं माना था।

—बस, योंही, इन्कोसान ।

—इन्कोसान ? माने छोटा इन्कोसि, है न ?

—हाँ, छोटा इन्कोसि ही । मतलब छोटे सरकार !

—हाँ, मुझे मालूम है । और आपको क्या कहा जाता है, बताइए !

—उम्फुन्दीस ।

—अच्छा, इम्फुन्दीस ?

—नहीं-नहीं, उम्फुन्दीस !

—ओ, उम्फुन्दीस ! क्या मतलब होता है इसका ?

—इसका मतलब होता है, पादरी ।

—क्या मैं बैठ सकता हूँ, उम्फुन्दीस ?—बालक ने अन्तिम शब्द को धीरे-से कहा—अब ठीक है न ?

कुमालो ने हँसी रोकते हुए कहा—बिल्कुल ठीक ! गर्मी बहुत है, पानी पीओगे ?

—मैं दूध पीना चाहूँगा, फ्रिज से निकला हुआ बरफ-सा ठंडा !

—इन्डाटशेनी में फ्रिज नहीं है, इन्कोसान ।

—तो सादा दूध ही सही, उम्फुन्दीस ।

—इन्डाटशेनी में दूध भी नहीं है, इन्कोसान !

बालक का चेहरा सुर्ख हो गया—मैं पानी ही पिऊँगा, उम्फुन्दीस ।

कुमालो बालक के लिए पानी लाये और जब वह पी रहा था, तब उन्होंने उससे पूछा—यहाँ तुम कितने दिन ठहरोगे, इन्कोसान ?

—अब बहुत दिन नहीं, उम्फुन्दीस,—बालक पानी पीता रहा । वह फिर बोला—इन दिनों हमारी छुट्टियाँ नहीं हैं । हम यहाँ विशेष कारणों से आये हुए हैं ।

कुमालो खड़े उसकी तरफ देखते रहे और दिल में कह रहे थे, हाँ पितृहीन बच्चे ! मैं वह कारण जानता हूँ ।

—पानी को 'अमान्ज़ी' कहते हैं न, उम्फुन्दीस ।

कुमालो के उत्तर ने देने पर बालक ने फिर कहा—उम्फुन्दीस !

और फिर—उम्फुन्दीस !

—बच्चे !

—पानी को 'अमान्जी' कहते हैं न, उम्फुन्दीस ?

अन्तर के विचारों से अपने को मुक्त करके कुमालो बालक के उत्सुक चेहरे की तरफ देखकर मुस्करा दिये —ठीक है, इन्कोसान ।

—और घोड़े को 'इहाशी' कहते हैं ?

—यह भी ठीक है ।

—और मकान को 'इकाया' ?

—ठीक !

—और रुपये को 'इमाली' ?

—यह भी ठीक।

—और लड़के को 'उम्फाना' ?

—यह भी ठीक।

—और गाय को 'इन्कोमो' ?

कुमालो एकाएक हँस पड़े।

—ठहरो, ठहरो !—वह बोले—मेरा तो दम फूल गया। तुमने तो मुझे थका ही दिया।—और उन्होंने हाँफने और जोर-जोर से साँस लेने का उपक्रम किया और कुर्सी पर बैठकर माथे का पसीना पोंछने लगे।

—तुम जल्दी ही जुलू बोलने लगोगे।

—जुलू तो आसान है। उम्फुन्दीस, क्या बजा है ?

—बारह बजा है, इन्कोसान।

—अर-र-र ! बारह बज गया ? अब तो मुझे चलना चाहिए। इस पानी के लिए धन्यवाद, उम्फुन्दीस !

बालक अपने घोड़े की तरफ गया और बोला—मुझे घोड़े पर चढ़ने में मदद दीजिए, उम्फुन्दीस।

और कुमालो ने बालक को घोड़े पर चढ़ने में सहायता दी। घोड़े पर बैठकर बालक बोला—मैं आपसे फिर मिलने आऊँगा, उम्फुन्दीस। फिर आपसे जुलू में और बातें करूँगा।

कुमालो हँस दिये—अवश्य ! मैं तुम्हारा हमेशा स्वागत करूँगा !

—उम्फुन्दीस ?

—हाँ, इन्कोसान।

—इन्डाटशेनी में दूध क्यों नहीं है ? क्या इसलिए कि यहाँ के लोग गरीब हैं ?

—हाँ, इन्कोसान।

—और बच्चे क्या करते हैं ?

कुमालो ने बालक की ओर देखा—वे मर जाते हैं,—वह बोले—उनमें से कुछ तो अब भी मर रहे हैं।

—अब कौन मर रहा है ?

—कुलुसे का छोटा बच्चा।

—क्या डाक्टर उसे देखने नहीं आया था ?

—आया था।

—तो उसने क्या कहा ?

—उसने कहा कि बच्चे को दूध मिलना बहुत जरूरी है, इन्कोसान।

—और बच्चे के माता-पिता ने क्या कहा?

—उन्होंने कहा कि, हाँ, डाक्टर साहब, हमने आपकी बात सुन ली।

और छोटे-से बालक ने धीमी-सी आवाज़ में कहा—अच्छा,—उसने अपना हैट उठाकर गरभीरता से कहा—बिदा उम्फुन्दीस!

और इतना कहकर वह गम्भीरता से घोड़ा मोड़कर चल दिया। रास्ते में कुछ लोग उसे देख रहे थे। कुछ ही देर में वह घोड़े पर तपती हुई धूल-भरी सड़क पर तेजी से ओझल हो गया।

रात आयी, तो ठंडक हुई और शान्ति मिली। कुमालो, उनकी पत्नी, वह लड़की और गर्टरूड का बच्चा जब भोजन कर रहे थे, तो बाहर से पहियों की आवाज आयी और दरवाजे पर थपकी पड़ी और कुमालो का मित्र अन्दर आया, जो स्टेशन से उनका सामान लाया था।

—उम्फुन्दीस! माँ!

—कहो, मित्र, खाना खाओगे?

—नहीं, धन्यवाद! मैं तो घर लौट रहा था। मुझे आपको एक सन्देश देना है!

—मुझे?

—जी, हाँ, जारविस साहब का। आज क्या छोटा अंग्रेज बालक यहाँ आया था?

पहली बार, यह जान कर कि क्या हो गया, कुमालो को हल्का-सा डर लगा। वह बोले—वह यहाँ आया तो था।

—हम कुछ पेड़ों पर काम कर रहे थे, जब वह बालक घोड़े पर सवार होकर आया था। मैं अंग्रेजी नहीं समझता था, उम्फुन्दीस, लेकिन वे लोग शायद कुलुसे के बच्चे के बारे में बात कर रहे थे, ऐसा मुझे लगा। और आइए, देखिए, मैं आपके लिए क्या लाया हूँ!

दरवाजे के बाहर गाड़ी में चमकदार दूध के पीपे रखे हुए थे।

—यह दूध छोटे बच्चों के लिए है, केवल उनके लिए, जो स्कूल नहीं जाते।—उस आदमी ने बड़प्पन के साथ कहा—और इसे बाँटने का अधिकार केवल आपको है। और ये बोरे पीपों पर लपेटना है और बच्चों से कह दें कि वे इन बोरों को तर रखने के लिए पानी लायें। रोज़ सुबह मैं खाली पीपे ले जाया करूँगा। यह तब तक चलेगा, जब तक घास नहीं आ जाती और फिर से हमें दूध नहीं मिलने लगता।

उस आदमी ने गाड़ी में से पीपे उठाये और पूछा—इन्हें कहाँ रख दूँ, उम्फुन्दीस?

लेकिन कुमालो जैसे गूँगे और जड़ हो रहे थे और उनकी पत्नी ने कहा—हम इनको उस कमरे में रख देंगे, जो उम्फुन्दीस के गिरजे में है।

और उन लोगों ने पीपे वहाँ रख दिये। जब वे लौटकर आये, तो आदमी ने

कुमालो से कहा—आप जारविस साहब को कोई सन्देश भेजेंगे, उम्फ़ुन्दीस ?

और कुमालो की ज़बान लड़खड़ा गयी। लाचार होकर उन्होंने अपना हाथ ऊपर आसमान की तरफ उठा दिया। कुमालो के मित्र ने समझते हुए कहा— टीको उनका कल्याण करें !

और कुमालो ने सर हिला दिया।

वह आदमी बोला—अभी मुझे उनके यहाँ काम करते हुए केवल एक ही हफ़्ता हुआ है, लेकिन जिस दिन वह मुझसे मरने को कहेंगे, मैं मर जाऊँगा !

गाड़ी पर चढ़कर उसने रास थाम ली। वह बहुत उत्तेजित था और खूब बातें करना चाहता था। वह बोला—इस गाड़ी पर जब मैं घर पहुँचूँगा, तो मेरी बीवी समझेगी कि मैं मैजिस्ट्रेट बना दिया गया हूँ !

और इसपर सब लोग हँस पड़े और कुमालो का गूँगापन भी टूट गया, वह भी हँस पड़े। पहले तो इस विचार मात्र पर कि यह ग़रीब आदमी भी मैजिस्ट्रेट बना दिया जा सकता है और दूसरे इस बात पर कि मैजिस्ट्रेट ऐसी गाड़ी में चढ़ सकता है। और इसके बाद वह इस बात पर हँसे कि एक बुजुर्ग आदमी ऐसी दिल्लगी करे; और इस बात पर भी वह हँसे कि अब कुलुसे का बच्चा शायद ज़िन्दा रह सकता है और हाई प्लेस की ज़मींदारी के गम्भीर मौन आदमी का ख्याल कर भी वह फिर हँसे। और इसी तरह जोर से हँसते हुए वह मकान के अन्दर चले गये और उनकी पत्नी आश्चर्य से उनकी तरफ देखती रहीं।

(३)

एक बच्चा स्टोर से चार चिट्ठियाँ स्कूल को लाया और हेडमास्टर ने उन्हें कुमालो के घर भेज दिया। वे सारे पत्र जोहैन्सबर्ग से आये थे, एक एबसेलाम ने अपनी पत्नी को लिखा था और दूसरा अपने माता-पिता को, दोनों पर सरकारी मोहरें थीं और वे प्रिटोरिया की बड़ी जेल से आये थे। तीसरा खत सिमांगु का था और चौथा श्री कारमाईकेल का। वकील के पत्र को कुमालो ने डरते-डरते खोला, क्योंकि यह उस वकील के पास से आया था, जिसने मुकदमा भर्माथ लड़ा था, और शायद वह दया की स्वीकृति का पत्र हो। उसमें वकील ने बहुत नम्र और सम्वेदना-पूर्ण शब्दों में लिखा था कि क्षमा नहीं प्रदान की जायगी और इस महीने की पंद्रह तारीख को उनके लड़के को फाँसी लगा दी जायगी। पत्र पढ़कर कुमालो घण्टे-दो-घण्टे बिल्कुल मौन बैठे रहे। उन्हें तब तक कुछ दिखायी न दिया, जब तक कि उनकी पत्नी ने उनसे यह नहीं कहा—तो वह आ गया, स्टीफ़ेन ?

और जब उन्होंने सर हिलाया, तो वह बोलीं—लाओ, ख़त मुझे दो, स्टीफ़ेन।

काँपते हुए हाथों से कुमालो ने वह उन्हें दे दिया। पत्नी ने भी ख़त पढ़ा और भयङ्कर आँखों से सामने देखती हुई बैठी रहीं। यह उनकी कोख का बच्चा था, उनके दूध पर पाला हुआ। लेकिन वह कुमालो के बराबर देर तक नहीं बैठी रहीं, खड़ी होकर उन्होंने कहा – इस तरह हाथ-पर-हाथ रखे बैठे रहना ठीक नहीं है। अपने ख़त पढ़ लो और कुलुसे के बच्चे और लड़की एलीज़बेथ को जाकर देख आओ। मैं घर का काम करूँगी।

—एक और भी ख़त है।

—उसका ?

—हाँ, उसी का।

वह ख़त कुमालो ने अपनी पत्नी को दे दिया और वह फिर बैठ गयीं और उन्होंने सँभालकर उस पत्र को भी खोला और पढ़ा। वेदना उनकी आँखों में, चेहरे पर, हाथों में थी, लेकिन कुमालो उसे नहीं देख रहे थे, क्योंकि वह शून्य दृष्टि से नीचे फ़र्श की ओर देख रहे थे, गोकि उनकी आँखें कुछ भी नहीं देख पा रही थीं, किसी तरफ़ भी नहीं देख पा रही थीं और उनका चेहरा झुलस-सा गया था, उसी बेदना से, जो उनके चेहरे पर से तब से ग़ायब हो गयी थी, जब से वह जोहैन्सबर्ग से लौटकर अपने घर आये थे।

—स्टीफ़ेन !—कुमालो की पत्नी ने तेज़ी से कहा।

कुमालो ने उनकी तरफ़ देखा।

—इसे पढ़ो, जल्दी ख़त्म करो। इसके बाद काम पर चलें।

उन्होंने अपनी पत्नी से ख़त ले लिया और पढ़ा। ख़त छोटा और सरल था और पहली पंक्ति के अतिरिक्त पूरा ज़ुलू भाषा में था, जैसी कि प्रायः प्रथा है :

प्रिय माता-पिताजी,

मैं यहाँ स्वस्थ हूँ और आशा करता हूँ कि आप लोग भी स्वस्थ होंगे। आज सुबह मुझे बताया गया है कि मुझे क्षमा नहीं दी जायगी। इसलिए अब आपके या इन्डाटशेनी के फिर कभी दर्शन नहीं कर सकूँगा।

यह जगह अच्छी है। मैं बन्द हूँ, और कोई मुझसे मिलने या बात करने नहीं आ सकता। लेकिन सिगरेट पीने की, पढ़ने की और ख़त लिखने की इजाज़त है और अंग्रेज़ लोग भी मेरे साथ बुरा बर्ताव नहीं करते।

प्रिटोरिया से काली जाति के एक पादरी मेरे पास आते हैं। वह मुझसे अच्छी तरह बात करते हैं और अपनी शिक्षा से मुझे उस अन्तिम पीड़ा को सहने की शक्ति दे रहे हैं।

और कोई समाचार नहीं है, इसलिए मैं अब पत्र बन्द करता हूँ। मुझे आपकी और इन्डाटशेनी के सब लोगों की बहुत याद आती है, और अगर मैं वहाँ पहुँच पाता, तो फिर कभी उसे न छोड़ता।

आपका पुत्र,
एबसेलाम।

पुनश्च :

क्या बच्चे का जन्म हो गया है ? अगर लड़का हो, तो मैं चाहता हूँ कि उसका नाम पीटर रखा जाय। पफ़ूरी और मैथ्यूज़ के मुकदमे के बारे में आपने सुना है ? मैं उस मुकदमे में गवाही देने अदालत गया था, लेकिन मुझे अन्त तक वहाँ रुकने नहीं दिया गया। पिताजी, मेरी डाकखाने की किताब से आपको रुपया मिल गया था ?

—एबसलाम।

—स्टीफ़ेन, अब चलें और काम करें।

—हाँ, यही ठीक होगा। लेकिन अभी सिमांगु का खत नहीं पढ़ा और यह बेटी के लिए एक खत है।

—वह मैं ले जाती हूँ। पहले अपना खत पढ़ डालो। और बताओ कुलुसे के बच्चे को देखने जाओगे ?

—जाऊँगा।

—और स्टोर तक जाने में क्या बहुत थक जाओगे ?

कुमालो खिड़की के बाहर देख रहे थे—वह देखो, बादल !

पत्नी भी अपने पति के पास आकर खड़ी हो गयीं और उन्होंने भी देखा कि उमज़िमकुलू की वादी के उस पार घने बादल घिर रहे हैं !

—अब वर्षा होगी !—कुमालो ने कहा—और स्टोर तुम मुझे क्यों भेजना चाहती हो ? क्या किसी चीज़ की बहुत सख़्त ज़रूरत है ?

—मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। लेकिन मैं सोच रही थी कि तुम स्टोर जाकर वहाँ के अंग्रेज से यह कह देते कि जेल से जितने सरकारी मोहर के खत आयँ, उन्हें वह चुपचाप रखे रहें और हम लोगों के वहाँ जाने पर ही दिया करें, क्योंकि हमारे लिए यह काफ़ी लज्जा की बात है।

—हाँ-हाँ, ठीक है। वह तो मैं अवश्य कर दूँगा।

—अच्छा, तुम अपना खत पढ़ो।

कुमालो ने सिमांगु का खत खोला और जोहैन्सबर्ग के समाचारों को पढ़ा और और अन्दर उस विशाल, कोलाहल-पूर्ण शहर को फिर जाने के लिए उठती हल्की इच्छा पर उन्हें आश्चर्य हुआ। पत्र समाप्त करने के बाद वह बादल देखने के लिए

गये, क्योंकि हफ्तों की निर्मम धूप के बाद बादल बाहर देखकर उल्लास होता था। एक-आध बादल तो ऊपर से जा रहे थे, और वादी पर अपनी लम्बी-चौड़ी छाया डाल रहे थे। धीरे-धीरे पर स्थिर गति से बढ़ते हुए वे ढलान पर से चोटी पर पहुँचते, और फिर वे इन ढलानों पर आकस्मिक वेग से उठते हुए ग़ायब हो जाते। उस वक्त उमस और घुटन थी, लेकिन शीघ्र ही उमज़िमकुलू के उस पार से गरज होगी, क्योंकि आज निस्सन्देह वर्षा होगी!

वह वहाँ खड़े ही थे कि उन्होंने कैरिसब्रुक की तरफ़ से वादी में उतरती एक मोटर देखी। ऐसा दृश्य कम ही देखने को मिलता था। मोटर बहुत हल्के-हल्के चल रही थी, क्योंकि सड़क मोटर चलाने के क़ाबिल नहीं थी, केवल बैलगाड़ियों आदि के लिए ही थी। इसके बाद उन्होंने देखा कि गिरजे से कुछ ही दूर पर एक अंग्रेज अपने घोड़े पर निश्चल बैठा है। ऐसा लगता था कि वह उस मोटर की प्रतीक्षा कर रहा था। और कुछ चौंककर कुमालो ने देखा कि वह जारविस थे। मोटर में से एक अंग्रेज़ उतरा और कुमालो ने और अधिक आश्चर्य से देखा कि वह मैजिस्ट्रेट था और पिछली रात का मूर्खतापूर्ण मज़ाक उन्हें एकदम याद आ गया। जारविस घोड़े से उतर पड़े और उन्होंने मैजिस्ट्रेट और डंडियाँ और झंडियाँ लिए मोटर से उतरते दूसरे अंग्रेजों से हाथ मिलाये। और यह क्या? दूसरी ओर से, रोएँ की टोपी पहने हुए और घुड़सवारी की बिरजिस पहने तगड़ा सरदार अपने सलाहकारों से घिरा घोड़े पर चला आ रहा था। सरदार ने मैजिस्ट्रेट को सलाम किया और मैजिस्ट्रेट ने सरदार को। बाक़ी लोगों ने भी एक-दूसरे को सलाम किया। उसके बाद वे लोग वहीं खड़े-खड़े बातें करते रहे, जिससे स्पष्ट था कि वे लोग किसी विशेष प्रयोजन से जमा हुए हैं। दूर की जगहों की तरफ़ और पास की जगहों की तरफ़ हाथों से इशारे हो रहे थे। इसके बाद सरदार के एक सलाहकार ने पास लगे हुए एक सीधी-साफ़ शाखोंवाले पेड़ को काट डाला और फिर उसकी शाखों के भी छोटे-छोटे टुकड़े किये और उनके सिरों को छीलकर नोकीला कर दिया। यह-सब देखकर कुमालो बड़े चकित हो गये। अंग्रेज़ लोगों ने गाड़ी में से और अधिक डंडियाँ और झण्डे निकाले और उनमें से एक ने एक तिपाई पर एक बक्स रखा, मानो वह तस्वीर खींचने जा रहा हो। कुछ डंडिया और झंडियाँ जारविस ने ले लिये और कुछ मैजिस्ट्रेट ने। गर्मी के कारण मैजिस्ट्रेट को कोट उतार देना पड़ा था। उन्होंने बादलों की ओर भी इशारा किया और कुमालो ने जारविस को यह कहते हुए सुना—लगता है, अब ठीक हो जायगा।

सरदार अंग्रेज़ों से पीछे नहीं रहना चाहते थे। उन्होंने भी घोड़े से उतरकर कुछ डण्डे ले लिये। लेकिन कुमालो देख रहे थे कि सरदार की समझ में यह नहीं आ रहा है कि क्या हो रहा है। जारविस इस काम के निर्देशक मालूम पड़ते थे। उन्होंने

ज़मीन में एक डण्डी गाड़ दी और सरदार ने भी एक डण्डी अपने एक सलाहकार को दी और उससे कुछ कहा। इसके बाद सलाहकार ने भी एक डण्डी ज़मीन में गाड़ दी। लेकिन तिपाई पर रखे बक्सावाला अंग्रेज़ चिल्ला उठा—वहाँ नहीं, वहाँ नहीं! वह डण्डी हटाओ!

सलाहकार दुविधा में था और उसने संभ्रम से सरदार की तरफ़ देखा और सरदार ने गुस्से से कहा—वहाँ नहीं, वहाँ नहीं! उसे हटाओ!

इसके बाद उलझन में पड़कर सरदार फिर जाकर अपने घोड़े पर बैठ गये। उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि आख़िर करना क्या है। इसलिए उन अंग्रेज़ों को ही डंडी लगाने का काम छोड़कर वह अपने घोड़े पर बैठ गये।

इस तरह एक घन्टा बीत गया। झंडियों और पतली लकड़ियों की ख़ासी क़तारें बन गयी थीं। और यह-सब देखकर कुमालो पहले से भी कहीं ज़्यादा चकित थे। जारविस और मैजिस्ट्रेट एक साथ खड़े थे और वे पहाड़ों की तरफ़ इशारा करते रहे। तब घूमकर वादी की तरफ़ इशारा करने लगे। इसके बाद उन्होंने सरदार से कुछ बातें कीं, जिन्हें उनके पीछे खड़े हुए सरदार के सलाहकार बड़े ध्यान से सुनते रहे कुमालो ने जारविस को मैजिस्ट्रेट से कहते हुए सुना—इस तरह तो बहुत देर लगेगी।

मैजिस्ट्रेट ने अपने कन्धे उचकाकर उत्तर दिया—लेकिन ये काम तो इसी तरह होते हैं।

और तब जारविस ने कहा—मैं प्रिटोरिया जाऊँगा। आपको आपत्ति तो न होगी?

मैजिस्ट्रेट बोले—मुझे कोई अपत्ति नहीं। शायद इसी तरह काम बन जाय।—मैजिस्ट्रेट ने उत्तर दिया।

तब जारविस ने कहा—मैं आपका साथ नहीं छोड़ना चाहता। पर अगर आप सूखे-सूखे घर पहुँचना चाहते हैं, तो अच्छा है कि आप चल पड़ें, यह मामूली तूफ़ान न होगा।

लेकिन जारविस स्वयं नहीं चले। उन्होंने मैजिस्ट्रेट से बिदा ली और फैले खेतों पर लम्बे डग भरते हुए चलने लगे। कुमालो ने मैजिस्ट्रेट को एक अंग्रेज़ से कहते हुए सुना—लोग कहते हैं कि यह कुछ झक्की हो गये हैं। जो-कुछ मैंने सुना है, उससे तो जल्दी ही इनके पास कुछ भी न बचेगा।

इसके बाद मैजिस्ट्रेट ने सरदार से कहा—आप इस बात का ध्यान रखिएगा कि एक भी लकड़ी न तो छुई जाय, न उखाड़ी जाय।—और उसने सरदार को सलाम किया और दूसरे अंग्रेज की मोटर में बैठ गये और पहाड़ के ऊपर चल दिये।

सरदार ने अपने सलाहकारों से कहा—आज्ञा दे दो कि इनमें से एक भी लकड़ी

न तो छुई जाय, न उखाड़ी जाय।

उसके बाद सब सलाहकार वादी में भिन्न-भिन्न दिशाओं में चल दिये और सरदार अपने घोड़े पर बैठकर गिरजे के रास्ते से वापस लौट पड़े। उन्होंने कुमालो के अभिवादन का उत्तर दिया, लेकिन रुककर उन्हें उन डण्डियों और झंडों के बारे में कुछ भी नहीं बताया।

जारविस ने वास्तव में ठीक ही कहा था कि आज का तूफ़ान मामूली न होगा। अभी से सारे वादी के ऊपर अँधेरा छा गया था और लगता था कि बस अब तूफ़ान आने ही वाला है। खेतों पर अब बादलों की छाया नहीं उड़ रही थी, क्योंकि अब तो पूरी वादी ही छाया में ढँकी हुई थी। उमज़िमकुलू के उस पार लगातार गरज हो रही थी और जब-तब बिजली कड़क रही थी और कभी-कभी दूर के पहाड़ों पर बिजली ज़ोर से कड़क पड़ती थी। लेकिन इसी की तो लोगों को प्रतीक्षा थी, इसकी और इसके साथ आनेवाली वर्षा की। औरतें जल्दी-जल्दी अपने-अपने घरों की तरफ़ जा रही थीं और सहसा शोर मचाते हुए बच्चे स्कूल से निकल पड़े। और हेडमास्टर और दूसरे अध्यापक उन्हें आदेश दे रहे थे—जल्दी जाओ, जल्दी! सड़क पर मत घूमो!

ऐसा तूफ़ान भी देखने लायक चीज़ होती है। लदा हुआ एक काला भारी बादल उमज़िमकुलू की वादी पर से जा रहा था। और कुमालो देर तक खड़े उसे देखते रहे। कभी वह बादल नाद से गरज उठता था, कभी उसमें से बिजली इतनी ज़ोर से कौंधती थी कि धरती तक पहुँच जाती थी। इन्डाटशेनो की वादी में हवा चलने लगी थी और सड़कों पर और खेतों के ऊपर धूल के बवण्डर नाच रहे थे। बड़ा गहरा अँधेरा था और कुछ ही देर में उमज़िमकुलू के उस पार के पहाड़ पानी की बौछार से ओझल हो गये। कुमालो ने देखा कि जारविस तेज़ी से अपने घोड़े की तरफ लपक रहे हैं, जो बँधा-बँधा बेचैन हो रहा था। सधे हुए हाथों से उन्होंने घोड़े पर से लगाम और गद्दी उतार दी और उससे कुछ कहकर, उसे खोलकर छोड़ दिया। इसके बाद वे कुमालो की ओर तेज़ी से बढ़े और उन्हें पुकारा—उम्फ़ुन्दीस!

—उमनूमज़ान!

—मैं ये चीजें आपके बरामदे में रख दूँ, और कुछ देर आपके गिरजे में ठहर सकता हूँ?

—अवश्य, उमनूमज़ान! चलिए, मैं आपके साथ चलता हूँ।

और वे दोनों इसके पहले ही गिरजे के अन्दर चले गये, जब जोरों से बादल गरजे और उन लोगों ने वर्षा को खेतों पर पड़ते सुना। क्षण-भर में वह लोहे की छत पर ऐसे जोर से बजने लगी कि बात करना असम्भव हो गया। कुमलो ने गिरजे

के अन्दर बत्ती जला दी और जारविस चुपचाप एक बेंच पर बैठ गये और बिना हिले-डुले वहीं बैठे रहे।

लेकिन कुछ देर में ही पुरानी जंग-लगी छत के छेदों में से पानी टपकने लगा और जारविस को उससे बचने के लिए हटना पड़ा।

कुमालो ने घबराकर और क्षमा चाहते हुए चिल्लाकर कहा—छत टपकती है!

और जारविस ने उन्हें चिल्लाकर उत्तर दिया—मैंने देख लिया है!

और फिर वह नयी जगह भी टपकने लगी, जहाँ जारविस हटकर बैठे थे और उन्हें वहाँ से भी हटना पड़ा। वह खड़े हो गये और कमरे के धुँधलके में इधर-उधर घूमकर और हाथ से तिपाइयों को छूकर देखने लगे, लेकिन बैठने-लायक जगह मिलना मुश्किल था। ऐसी जगह पाना नामुमकिन था, क्योंकि जहाँ-कहीं बेंच सूखी थी, वहाँ जमीन पर बरसाती पानी आ रहा था और जहाँ ज़मीन सूखी थी, वहाँ बेंच पर पानी आ रहा था।

कुमालो ने जोर से कहा—छत कई जगह से चूती है।

और जारविस ने उत्तर में चिल्लाकर कहा—मैंने वह भी देख लिया है।

अन्त में जारविस को एक ऐसी जगह मिल गयी, जहाँ पानी बुरी तरह नहीं पड़ रहा था, और कुमालो को भी एक जगह ऐसी मिल गयी। और वे दोनों ख़ामोशी से बैठे रहे। लेकिन बाहर ख़ामोशी नहीं थी। बाहर बिजली की कड़क थी और छतों पर बरसते हुए पानी का कान फोड़ देनेवाला शोर था।

इस तरह बहुत देर तक वे बैठे रहे। जब सूखी हुई नदी में पानी बहने की कल-कल ध्वनि उन्हें सुनायी दी, तो उन्हें पता चला कि तूफान कम हो रहा है। कहीं दूर पर बिजली चमकती थी और उसकी धुँधली रोशनी गिरजे में भर जाती थी। और छत पर वर्षा की आवाज भी कम हो गयी थी।

जब बारिश करीब-करीब बन्द हो गयी, तो जारविस अपने स्थान से उठे और कठघरे के पीछे बैठे हुए कुमालो के पास आये। कुमालो की तरफ़ देखे बगैर जारविस ने पूछा—क्या क्षमा मिल गयी?

काँपते हुए हाथों से कुमालो ने अपने बटुए में से खत निकला, उनके हाथ कुछ तो अपने दुख के कारण काँप रहे थे और कुछ इस कारण कि जारविस के सामने उनकी ऐसी ही हालत हो जाया करती थी। जारविस ने वह खत ले लिया और उसे दूर रखा, जिससे धुँधली रोशनी उसपर पड़े। इसके बाद उसे लिफाफे में वापस रखकर उसे कुमालो को दे दिया।

—मैं यह बातें नहीं समझता, लेकिन वैसे मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ।

—मैं आपकी बात सुन रहा हूँ, उमनूमजान।

जारविस कुछ देर चुप रहे। वह वेदी की तरफ और वेदी के ऊपर लगे हुए क्रास की तरफ़ देख रहे थे।

—जब वह पन्द्रह तारीख आयगी, तो मैं याद करूँगा। अच्छा, उम्फुन्दीस, बिदा!

लेकिन कुमालो ने उत्तर में यह नहीं कहा, भगवान आपको सुखी रखे! न उन्होंने घोड़े की गद्दी और रास उठाने में सहायता देने का प्रस्ताव किया, न उन्होंने जारविस को दूध के लिए धन्यवाद दिया। उन झंडों और डंडों के विषय में तो पूछने की उन्हें कतई याद नहीं रही। और जब वह उठे और बाहर आये, तब तक जारविस जा चुके थे। अब भी वर्षा हो रही थी, थोड़ी-थोड़ी-सी। और सारी वादी आवाजों से गूँज रही थी। कई जल-धाराओं की मीठी कल-कल ध्वनि, जो बरसात के पानी से फिर जीवित हो गयी थी, धरती के रक्त से लाल हो गयी थी।

*

उस दिन साँझ को सब लोग सूरज की डूबती हुई हल्की सुर्ख रोशनी में बाहर निकल आये। उन्होंने उन डंडियों और उन झंडों को जाँचा, लेकिन उनका क्या मतलब था, यह किसी की समझ में नहीं आया। छोटे-छोटे लड़के उन डण्डों को बाहर निकालने का बहाना करने का खेल कर रहे थे। जमीन के पास से उन्हें पकड़ लेते और अपने हास्यजनक प्रयत्न में आँखें आसमान की ओर चढ़ा लेते। छोटी लड़कियाँ देख रही थीं, कुछ तो आनन्द में और कुछ संभ्रम में। यह खेल तब तक चलता रहा, जब तक डजूमा के छोटे बेटे ने ग़लती से एक डंडी मजाक-ही-मजाक में उखाड़ न ली और अपनी करनी पर सहमकर खड़ा न हो गया। इसके बाद ख़ामोशी छा गयी। नन्हें लड़के भय के कारण अपने बड़ों की तरफ़ देखने लगे और नन्हीं लड़कियाँ अपनी माताओं के पास जाकर खड़ी हो गयीं। कुछ रो रही थीं, कुछ संभ्रम में हँस रही थीं और कुछ कह रही थीं—हमने तुमसे कहा था, हमने तुमसे कहा था!

उस बाल-अपराधी को उसकी माँ ने झिझोड़कर कहा—तुमने मुझे बदनाम कर दिया, तुमने मुझे बदनाम कर दिया!—और वादी के बड़ी उम्र के लोगों ने चारों ओर खोजा और उनमें से एक बोला—यह रहा छेद!—और उन्होंने उस डंडी को सँभालकर उस छेद में फिर गाड़ दिया और एक आदमी घुटनों के बल बैठा और डंडी के चारों ओर मिट्टी थपथपा दी, जिससे उस जगह ऐसा लगे कि डंडी कभी उखाड़ी नहीं गयी थी।

लेकिन उनमें से एक बोला—इसे ऊबड़-खाबड़ कर दो, क्योंकि मिट्टी गीली है और थपथपायी हुई लगेगी।

इसलिए उन्होंने उसे ऊबड़-खाबड़ कर दिया और उसपर घास और पत्थर के

टुकड़े डाल दिये और सचमुच कोई नहीं कह सकता था कि वहाँ थपथपाया गया है।

इतने में ही दूध की गाड़ी आ गयी और नन्हे बच्चों की माताएँ या उनके भेजे ए आदमी गिरजे पर अपना-अपना हिस्सा लेने पहुँच गये।

और कुमालो ने अपने मित्र से पूछा—यह-सब डंडियाँ कैसी लगी हैं?

—मुझे नहीं मालूम, उम्फुन्दीस। लेकिन कल मैं पता लगाने की कोशिश करूँगा।

(४)

लकड़ियाँ बहुत दिनों तक वहीं गड़ी रहीं, जहाँ लोग उन्हें लगा गये थे और वादी में कोई फिर नहीं आया। ख़बर यह थी कि यहाँ बाँध बनाया जायगा, लेकिन किसी को यह पता नहीं था कि वह भरा कैसे जायगा, क्योंकि गिरजे के पास से जो छोटी नदी बहती थी, वह कभी-कभी सूख जाती थी। वह कोई बड़ी नदी नहीं थी। कुमालो के मित्र ने बताया था कि जारविस प्रिटोरिया गये हुए हैं, और जरूर, उन्हीं लकड़ियों के सम्बन्ध में, जो कि बाँध के सिलसिले में थीं।

इस प्रकार दिन बीतते गये। कुमालो नियमित रूप से इन्डाटशेनी के पुनर्निर्माण के लिए प्रार्थना किया करते, और सूरज नियमित रूप से धरती पर उदय होता और अस्त होता। कुलूसे का बच्चा चंगा हो गया था। और कुमालो अपने गिरजे के काम से जाने लगे। स्कूल चलने लगा। बच्चों को बीजों और पौधों के बारे में पढ़ाया जाता और चरागाहों के लिए अच्छे प्रकार की घास के बारे में बताया जाता और यह सिखाया जाता कि किस ज़मीन पर कौन-सी चीज बोना उपयुक्त है और जानवरों के लिए कौन सा चारा ठीक हो सकता है। रोज ही कुमालो को जारविस के लौटने के समाचार की प्रतीक्षा रहती थी, ताकि लोगों को यह मालूम पड़ जाय कि क्या होनेवाला है। और जितना ही वह सोचते थे, उतना ही अधिक उन्हें यह विश्वास होता जाता था कि केवल जारविस ही यह महान् चमत्कार कर सकते थे।

लड़की अपने नये घर में खुश थी, क्योंकि वह स्वभाव से ही बहुत स्नेहपूर्ण और दूसरों पर निर्भर रहनेवाली थी। गर्टरूड का लड़का गाँव के दूसरे बच्चों के साथ खेला करता। उसने अपनी माँ के बारे में एक-दो बार से अधिक नहीं पूछा। समय बीतने पर वह उसे भूल ही जायगा। एबसेलाम के बारे में किसी ने नहीं पूछा और लोग कभी अगर अपने घरों में इस बारे में बात भी करते, तो इनसे वृद्ध उम्फुन्दीस के प्रति उनके आदर में कोई कमी नहीं हुई।

एक दिन फिर वह नन्हा अंग्रेज लड़का घोड़े पर आया। जब कुमालो उसका स्वागत करने बाहर आये, तो उसने पहले की तरह हैट उठाकर उन्हें प्रणाम किया और अपने इस बाल-अतिथि को एक बार फिर देखकर कुमालो बहुत प्रसन्न हो उठे।

—मैं फिर आपसे जुलू में बातें करने आया हूँ,—वह घोड़े से फिसलकर उतरा और लगाम खम्भे से लपेट दी।

किसी बड़ी उम्र के व्यक्ति की निश्चिन्तता से वह घर की ओर चल रहा था, और घर में घुसने के पहले उसने अपने पैर झाड़े और हैट उतार लिया।

वह मेज़ के किनारे बैठ गया और प्रसन्नता से, थके मन से चारों ओर देखा, जिससे यह लगता था कि घर में कुछ प्रकाशमान वस्तु आ गयी हो।

—आपका हिसाब खत्म हो गया, उम्फ़ुन्दीस ?

—हाँ, इन्कोसान, खत्म हो गया।

—ठीक था ?

कुमालो हँस पड़े, वह अपनी हँसी रोक न सके—हाँ, ठीक तो था, लेकिन बहुत अच्छा नहीं था।

—ज़्यादा अच्छा नहीं था....? अच्छा, आप जुलू बोलने के लिए तैयार हैं ?

कुमालो फिर हँस पड़े और मेज़ के दूसरे सिरे पर अपनी कुर्सी पर बैठ गये—हाँ, मैं जुलू में तुमसे बात करने के लिए तैयार हूँ। तुम्हारे बाबा कब लौट रहे हैं ?

—पता नहीं। मैं चाहता हूँ कि वह लौट आयें। वह मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।

कुमालो इस बात पर भी हँसनेवाले थे, पर उन्होंने सोचा कि यह हँसने की बात नहीं है। लेकिन छोटा-सा लड़का खुद ही हँस दिया, तो कुमालो भी हँसने लगे। इस नन्हें बच्चे के साथ हँसना कितना आसान था, जैसे उसके अन्दर हँसी भरी हुई हो।

—तुम जोहैन्सबर्ग कब लौट रहे हो, इन्कोसान ?

—जब मेरे बाबा लौट आयँगे।

और कुमालो ने उससे जुलू में कहा—जब तुम चले जाओगे, तो तुम्हारे साथ इन्डाटशेनी की रौनक भी चली जायगी !

—आप क्या कह रहे हैं, उम्फ़ुन्दीस ?

लेकिन जब कुमालो अनुवाद करने लगे, तो बालक चिल्ला पड़ा—न-न, मुझे बताइए मत ! जुलू में ही फिर कहिए !

और कुमालो ने उसी वाक्य को जुलू में फिर दुहराया।

—इसके मतलब हैं, जब तुम चले जाओगे, और बाकी फिर कहिए।

—तब तुम्हारे साथ इन्डाटशेनी की रौनक भी चली जायगी,—कुमालो ने जुलू में कहा।

—कुछ इन्डाटशेनी के बारे में है। लेकिन यह समझना मेरे लिए बहुत मुश्किल है, इसे अंग्रेज़ी में कहिए, उम्फ़ुन्दीस।

और कुमालो ने अंग्रेज़ी में कहा—इन्डाटशेनी की रौनक भी चली जायगी।

—अच्छा, अब मैं समझा। जब मैं यहाँ से चला जाऊँगा, तो जैसे इन्डाटशेनी की रौनक भी चली जायगी।—बालक खुशी से हँस पड़ा। उसने जुलू में कहा—मैंने आपकी बात सुनी।

और इसपर कुमालो ने अचम्भे में ताली बजायी—औ-औ! तुम तो जुलू बोल लेते हो।

और इसपर बालक और अधिक खुशी से हँस पड़ा और कुमालो ने ताली बजायी और बहुत खुश हुए।

दरवाज़ा खुला और कुमालो की पत्नी अन्दर आयीं। और कुमालो ने नन्हें बालक से कहा—यह मेरी पत्नी हैं,—और अपनी पत्नी से जुलू में कहा—यह उन साहब का लड़का है।

बालक खड़ा हो गया और कुमालो की पत्नी का झुककर अभिवादन किया। लेकिन वह उसकी तरफ़ भय और दुख-भरी आँखों से देख रही थीं। परन्तु बालक ने उनसे कहा—आपका मकान तो अच्छा है,—और वह हँस पड़ा।

कुमालो की पत्नी ने कुमालो से जुलू में कहा—मैं तो हक्की-बक्की हो गयी हूँ। समझ में नहीं आता क्या कहूँ?

और बालक ने जुलू में कहा—मैंने आपकी बात सुनी?

यह सुनकर तो कुमालो की पत्नी और डरकर पीछे हट गयीं। लेकिन कुमालो ने जल्दी से अपनी पत्नी से कहा यह तुम्हारी बात समझ थोड़े ही रहा है, इसे तो केवल इतने ही शब्द आते हैं!—और बच्चे को खुश करने के लिए वह ताली बजाकर फिर हँसने लगे—औ-औ! तुम तो जुलू बोल लेते हो!—और कुमालो की पत्नी दरवाजे की ओर लौट गयीं और अन्दर जाकर किवाड़ बन्द कर लिये।

—अच्छा, तो अब आप मुझे जुलू पढ़ाने के लिए तैयार हैं, उम्फ़ुन्दीस?

—हाँ, बिल्कुल!

—अच्छा, तो पेड़ को 'उभूटी' कहते हैं?

—ठीक, इन्कोसान।

—लेकिन दवा को भी 'उभूटी' ही कहते हैं, उम्फ़ुन्दीस!—बालक ने यह जैसे विजय-गर्व से कहा। उसकी मुद्रा में एक बनावटी हैरानी थी। इस बात पर दोनों हँस पड़े

—देखो, इन्कोसान,—कुमालो ने गम्भीरता से कहा—हमारी सारी दवाएँ पेड़ों से ही बनती हैं, इसी लिए शब्द भी वही हैं।

—अच्छा, मैं समझा,—बालक इस विवेचना से खुश हुआ—और सन्दूक को 'इवेकिसी' कहते हैं?

—ठीक, इन्कोसान। देखिए, हमारे यहाँ तो सन्दूक होते नहीं थे, इसलिए हमारा शब्द तुम्हारे शब्द से बना है।

—समझा। और मोटर साइकिल को 'इसीटूटूटू' कहते हैं।

—ठीक! यह शब्द उस आवाज से बना है, जो मोटर साइकिल से निकलती है, टू-टू-टू! लेकिन, इन्कोसान, एक पूरा वाक्य तो जुलू बोलो। मैं वही शब्द देता हूँ, जो तुम जानते हो। इस तरह कुछ नया सीखोगे। अब बताओ, इसे जुलू में क्या कहेंगे, मैं एक घोड़ा देखता हूँ?

इस तरह पाठ चलता रहा। जब कुमालो ने अपने शिष्य के कहा—अब लगभग बारह बज रहा है। अब शायद तुम्हारे वापस लौटने का समय हो गया।

—हाँ, मुझे जाना होगा। लेकिन मैं और जुलू सीखने फिर आऊँगा।

—हाँ, अवश्य आना, इन्कोसान। जल्द ही तुम बहुत-से जुलू लोगों से अच्छा बोलने लगोगे। अगर तुम अँधेरे में बोलोगे, तो कोई पहचान भी नहीं सकेगा कि यह जुलू नहीं बोल रहा है।

बालक प्रसन्न था। और जब वे लोग बाहर निकलकर आये, तो वह बोला—मुझे घोड़े पर चढ़ा दीजिए, उम्फ़ुन्दीस!

और कुमालो ने उसे घोड़े पर बिठा दिया। हैट उतारकर बालक ने कुमालो से बिदा ली और फिर तेजी से सड़क पर घोड़ा दौड़ने लगा। सड़क पर एक मोटर जा रही थी। बालक घोड़ा रोककर चिल्लाया—बाबा आ गये! बाबा आ गये! और फिर मोटर को पकड़ने की कोशिश में उसने घोड़े को और भी तेज दौड़ा दिया।

गिरजे के बाहर एक युवक खड़ा था। हँसमुख चेहरा, उम्र यही लगभग पच्चीस वर्ष। उसका सामान जमीन पर रखा था। हेट उतारकर वह अंग्रेजी में बोला—आप यहाँ के पादरी हैं?

—हाँ, मैं ही हूँ।

—देखिए, मैं यहाँ का नया कृषि-अध्यापक हूँ। और यह हैं मेरे कागज, उम्फ़ुन्दीस।

—मकान में आओ,—कुमालो ने उत्तेजित होकर कहा।

वे मकान के अन्दर गये और युवक ने अपने कागजात निकालकर कुमालो को दिखाये। ये पत्र पादरियों के स्कूल-इन्सपेक्टरों और इसी तरह के लोगों के थे,

जिनमें लिखा था कि पत्रवाहक, नेपोलियन लेटसिट्सी, एक सच्चरित्र और गम्भीर युवक है। दूसरे कागज में लिखा था कि उसने ट्रान्सकेई के एक स्कूल से कृषि-अध्यापक होने की शिक्षा प्राप्त की है।

—हूँ !—कुमालो ने कहा—लेकिन यह तो बताइए कि आप यहाँ कैसे आये हैं ? यहाँ आपको किसने भेजा है।

—क्यों ? उन्हीं गोरे साहब ने, जो मुझे लाये हैं।

—उनका नाम क्या जारविस है ?

—नाम तो मैं नहीं जानता, उम्फ़ुन्दीस, लेकिन वही साहब हैं, जो अभी-अभी गये हैं।

—हाँ, वह जारविस ही हैं। अच्छा, अब मुझे सारी बातें बताओ।

—मैं यहाँ पर खेती सिखाने के लिए आया हूँ, उम्फ़ुन्दीस।

—यहाँ, हम लोगों को, इन्डाटशेनी में ?

—जी, हाँ, उम्फ़ुन्दीस।

कुमालो का चेहरा चमक उठा और वहीं बैठे-बैठे उनकी आँखें चमकने लगीं—तुम तो, मालूम पड़ता है, भगवान के भेजे हुए दूत हो !—कुमालो ने कहा और वह कमरे में टहलने लगे, हाथ-पर-हाथ मारते हुए। युवक आश्चर्य से देखता रहा। कुमालो ने उसकी ओर देखा और हँस पड़े और फिर बोले—तुम वास्तव में भगवान के भेजे हुए फ़रिश्ते हो !—और फिर बैठकर उन्होंने उस युवक अध्यापक से पूछा—इन साहब ने तुम्हें कहाँ पाया ?

—क्रूगर्सडार्प में, मेरे घर पर यह आये थे। मैं वहाँ स्कूल में पढ़ाता था। इन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं कोई बड़ा काम कर सकता हूँ और तब इन्होंने मुझे इस जगह, इन्डाटशेनी, के बारे में बताया। इसलिए मैंने यहाँ आने का निश्चय कर लिया।

—और तुम्हारी उस अध्यापक की जगह का क्या होगा ?

—मैं वास्तव में अध्यापक नहीं हूँ। इसी कारण वहाँ वेतन कम मिलता था। इन साहब ने कहा कि यह मुझे दस पाउंड प्रति मास देंगे। इसलिए मैं चला आया। वैसे यहाँ आने के लिए धन ही एक मात्र प्रलोभन नहीं था। वहाँ के स्कूल में तो बहुत ही मामूली-सा काम है।

कुमालो के मन में गहरी ईर्ष्या हुई, क्योंकि साठ साल के वह होने को आये, उन्हें कभी दस पाउंड प्रति मास नहीं मिला था। लेकिन उन्होंने उसपर यह प्रगट न होने दिया।

—साहब ने पूछा था कि क्या मैं जुलू बोल लेता हूँ। मैंने उत्तर दिया कि जुलू तो नहीं, लेकिन ज़ोसा भाषा मैं अपनी मातृ भाषा की ही तरह बोल सकता हूँ, मेरी

माँ ज़ोसा जाति की थीं। और उन्होंने कहा कि काम चल जायगा, क्योंकि ज़ोसा और जुलू भाषाएँ एक-सी ही हैं।

कुमालो की पत्नी ने फिर दरवाज़ा खोला और कहा—खाने का वक्त हो गया है।

कुमालो ने ज़ुलू में अपनी पत्नी से कहा—देखो, यह हैं श्री लेटसिट्सी, जो हमारे यहाँ लोगों को खेती करना सिखाने के लिए आये हैं।—और लेटसिट्सी से उन्होंने कहा—तुम हमारे साथ ही भोजन करो।

वे लोग खाना खाने गये और लेटसिट्सी का परिचय लड़की से और नन्हे बच्चे से हुआ। कुमालो के प्रार्थना करने के बाद वे-सब बैठ गये। कुमालो ने जुलू में पूछा—तुम पीटरमैरित्ज़बर्ग कब पहुँचे थे?

—आज सुबह, उम्फुन्दीस। और वहाँ से हम लोग मोटर में यहाँ तक आये।

—और गोरे साहब के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?

—वह बहुत खामोश रहते हैं, उम्फुन्दीस। उन्होंने मुझसे ज्यादा बातें नहीं कीं।

—यह तो उनका स्वभाव है।

—हम लोग सड़क पर एक स्थान पर रुक गये थे, जहाँ से एक वादी दिखायी पड़ती थी और उन्होंने मुझसे पूछा, ऐसी वादी में क्या कर सकते हो? वही पहले शब्द थे, जो वह यात्रा-भर में बोले थे।

—और तुमने उन्हें बताया?

—मैंने उन्हें बता दिया, उम्फुन्दीस।

—और उन्होंने क्या कहा?

—वह कुछ नहीं बोले, उम्फुन्दीस। उनके गले में कुछ भरभराहट हुई, बस।

—उसके बाद?

—यहाँ पहुँचने तक उन्होंने फिर मुझसे कोई बात नहीं की। यहाँ उन्होंने मुझसे कहा, उम्फुन्दीस के पास सीधे चले जाओ और वहीं तुम्हारे रहने का प्रबन्ध कर देंगे। उनसे यह कह देना कि मुझे खेद है कि मैं उनके पास नहीं आ सका, मुझे घर लौटने की जल्दी है।

कुमालो और उनकी पत्नी ने एक-दूसरे की तरफ़ देखा।

—यह पादरी का मकान है। हमारे कमरे भी छोटे-छोटे हैं। लेकिन अगर तुम चाहो, तो अवश्य यहाँ रह सकते हो।

—मेरे भी घरवाले गिरजे के हैं, उम्फुन्दीस। यहाँ रहने में मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।

—और इस वादी में तुम क्या करोगे?

युवा अध्यापक हँसने लगा—पहले मैं जगह देख लूँ।

—लेकिन उस दूसरी वादी में तुम क्या करते?

और युवक ने उन्हें वह-सब बातें बतायीं, जो दूसरी वादी में वह करता। किस तरह लोगों का गोबर जलाना बन्द करना होगा और उसे फिर से धरती में मिला देना चाहिए। किस तरह घास-पात को इकट्ठा करके उनको कमाना चाहिए, न कि उन्हें लापरवाही से धूप में सूखते छोड़ देना चाहिए। किस तरह पहाड़ों पर ऊपर-नीचे जोताई बन्द करनी चाहिए, किस तरह ईंधन के लिए ऐसे बड़े-बड़े वृक्ष लगाने चाहिए, जो जल्दी उगकर बड़े हो जायँ, और ये पेड़ ऐसी जगहों पर लगाने चाहिए, जहाँ जोताई नहीं की जा सकती हो और नदियों के झुकान की तरफ़, ताकि बाढ़ आने पर पानी के बहने का तूफ़ानी वेग टूट जाय। लेकिन यह सब बहुत कठिन काम हैं, क्योंकि इसको पूरा करने के लिए हर आदमी को यह जानना और सीखना आवश्यक है कि किसी भी व्यक्ति को ज़मीन के अपने ही छोटे-से टुकड़े से रोज़ी कमाने और उसी पर निर्भर करने की प्रथा हानिकारक है। कुछ लोगों को पेड़ लगाने के लिए और कुछ को घास के चरागाह बनाने के लिए अपनी भूमि छोड़ देना चाहिए। और इस दृष्टिकोण से 'लो बोला' नामक प्रथा सबसे ज्यादा हानिकारक है, क्योंकि इसके अनुसार पुरुष को विवाह के अवसर पर पत्नी के बदले में जानवर देने पड़ते हैं और इस कारण वे लोग बहुत-से जानवर पालते है और उन्हीं को अपना धन और पूँजी समझते हैं। इतने जानवरों के कारण घास के उगने या बढ़ने की कोई सम्भावना ही नहीं।

—और यहाँ बाँध बनने की भी कोई योजना है ?—कुमालो ने पूछा।

—जी, हाँ, बाँध भी बनाया जायगा। इससे जानवरों के पीने के लिए हमेशा पानी मिल सकेगा। बाँध से पानी एक निकास के फाटक से निकाला जा सकता है, जिससे ज़मीन की सिंचाई हो और नये चारागाहों की सिंचाई हो सकेगी।

—लेकिन यह पानी आयगा कहाँ से ?

—एक नल के द्वारा नदी से लाया जायगा, गोरे साहब ने यही कहा था।

—वह तो उनकी ही नदी है,—कुमालो ने कहा—और क्या यह सब-कुछ जो तुम कह रहे हो, यहाँ इन्डाटशेनी में किया जा सकता है ?

अध्यापक ने हँसते हुए कहा—पहले मैं यह वादी देख लूँ।

—लेकिन उसी वादी में होकर तो तुम यहाँ आये हो ?—कुमालो ने उत्सुकता से कहा।

—हाँ, देखा तो मैंने, लेकिन यह सब तो दुबारा, धीरे-धीरे देखना पड़ेगा। फिर भी मेरा ख्याल यह है कि यह-सब चीज़ें यहाँ की जा सकती हैं।

वे मेज़ के चारों ओर बैठे थे। उनके चेहरों पर उत्तेजना और उत्सुकता थी, क्योंकि इस नये युवक ने उनकी आँखों के सामने उत्थान का एक चित्र खींच दिया था। कुमालो ने इन लोगों की ओर देखकर कहा—मैंने इस युवक से कहा था कि

तुम भगवान के भेजे हुए दूत हो !—और यह कहकर वह उत्तेजना के कारण फिर कमरे में टहलने लगे।

—तुम यह-सब शुरू करने को अधीर हो ?

युवक ने झिझककर, हँसते हुए कहा—हाँ, अधीर तो हूँ।

—तो सबसे पहले तुम क्या करोगे ?

—सबसे पहले तो मुझे जाकर सरदार से मिलना होगा, उम्फ़ुन्दीस।

—हाँ, यह काम तो तुम्हें सबसे पहले करना चाहिए।

तभी उन्हें बाहर घोड़े की टापों की आवाज़ सुनायी दी और कुमालो यह सोचते हुए बाहर देखने गये कि कहीं वही बालक तो फिर नहीं आ गया है। और वास्तव में यह वही बालक था। लेकिन इस बार वह घोड़े से उतरा नहीं, घोड़े पर से ही बातें करने लगा। वह उत्तेजना और उत्सुकता से बातें कर रहा था, मानो कोई गम्भीर बात हो।

—बाल-बाल बच गये !

—बच गये ?—कुमालो ने पूछा—बाल-बाल ?

—यह गँवारू प्रयोग है, बालक बोला,—पर वह हँसा नहीं, बहुत गंभीर बना रहा इसका मतलब, कि खैरियत हुई, इसलिए कि अगर मेरे बाबा इतनी जल्दी लौटकर न आते, तो मैं आपसे बिदा लेने भी न आ पाता।

—तो तुम जा रहे हो, इन्कोसान ?

लेकिन बालक ने उनके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। उसने समझ लिया था कि कुमालो हैरान हैं और वह परेशान था उन्हें समझाने के लिए।

—अगर बाबा देर में लौटते, तो इतनी देर हो जाती कि मुझे आपके पास आने का समय नहीं मिलता। लेकिन वह जल्दी लौट आये, इसलिए समय मिल गया।

—इसका मतलब है कि तुम कल जा रहे हो, इन्कोसान ?

—हाँ, कल। छोटी लाइन की छोटी-सी गाड़ी से।

—हाँ, इन्कोसान।

—लेकिन मैं छुट्टी में फिर आऊँगा। तब, हम थोड़ी और जुलू सीखेंगे।

—यह खुशी की बात होगी, —कुमालो ने सरलता से उत्तर दिया।

—अच्छा, तो फिर बिदा, उम्फ़ुन्दीस !

—बिदा, इन्कोसान !

और तब कुमालो ने जुलू में कहा—भगवान आपको सुखी रखे, इन्कोसान !

बालक ने कुछ देर सोचा और सोचने में माथे पर बल डाले। तब उसने जुलू में कहा—सुखी रहें, उम्फ़ुन्दीस !

और कुमालो ने इसपर आश्चर्य से कहा—अउ ! अउ !

और बालक हँस पड़ा और अपना हैट उठाकर वह धूल का एक बड़ा-सा गुबार उड़ाता हुआ चला गया। लेकिन सड़क पर काफी दूर जाकर वह फिर मुड़ा और जाने के पहले उसने सलाम किया।

और कुमालो वहीं खड़े रहे और युवक अध्यापक उनके पास आकर खड़ा हो गया। दोनों जाते हुए बालक को देखते रहे। कुमालो ने युवक से कहा—वह भगवान का एक नन्हा-सा फरिश्ता है!

इसके बाद पलटकर वे लोग मकान में लौट आये और कुमालो ने प्रश्न किया—तो तुम समझते हो कि बहुत-से काम किये जा सकते हैं?

—बहुत-से काम किये जा सकते हैं, उम्फ़ुन्दीस।

—सच?

—उम्फ़ुन्दीस,—युवक के चेहरे पर उत्सुकता थी—कोई कारण नहीं कि यह वादी फिर पहले-सी न हो जाय। लेकिन यह-सब जल्दी नहीं होगा, एक दिन में नहीं।

—अगर भगवान की कृपा है, तो मेरी मृत्यु के पहले हो जायगा! मेरा सारा जीवन ही बर्बादी में बीता है।—कुमालो ने विनीत भाव से कहा।

(५)

दीक्षा के उत्सव के लिए सब तैयारी हो चुकी थी। जितनी भी औरतें गिरजे की अनुयायी थीं, सब सफ़ेद पोशाक पहने थीं और हर एक के गले में एक कपड़ा पड़ा हुआ था। वे लोग, जो चले नहीं गये थे और इस गिरजे के अनुयायी थे, इतवार को पहननेवाले वस्त्रों में थे। यह वस्त्र कोई विशेष नहीं थे, उनकी रोज़ की पोशाक ही थी, जिनको सीकर, साफ़-सुथरा करके पहना गया था। जिन बच्चों की दीक्षा करनी थी, वे भी वहीं थे, लड़कियाँ सफ़ेद पोशाक और टोपियाँ पहने हुई थीं और लड़के अपने स्कूल जानेवाले कपड़े पहने हुए थे और उन्हें फटे हुए स्थानों पर सी लिया गया था और साफ कर लिया गया था। औरतें घर के अन्दर उम्फ़ुन्दीस की पत्नी की सहायता में व्यस्त थीं, क्योंकि दीक्षा के बाद एक सादी-सी दावत होगी, चाय की, जिसको इतना उबाला जाता है कि चाय की पत्तियों का पूरा निचोड़ आ जाय, और मक्का के आटे के घर पर बनाये भारी केक का खाना तो मामूली-सा था, लेकिन इस सादे खाने को सबको साथ-साथ बैठकर खाना था।

और उस विशाल वादी पर तूफ़ानी बादल फिर घिर रहे थे और तेज़ गर्मी थी। लोगों की समझ में नहीं आ रहा था कि इस बात पर खुश हों या रंज मनायें। बड़ी-बड़ी काली छाया लाल धरती और ऊँचे शिखरों पर से जा रही थी। लोगों ने

आकाश की ओर देखा और उस सड़क की तरफ़ देखा, जिससे बिशप आनेवाले थे, और उनकी समझ में न आया कि प्रसन्न हों या दुखी, क्योंकि इतना निश्चित था कि सूरज डूबने के पहले ही उन पर्वतों पर और उस वादी में ज़ोर की बिजली कड़क उठेगी और बादलों की ज़ोरदार गरज गूँजकर उनमें भर जायगी।

चिन्तित होकर कुमालो ने आसमान की तरफ़ देखा और फिर उस सड़क की ओर, जिसपर से बिशप आनेवाले थे। और तभी उन्होंने अपने मित्र को दूधवाली गाड़ी पर आते हुए देखा और उन्हें आश्चर्य हुआ, क्योंकि दूध इतनी जल्दी नहीं आता था।

—आज तुम जल्दी आ गये, मित्र ?

—हाँ, जल्दी तो आया हूँ, उन्फ़ुन्दीस,—कुमालो के मित्र ने गम्भीरतापूर्वक कहा—आज हम लोगों ने जल्दी ही काम बन्द कर दिया। आज इन्कोसीगाज़ (जारविस की पत्नी) की मृत्यु हो गयी।

—अउ ! अउ ! कुमालो बोले—यह नहीं हो सकता !

—हाँ, उन्फ़ुन्दीस, ऐसा ही है। जब सूरज वहाँ था,—और उसने सर के ऊपर संकेत किया— तभी उनकी मृत्य हो गयी।

—अउ ! अउ !—यह अफ़सोस की बात है !

—अफ़सोस की बात तो है, उन्फ़ुन्दीस !

—और उमनूमज़ान का क्या हाल है ?

—वह चुपचाप हैं। आप तो जानते हैं कि वह कैसे हैं। पर इस बार खमोशी बहुत गहरी है। अच्छा, उन्फ़ुन्दीस, मैं मुँह-हाथ धो डालूँ। उसके बाद दीक्षा में आऊँगा।

—अच्छा, मित्र।

कुमालो घर के अन्दर गये और उन्होंने अपनी पत्नी से कहा— इन्कोसीगाज़ की मृत्य हो गयी।

और वह बोल उठीं—अउ ! अउ !

और दूसरी औरतें भी शोकमग्न हो उठीं। उनमें से कुछ रोने लगीं। उन्होंने मृत महिला की अच्छाई की बातें कहीं। कुमालो अपनी मेज़ के पास गये और वहाँ बैठ गये और सोचने लगे कि उन्हें क्या करना चाहिए। दीक्षा के बाद वह हाईप्लेस जायँगे और जारविस साहब से वादी के लोगों का शोक कहेंगे। लेकिन फिर उनके सामने उस घर का चित्र आया, जिसमें गमी हुई थी, बहुत से-अंग्रेज़ों की खड़ी हुई बहुत-सी कारों का चित्र और कपड़े पहने हुए काले किसानों का चित्र आया, जो वहाँ छोटे-छोटे गिरोह बनाये खड़े होंगे और गम्भीरता से धीरे-धीरे बातें कर रहे होंगे। ऐसी चीजें वह पहले भी देख चुके थे और वह जानते

थे कि वह वहाँ नहीं जा सकेंगे। ऐसी प्रथा ही नहीं थी। वहाँ वह अलग खड़े रहेंगे। और जब तक कि जारविस स्वयं न आयँ, तब तक उनसे कोई नहीं पूछेगा कि वह वहाँ क्यों आये हैं। किसी को यह पता न लगेगा कि वह एक सन्देश लाये हैं। उन्होंने गहरी साँस ली और मेज़ की दराज़ में से कुछ काग़ज निकाले। उन्होंने निश्चय किया कि अंग्रेजी में ही लिखना चाहिए, क्योंकि उस प्रदेश के अंग्रेज यद्यपि ज़ुलू समझ लेते थे, लेकिन उनमें से कुछ ही उस भाषा को लिख पढ़ पाते थे। उन्होंने पत्र लिखा और उन्होंने बहुत-सी बातें लिखीं। फिर उसको फाड़कर फेंक दिया। पर अन्त में उन्होंने पत्र लिख ही लिया :

उमनूमज़ान,

गिरजे के लोगों को यह सुनकर बहुत दुख हुआ कि माता का देहान्त हो गया है। हम इस शोक का अनुभव करते हैं और दुःख से रोते हैं। हमें यह भी विश्वास है कि वह उन-सब बातों के बारे में जानती थीं, जो आपने हमारे लिए किये हैं। और उनमें उनका भी हाथ था। हम इस गिरजे में उनकी आत्मा की शान्ति के लिए और आपके सन्तप्त हृदय के लिए भी प्रार्थना करेंगे।

आपका विश्वस्त सेवक,
रेवरेन्ड एस० कुमालो।

जब वह पत्र समाप्त हो गया, तो वह बैठे यह सोचते रहे कि इसे भेजा जाय, या न भेजा जाय, क्योंकि अगर जारविस की पत्नी की मृत्यु अपने बेटे की हत्या के कारण दिल टूट जाने से हुई हो, तो क्या उन्हें, (कुमालो को) जो उस लड़के के पिता थे, जिसने उनके बेटे की हत्या की थी, ऐसा ख़त भेजना चाहिए? क्या उन्होंने नहीं सुना था कि वह बीमार रहती थीं और दुबली थीं? इस कठिन समस्या पर विचार करते-करते वह कराहने लगे। लेकिन अनिश्चित दशा में बैठे-बैठे उन्हें दूध के उपहार का ध्यान आया, उस युवक अध्यापक का ध्यान आया, जो कृषि की शिक्षा देने आया था और तब उनके कानों में जारविस की आवाज भी गूँज गयी, मानो वह इस समय भी कमरे में बोल रहे हों और कह रहे हों, क्या क्षमा मिल गयी? तब उन्हें अनुभव हुआ कि यह वह आदमी है, जिसके कदम अगर एक राह पर जम जाते हैं, तो फिर कोई उसे हटा नहीं सकता। और यह-सब सोचकर उन्होंने उस पत्र को लिफ़ाफ़े में बन्द कर दिया और एक लड़के को बुलाकर कहा—देखो, बेटे, मेरा यह खत पहुँचा आओगे?

बच्चे ने कहा—जी, हाँ, अवश्य, उम्फ़ुन्दीस।

—देखो, कुलुसे के पास चले जाओ और उससे उसका घोड़ा लेकर जारविस साहब के इस पत्र को पहुँचा दो। उमनूमज़ान को परेशान मत करना, जो कोई भी घर में मिले, उसे यह पत्र दे देना। और बेटे, आदर और ख़ामोशी से वहाँ जाना, किसी को

पुकारना मत, बेकार हँसना-बोलना भी मत, क्योंकि इन्कोसीगाज़ा की मृत्यु हो गयी है। समझे ?

—मैं बिल्कुल समझ गया, उम्फ़ुन्दीस।

—अच्छा, तो जाओ, बेटे। मुझे अफ़सोस है कि इस कारण तुम दीक्षा के अवसर पर यहाँ उपस्थित नहीं रहोगे।

—कोई बात नहीं, उम्फ़ुन्दीस।

तब कुमालो लोगों से कहने गये कि इन्कोसीगाज की मृत्यु हो गयी है। उन लोगों पर बिल्कुल ख़मोशी छा गयी। वहाँ जो हँसी, बातचीत हो रही थी, बन्द हो गयी। बिशप के आने तक लोग धीरे-धीरे गम्भीरता से बातें करते रहे।

कन्फ़र्मेशन के लिए गिरजे में अँधेरा था, इसलिए लैम्प जलाना पड़ा। बड़े-बड़े भारी-भारी बादल वादी के ऊपर घुमड़ रहे थे और बिजली चमक रही थी उन लाल वीरान पहाड़ों पर, जहाँ से धरती फट गयी थी मास की तरह। बादल उन वादियों पर गरज उठे, जिनमें बूढ़े आदमी थे, बूढ़ी औरतें थीं, मताएँ और बच्चे थे। उन वादियों से वहाँ के आदमी जा चुके थे, जवान आदमी और जवान औरतें जा चुकी थीं, धरती अब उनका पोषण करने में असमर्थ थी। और गिरजे में कुछ बच्चे दीक्षित हो रहे हैं। कुछ समय बाद वे भी चले जायँगे, क्योंकि धरती अब उनको भी नहीं पाल सकती।

गिरजे में अन्धकार था और छत में से बरसात का पानी चू रहा था। फ़र्श पर उस पानी के छोटे-छोटे-से गड्ढे बन गये थे और लोग पानी से बचने के लिए इधर-उधर हट रहे थे। कुछ सफेद पोशाकें तर हो गयी थीं और एक लड़की खड़ी-खड़ी ठंड से ठिठुर रही थी, क्योंकि यह अवसर उसके लिए गम्भीर था और वह बरसात से बचने के लिए हट भी नहीं पा रही थी। और बिशप की आवाज़ आ रही थी।

—भगवान, अपने इस बच्चे की रक्षा करना, अपने इस बालक पर अपनी दैवी कृपा रखना, ताकि यह सदा तेरा रह सके और यह दिन-प्रति-दिन तेरी दया की छाया में अधिकाधिक बढ़े, ताकि अन्त में इसे अनन्त साम्राज्य में स्थान मिल जाय !—और यह उन्होंने हर बच्चे के लिए कहा और उन्हें दीक्षित कर दिया।

उत्सव के बाद वे सब घर में जमा हो गये, उस सादे भोज में शामिल होने के लिए। उन व्यक्तियों से, जो उस रोज दीक्षित नहीं हो सके थे, या जो उन बच्चों के माता-पिता नहीं थे, जिन्हें दीक्षित नहीं किया जा सका था, कुमालो ने गिरजे में ही ठहरने के लिए कहा, क्योंकि अभी पानी बहुत तेज़ी से बरस रहा था, यद्यपि कौंध और गरज बन्द हो गयी थी। फिर भी सारे मकान में आदमी ठसाठस भरे हुए थे, रसोई में लोग थे, उस कमरे में लोग थे, जहाँ कुमालो हिसाब किया करते थे और

उस कमरे में, जहाँ खाना खाया जाता था और सोने के कमरे में लोग थे, यहाँ तक कि नये कृषि-अध्यापक के कमरे में भी थे।

आखिर बरसात भी रुकी और हिसाब के कमरे में बिशप और कुमालो अकेले रह गये। अपना पाइप जलाकर बिशप ने कुमालो से कहा—श्री कुमालो, मुझे आपसे कुछ कहना है।

कुमालो संभ्रमपूर्वक बैठ गये। उन्हें इस बात का डर था कि पता नहीं क्या बात है।

—मुझे आपकी सारी विपत्तियों का समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ!

—श्रीमान्, मेरे कष्ट बहुत गहरे थे।

—उन-सबके बाद मैं आपको परेशान नहीं करना चाहता था। और मैंने सोचा था कि इस दीक्षा के अवसर तक मैं प्रतीक्षा करूँ।

—जी, श्रीमान्।

—आप विश्वास रखें कि मैं आपके प्रति अपने सम्मान के कारण कह रहा हूँ।

—जी, हाँ, श्रीमान।

—तो मेरा ख्याल है श्री कुमालो, कि आपको इन्डाटशेनी से चला जाना चाहिए।

हाँ, यही तो कहा जायगा अब, और अब वह बात कह दी गयी थी! चाहो, तो मुझे यहाँ से हटा लो, लेकिन मैं मर जाऊँगा। अब फिर जीवन शुरू करने के लिए वृद्ध हो गया हूँ। मैं वृद्ध हूँ, कमज़ोर हूँ। फिर भी मैंने हमेशा इस वादी के लोगों का पिता होने का प्रयत्न किया है। बिशप साहब, जिस दिन मैं इन्डाटशेनी लौटा था, उस दिन आप यहाँ न आ सके। आप उस दिन नहीं देख सकते थे कि मेरे वृद्ध होते हुए भी ये लोग मुझे प्यार करते हैं। उस दिन आप एक बालक के मुँह से यह नहीं सुन पाये, हमें बहुत हर्ष है कि हमारे उम्फ़ुन्दीस लौट आये! इन दूसरे उम्फ़ुन्दीस को तो हम समझ भी नहीं पाते थे। क्या आप मुझे ऐसे समय पर यहाँ से हटा देंगे, जब यहाँ यह नयी चीज़ें शुरू हो रही हैं, जब बच्चों को दूध मिलने लगा है, जब यहाँ एक नया कृषि-अध्यापक आ गया है और बाँध बनाने के लिए ज़मीन में डण्डे गाड़ दिये गये हैं?

आँखों में आँसू डबडबा आते हैं, और आँखें मिच जाती हैं और आँसू छलक पड़ते हैं और उस नयी काली पोशाक पर ढलक पड़ते हैं, जो दीक्षा के इस उत्सव के लिए प्रिय सिमांगु के रुपये से बनी थी। कुमालो का वृद्ध सर झुका हुआ था और कुमालो किसी बच्चे की तरह बैठे थे, पूर्णतया मौन!

—श्री कुमालो,—बिशप ने आहिस्ता से कहा और फिर ज्यादा ज़ोर से—श्री कुमालो!

—जी, श्रीमान्!

—आपको क्लेश पहुँचाने का मुझे दुःख है। मगर क्या यह अच्छा नहीं होगा कि आप यहाँ से चले जायँ!

—आप ठीक कह रहे हैं, श्रीमान्!

बिशप अपनी कुर्सी पर ज़रा और आगे को खिसक आये और अपने घुटनों पर कुहनी टेककर बोले—श्री कुमालो, क्या यह सत्य नहीं है कि जिस व्यक्ति की हत्या हुई थी, उसके पिता यहाँ इन्डाटशेनी में आपके पड़ोसी हैं? मिस्टर जारविस!

—यह सच है, श्रीमान्।

—तो मैं सोचता हूँ कि केवल इसी एक कारण से आपको चला जाना चाहिए।

क्या इसी कारण मुझे चला जाना चाहिए? क्यों? क्या वह अपने घोड़े पर बैठकर यहाँ मुझसे मिलने नहीं आते हैं, और उनका नाती मेरे घर में नहीं आया करता? क्या उन्होंने बच्चों के लिए दूध नहीं भेजा और क्या उन्होंने ही इस नये अध्यापक को गाँव के लोगों को कृषि पढ़ाने के लिए नियुक्त नहीं किया है? और क्या उनकी पत्नी की मृत्यु पर मेरे दिल में उनके लिए संवेदना नहीं है? लेकिन कोई ऐसी बातें बिशप से, देश के एक बड़े आदमी से, कैसे कह सकता है? यह ऐसी बातें हैं, जो कही नहीं जा सकतीं!

—आप मेरी बातें समझे, श्री कुमालो?

—मैं समझ गया, श्रीमान्।

—मैं आपको पीटरमैरित्ज़बर्ग भेज रहा हूँ, आपके पुराने मित्र टाम्बेला के पास। वहाँ आप उनकी सहायता कर सकते हैं और इससे आपके कन्धों पर से एक भार भी उतर जायगा। इमारतों के बारे में, स्कूलों के बारे में, रुपये-पैसे के बारे में चिन्ता करना फिर उनका काम होगा। और आप अपना ध्यान पादरी के कामों में लगा सकेंगे। मेरे दिमाग़ में यही योजना है।

—मैं समझता हूँ, श्रीमान्।

—अगर आप यहाँ रहेंगे, तो आप पर बहुत-से भार रहेंगे। और केवल यही एक बात नहीं है कि श्री जारविस आपके पड़ोसी हैं। कभी-न-कभी आपको अपना गिरजा बनवाना ही पड़ेगा और उसमें काफी धन लगेगा और परेशानी होगी। आज आपने खुद देख लिया कि गिरजा किस हालत में है।

—जी, श्रीमान्।

—इसके अतिरिक्त मुझे पता लगा है कि आप अपने साथ रहने के लिए अपने लड़के की पत्नी को लाये हैं और उसके बच्चा होनेवाला है। क्या उनका यहाँ रहना उनके लिए ठीक है, श्री कुमालो? क्या किसी ऐसी जगह चला जाना ज्यादा ठीक न होगा, जहाँ लोगों को इन बातों का पता न हो?

—मैं समझ गया, श्रीमान्।

दरवाजे पर दस्तक हुई और वह लड़का अन्दर घुसा, जो कुमालो का ख़त जारविस के पास ले गया था। उसके हाथ में एक लिफ़ाफ़ा था, जिसे कुमालो ने ले लिया। वह रेवरेन्ड एस० कुमालो इन्डाटशेनी के नाम था। उन्होंने लड़के को धन्यवाद देकर दरवाजा बन्द कर लिया। वह फिर कुर्सी पर बैठ गये बिशप की बात सुनने के लिए।

—अपना ख़त पढ़ लीजिए, श्री कुमालो :

और कुमालो ने ख़त खोला, और उसे पढ़ा।

उम्फ़ुन्दीस, सम्वेदना के पत्र के लिए और अपने गिरजे में हमारे लिए प्रार्थना करने के वचन के लिए धन्यवाद! आपने ठीक ही लिखा। मेरी पत्नी उन नयी बातों से अवगत थीं, जो यहाँ हो रही हैं और इसमें उनका बहुत बड़ा हाथ था। यह काम हमने अपने प्यारे पुत्र की याद में किये थे। मेरी पत्नी की अन्तिम इच्छाओं में एक यह भी है कि इन्डाटशेनी में एक नया गिरजा बने और मैं आपसे इस सम्बन्ध में सलाह करने आऊँगा।

आपका शुभचिन्तक,
जेम्स जारविस।

पुनश्चः

आपको मालूम होना चाहिए कि मेरी पत्नी हमारे जोहैन्सबर्ग जाने के पहले से ही बीमार थीं।

कुमालो खड़े हो गये और वह इस तरह की आवाज़ में बोले, जिसने बिशप को अचम्भे मे डाल दिया—यह भगवान् के यहाँ से आया है!—यह ऐसी आवाज़ थी कि जिसमें चिन्ताओं से, हँसी और रोने से छुटकारा था। और दीवारों की तरफ देखते हुए उन्होंने फिर कहा—यह भगवान के यहाँ से आया है!

और बिशप ने रुखाई से कहा—क्या मैं भगवान का भेजा हुआ आपका यह पत्र देख सकता हूँ?

और कुमालो ने उत्सुकतापूर्वक वह पत्र बिशप को दे दिया और बेचैनी से वह बिशप के ख़त पढ़ लेने का इन्तज़ार करते रहे। और जब बिशप पत्र पढ़ चुके, तो वह गम्भीरता से बोले—क्या बेवकूफ़ी का मज़ाक था वह!

और उन्होंने पत्र को दुबारा पढ़ा और नाक साफ़ की। फिर वह पत्र को हाथ में लिये हुए कुछ देर बैठे रहे।

—क्या-क्या नयी बातें हो रही हैं?

और कुमालो ने दूध के बारे में और नये बाँध के बारे में, जो बननेवाला था और उस युवक शिक्षक के बारे में बताया।

बिशप ने कई बार अपनी नाक साफ़ की और कुमालो से कहा—यह तो बहुत आश्चर्यजनक बात है! ऐसी अद्‌भुत बातें मैंने जीवन में कभी नहीं सुनीं!

और कुमालो ने बिशप को उन शब्दों का अर्थ बताया, आपको मालूम होना चाहिए कि मेरी पत्नी हमारे जोहैन्सबर्ग जाने के पहले से ही बीमार थीं। कुमालो ने समझाया कि जारविस ने वह शब्द सहानुभूति और समझदारी के साथ लिखे थे। और कुमालो ने बिशप को यह भी बताया कि जारविस ने उनसे एक बार यह भी पूछा था कि उनके लड़के को उस कठोर दंड से क्षमा मिली कि नहीं और यह कि जारविस का नाती, जिसके अन्दर हँसी भरी हुई है, उनके पास अक्सर आया करता था।

बिशप ने कहा—चलिए, तो चलकर प्रार्थना की जाय, अगर आपके गिरजे में कोई सूखा स्थान हो। उसके बाद मैं जाऊँगा, क्योंकि मुझे लम्बा सफ़र करना है। लेकिन पहले मैं आपकी पत्नी और पुत्रवधू से बिदा ले लूँ। और आपकी पुत्रबधू और उसके बच्चे के बारे में क्या होगा?

—हमने सारे लोगों के बीच में प्रार्थना कर ली है, श्रीमान्, इससे अधिक क्या किया जा सकता है?

—यह तो पिछले युगों का ढंग था,—बिशप ने कहा—उन पिछले युगों में लोगों में विश्वास का बल था! लेकिन आज जो अद्‌भुत बातें मैंने सुनी हैं, उसके बाद मुझे यह नहीं कहना चाहिए!

बिशप ने घर के लोगों से बिदा ली और वह और कुमालो गिरजे गये। गिरजे के द्वार पर बिशप ने कुमालो से गम्भीरता से कहा—मैं यह देख रहा हूँ कि भगवान् की इच्छा नहीं है कि आप इन्डाटशेनी छोड़ें!

बिशप के चले जाने के बाद कुमालो बहुत देर तक गिरजे के बाहर साँझ के घिरते हुए अँधियारे में खड़े रहे। वर्षा बन्द हो चुकी थी, लेकिन बादल घिरे हुए थे। ठंड हो रही थी और उस बड़ी नदी की ओर से मन्द हवा बह रही थी, जिससे उनका मन हल्का हो रहा था। और जब वह वहाँ खड़े-खड़े उस विस्तृत वादी की तरफ देख रहे थे, तभी मानो आकाशवाणी हुई:

सुखी रहो, सुखी रहो, मेरे प्रियजन! मैं तुम्हारे हित के लिए यह काम करूँगा और तुम्हें कभी न छोड़ूँगा!

अन्तर केवल इतना ही है कि यह काम उस तरह नहीं हुए, जैसे लोग समझते हैं। इस तरह हुए, जिन्हें लोग भ्रम कहते हैं, या पागलों की कल्पना या दैवी प्रेरणा।

*

जब कुमालो घर मे गये, तो उन्होंने देखा कि उनकी पत्नी, उनके लड़के की पत्नी, गिरजे की अन्य औरतें और उनका मित्र एक माला बनाने में व्यस्त हैं। उनके पास सनोवर के पेड़ की एक शाख़ थी, कुमालो के मित्र के घर के पास एक ही सनोवर का पेड़ था, वही एक पेड़ इन्डाटशेनी की सारी वादी में था और वह क्यों और कैसे उगा था, यह किसी को नहीं याद था। इस शाख़ को मोड़कर उन्होंने एक गोल घेरा बना लिया था और उसे इस तरह बाँध दिया था कि वह खुल न जाय। इस घेरे पर उन्होंने वादी के फूल लपेट दिये थे, जैसे भी उस वादी की बंजर ज़मीन पर उगते थे।

—यह माला मुझे अच्छी नहीं लग रही है, उम्फ़ुन्दीस! इसमें क्या कमी है कि यह अंग्रेजों की मालाओं-जैसी नहीं लग रही है?

नये अध्यापक ने कहा—वे लोग सफ़ेद फूल लगाते हैं। मैंने अक्सर पीटर-मैरित्ज़बर्ग में यह देखा है कि वे लोग सफेद फूलों का ही प्रयोग करते हैं।

—उम्फ़ुन्दीस!—कुमालो के मित्र ने उत्तेजित होकर कहा—मुझे मालूम है कि सफ़ेद फूल कहाँ मिलेंगे, ऐरम लिली, बहुत-से।

और नये अध्यापक ने भी उत्तेजित होकर कहा—हाँ-हाँ, वे लोग ऐरम लिली ही लगाते हैं!

—लेकिन वह बहुत दूर पर है। कैरिसब्रुक के उस पार, रेलवे लाइन के पास उगता है वह, उस छोटी-सी नदी के किनारे, जिसे मैं जानता हूँ।

—वह तो बहुत दूर है,—कुमालो ने कहा।

—मैं वहाँ जाऊँगा,—कुमालो के मित्र ने कहा—ऐसे काम के लिए उतनी दूर जाना कोई बड़ी बात नहीं! क्या आप मुझे एक लालटेन दे देंगे, उम्फ़ुन्दीस?

—अवश्य, मित्र!

—और सफ़ेद फीता भी होना चाहिए,—अध्यापक ने कहा।

—मेरे घर एक फ़ीता है, मैं जाकर लिये आती हूँ।—एक स्त्री ने उत्तर दिया।

और कुमालो की पत्नी ने कहा—स्टीफ़ेन! तुम हमारे लिए एक कार्ड लिख दो। तुम्हारे पास कैसा कार्ड है?

—उस कार्ड के काले हाशिये होना चाहिए!—अध्यापक ने कहा।

—हाँ, कार्ड मुझे मिल जायगा और स्याही से उसपर काले हाशिए भी मैं बना दूँगा।

कुमालो ने अपने काम करने के कमरे में जाकर एक कार्ड ढूँढ़ निकाला और उसपर लिख दिया, सेंट मार्कस चर्च, इन्डाटशेनी, के अनुयायिओं की ओर से सम्वेदना-सहित।

अब वह कार्ड के चारों ओर सँभालकर काला हाशिया बनाने में व्यस्त थे कि उनकी पत्नी ने उन्हें भोजन के लिए बुला लिया।

(६)

इन्डाटशेनी में आज जोताई हो रही थी और उसके चारों ओर जितने खेत थे, उन-सब में भी। लेकिन जोताई धीरे-धीरे ही हो रही थी, क्योंकि वह नया अध्यापक और पीछे खड़े हुए वहाँ के सरदार यह कह रहे थे कि ढलवानों पर ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर हल नहीं चलाना चाहिए। वे लोग पहाड़ के चारों ओर जोताई कर रहे थे और मिट्टी की दीवारें खड़ी करते जाते थे और खेत पिछले समय की जोताई से बहुत भिन्न लग रहे थे। औरतें और लड़के गोबर इकट्ठा कर रहे थे, लेकिन यह इतना कम लग रहा था कि सरदार ने यह आज्ञा दे दी कि ऐसा बाड़ा बनवाया जाय, जिसमें सारे जानवरों को एक साथ बाँधा जाय, ताकि गोबर आसानी से इकट्ठा किया जा सके। लेकिन ऐसा करना मुश्किल था, क्योंकि उस बाड़े के अन्दर तो जानवरों के खाने लिए कुछ नहीं था। अध्यापक गोबर की कमी पर सर हिलाता था, लेकिन वह कहता था कि अगले साल इससे अच्छा रहेगा। वैट्ल के बीजों को उबाला जा रहा था, हालाँकि गाँव में रहनेवाले किसी व्यक्ति ने ऐसी चीज़ कभी होते नहीं देखी थी। लेकिन जिन लोगों ने अंग्रेज़ों के खेतों पर काम किया था, वे कह रहे थे कि वहाँ ऐसा होता है और इसलिए बीज उबाले जा रहे थे। इन बीजों के लिए कुछ सूखे स्थान चुने गये थे, लेकिन अध्यापक इनपर सर हिलाता था। वहाँ की धरती में इतना कम भोजन है। और अध्यापक ने लोगों से कहा था कि वह मक्का, जो गाँववालों ने बोने के लिए बचा रखी थी, फेंक दी जा सकती है, क्योंकि वह बेकार और घटिया है और उनके पास जारविस के दिये हुए बीज है। लेकिन गाँववालों ने उसे फेंका नहीं, खाने के लिए रख लिया।

लेकिन यह सब-कुछ जादू से नहीं हो गया था। सभाएँ हुई थीं, विरोध का प्रदर्शन हुआ था, मौन रूप से और बोलकर। केवल सरदार के डर के कारण ही इन सभाओं से कुछ हो सका। सबसे अधिक वे व्यक्ति असन्तुष्ट थे, जिन्हें अपने खेत छोड़ देने पड़े थे। कुलुसे का भाई बहुत दिनों तक मौन रहा था, क्योंकि उसकी ज़मीन पर बाँध बननेवाला था और उसके बदले में उसे खराब ज़मीन दी गयी थी। वास्तव में उम्फ़ुन्दीस को ही उसे मनाना पड़ा था और उम्फ़ुन्दीस की बात को न मानना असम्भव था, क्योंकि उन्हीं के कारण वह दूध मिल सका था, जिसने उसके भाई की बच्ची की जान बचायी थी। सरदार ने कई बार बातों-बातों में यह कहा था कि इससे भी कड़ी चीजों के लिए वह कहनेवाला है। और नया अध्यापक इस बात पर

असन्तुष्ट था कि लोगों से आवश्यकतानुसार तुरन्त क्यों नहीं माँग लिया जाता। लेकिन इन लोगों को सब चीज़ों के लिए तुरन्त राज़ी करना कठिन था। नये अध्यापक ने कहा कि उसे आशा है कि इसी वर्ष लोग इन-सब बातों के कुछ फल अपनी आँखों से देख सकेंगे, हलाँकि अक्सर वह इस धरती की खराब हालत पर दुःख और असन्तोष में सर हिला देता था।

इस बात की भी अफ़वाह थी कि सरकार सरदार का एक बैल देगी। और उस युवक अध्यापक ने कुमालो को यह बताया था कि उन गायों को अलग कर दिया जायगा, जो बहुत कम दूध देती हैं। लेकिन यह बात उसने सभा में नहीं कही थी, क्योंकि यह उन लोगों के लिए बहुत कड़ी बात थी, जो जानवरों को ही यहाँ तक कि इन मरियल डंगरों को ही अपनी दौलत समझते थे।

और सबसे अद्‌भुत आश्चर्य तो वह बड़ी मशीन थी। कहते हैं कि युद्ध में वह लड़ती थी। वह कुलुसे के भाई की ज़मीन को उन डण्डों की लकीर पर से ढकेलती जाती थी। उभरी हुई मिट्टी के ये टीले अधिकाधिक ऊँचे होते जा रहे थे। और कुलुसे का भाई भी, जो नाराज़ी से उसे देखा करता था, अनिच्छापूर्वक उसे देखकर हँस पड़ता था। लेकिन फिर उसे अपना विरोध याद आ जाता और वह चुप हो जाता। लेकिन उसे कुछ सन्तोष था, क्योंकि अगले साल जब बाँध बन जायगा, तब ज़ूमा और उसके भाई को भी बाँध के पासवाली अपनी ज़मीन छोड़ देनी होगी। उसपर अँग्रेज़ साहब की घास लगेगी। इस घास के मैदान को बाँध के पानी से सींचा जायगा और उसे काटकर उस बाड़े में डाल दिया जायगा, जहाँ जानवर बँधे थे। और ज़ूमा और उसका भाई भी उसपर हँसते थे, क्योंकि बाँध बनने से वे खफ़ा थे।

वास्तव में, वादी में इस समय कुछ नया अवश्य था, कुछ उत्साह और जीवन। झोपड़ियों में लोग बहुत-कुछ बात करते थे। यद्यपि कुछ भी हो नहीं पाया है, फिर भी कुछ आशाएँ तो अवश्य हैं।

*

कुमालो ने अध्यापक से कहा—एक नेपोलियन था, जिसने बहुत-से काम किये थे, इतने काम कि उसपर बहुत-सी किताबें लिखी गयी थीं।

युवक अध्यापक हँस पड़ा, लेकिन उसने आँखें धरती की ओर झुका लीं और अपने एक जूते से दूसरा जूता रगड़ने लगा।

कुमालो ने फिर कहा—तुम्हें तो गर्व होना चाहिए, क्योंकि यहाँ वादी में अब एक नया जीवन शुरू हो रहा है। मैं कई वर्षों से यहाँ पर हूँ, लेकिन मैंने कभी इतने जोश के साथ जोताई होते नहीं देखी।

और कुछ रुककर कुमालो फिर बोले—यहाँ पर वास्तव में कोई नयी बात हो रही

है। और ऐसा केवल वर्षा के कारण ही नहीं है, यद्यपि उससे भी मन हरा-भरा हो जाता है। यहाँ नवीन आशा का ऐसा संचार है, जैसा कि मैंने पहले कभी नहीं देखा।

युवक ने चिन्तित होकर कहा—आपको ज़्यादा बातों की आशा नहीं करनी चाहिए। इस साल मैं विशेष कुछ आशा नहीं करता। मक्का शायद कुछ और ऊँची हो जायगी और फ़सल कुछ ज़्यादा अच्छी होगी, लेकिन यहाँ ज़मीन वास्तव में बहुत कम उपजाऊ है।

—लेकिन अगले साल तक तो बाड़ा बन जायगा, बहुत सहायता मिल जायगी।

—हाँ, युवक ने उत्साहपूर्वक कहा—हम बाड़े में से बहुत-सा गोबर बचा सकेंगे। उम्फ़ुन्दीस, लोग तो मुझसे कह रहे थे कि जाड़ा अगर कड़ा भी हुआ, तब भी वे गोबर न जलायँगे।

—अच्छा, पेड़ों को तैयार होने में कितना समय लगेगा?

—अनेक वर्ष,—अध्यापक ने निराशा के स्वर में कहा—एक बात बताइए, उम्फ़ुन्दीस, क्या यहाँ के लोग सात वर्षों तक जाड़ा सह पायँगे?

—हिम्मत बाँधो, युवक। सरदार और मैं दोनों ही तो तुम्हारे साथ काम कर रहे हैं!

—मैं बाँध बन जाने के लिए अधीर हूँ। जब बाँध बन जायगा, तो चरागाहों के लिए पानी मिल सकेगा। मैं आपसे कहता हूँ, उम्फ़ुन्दीस,—युवक ने उत्तेजित होकर कहा—मैं आपसे बताता हूँ कि इस वादी में दूध भी होने लगेगा, अंग्रेज़ से दूध लेने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

कुमालो ने युवक की ओर देखा—साहब के दिये हुए दूध के बग़ैर हम लोगों की क्या हालत होती? और हमारा क्या होता अगर जारविस साहब वह-सब न करते, जो उन्होंने हमारे लिए किया है? और तुम भी कहाँ होते? क्या तुम्हारी यह नौकरी होती?

युवक अध्यापक ने ढीठाई से कहा—मैं मानता हूँ कि वह मुझे वेतन देते हैं, मैं कृतघ्न नहीं हूँ!

—तब तुम्हें इस तरह की बातें भी नहीं करना चाहिए!—कुमालो ने कठोरता से कहा।

कुछ देर दोनों चुप रहे। उनके बीच में एक तनाव-सा आ गया। कुछ देर बाद युवक ने अहिस्ता से कहा—उम्फ़ुन्दीस, मैं यहाँ पूरी लगन से काम करता हूँ न?

—यह बिल्कुल ठीक है।

—मैं इस तरह काम इस कारण करता हूँ कि मैं अपने देश और अपनी जाति

के लिए काम करता हूँ। यह बात आपको समझ लेनी चाहिए, उम्फ़ुन्दीस! मैं ऐसा काम किसी भी मालिक के लिए नहीं करता।

—लेकिन, अगर तुम्हारा कोई नहीं मालिक होता, तो तुम यहाँ क्यों होते?

—मैं आपकी बात समझता हूँ। यह साहब तो बहुत अच्छे आदमी हैं और मैं उनकी इज़्ज़त करता हूँ। लेकिन इस तरह नहीं होना चाहिए, बात केवल इतनी है।

—फिर किस तरह होना चाहिए?

—इस तरह नहीं!—युवक अपनी बात पर जमा था।

—तो किस तरह?

—उम्फ़ुन्दीस, अंग्रेज़ों ने हमें इतनी कम ज़मीन दी और अंग्रेज़ों ने ही हमें हमारी धरती से हटाकर हमें काम करने को मजबूर किया था। और तब हम अज्ञानी थ। इन्हीं सब कारणों ने तो हमारी इस वादी को सूना कर दिया है। और अब यह भला अंग्रेज़ जो-कुछ कर रहा है, वह केवल पहले के अन्यायों का मुआवज़ा है।

—मुझे ऐसी बातें पसन्द नहीं हैं।

—मैं आपकी बात समझता हूँ, उम्फ़ुन्दीस, पूरी तरह समझता हूँ। लेकिन, क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूँ?

—पूछो।

—जब इस वादी का पूर्ण रूप से उत्थान हो जायगा, जिसके लिए आप सदा प्रार्थना किया करते हैं, तो क्या आपके ख्याल से यह इस जाति के उन तमाम आदमियों का, जो बाहर हैं, पोषण कर सकेगी अगर वे लौट आयँ?

—मैं नहीं जानता।

—लेकिन, मैं जानता हूँ, उम्फ़ुन्दीस। हम इस वादी का उत्थान केवल यहाँ के लोगों के लिए ही कर सकते हैं, लेकिन जब बच्चे होंगे, तब आबादी फिर ज़रूरत से ज्यादा हो जायगी और तब फिर कुछ लोगों को यहाँ से चला जाना पड़ेगा।

और कुमालो खामोश हो रहे, क्योंकि उनके पास इसका कोई उत्तर नहीं था। उन्होंने गहरी साँस खींचकर कहा—तुम मुझसे बहुत ज्यादा होशियार हो!

—मुझे खेद है, उम्फ़ुन्दीस!

—नहीं, तुम्हें खेद नहीं होना चाहिए। मैं देखता हूँ कि तुममें सत्य के लिए जिज्ञासा है।

—मुझे इसी तरह की शिक्षा मिली थी, उम्फ़ुन्दीस। मुझे एक अंग्रेज ने ही यह शिक्षा दी थी। उसने कहा था कि सत्य के बिना अच्छी खेती भी नहीं हो सकती!

—वह आदमी बुद्धिमान था।

—और उसी ने मुझे यह सिखाया था कि हम मालिकों के लिए काम नहीं

करते, हम धरती और उसके लोगों के लिए काम करते हैं। हम धन के लिए भी काम नहीं करते।

कुमालो प्रभावित हो गये और उन्होंने युवक से पूछा—क्या ऐसे बहुत लोग हैं, जो तुम्हारी ही तरह सोचते हैं?

—मैं नहीं जानता, उम्फ़ुन्दीस। पता नहीं कि बहुत लोग हैं या नहीं, पर कुछ तो हैं।—वह उत्तेजित हो उठा—हम अफ्रीका के लिए काम करते हैं, किसी मालिक के लिए नहीं, काले-गोरे के लिए नहीं, केवल अफ्रीका के लिए!

—दक्षिणी अफ्रीका क्यों नहीं कहते?

—हम ऐसा ही कहते अगर यह सम्भव होता,—युवक ने गम्भीरता से कहा।

वह कुछ देर विचारमग्न रहा। फिर बोला—जब हम गाते हैं तो उसमें हमारी इच्छा व्यक्त होती है। 'इन्कोसी सिलेल इ अफ्रीका'। इसके अर्थ होते हैं, भगवान् अफ्रीका की रक्षा करें! बड़ी तेजी से यह वहाँ के निवासियों का राष्ट्रगान होता जा रहा है।

और कुमालो ने कहा—अँधेरा हो रहा है। चलो, मुँह-हाथ धो लें।

—मेरी बातों से कुछ और न समझिएगा, उम्फ़ुन्दीस!—युवक ने व्यग्रता से कहा—मैं राजनीति से मतलब नहीं रखता! मैं आपकी वादी में कोई झगड़ा नहीं खड़ा करना चाहता, मैं केवल इसका उत्थान-भर चाहता हूँ!

—भगवान करे, तुम्हारी कामना पूरी हो!—कुमालो ने उसी सचाई से उत्तर दिया—लेकिन, बेटे, एक बात और है।

—कहिए, उम्फ़ुन्दीस।

—मैं तुम्हें अपने विचारों पर सोचने से रोक नहीं सकता। यह अच्छी बात है कि किसी युवक के इतने गम्भीर विचार हों। लेकिन किसी से नफ़रत न करना और किसी पर शक्ति प्राप्त करने की कामना मत करना, क्योंकि मेरे एक मित्र हैं, जिन्होंने मुझे यह सिखाया था कि शक्ति से व्यक्ति का पतन होता है।

—मैं किसी से नफ़रत नहीं करता, उम्फ़ुन्दीस। मैं किसी पर शक्ति की कामना नहीं करता।

—यह अच्छी बात है, क्योंकि हमारे देश में घृणा काफी व्याप्त है।

युवक मकान में हाथ-मुँह धोने चला गया। और कुमालो क्षण-भर अन्धकार में खड़े रहे। वहाँ से तारे उस वादी के ऊपर टिमटिमाने लगे थे, जिसका पुनर्निर्माण होनेवाला था। और यह-सब उनके लिए काफ़ी था, क्योंकि उनका जीवन तो लगभग समाप्त ही हो चुका था। नये और विद्रोही विचारों के लिए वह ज़्यादा वृद्ध हो गये थे, ऐसे विचार उन्हें दुःख भी पहुँचाते थे, क्योंकि वे बहुत-सी चीज़ों पर आघात करते थे। हाँ, वे हाई प्लेस में रहनेवाले उस ख़ामोश और गम्भीर व्यक्ति पर आघात

करते थे, जिसने इतनी गहन व्यथा के बाद भी ऐसी गम्भीर सहानुभूति दिखायी थी। कुमालो नये और विचलित करनेवाले विचारों के लिए अधिक वृद्ध हो चुके थे। उनको और उनकी तरह के और लोगों को अंग्रेज़ों का कुत्ता कहा जाता था। लेकिन उनका सारा जीवन इसी तरह बीता था और उसी तरह वह मर भी जायँगे।

वह मुड़े और युवक के पीछे-पीछे घर में गये।

(७)

आज चौदहवाँ दिन था। कुमालो ने अपनी पत्नी से कहा—मैं पहाड़ जा रहा हूँ।

और पत्नी ने उत्तर दिया—हाँ, मैं तुम्हारी बात समझती हूँ।

दो बार पहले भी वह यही कर चुके थे, एक बार जब एबसेलाम बच्चा था और बहुत ज़्यादा बीमार था और दूसरी बार जब गिरजे की नौकरी छोड़कर डानीब्रुक में बैक्सटर नामक एक अंग्रेज की देशी लोगों के लिए खोली हुई दूकान में ज़्यादा वेतन पर काम करने की बात उन्होंने सोची थी। एक बार और भी कुमालो इसी तरह पहाड़ों में गये थे। लेकिन, उसका उनकी पत्नी को कुछ भी पता नहीं था, क्योंकि तब वह बाहर गयी हुई थीं और कुमालो को इस बात का बड़ा ज़बरदस्त प्रलोभन हुआ था कि वह इन्डाटशेनी के स्कूल की एक दुर्बल और अकेली मास्टरनी के साथ व्यभिचार करें।

कुमालो ने अपनी पत्नी से कहा—तुम भी मेरे साथ चलोगी, क्योंकि मैं तुम्हें अकेली छोड़ना नहीं चाहता।

वह इस बात से मर्माहत हो गयीं और बोलीं—मैं तो नहीं जा सकूँगी, क्योंकि बहू के दिन पूरे हो गये हैं। पता नहीं, कब क्या हो! लेकिन तुम ज़रूर जाओ!

और उन्होंने कुमालो के लिए एक बोतल भर चाय बनायी, उस तरह की चाय, जो पत्तियाँ उबालने से बनती है, और कुछ मक्के के केक भी लपेट दिये। कुमालो कोट और छड़ी लेकर उस रास्ते पर चल दिये, जो सरदार के निवास-स्थान की तरफ जाता था। लेकिन पहले ही मोड़ पर एक रास्ता उस हाथ को कट जाता था, जिस हाथ से हम खाते हैं और आप फिर एक दूसरे पहाड़ पर चढ़ते हैं और झोपड़ियों की उस बस्ती में पहुँच जाते हैं, जो पहाड़ के उस पार है। वहाँ पहुँचकर मुड़ना पड़ता है और पूरब की दिशा में चलना पड़ता है। और अब आप इम्पेयेनी की सुदूर वादी को जा रहे हैं। वह एक और वादी है, जहाँ खेत लाल और बंजर हैं। यह बूढ़े आदमी और बूढ़ी औरतों, माताओं और बच्चों की वादी है। लेकिन, जब उस समतल सड़क के अन्त तक आप पहुँच जाते हैं, तो पहाड़ों में जाने के लिए चढ़ाई के ऊपर चढ़ना पड़ता है, क्योंकि नीचे उतरकर यह समतल सड़क वादी में

पहुँच जाती है। इस पर्वत को इमोएनी कहते हैं, जिसका अर्थ है, हवाओं में। और यह पहाड़ कैरिसब्रुक और उसके आस-पास की पहाड़ियों से और इन्डाटशेनी और इम्पेयेनी की वादियों से भी ऊँचा है। वास्तव में यह उमज़िमकुलू की विशाल वादी के लिए सुरक्षा की दीवाल की तरह है और उसपर खड़े होकर आपको अफ्रीका के सबसे मनोहर दृश्य दिखायी पड़ते हैं।

उस समय अँधेरा हो चुका था और कुमालो गोधूलि में अकेले थे। यह भी अच्छा ही था, क्योंकि इस प्रकार की यात्रा पर कोई खुले आम नहीं जाता। लेकिन जैसे ही वह उस पथ पर चढ़नेवाले थे, जो बड़ी-बड़ी चट्टानों में होकर जाता था, उन्हें घोड़े पर बैठा एक आदमी मिला और एक आवाज ने उस अँधेरे में से उनसे पूछा—क्या आप हैं, उम्फुन्दीस ?

—जी हाँ, मैं हूँ, उमनूमज़ान !

—तब तो हम लोग अच्छे मिले, उम्फुन्दीस ! मेरी जेब में आपके गिरजे के लोगों के लिए एक पत्र पड़ा है।—वह कुछ देर चुप रहे, और तब बोले—वे फूल बहुत सुन्दर थे, उम्फुन्दीस।

—धन्यवाद, उमनूमज़ान।

—और, हाँ, गिरजा, उम्फुन्दीस, क्या आप नया गिरजा चाहते हैं ?

कुमालो केवल मुस्कराकर सर हिला सके। वह वाक्शून्य थे। और उन्होंने मानो न के अभिप्राय से सर हिलाया हो, पर जारविस ने उनका अर्थ समझ लिया।

—नक्शे कुछ दिनों में आपके पास आ जायँगे और आपको बताना होगा कि आप कैसा चाहते हैं।

—मैं उन्हें बिशप के पास भेज दूँगा, उमनूमज़ाम।

—जैसा आप ठीक समझें। लेकिन, मैं चाहता हूँ कि यह काम जल्दी हो जाय, क्योंकि मैं यहाँ से चला जाऊँगा।

कुमालो उन भयावह और शून्य शब्दों को सुनकर स्तब्ध खड़े रह गये और यद्यपि अँधेरा था, फिर भी जारविस ने कुमालो के दिल की बात समझ ली, क्योंकि वह झट से बोले—यहाँ मैं अक्सर आया करूँगा। आप तो जानते हैं कि इन्डाटशेनी में मेरे काम-काज हैं। अच्छा, वह युवक अध्यापक कैसा है ?

—वह दिन-रात काम करता रहता है, उसे बिल्कुल चैन नहीं है !

जारविस इसपर हल्के से हँस दिये—यह तो बहुत अच्छी बात है !—फिर गम्भीर होकर बोले—मैं अपने घर में अकेला हूँ, इसलिए मैं बहू और बच्चों के साथ रहने जोहैन्सबर्ग जा रहा हूँ। छोटे-से लड़के को तो आप जानते हैं ?

—जी, उमनूमज़ान, जानता हूँ।

—वह उसी की तरह है।

—जी हाँ, वह उनकी ही तरह है।

और तब कुमालो ने कहा—सचमुच मैंने उस-जैसा बालक कभी नहीं देखा।

जारविस अपने घोड़े पर मुड़े। उस अन्धकार में वह गम्भीर और मौन मानव आकुल था। उसने पूछा—आपका क्या मतलब है?

—उमनूमज़ान, उस बालक में एक तेजस्विता है।

—हाँ-हाँ, यह सत्य है। वह भी ऐसा ही था।

और तब एक भूखे आदमी की तरह उन्होंने पूछा—क्या आपको याद है?

और चूँकि यह आदमी भूखा था, इसलिए अच्छी तरह याद न होते हुए भी कुमालो ने कहा—मुझे याद है।

फिर वह चुपचाप खड़े रहे कि जारविस बोले—उम्फुन्दीस, मुझे चलना चाहिए।

—पर जाने के बजाय उन्होंने पूछा—आप इस समय कहाँ जा रहे हैं?

कुमालो घबरा गये और ऐसा लगा कि जबान से शब्द निकल ही नहीं पायँगे, लेकिन उन्होंने उत्तर दिया—पहाड़ पर जा रहा हूँ।

और चूँकि जारविस ने उत्तर में कुछ नहीं कहा, इसलिए अपनी बात साफ करने के लिए वह कुछ कहना चाहते थे, पर एक शब्द भी बोलने के पहले ही जारविस बोल पड़े—मैं समझता हूँ, बिल्कुल समझता हूँ!

और चूँकि जारविस की आवाज में दया थी, इसलिए कुमालो रो दिये और जारविस घबराये घोड़े पर ही बैठे रहे। वह घोड़े से उतर पड़ते, पर ऐसी बातें आसानी से नहीं की जाती हैं। लेकिन उन्होंने उस वादी की ओर, जिसपर अँधियारा घिर रहा था, हाथ फैलाते हुए कहा—एक चीज़ का लगभग अन्त हो रहा है। लेकिन यहाँ कुछ ऐसी चीज़ है, जो शुरू ही हो रही है और जब तक मैं जिन्दा रहूँगा, तब तक वह रहेगी। भगवान आपको सुखी रखे, उम्फुन्दीस!

—उमनूमज़ान!

—हाँ।

—जब तक मैं धन्यवाद न दे लूँ, आप मत जाइए, उस युवक अध्यापक के लिए और दूध के लिए और अब नये गिरजे के लिए।

और जारविस ने गम्भीर विनोद के साथ उत्तर दिया—मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ, जो अन्धकार में था और जिसे आप ही उजाले में लाये। और आपके इस एहसान के बदले में यह-सब मैंने खुशी से किया है।

शायद जो-कुछ जारविस ने कहा, उसमें आत्मा को छू लेने की क्षमता थी, या कुमालो को उस अन्धकार से साहस मिला और उन्होंने कहा—वास्तव में अब तक जितने अंग्रेज मैंने देखे, उन सब में.....

और जारविस ने उत्तेजित होकर बात काटते हुए कहा—मैं कोई सन्त नहीं हूँ।

—यह तो मैं नहीं कह सकता, लेकिन भगवान् ने आप पर दया का हाथ रखा है !

और जारविस ने कहा—हो सकता है, हो सकता है।—और फिर अचानक कुमालो की ओर मुड़कर बोले—बिदा, उम्फुन्दीस ! आज रात-भर आप सुखी रहें !

और कुमालो ने जोर से कहा—बिदा ! आप सुखी रहें !

वास्तव में और भी चीजें थीं, गहरी बातें, जिन्हें वे चिल्लाकर कह सकते थे, पर ऐसी बातें योंही नहीं की जाती हैं। जब तक घोड़े की टापों का शब्द सुनायी पड़ता रहा, वह खड़े रहे। और तब वह धीरे-धीरे पहाड़ पर चढ़ने लगे, रुक-रुक, चट्टानों पर हाथ रख-रखकर, अपने-आपको साधते हुए, क्योंकि अब वह जवान नहीं थे। जब वह चोटी पर पहुँचे, तो वह थक गये थे और हाँफने लगे थे, विशाल वादी को देखते हुए वह एक चट्टान पर सुस्ताने के लिए बैठ गये। आकाश की पृष्ठभूमि में उभरे हुए इन्गेली और पूर्वी ग्रीकालैंड के पर्वत थे। सुस्ताने के बाद वह कुछ दूर चले और उस जगह पर पहुँचे, जहाँ वह ऐसे अवसरों पर पहले भी आकर बैठे थे। वह स्थान दो चट्टानों में कोण बनाता था और हवा से सुरक्षित था। वहाँ चट्टान पर पैर फैलाकर आराम से बैठने की जगह थी। कुमालो को वह पहला अवसर अच्छी तरह से याद था, शायद इसलिए कि वह पहला था, शायद इसलिए कि वह अपने बच्चे के लिए प्रार्थना करने ऐसे अवसर पर आये थे, जब उसको कोई प्रार्थना बचा नहीं सकती थी। उस समय वह बच्चा ख़त नहीं लिख सकता था, पर इस समय उनकी जेब में उसके तीन पत्र थे, जिनमें से हरेक में उसने लिखा था, अगर मैं इन्डाटशेनी लौट पाता, तो मैं उसे फिर कभी नहीं छोड़ता ! और एक-आध दिन में उन लोगों को उसका अन्तिम पत्र भी मिल जायगा। कुमालो के दिल में अपने उस बेटे के लिए असीम दया उमड़ पड़ी, जिसकी मौत लिखी ही थी, जिसने अब यह प्रतिज्ञा की थी कि वह कभी कोई पाप नहीं करेगा, अब, जब उसके लिए क्षमा न रही थी। काश, वह अपने बेटे के पास कुछ पहले पहुँच जाते ! उन भयानक और व्यर्थ के प्रश्नों, उन भयानक और व्यर्थ के उत्तरों की बात याद कर उनके माथे पर बल पड़ गये ...जैसा पिताजी चाहते हैं....जो पिताजी कहते हैं ...क्या अन्तर पड़ता, अगर वह यह उत्तर देता, पिताजी, मैं नहीं जानता ?

लेकिन, इन व्यर्थ की स्मृतियों को उन्होंने हटा दिया और संकल्प के क्रम में लग गये। भगवान के सामने उन्होंने अपने पापों को स्वीकार किया, उन पापों को अच्छी तरह याद किया, जो उन्होंने उस समय से अब तक किये थे, जब वह पिछली बार यहाँ आये थे। कुछ तो उन्हें आसानी से याद आ गये, जैसे वह झूठ, जो वह रेल में बैठते समय बोले थे; वह झूठ, जो वह अपने भाई से बोले थे, जब जान ने उन्हें बाहर निकालकर किवाड़ बन्द कर दिया था ...और वह अवसर, जब जोहैन्सबर्ग

में धर्म पर से उनका विश्वास डिग गया था और उस लड़की को दुःख पहुँचाने की इच्छा, पापकर्म में प्रवृत्त उस सरल बालिका को !....और इन-सब पापों पर उन्होंने पूर्ण रूप से पश्चाताप किया और भगवान से क्षमा की प्रार्थना की।

तब उन्होंने भगवान के प्रति कृतज्ञता प्रगट करनी शुरू की और उन्होंने अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक स्मरण किया कि इस कृतज्ञता निवेदन का अत्यन्त महान् हेतु है और बहुत-सी चीजों के लिए कृतज्ञता निवेदन करना है। एक-एक करके हर बात के लिए उहोंने धन्यवाद प्रगट किया, और हर व्यक्ति के लिए प्रार्थना की, जो उन्हें उस समय याद आया। उन-सबमें प्रमुख प्रिय सिमांगु और उनकी उदार भेंट थी, सुधारगृह का वह युवक अंग्रेज़ अफ़सर था, जिसने गुस्से में कहा था, मुझे अफ़सोस है, उम्फ़ुन्दीस, कि मैंने आपसे ऐसे गुस्से के शब्द कहे; फिर श्रीमती लिथेबी थीं, जो अक्सर कहा करती थीं, हम आख़िर और किसलिए पैदा हुए हैं....और फ़ादर विन्सेट, जिन्होंने उनके हाथ थामकर कहा, आप जो चाहें मैं सब करूँगा, और वह वकील, जिसने मुक़दमा धर्मार्थ लड़ा था और यह कहने के लिए पत्र लिखा था कि ऐसे भले दयापूर्ण शब्दों से क्षमा नहीं मिलती....फिर इन्डाटशेनी का लौटना, जहाँ उनकी पत्नी और मित्र मिलने आये थे। और वह औरत, जिसने अपना एप्रन सर पर डाल लिया था....और वह औरतें, जो गिरजे में प्रतीक्षा कर रही थीं....और लौटने की वह प्रसन्नता, जिसने उस पीड़ा को भी भुला दिया था....

इन-सब बातों के बारे में वह बहुत देर तक चिन्तन करते रहे, क्योंकि कोई दूसरा व्यक्ति जो किसी दूसरी वादी में लौटकर आता, क्या उसे भी यह चीजें प्राप्त होतीं ? ऐसा क्यों था कि एक व्यक्ति की पीड़ा को सुख में बदल दिया गया था ? एक ही व्यक्ति को ही भगवान की इतनी चेतना क्यों थी ? और क्या किसी ऐसे व्यक्ति की पीड़ा अनन्त होगी, जिसे भगवान की उतनी चेतना नहीं होती ? और उन्हीं को क्यों ऐसी मजबूरी थी कि वह इन्डाटशेनी के पुनरुत्थान की प्रार्थना करते ? और क्यों उन चोटियों पर रहनेवाला ऐसा अंग्रेज था, जिसने वह किया जो कोई नहीं कर सकता ? और फिर तमाम व्यक्तियों में वही क्यों जिनके बेटे की हत्या उनके बेटे के हाथों हुई थी ? और क्या कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हो सकता था, जिसे किसी ऐसी दूसरी वादी के लिए दिन-रात प्रार्थना करने की वही मजबूरी होती और जिसका पुनरुत्थान कभी नहीं हो सकता था ?

पर उनका दिमाग इस तरह की बातें अधिक देर तक सह नहीं सका। यह बातें आदमी के समझने की नहीं हैं ! उन्होंने अपने मन से उन्हें निकाल दिया, क्योंकि वे गूढ़ बातें थीं।

और फिर जारविस और इन्कोसीगाज़, जो मर चुकी थीं, और नन्हा बालक,

जिसके अन्दर प्रकाश भरा था ! जिस तरह उनके दिमाग में और बातें न रह सकीं, उसी तरह यह भी न रह पायीं। लेकिन इन-सब के लिए कृतज्ञता तो थी, जो कि व्यक्ति अपने अंतिम दिन तक दे सकता था। और कुछ कृतज्ञता-ज्ञापन का अब उन्होंने प्रयत्न किया।

वह चौंककर जाग पड़े। सर्दी थी, लेकिन ऐसी अधिक नहीं। इन जागरणों पर ह कभी न सोये थे, पर अब वह वृद्ध थे, यद्यपि पूर्णतया तो नहीं, फिर भी लगभग पास हो चुके थे। उन्हें इस समय उन-सब लोगों की याद आयी, जो अब भी ड़ित थे, कष्ट में थे। गर्टरूड की, जो मूर्ख और कमज़ोर थी, शैन्टी टाउन और क्जैन्ड्रा के लोगों की और अपनी पत्नी की। लेकिन इन-सबसे ज़्यादा उन्हें ो लड़के एबसेलाम की याद आयी। क्या वह जाग रहा होगा इस रात में, जो प्रभात के पहले थी? क्या वह सो सका होगा? वह चिल्ला उठे—मेरे बेटे! मेरे ! मेरे बेटे !

इस चीख़ से उनकी नींद बिल्कुल उचट गयी और उन्होंने अपनी घड़ी देखी, एक बजा था। पाँच बजे के बाद ही सूर्य उदय होगा और लोगों का कहना कि उस समय वह काम होता है। अगर लड़का सो रहा हो, तो अच्छा है, सोता रहे। पर अगर वह जग रहा है, तब असीम दयालु भगवान ईसा पका साथ दें! इस बात के लिए कुमालो बहुत देर तक सच्चे हृदय से प्रार्थना रहे।

या उनकी पत्नी इस समय जाग रही होंगी और इसी सोच में पड़ी होंगी? और लड़की का ख़्याल न होता, तो वह भी उनके साथ आतीं। और हाँ, लड़की.... की को तो वह भूल ही गये। लेकिन वह निस्सन्देह सो रही होगी। वह बहुत करनेवाली है, पर इस पति से उसे बहुत कम प्यार मिला था, उसके अन्य ने जितना-कुछ दिया, उससे अधिक कुछ नहीं।

और फिर जारविस, जिन्हें पत्नी और पुत्र का वियोग हो चुका था, और उनकी ू, जिसे पतिवियोग हो चुका था और उस पुत्र-वधू के बच्चे, जिन्हें पितृवियोग था, विशेषतः वह नन्हा बालक, वह मुस्कुराता हुआ, तेजवान् बालक। वह बालक उनकी आँखों के आगे खड़ा था और उनसे कह रहा था, जब मैं चला गा, तो इन्डाटशेनी की रोशनी चली जायगी।....हाँ, मैं समझता हूँ, उसने हाँ मैं समझता हूँ। वह झेंपा या शर्माया नहीं, पर बोला, हाँ समझता हूँ, आनन्द से हँसने लगा।

और अब प्रिय देश अफ्रीका की समस्त जनता के लिए, कोसी सिकेलेल अफ्रीका, गवान अफ्रीका की रक्षा करे!....लेकिन वह उस स्वर्ग को न देख पायँगे, वह सब-छ अभी बहुत दूर था, क्योंकि लोग उससे डरते थे, क्योंकि वास्तव में लोग उनसे

डरते थे, उनकी पत्नी से डरते थे, सिमांगु से डरते थे और उस युवक अध्यापक से डरते थे। इन लोगों की कामनाओं में, इनकी भूख में क्या बुराई थी कि अपने देश में, जहाँ वे पैदा हुए थे, तनकर चल सकें और धरती के फल का स्वतंत्रतापूर्वक उपयोग कर सकें। इसमें क्या बुराई थी? फिर भी लोग डरते थे, ऐसे डर से, जो गहरा हृदय में समाया हुआ था, इतना गहरा कि वे अपनी दया की भावनाओं को भी छुप रहते या वह क्रोध और प्रचंडता के रूप में प्रकट होता था। वे इसलिए डरते थे वे बहुत कम थे। और ऐसा भय प्रेम के अतिरिक्त किसी तरह नहीं निकाला सकता था।

और सिमांगु ने यह कहा था, सिमांगु ने, जिनके दिल में किसी के लिए घृणा नहीं थी, मेरे दिल में केवल यही एक महान भय है कि एक दिन जब प्यार करना सीखेंगे, तब उन्हें मालूम होगा कि हमारे दिलों में नफ़रत भर गयी कितने गम्भीर और उदास शब्द थे!

जब वह फिर सोकर उठे, तो पूरब में आसमान कुछ-कुछ बदल चुका था। उन्होंने त्रस्त होकर अपनी घड़ी की ओर देखा। लेकिन अभी केवल चार बजा और उन्हें सन्तोष हुआ। अब यह जागे रहने का समय था, क्योंकि अब ल ने बेटे को जगा दिया होगा और उससे तैयार होने को कहा गया होगा। वह उठ पड़े और कठिनाई से खड़े हो सके, क्योंकि उनके पैर ठंडे और सुन्न थे। वह दूसरी जगह चले, जहाँ से वह पूरब की ओर देख सकते थे और अग ने जो कहा था, वह ठीक है, तो जैसे ही सूरज क्षितिज के ऊपर आया कि वह हो जायगा।

कुमालो ने सुना था कि ऐसे अवसर पर जो-कुछ लोग चाहते हैं, उन्हें को मिल जाता है। अजीब है कि ऐसे अवसर पर कोई खाना माँगे! कि और अन्धी इच्छा से प्रेरित होकर, जिसे यह नहीं मालूम कि उसे मर शरीर को भूख लगती होगी! क्या लड़का शान्त होगा? क्या वह शान्ति पहन रहा होगा, क्या उसे इस समय इन्डाटशेनी की याद आ रही होगी? क्या आँखों में आँसू आये होंगे और क्या वह उन्हें पोंछकर साहसपूर्वक, मर्द खड़ा हो गया होगा? क्या उसने कहा होगा, मैं कुछ भोजन नहीं करूँगा, मैं करूँगा? क्या सिमांगु वहाँ उसके पास होंगे, या फ़ादर विसेन्ट या अन्य कोई जिसका काम उसे शान्ति और बल देना हो, क्योंकि उसे फाँसी से डर लगता क्या उसे पश्चाताप है या उसके दिल में केवल भय के लिए ही स्थान है? क्या उसके लिए कुछ नहीं किया जा सकता? क्या कोई ऐसा फ़रिश्ता नहीं है, जो